राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर पूना, गुजरातसाहित्य-सभा अहमदाबाद
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(ऑनरेरि डायरेक्टर)–भारतीय विद्याभवन बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५०

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

सम्पादक

श्रीसीताराम लालस

बृहद् राजस्थानी कोशके कर्ता

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२ | ख्रिस्ताब्द १९६०

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य ८ २५ न पै

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक साधना प्रेस जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१ प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य मूल्य ६ । २ यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह मूल्य १ ७५ । ३ महर्षिकुलवैभवम्–स्व श्रीमधुसूदन ओझा मूल्य १ ७५ । ४ तर्कसंग्रह–पं क्षमाकल्याण मूल्य ३ । ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं रभसनन्दि मूल्य १ ७५ । ६ वृत्तिदीपिका–पं मौनिकृष्ण मूल्य २ । ७ शब्दरत्नप्रदीप मूल्य २ । ८ कृष्णगीति–कवि सोमनाथ मूल्य १ ७५ ९ शृङ्गारहारावली–हर्षकवि मूल्य २ ७५ । १० चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं लक्ष्मी धरभट्ट मूल्य ३ ५ । ११ राजविनोद–कवि उदयराज मूल्य २ २५ । १२ वृत्तसंग्रह, मूल्य १ ७५ । १३ नृत्यरत्नकोष प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण मूल्य ३ ७५ । १४ उक्ति-रत्नाकर–पं साधुसुन्दरगणि मूल्य ४ ७५ । १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं दुर्गाप्रसाद द्विवेदी मूल्य ४ २५ । १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ मूल्य १ ५ । १७ ईश्वर विलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट मूल्य ११ ५ । १८ पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट मूल्य ४ । १९ रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट मूल्य २ ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१ कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ मूल्य १२ २५ । २ क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४ ७५ । ३ लावारासा–गोपालदान मूल्य ३ ७५ । ४ बांकीदासरी ख्यात–महाकवि बांकीदास मूल्य ५ ५ । ५ राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग १ मूल्य २ २५ । ६ जुगल विलास–कवि पीथल मूल्य १ ८५ । ७ कवीन्द्र कल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २ । ८ भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी मूल्य १ ७५ । ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १ मूल्य ७ ५ । १० मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग १ मूल्य ८ ५ न पै । ११ रघुवरजसप्रकास किसनाजी आढा मूल्य ८ २५ न पै

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित । २ शकुनप्रदीप–लावण्य शर्मा । ३ करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४ बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५ पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं कृष्णमिश्र । ६ काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर । ७. वसन्त विलास फागु । ८ नृत्यरत्नकोष भाग २ । ९ नन्दोपाख्यान । १० वस्तुरत्नकोष । ११ चान्द्रव्याकरण । १२ स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि । १३ प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ । १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह । १५ कविकौस्तुभ–पं रघुनाथ मनोहर । १६ दशकण्ठवधम्–पं दुर्गाप्रसाद द्विवेदी । १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य मा पद्मनाभ । १८ राजप्रशस्तिप्रबन्ध । १९ हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि । २० ठक्कुर फेरु रचित रत्नपरीक्षादि ।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१ मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग २–मुंहता नैणसी । २ गोराबादल पदमिणी चउपई–कवि हेमरतन । ३ पार्श्वभागवली–कवि मोतीराम । ४ सुजान संवत–कवि उदयराम । ५ राजस्थानी दूहा संग्रह । ६ वीरवाण–ढाढी बादर । ७ राठोडांरी वंशावली । ८ सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची । ९ राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची भाग २ । १० देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह म्होकमसिंघरी वात । ११ पुरोहित जयसीराम और अन्य वार्ताएँ । १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची भाग १ ।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेक संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

संचालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामें इतिहास, धर्मशास्त्र, पुराण और कथा आदि अनेक विषयोंके साथ ही काव्यशास्त्रकी विपुल उन्नति हुई है जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न काव्य शैलियोंका अनूठे रूपमें विकास हुआ है। उदाहरणार्थ गीत रूपक, मुक्तक वचनिका, वात, पवाड़ा, विगत, ख्यात और समस्या आदि सहस्रों राजस्थानी रचनाओंको लिया जा सकता है। अनेक काव्य-ग्रन्थोंमें गीत, दूहा, नीसाणी, झूलणा, चौपाई, कवित्त आदि छन्दोंका प्रयोग भाव, भाषा एवं काव्य-कलाकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार राजस्थानी काव्यकी विपुलताके आधार पर राजस्थानी काव्य-शास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थोंका निर्माण भी हुआ जिनमें रस, छन्द, अलङ्कार और नायक-नायिका भेदादि विषयोंका विस्तृत एवं सम्यक विवेचन प्राप्त होता है।

चारण कवि किसनाजी आढ़ा रचित 'रघुवरजसप्रकास' राजस्थानी छन्द शास्त्र विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। ग्रन्थकर्त्ताने इसमें राजस्थानी काव्यमें प्रयुक्त विभिन्न छन्दोंके लक्षण प्रस्तुत करते हुए स्वरचित उदाहरणोंके रूपमें भगवान् श्रीरामचन्द्रका सुयश गान भी किया है। राजस्थानी काव्य शास्त्रके विद्वानोंमें 'रघुवरजसप्रकास'के प्रकाशनकी बहुत समय से प्रतीक्षा थी।

राजस्थानके सुपरिचित साहित्यसेवी और बृहद् राजस्थानी शब्दकोशके कर्त्ता श्रीसीतारामजी लाळसने कुछ मास पूर्व हमें प्रस्तुत ग्रन्थकी प्रति बताई तो हमने राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके लिए उपयोगी समझते हुए इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। प्रसन्नताका विषय है कि यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर काव्यप्रेमियोंके हाथोंमें पहुँच रहा है। श्रीसीतारामजी लाळसने सपरिश्रम इसका सम्पादन किया है और भूमिकामें सम्बद्ध विषयोंकी आवश्यक सूचनाएँ दी हैं अतः वह धन्यवादके पात्र हैं।

इस ग्रन्थके प्रकाशनमे जो व्यय हुआ है उसका अर्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रदान किया है। तदर्थ सरकारको धन्यवाद अर्पित हैं।

महाशिवरात्रि वि सं २ १५
भारतीय विद्या भवन
बम्बई।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर।

निरंतर बढ़ते ही गये जिसके फलस्वरूप आगेके ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके छंद हमें मिलते हैं।

अन्य भाषाओंके समान ही राजस्थानी भाषामें विशिष्ट रीति-ग्रन्थोंकी रचना प्रारम्भ हुई। रीति-ग्रन्थकारोंने अनेक मौलिक छंदोंका भी निर्माण किया।

वर्णवृत्त एवं मात्रिक छंद हिन्दीमें भी बहुत अधिक संख्यामें प्राप्त हैं परन्तु गीत नामक छंद डिंगलकी अपनी नवीनतम एवं मौलिक रचना है। यद्यपि राजस्थानी साहित्यके निर्माणमें चारण कवियोंकी ही प्रधानता है फिर भी यहां पर यह कहना होगा कि डिंगल गीत छंदके रचयिता तो चारण कवि ही हैं। छंदशास्त्रका सबसे प्राचीनतम संस्कृतका पिंगल मुनिकृत पिंगल छंद शास्त्र है। ग्रन्थकारने अपने पिंगल छंद शास्त्रमें पूर्वाचार्योंका उल्लेख किया है परन्तु उन सबके नाम सूत्रोंमें ही रह गये—उनके ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते हैं। पिंगल मुनिके छंदशास्त्रके बाद छंदोंका विशद वर्णन अग्निपुराणमें मिलता है परंतु पिंगल छंदशास्त्र और अग्निपुराणमें वर्णन किये गये छंदशास्त्रका प्रकरण परस्पर मिलता-जुलता ही है। इसके बाद छंद शास्त्र पर अनेक ग्रंथ रचे गये। उनमेंसे 'वृत्त-बोध' 'वाणी भूषण' 'वृत्त-रत्नाकर' 'वृत्त-दर्पण' 'वृत्त कौमुदी' 'सुवृत्त तिलक' और 'छन्दो मंजरी' बहुत प्रसिद्ध है। केदार भट्ट विरचित 'वृत्त रत्नाकर' और गंगादास रचित 'छंदो-मंजरी'का तो घर-घर प्रचार है। ये दोनों ग्रंथ इस विषयके पूर्ण मान्य ग्रन्थ हैं।

हिन्दी भाषामें रीतिकालीन कवियोंने अनेक छन्दशास्त्रोंकी रचना की। उनमें कई प्राकृतके छंदों और उपयुक्त संस्कृत रीतिग्रंथोंके छंदोंको ग्रहण किया गया। इस प्रकार पूर्वापर पद्धत्यानुसार हिन्दीमें भी छंदकि लाक्षणिक ग्रंथ पृथक लिखे गये।

इधर मरु-भाषा डिंगल या राजस्थानीमें भी समय समय पर छंदोंके लाक्षणिक ग्रन्थ रचे गये। सर्वप्रथम पिंगल मुनिके संकेत मात्र लेकर नागराज पिंगळ[1] डिंगल छन्दशास्त्र नामक बृहद् ग्रंथ रचा गया परन्तु मूल ग्रंथके रचयिताके नामका पता न चला और यह ग्रन्थ पूर्णरूपमें प्राप्त भी नहीं है। दो स्थानों पर मैंने इस ग्रन्थकी पांडुलिपियां देखी हैं छंदोंके साथ-साथ गीतोंके भी लक्षण दिए गए हैं परन्तु यह ग्रन्थ अभी अप्राप्य सा ही है।

उपयुक्त ग्रन्थके अतिरिक्त अद्यावधि डिंगलमें छंदशास्त्र पर प्राप्त ६ ग्रंथ हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

---

१ नागराज पिंगळ छंदशास्त्रकी एक प्रति सिवाना नगरमें एक जैन यतिके अधिकारमें सुरक्षित है

१	पिंगळ-शिरोमणि	रावळ हरराज कृत
२	पिंगळ-प्रकाश	हमीरदान रतनू कृत
३	भगवत पिंगळ	,, ,,
४	हरि पिंगळ	जोगीदास चारण कृत
५	कवि-कुळबोध	उदयराम बारहठ कृत
६	रघुनाथरूपक	मंछाराम सेवग कृत
७	रघुवरजसप्रकास	किसनाजी आढा कृत
८	रण-पिंगळ	दीवाण रणछोड़जी द्वारा संग्रहीत
९	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारिदानजी मीसण कृत

उपर्युक्त ९ लाक्षणिक ग्रंथोंमें भगवत पिंगळको छोड़ कर इनमें लक्षणोंके साथ साथ गीतोंके लक्षण व रचना नियम दिये गये हैं। भगवत पिंगळमें केवल गीतोंके रचनार्थ नियम न देकर केवल गीत ही लिए गए हैं।

हमने जिन ग्रंथोंके नाम ऊपर दिए हैं उनमें केवल तीन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और चौथा यह रघुवरजसप्रकाश है। शेष पांच ग्रन्थ अप्रकाशित हैं।

कवि परिचय

प्रस्तुत रीतिग्रन्थ रघुवरजसप्रकासकी समाप्ति पर स्वयं कविने एक छप्पय लिख कर अपना वंश-परिचय दिया है वह इस प्रकार है —

छप्पै

दुरसा घर किसनेस 'किसन' घर सुकवि महेसुर ।
सुत 'महेस' 'खुमांण' 'खांन साहिब' सुत जिण घर ॥
'साहिब घर पनजी' है 'पना सुत 'बुधह' सुकव बुध ।
बुधह घर नट पुत्र होत जग किसन कुवी भण ॥
'माल्ह' किसन सुरधर उतन परगट नगर चोपटियो ।
चारण जात आढा विगत 'किसन' सुकवि पिंगळ कियो ॥

स्वयं कवि द्वारा प्रदत्त वंश-परिचयसे हमें ज्ञात होता है कि लाक्षणिक ग्रंथ रघुवरजसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनजी राजस्थानके प्रसिद्ध एवं राष्ट्र भक्त कवि आढा गोत्रके चारण श्रीदुरसाजीकी वंश-परम्परामें थे। प्रस्तुत ग्रंथ रचयिताके परिचयके पूर्व उनके पूर्वज चारण-कुल भूषण सुकवि दुरसाजीका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यकीय होगा।

सुकवि दुरसाजी आढा गोत्रके चारण थे जिनका जन्म जोधपुर राज्यांतर्गत सोजत तहसीलके धूंधला नामक ग्राममें अमराके पुत्र मेहाके घर संवत्

निरंतर बढ़ते ही गये जिसके फलस्वरूप आगेके ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके छंद हमें मिलते हैं।

अन्य भाषाओंके समान ही राजस्थानी भाषामें विशिष्ट रीति-ग्रन्थोंकी रचना प्रारम्भ हुई। रीति-ग्रन्थकारोंने अनेक मौलिक छंदोंका भी निर्माण किया।

वर्णवृत्त एवं मात्रिक छंद हिन्दीमें भी बहुत अधिक संख्यामें प्राप्त हैं परन्तु गीत नामक छंद डिंगलकी अपनी नवीनतम एवं मौलिक रचना है। यद्यपि राजस्थानी साहित्यके निर्माणमें चारण कवियोंकी ही प्रधानता है फिर भी यहां पर यह कहना होगा कि डिंगल गीत छंदके रचयिता तो चारण कवि ही हैं। छंदशास्त्रका सबसे प्राचीनतम संस्कृतका पिंगल मुनिकृत पिंगल छंद शास्त्र है। ग्रन्थकारने अपने पिंगल छंद शास्त्रमें पूर्वाचार्योंका उल्लेख किया है परन्तु उन सबके नाम सूत्रोंमें ही रह गये—उनके ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते हैं। पिंगल मुनिके छंदशास्त्रके बाद छंदोंका विषय वर्णन अग्निपुराणमें मिलता है परन्तु पिंगल छंदशास्त्र और अग्निपुराणमें वर्णन किये गये छंदशास्त्रका प्रकरण परस्पर मिलता-जुलता ही है। इसके बाद छंद शास्त्र पर अनेक ग्रंथ रचे गये। उनमेंसे 'श्रुत-बोध' 'वाणी भूषण' 'वृत्त रत्नाकर' 'वृत्त-दर्पण' 'वृत्त कौमुदी' 'सुवृत्त तिलक' और 'छंदो मंजरी' बहुत प्रसिद्ध हैं। केदार भट्ट विरचित 'वृत्त रत्नाकर' और गंगादास रचित छंदो-मंजरी का तो घर-घर प्रचार है। ये दोनों ग्रंथ इस विषयके पूर्ण मान्य ग्रन्थ हैं।

हिन्दी भाषामें रीतिकालीन कवियोंने अनेक छंदशास्त्रोंकी रचना की। उनमें कई प्राकृतके छंदों और उपर्युक्त संस्कृत रीतिग्रंथोंके छंदोंका ग्रहण किया गया। इस प्रकार पूर्वापर परम्परानुसार हिन्दीमें भी छंदोंके लाक्षणिक ग्रंथ पृथक लिखे गये।

इधर मरु-भाषा डिंगल या राजस्थानीमें भी समय समय पर छंदोंके लाक्षणिक ग्रन्थ रचे गये। सर्वप्रथम पिंगल मुनिके संकेत मात्र लेकर नागराज पिंगळ[1] डिंगल छंदशास्त्र नामक बृहद् ग्रंथ रचा गया परन्तु मूल ग्रंथके रचयिताके नामका पता न चला और यह ग्रन्थ पूर्णरूपमें प्राप्त भी नहीं है। दो स्थानों पर मैंने इस ग्रन्थकी पांडुलिपियां देखी हैं छंदोंके साथ-साथ गीतोंके भी लक्षण दिए गए हैं परन्तु यह ग्रन्थ अभी अप्राप्य सा ही है।

उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त अद्यावधि डिंगलके छंदशास्त्र पर प्राप्त ६ ग्रंथ हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

---

१ नागराज पिंगळ छंदशास्त्रकी एक प्रति जिसका बनरमें एक जैन मनिके अधिकारमें सुरक्षित है

१५९२में हुआ था। दुर्भाग्यसे बाल्यावस्थामें ही पितृ प्रमसे वंचित हो गये[1]। अत: दगड़ी गाँवके ठाकुर श्री प्रतापसिंहजी सूडाने इनका पालन-पोषण किया और वयस्क होने पर अपने यहां कार्य पर रख लिया। दुरसाजी अपनी काव्य प्रतिभाके कारण शीघ्र ही विख्यात हो गये और दिल्लीके सम्राट अकबरके दरबारमें भी अच्छा सम्मान प्राप्त किया।

दुरसाजी राजस्थानके बहुत लोकप्रिय और यशस्वी कवि हुए हैं। आपने कविताके माध्यमसे बहुत सम्मान व धन प्राप्त किया।

काव्य रचनाके दृष्टिकोणसे भी दुरसाजीका स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है इसमें कोई संदेह नहीं। इनके लिखे तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—१ विरद छिहत्तरी २ किरतारबावनी और ३ श्रीकुमार अज्जाजीनी भूचर मोरीनी गजगत। इन ग्रंथोंके अतिरिक्त दुरसाजीके लिखे पचासों डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं।

दुरसाजीके दो स्त्रियां थीं जिनसे चार पुत्र हुए। ये अपने सबसे छोटे पुत्र किसनाजीके साथ पांचेटियामें ही रहते थे। वहीं सं० १७१२में इनका देहावसान हुआ। इन्हीं दुरसाजीकी वंश-परम्परामें किसनाजीने मारवाड़ राज्यांतर गत पांचेटिया ग्राममें जन्म लिया जिसका वंश क्रम इस प्रकार है—

१ दुरसो
२ किसोजी
३ महेस
४ खुमान
५ साहिबखांन
६ पनजी
७ दूल्हजी
८ किसनोजी

इस प्रकार कवि-परिचयके प्रारम्भमें दिए हुए छप्पयके अनुसार रघुवर जसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनाजी आढ़ाका जन्म दुरसाजी आढ़ाकी आठवीं पुश्तमें (पीढ़ीमें) दूल्हाजी नामक कविके घर हुआ। दूल्हजीके कुल छः पुत्र थे जिनमें किसनोजी तीसरे थे। इनके जीवनके सम्बन्धमें श्रीमोती

---

१ नोट– इनके पिताने सन्यास ले लिया था।

लालजी मेनारिया द्वारा लिखित राजस्थानी भाषा और साहित्यमें बहुत संक्षिप्त परिचय ही प्राप्त है।

किसनाजी संस्कृत प्राकृत बृजभाषा एवं राजस्थानी भाषाके उद्‌भट विद्वान थे। लाक्षणिक ग्रन्थोंका भी इनका ज्ञान पूर्ण परिपक्व था। इतिहासकी ओर भी आपकी विशेष रुचि थी। कर्नल टॉडको अपना राजस्थानका वृहद् इतिहास लिखनेमें किसनाजीके अथक परिश्रमसे पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई थी।

ये उदयपुरके तत्कालीन महाराणा भीमसिंहजीके पूर्ण कृपापात्र थे। महाराणा भीमसिंहजीने आपको काव्य रचनासे प्रभावित होकर सीसोवा नामक ग्राम प्रदान किया था जो अद्यावधि इन्हींके वंशजोंके अधिकारमें रहा।

महाराणा भीमसिंहजी द्वारा इस ग्रामको किसनाजीको प्रदान करनेका किसनाजी कृत निम्नलिखित एक डिंगल गीत हमारे संग्रहमें है—

गीत

कीवी कुरब-भीड़ न मूकी कोई
चरणां भूली छछक चरे।
तो जिम 'भीम' दिये तांबा पत्र
करां अजाची मनां करे॥ १॥

पटके मदत दखांना पेटां
देतां बेटां पटा दिये।
सीसोदी सांसण सीसोवा
चारण हाथां सीज दिये॥ २॥

मन महाराण घणो मेवाड़ा
कार्ज पाड़ा दसू दमा।
राजा मन बांमे रजवाड़ा
तू चड़वाड़ा दिये तमा॥ ३॥

अपरन तणी दियारी अंजस
ओर्षा अंजस सिधारी।
मांगी माथ बणायो 'भीमा'
हाथां देन हियारी॥ ४॥

किसनाजी द्वारा रचे हुए ग्रन्थ दो ग्रंथ उपलब्ध हैं—एक भीमविलास और दूसरा रघुवरजसप्रकास। भीमविलास महाराणा भीमसिंहजीकी आज्ञासे संवत

१८७१में लिखा गया था जिसमें उक्त महाराजाका जीवन-वृत्त है। रघुवरजस-प्रकास प्रकाशित रूपमें आपके समक्ष है। इनके अतिरिक्त कविके रचे हुए फुट कर गीत अधिक संख्यामें उपलब्ध होते हैं जो कविकी विशिष्ट काव्य-प्रतिमा एवं प्रौढ ज्ञानका परिचय देते हैं।

रघुवरजसप्रकास

प्रस्तुत ग्रंथ रघुवरजसप्रकास राजस्थानी भाषाका छंद रचनाका उत्कृष्ट लाक्षणिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थमें संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश व हिन्दीके छंदोंका अपनी मौलिक रचनामें पूर्ण विवेचन है।

ग्रंथमें कविने मुख्य विषय छंद रचनाके लक्षणों व नियमोंका बड़ी सरल व प्रसादगुणपूर्ण भाषामें वर्णन किया है। छंदोंके वर्णनमें कविने अपनी राम भक्तिका पूर्ण परिचय दिया है। राम-गुणगान ही कविका मुख्य ध्येय था। अतः छंद रचनाके लक्षणोंके साथ-साथ रामगुण-वर्णन करते हुए कविने एक पंथ दो काजकी कहावतको पूर्ण रूपसे चरितार्थ किया है।

प्रकाशित रीति ग्रन्थ रघुनाथरूपकमें लाक्षणिक वर्णनके अतिरिक्त उदाहरणके गीतोंमें रामकथाका ही सहारा लिया है। इसमें रामायणकी भाँति रामगाथा क्रमबद्ध चलती है। परन्तु किसनाजीने अपने ग्रन्थमें मुक्तक रूपसे राम महिमाका वर्णन किया है। इसमें कोई कथाका क्रम नहीं है। कविने रीतिके अनुसार ग्रंथको पांच भागोंमें विभाजित किया है। छंद-लक्षण जैसे क्लिष्टतर विषयको अत्यंत सरल बना कर ग्रन्थको पूर्ण प्रसादगुणयुक्त कर दिया है। ग्रंथका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

प्रथम प्रकरणमें मंगलाचरण गणागण गणागणदेव गणागणका फलाफल गण मित्र शत्रु दोषादोष आठ प्रकारके दग्धाक्षर गुरु लघु लघु गुरुकी विधि मात्रिक गण मात्रिक गणोंके भेदोपभेद व उनके नाम तथा छंदशास्त्रके आठ प्रत्ययों—१ प्रस्तार २ सूची ३ उद्दिष्ट ४ नष्ट ५ मेरु, ६ खंडमेरु ७ पताका ८ मर्कटिका संक्षिप्त वर्णन व विवेचन किया गया है।

द्वितीय प्रकरणमें मात्रिक छंदका वर्णन किया गया है। कविने इस प्रकरणमें कुल २२४ मात्रिक छंदोंके लक्षण देकर उनके उदाहरण भी दिए हैं। लक्षण कहीं-कहीं पर प्रथम दोहोंमें या चोपाईमें दिये गये हैं। फिर छंदोंके उदाहरण दिये हैं। कहीं-कहीं लक्षण और छंद सम्मिलित ही दे दिये गये हैं। इस प्रकरणमें

राजस्थानीकी साहित्यिक गद्य रचनाके नियम भी समझाए हैं। उनके भेदोपभेद[1] संक्षिप्त रूपमें दिये हैं जो राजस्थानी साहित्यका ही एक मुख्य भाग है। ऐसी गद्य रचनाओंका हिन्दीमें अभाव ही है। इस प्रकरणमें चित्र-काव्यके भी उदाहरण कमलबंध छत्रबंध आदि समझाए गये हैं।

तृतीय प्रकरणमें छंदोंके दूसरे भेद वर्णवृत्तोंके लक्षण व उदाहरण दिए हैं। प्रारम्भमें कविने एक अक्षरसे छब्बीस अक्षरके छंदोंके नाम छप्पय कवित्तमें गिनाए हैं। ये सब छंद संस्कृत छंद हैं—इनका स्वतंत्र उदाहरण राजस्थानीमें नहीं मिलता। तत्पश्चात् क्रमश ११७ वर्णवृत्तोंके लक्षण व उदाहरण दिये हैं। कविने अपनी अनन्य रामभक्ति प्रकट करते हुए छंदोंके उदाहरणस्वरूप राम गुणगान किया है।

ग्रंथके इस चौथे प्रकरणमें राजस्थानी (डिंगल) गीतका (छंदोंका) विस्तार पूर्वक विशद् वर्णन है जो इस ग्रंथका मुख्य विषय है और साथमें डिंगल भाषाके छंदशास्त्र या लाक्षणिक ग्रन्थकी अपनी विशेषता भी है। गीत नामक छंद उसके भेद डिंगल भाषाके कवियोंकी अपनी मौलिक देन है। ग्रन्थकारने गीतोंके वर्णनमें गीतोंके अधिकारी गीतोंके लक्षण, गीतोंकी भाषा गीतोंमें वैणसगाई, वैण सगाईके नियम वैणसगाई और अक्षरोट अक्षरोट और वैणसगाईमें अंतर गीतोंमें नौ उक्तियां गीतोंमें प्रयुक्त होने वाली जथाए, गीत रचनामें माने गये ग्यारह दोष एवं विभिन्न गीतोंकी रचना नियम आदिका पूर्ण और सरल भाषामें विशद् वर्णन दिया है।

राजस्थानीमें प्राप्त छंद रचनाके लाक्षणिक ग्रन्थोंमें इतना विस्तारपूर्ण एवं इतने गीतोंका वर्णन किसी भी ग्रन्थमें प्राप्त नहीं होता है। प्राप्त ग्रन्थोंमें जो गीत दिये गये हैं उनकी जानकारी यहां दी जाती है—

१ पिंगल-सिरोमणि—इसमें कुल तेतीस गीतोंके लक्षण व उदाहरण दिए गए हैं।

२ हरि पिंगल—इसमें प्रथम छंदोंके लक्षण दिये गये हैं। तत्पश्चात् बाईस गीतोंके भी लक्षण दिये गये हैं। इसकी रचनाका समय संवत् १७२१ है।

३ पिंगळप्रकास—इसमें केवल 'छोटा सांणोर' और उसके तीस भर्वो तथा 'बडो सांणोर' और उसके चार भर्वोका ही वर्णन है शेष पुस्तकमें छंदोंके लक्षण हैं।

---

[1] इस प्रकरणमें राजस्थानीकी गद्य सम्बन्धी रचनायें दवावैत वचनिका और वारता आदि समझाई गई हैं।

४ लखपतपिंगल—इसमें गीत रचनाके लक्षण तो नहीं हैं परन्तु ग्रन्थके अंतमें चौबीस भिन्न-भिन्न गीतोंकी जाति व गीत दिए गए हैं।

५ कविकुलबोध—इसमें चौरासी प्रकारके गीत अट्ठारह उक्तियां बाईस जथाएं आदिका बड़ा विशद् वर्णन है। यह अत्युत्तम लाक्षणिक ग्रंथ है।

६ रघुनाथरूपक—यह प्रकाशित ग्रन्थ है। इसमें बहत्तर प्रकारके गीतोंका वर्णन है।

७ डिंगल-कोश—यह ग्रन्थ प्रधान रूपसे पद्यबद्ध शब्दकोश है। इसमें भी पन्द्रह गीतोंके लक्षण दिए हैं और उदाहरणके गीतोंमें डिंगलके पर्यायवाची कोशके शब्दोंका वर्णन है।

८ रघु-पिंगल—यह छन्दशास्त्रका वृहद् लाक्षणिक ग्रंथ है। इसके तीन भाग हैं। इसके तृतीय भागमें भिन्न-भिन्न प्रकारके तीस गीतोंके लक्षण व उदाहरण दिए गये हैं। अधिकांश रघुनाथरूपकके ही गीत इसमें हैं। यह ग्रंथ प्रकाशित है किन्तु अप्राप्य है।

९ रघुवरजसप्रकास—प्रस्तुत ग्रन्थ रघुवरजसप्रकासमें ९१ प्रकारके गीतोंके लक्षण आदिका विस्तृत वर्णन है। केवल गीतोंका ही वर्णन नहीं गीतोंके विभिन्न अंगोंका वर्णन भी बड़े ही सुन्दर एवं विस्तृत ढंगसे किया गया है। गीतोंके ग्यारह प्रकारके दोष गीतोंमें वयणसगाईके प्रयोगका महत्व आदिका सुन्दर वर्णन है। गीतोंमें वैणसगाईके प्रयोगके जो उदाहरण दिए गये हैं वे कविकी रचनाके महत्वको द्विगुणित कर ग्रंथकारकी काव्य प्रतिभाका परिचय देते हैं।

छंद शास्त्रमें चित्र काव्यका अपना एक विशेष स्थान है। साहित्यकारोंने इसे एक स्वतन्त्र रूपसे अलंकार माना है जो शब्दालंकारका एक भेद माना गया है। संस्कृत व व्रज भाषामें चित्र काव्य पर्याप्त मात्रामें उपलब्ध होता है परन्तु राजस्थानी (डिंगल) गीतोंमें चित्र काव्यका उल्लेख नहीं मिला। अद्यावधि डिंगल गीतोंके लाक्षणिक ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं—उनमें किसीमें भी चित्र काव्य सम्बन्धी विवरण नहीं है परन्तु रघुवरजसप्रकासमें एक आळीबंध वेलियो सांणोर गीतका चित्र-काव्यके रूपमें उदाहरण मिला है। मेरे निजी संग्रहमें इस आळीबंध गीतके चित्र बने हुए हैं। एक-दो उदाहरण प्राचीन भी मिलते हैं। इन उदाहरणोंसे पता चलता है कि डिंगल गीतमें भी चित्रकाव्यकी रचना प्रारंभ हो गई थी।

पंचम प्रकरण ग्रन्थका अंतिम प्रकरण है। इसमें ग्रन्थाकारने एक राज स्थानी छंद विशेष निसांणीका वर्णन करते हुए इसके मुख्य बारह भेदोंके साथ इसके भेदोपभेदोंका तथा एक मात्रिक छंद भड़ल्लाका भी वर्णन किया है। प्रकरणके प्रारम्भमें प्रथम निसांणीके लक्षणोंको देकर उदाहरणोंको प्रस्तुत किया है। फिर रामगुण-गाथा गाते हुए निसांणीके अन्य भेदोंका उत्तम रीतिसे वर्णन किया है। प्रकरणके अंतमें कविने अपनी वंशपरम्पराका परिचय देकर ग्रंथको समाप्त किया है। स्वयम् कवि द्वारा दिए गये इस वंश-परिचयसे कविके जीवन वृत्तको जाननेमें बहुत सहायता प्राप्त होती है।

प्रन्थ रचना-काल

इस ग्रंथकी रचनाका प्रारंभ और समाप्ति सम्बन्धी स्वयं कविने अपने वंश-परिचयके पश्चात् एक छप्पय कवित्त इस प्रकार दिया है जिससे पता चलता है कि यह ग्रंथ वि. सं. १८८८ की माघ सुक्ला चतुर्थी बुधवारको प्रारंभ किया गया था। कविने अपनी कुशाग्र बुद्धि और प्रौढ़ ज्ञानके सहारे वि. सं. १८८९के आश्विन् सुक्ला विजयादशमी शनिवारको ग्रंथ पूर्ण रूपसे तैयार कर लिया। ग्रन्थ रचनाके सम्बन्धमें स्वयं कविने अपने ग्रन्थके समाप्ति प्रकरणमें लिखा है—

छप्पय कवित्त

उदियापुर आरांण रांण भीमाजळ रावत।
कवरां-मुकट'जवांन भीत मम चम भीवावत॥
अट्ठारै से समत बरस ईठियी माह सुद।
बुधवार तिथ चोथ हुवौ प्रारम्भ ग्रन्थ हद॥
अठारै अनै गुणयासिये सुद आसोज सराहियो।
सनि विजैदसमी रघुवर सुजस 'किसन' सुकवि सुभमत लियौ॥

भूमिका समाप्त करनेके पूर्व हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके प्रति आभार प्रदर्शित किए बिना नहीं रह सकते। कारण कि प्रतिष्ठान इस प्रकारके अमूल्य ग्रन्थ जो साहित्यकी अप्राप्य निधि हैं 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत प्रकाशित कर साहित्यके कलवरको बढ़ानेमें सतत प्रयत्नशील है। प्रस्तुत ग्रन्थको इस रूपमें प्रकाशित करानेका श्रेय श्रद्धेय मुनिवर श्रीजिनविजयजीको है जिन्होंने राजस्थानीके [illegible] इस अमूल्य ग्रन्थका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला द्वारा करना स्वीकार किया। श्रीगोपालनारायणजी बहुरा एम. ए. व श्रीपुरुषोत्तमलालजी मेनारिया एम. ए. श्री साहित्यरत्नका भी पूर्ण रूपसे आभार मानता हूँ कि इन्होंने समय-समय पर पुस्तकके मूल संशोधन और सम्पादन-कार्यमें योग दिया।

हमारे संग्रहमें ग्रंथकी प्रतिलिपि मौजूद थी परन्तु उनके क्षतविक्षत होनेके कारण उसका सम्पूर्ण प्रकाशन सम्भव नहीं था। इस कार्यके लिए मेवाड़के अन्तर्गत मेंगटिया ग्रामके ठा श्री ईश्वरदानजी आसियाने प्रस्तुत ग्रन्थकी हस्त लिखित प्रति जो पूर्ण सुरक्षित थी हमें प्रदान कर अपूर्व सहयोग दिया है। उसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं और मैं उनके इस सहयोगके लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

जोधपुर,
२१ फरवरी १९६ ई

सीताराम लालस
सम्पादक

विषय सूची

क्र. सं	विषय	पृष्ठ

मात्रा वृत्ति वरणण

दूहा

विबुध-भाख ब्रज भाख बिच, पिंगळ सोहत प्रसिद्ध।
मुरधर-भाखा जिण निमंत, 'किसनै' रूपग किद्ध॥ ३
जांणण छंदां सुख जपण, राघव-जस दिन-रात।
माड़ौ सांठौ ज्यूं भरै, जाणौ पोहकर जात॥ ४
पेट काज नर जस पढ़ै, ग्रो कारज ग्रहलोक।
जस राघव जपणौ जिकौ, तेख काज परलोक॥ ५
जुध करणौ जमराज हूं, काज विलंबै केण।
तव नस-दीहा हर तिकौ, जीहा दीघी जेण॥ ६

अथ गणागण वरणण*

मगण त्रिगुरु यगणाद लघु, भाख कहै सह कोय।

---

३ विबुध भाख—देववाणी। निमंत—लिए। रूपग—वह काव्य-ग्रंथ जिसमें किसी महान योद्धाका चरित्र हो या वह रीतिग्रंथ जिसमें विशेषकर डिंगलके गीत छंदोंकी रचना आदिके नियमों का वर्णन हो। किद्ध—किया।

४ माड़ौ—(सं माटक) रिरामा। सांठौ—अधिक ईख। पोहकर—पुष्कर। जात—यात्रा।

५ ग्रहलोक—इहलोक यह संसार। तेख—समझ समझना।

६ केण—किसलिए। तव—(स्तवन) स्तुति। नस-दीहा—निशि-दिन। हर—(हरि) ईश्वर। जीहा—जिह्वा। जेण—जिसने जिसने।

*

नाम	रेखारूप	वर्णरूप	लघु संज्ञा	शुभाशुभ
मगण	S S S	मागाना	म	शुभ
यगण	I S S	यगाना	य	
भगण	S I I	भागन	भ	"
नगण	I I I	नगन	न	
रगण	S I S	रागना	र	अशुभ
सगण	I I S	सगना	स	
तगण	S S I	तागान	त	
जगण	I S I	जगान	ज	

अथ गण मित्र सत्रु कथन*

दूहौ

म न सुमित्र य भ दास मुण, वख ज त विहु उदास ।
र स बिहु वै गण सत्रु रट, पद फिर दुगण प्रकास ॥ १०

अथ दुगण कथन

कवित्त छप्पै

मित्र मित्र रिध सिध, मित्र दासह जय पावत ।
हित्तु उदास घन हांण, मित्र अरि रोग यथावत ॥
दास मित्र सिध काज, दास दासह सुबसीकत ।
दास उदासह हांण, दास अरि हार सु भाक्त ॥
उदास मित्र फळ तुच्छ गिण, विपत उदास जु दास कर ।
उदास उदास सु निफळ कह, मिळ उदास रिपु सत्रु कर ॥ ११

१ मुण-कह। वख-कह। विहुं-दोनों।

* मित्र दास उदास और शत्रु गण

मित्र मगण नगण	फल	दास यगण भगण	फल
मित्र + मित्र	सिद्धि	दास + मित्र	सिद्धि
मित्र + दास	जय	दास + दास	वशीकरण
मित्र + उदासीन	हानि	दास + उदास	हानि
मित्र + शत्रु	रोग	दास + शत्रु	पराजय

†

उदासीन जगण तगण	फल	शत्रु रगण सगण	फल
उदासीन + मित्र	[illegible]	शत्रु + मित्र	शून्य
उदासीन + दास	विपत् (विपत्ति)	शत्रु + दास	[illegible]हानि
उदासीन + उदासीन	निष्फल (शून्य)	शत्रु + उदासीन	धनहानि
उदासीन + शत्रु	[illegible]	शत्रु + शत्रु	नाश

दूहो

सत्रु मित्र मिळ सुन्य फळ, सत्रु दास जिय हांण।
सत्रु उदाससं हांण अरि, अरि नायक खय जांण ॥ १२

दोसादोस कथन

दूहो

नर-कायय करवा निमत, वद गण अगण विचार।
गुण राघव मभ्फ असुभ गण, न कौ दोस निरधार ॥ १३

अथ अस्टदगध अखिर कथन

दूहो

ह भ्फ घ र ध न ख म आठ ही, दगध अखिर दाखंत।
कायथ अग्र वरजित तिकण, भल किव नह भाखंत ॥ १४

हकारादि अस्टदगध अखिर क्रमसूं उदाहरण

दूहो

हेत हांण तन रोग व्हे, नरपत भय धन नास।
ध्रीया घात निरफळ तवां, जस खय भ्रमण प्रवास ॥ १५

अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळका रूपग गीत कवित दूहा गाहा छंद तथा सरब छंदर आद दस अखिर नहीं आवै नै वरजणीक छै सो लिखां छां।

दूहो

ग्रं ग्रौ ग्रंमळ अग्रका, दाख ल द ह ग्रै दोय।
क च ट त वग्गका अंतका, पद दस वरणन होय ॥ १६

अरथ—ए १ ओ २ अ ३ अ ४ म ५ ल्ल ६ ल ७ ड ८ ञ ९ ण १०।

---

१२ खय–(क्षय) नाश।
१३ नर-कायव–(नरकाव्य) मनुष्यों प्रशंसात्मक काव्य। वद–कह। कौ–कोई।
१४ कायव–काव्य। किव–कवि। भाखंत–कहता है।
१५ तवां–कहता हूँ। आद–आदि प्रथम। अखिर–अक्षर। वरजणीक–त्याज्य।

अै दस अखिर गीत कवित छंदक पैल्ही न होय। एकार आगसौ अईकार (ए) ओकार आगलौ अऊकार (औ)। अकार आगलौ अ कार। मकार आगलौ यकार। भकार आगलौ सकार। सकार आगलौ ल्लकार नै लकार। अ दस आखर आखारै आद न होवै। नाग यूं कहणी छै। इति अरथ।

अथ गुरु लघु कथन

दूहौ

गण संजोगी आद गुरु, संजुत ब्यंदु गुरेण।
गुरु फिर वक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण॥ १७

उदाहरण

दूहौ

लक अम्हींणा भाग लग, सुपनै लिखीठ सोय।
मौजी राघव पलकमें, जन सरणागत जोय॥ १८

संजोगा आद वरण विचार

दूहौ

संजोगी पहलौ अखिर, क्स कोई ठौड़ क्सेख।
किर्या विचार प्रकार किण, लघु संग्या तिण लेख॥ १६

उदाहरण

दूहौ

रे नाहर रघुनाथरा, मळ जाहर थत अंक।
छिगर लिन्हाई छिनक विच, लहर दिन्हाई लंक॥ २०

---

१७ संजोगी–संयुक्त। संजुत–संयुक्त। व्यंदु–बिंदु। कळेण–(कला) मात्रा से।
१८ लंक–लंका। अम्हींणा–मेरा। सोय–वह। मौजी–उदार।
१९ क्सेख–विशेष।
२ मळ–इला पृथ्वी। थत–थान। छिनक विच–क्षण भर में।

अथ दीरघ दीरघ लघु करण विधि वरणणं

दूहो

लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुवरै छंद ।
दीह लघु लघु दीह करि, पढ़ि कविराज अनंद ॥ २१

उदाहरण

दूहो

सिर दस दस सिर साथतै, राम हतै घख राख ।
निग्रुधांणी चकत हुवा, भ्र ह ह ह वांणी भ्राख ॥ २२

अथ मगळादिक वरण गण नांम कथन

दूहो

मगण नांम संभू मुणै, राक्स तगण रसाळ ।
यगण याज भ्राखै इळा, जगण उरौज त्रिसाळ ॥ २३

तगण व्यौम कर सगण तव, रगण सूरमौ राख ।
वरण गणां वाळा विहद, यम कवि नांम स भ्राख ॥ २४

अथ मात्रा पंच गण नांम कथन

कवित्त छप्पै

ट ठ ड ढ ण गण भ्ररेह, मात्र गण पंच प्रमांणै ।
टगण छ कळ तेरह सुमेद, कवि ठगण यखांणै ॥
पंच कळा भ्रठ मेद, डगण चव कळ सु मेद पंच ।
ढगण तीन कळ तीन, मेद भाखंत नाग संच ॥
णगणहसु दु कळ दुव मेद निज लिख प्रसतार निहारियै।
तिण भेद तेर भ्रठ पंच भ्रम, दुव जिण नाम उचारियै ॥ २५

---

२१ दीह–दीर्घ ।
२२ घख–क्रोध । निग्रुधांणी–देवता । भ्राख–कहना ।
२३ रसाळ–रसयुक्त । इळा–पृथ्वी ।
२४ विहद–बदनाम । यम–ऐसे ।
२५ भ्ररेह–पवित्र । दु कळ–दो मात्रा । भ्रम।

प्रथम टगण छ मात्रा तेरह भेद नाम०

दूहौ

हर १ ससि २ सुरज ३ सुर ४ फणी ५, सेस ६ कमळ ७ ब्रह्मांण ८।
कळ ९ सु चंद्र १० ध्रुव ११ धरम १२ कहि जपै 'साळिकर' १३ जांण॥२६

A तृतीय ठगण पंच मात्रा आठ भेद नाम

दूहौ

इंद्रासण १ रवि २ चाप ३ कहि, हीर सु ४ सेखर ५ संच।
कुसुम ६ अहिगण ७ पाप ८ कह, आठ भेद कळ पंच॥ २७

B तृतीय डगण च्यार मात्रा पंच भेद नाम

दूहौ

करण दु गुरु १ करताळ सौं, अंत गुरु २ मन आंण।
पय हर ३ वसुपय ४ मध्य, अहिप्रिय चौ लघु पहिचाण॥ २८

---

२६. ब्रह्मांण–ब्रह्मा।
२८. चौ–चार।

०टगण ठगण और डगण मात्रिक गणों का नक्शा—

	रूप	संज्ञा		A			B	
		१ टगण						
१	ऽऽऽ	हर						
२	IIऽऽ	ससि		रूप	संज्ञा		रूप	संज्ञा
३	IऽIऽ	सूर्य			२ ठगण			३ डगण
४	ऽIIऽ	सुर	१	Iऽऽ	इंद्रासण	१	ऽऽ	कर्ण
५	IIIIऽ	फणी	२	ऽIऽ	रवि	२	IIऽ	करताळ
६	IऽऽI	सेस	३	IIIऽ	चाप	३	IऽI	पयहर
७	ऽIऽI	कमल	४	ऽऽI	हीर	४	ऽII	वसु पय
८	IIIऽI	ब्रह्मा	५	IIऽI	सेखर	५	IIII	अहिप्रिय
९	ऽऽII	कळि	६	IऽII	कुसुम			
१०	IIऽII	चंद्र	७	ऽIII	अहिगण			
११	IऽIII	ध्रुव	८	IIIII	पाप			
१२	ऽIIII	धर्म						
१३	IIIIII	साळिकर						

नोट—मूल ठगण में पायक है किन्तु शुद्ध पाप है।

चौथ ठगण तीन मात्रा तीन भद सप्पादि नाम ०

दूहौ

ध्वज चिन्ह वास चिराळ, चिर तौमर तूमर घास।
नूत माळ रस वलय अे, लावि त्रिमात्र प्रकास ॥ २९

त्रिमात्रा गुरुवादि द्वतिय भद नाम

दूहौ

सुरपति पट्टह ताळकर, ताळ अनंद छंद सार।
आदि गुरु त्रय मत्तकौ, नांम द्विभेद उचार ॥ ३०

त्रिमात्रा त्रतीय सरव-लघु भद नाम

दूहौ

भावा रस तांडव कहौ, आंकुस अौर अनार।
है त्रय लघुका नाम अे, त्रय मत्ता प्रस्तार ॥ ३१

पंचमो णगण द्विमात्रादि भव प्रथम एक गुरु नाम

---

२९. लावि–सप्पादि।

	रूप	* संज्ञा
		४ ठगण
१	।ऽ	ध्वज चिन्ह वास चिराळ चिर तौमर, तूमर, वास नूत माळ रस वलय
२	ऽ।	सुरपति पट्टह ताळकर, ताळ अनंद छंद सार
३	।।।	भावारस तांडव आंकुस अनार

	रूप	† संज्ञा
		२ णगण
१	ऽ	नूपुर, रसना मरग पर्एा चामर, कुन्डळ हिमेरा मुग्ध कम्मोरा बसम हार।
२	।।	प्रिय परमप्रिय।

दूहौ

नूपुर रसना भरण फणि, चांमर कुंडळ हिमेण।
मुग्घ वक्रमांणसु वलय, हारसु गुरु यकेण॥ ३२

द्विमात्रा द्विसमु भेद नांम

दूहो

निज प्रिय कहिये परम प्रिय, दु लघु द्वि मत्ता नांम।
गुण यम मात्रा पंच गण, रट कीरत रघुरांम॥ ३३

अथ साधारण गण नांम

दूहा

आयुध गण कह पंच कळ, दुज तुरंग कळ च्यार।
करण दु गुरु प्रिय दोय लघु, लघु गुरु ध्वज गुरु हार॥ ३४
तविया गण एता तकौ, समभ्रण छंद सुजांण।
ल कहिये समभ्रे लघु, ग कहिये गुरु जांण॥ ३५

अथ सोळस करम वरणण

दूहा

संख्या प्रस्तर सूचिका, नस्ट उदिस्ट सुमेर।
ध्वजा मरकटी जांण सुघ, आठ करम अफेर॥ ३६
आठ सुमत्ता करम अे, आठ वरण अपणाय।
पिंगळ मत अे कवि पढ़ै, सोळस करम सुभाय॥ ३७

---

३२ यकेण—एक।
३३ गुण—समझ। यम—इस प्रकार।
३५ तविया—कहे।
३६ प्रस्तर—प्रस्तार। सुघ—(सुधि) विद्वान्। अफेर—अटल।

प्रथम लछण

दूहौ

यतरी मत यतरा वरण, कितरा रूप हुवंत।
अन किव, किम पूछै उठै, संख्या तठै सभंत॥ ३८

संख्याविधि

दूहौ

एक दोय लिख पुरब जुगे, संख्या मत्त सुभाय।
दोय हूंत दुगणा वधै, संख्या वरण सभाय॥ ३९

अथ प्रस्तार लछण

दूहौ

संख्यामें कहिया सको, परगट रूप प्रकास।
जे लिख सरब दिखाळजै, सौ प्रस्तार सहास॥ ४०

मात्रा प्रस्तार विधि

दूहौ

पहला गुरु तळ लघु परट, सद्रस पंथ अग्र माय।●
वंचै जिकौ मात्रा वरण, ऊरध परठौ आय। ४१

---

३८ अन–अन्य।
४१ परठ–रख। वंचै–बाद रहना। ऊरध–ऊपर।

● मात्रिक जहां गुरु हो उसके नीचे लघु लिखो (पहला चिन्ह गुरु का चिन्ह है) फिर बाकी दाहिनी ओर ऊपरके चिन्होंकी नकल उतारो। बाईं ओर जितने स्थान रिक्त हों (अथवा दाहिनी ओरसे बाईं ओर तक) गुरु चिन्ह तब तक रखते चले जाओ जब तक कि सर्व लघु न आ जाय। जब सर्व लघु आ जाय तब उसीको उसका अन्तिम भेद समझो। प्रत्येक भेदमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि वह मात्रिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेदमें उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने मात्राका प्रस्तार होगा। यदि वह वर्णिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेदमें उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने वर्णोंका प्रस्तार होगा।

मात्रिक प्रस्तारमें सब भेदोंमें पहला भेद गुरुओंका तथा अन्तिम भेद पहला भेद लघुका होता है।

वर्णिक प्रस्तारमें पहला भेद गुरुओंका ही होता है।

वरण प्रस्तार विधि

दूहो

वरण तणा प्रस्तार विधि, गुरु तळ लघू गिणंत।
उबरै सौ कीजै उरघ, सब ही गुरू सुभंत॥ ४२

सूची लछण

सोरठौ दूहो

तवौ अमुक प्रस्तार, भेद किता लघु आद मल।
अर लघु अंत उचार, गुर अंतर गुर आद गुण॥ ४३
आद अंत (फिर) लघु ऊचरै, आद अंत गुरु अक्ख।
सूचीसू जद समभणौ, पेख आंक परतक्ख॥ ४४

---

४३ तवौ–कहो। मल–ठीक।

४४ पेख–देख कर। परतक्ख–प्रत्यक्ष।

(१) वर्णिक प्रस्तार ३ वर्ण	(२) वर्णिक प्रस्तार ४ वर्ण	विषम कम (प्रस्तार ५ मात्रा)	सम कम (प्रस्तार ६ मात्रा)
म SS	१ SSSS	१ ISS	१ SSS
य ISS	२ ISSS	२ SIS	२ IISS
र SIS	३ SISS	३ IIIS	३ ISIS
स IIS	४ II S	४ SSI	४ SIIS
त SI	५ SSIS	५ IISI	५ IIIIS
ज ISI	६ ISIS	६ ISII	६ ISSI
भ SII	७ SIIS	७ SIII	७ SISI
न III	८ IIIS	८ IIIII	८ IIISI
	९ SSSI		९ SII
	१ ISSI		१ IISII
	११ SISI		११ ISIII
	१२ IISI		१२ SIIII
	१३ S II		१३ IIIIII
	१४ ISII		
	१५ SIII		
	१६ IIII		

मात्रा सूची विधि

पूरब जुगळ पहलां पढ़ी, संख्या मत्त सहास।
पूरण अंक नेड़ौ तिकौ, पूरब अंक प्रकास ॥ ४५
आद लघु, लघु अंतमें, जितरा है कवि जाण।
तिणस् पूरब अंक ते, आद अंत गुरु आण ॥ ४६

चौपई

पूरण अंकस् तीजौ अंक, आद अंत लघु जिता निसंक।
जिणस् तीजौ अंक जिताय, आद अंत गुरु जिता कहाय ॥ ४७

मात्रा सूची सख्या रूप

१	२	३	५	८	१३

अथ वरण सूची विधि

चौपई

वरण संख ये दुगणी वेस, सम लघु गुरुचा रूप सरेस।
पूरण निकट पुरस अंक होय, आद अंत लघु गुरु है सोय ॥ ४८
अंक तीसरौ पूरण हू त, आद अंत लघु गुरुचौ कूत।
सूची कौतक अग्यस कीजै, तौ के आंन विधांन तवीजै ॥ ४९

वरण सूची सख्या रूप

२	४	८	१६	३२

अथ ऊदिस्ट लछण

चौपई

बीयौ रूप लिख कहै वताय। किसौ भेद ऊदिस्ट कहाय ॥ ५०

---

४५ जुगळ—दो। नेड़ौ—नजदीक।
४६ आण—लाओ।
४८ पुरस—पुरुष।
४९ पुरुषी—पुरुष। कूत—समझ। कौतक—खेल केवल कौतुक। तवीजै—कहा जाता है।
५ बीयौ—दूसरा।

अथ मात्रा ऊदिस्ट*

दूहा

मत ऊदिस्ट सुरूप लिख, पूरव जुगळ सिर अंक।
लघु सिर एकही अंक लिख, गुरु अघ ऊरघ अंक॥ ५१
गुरु सिर ऊपर अक जे, विच प्रस्तार घटाय।
सेख रहै सौ जांण यम, भेद कहौ कविराय॥ ५२

वरण ऊदिस्ट†

दूहौ

आखर वरण उदीठ पर, दुगण अकां देह।
ऊपरलां लघु अकड़ां यक वद भेद अखेह॥ ५३

---

५३ उदीठ–उद्दिष्ट। अखेह–कहना।

*मात्रिक उद्दिष्ट—

मात्रिक उद्दिष्टमें जहां गुरुका चिन्ह हो उसके ऊपर और नीचे सूचीके अंक क्रमश लिखो। लघुके ऊपर भी क्रमश सूचीके अंक लिखो। गुरुके ऊपरके अक्षरोंको पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो तो भेद संख्या मालूम हो जावेगी।

उदाहरण मात्रिक उद्दिष्ट

प्रश्न–बताओ ६ मात्राओंमें से यह । ऽ ऽ । कौनसा भेद है ?

उ०—पूर्ण सूची–१ २ ३ ५ ८ १३ पूर्णाङ्क १३

। ऽ ऽ ।

३ ८

गुरुके चिन्हों पर २ और ५ हैं दोनोंका योग ७ हुआ। पूर्णाङ्क १३ में से ७ घटाने पर ६ शेष रहते हैं अतः यह छठा भेद है।

†वर्णिक उद्दिष्ट—

वर्णिक उद्दिष्टमें सूचीके अंक आगे आगे लिखो। उनके नीचे रूप लिखो। गुरु चिन्होंके ऊपर जो संख्या हो उसे पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो। जो शेष रहेगा वही उत्तर है।

उदाहरण

प्रश्न–बताओ ४ वर्णोंमें यह । ऽ ऽ । कौनसा भेद है ?

उ०—वर्ण सूची–१ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६

। ऽ ऽ ।

गुरुके चिन्होंके ऊपर २ और ४ हैं। दोनोंका योग ६ हुआ। इसे पूर्णाङ्क १६में से घटाया तो शेष १० रहे। अतएव १० वां भेद है।

अथ नस्ट लछण

दूहौ

विण लखियां मात्रा वरण पूछै भेद सुपात।
बुधबळसूं अखु जेण विध, क्रमसौ नस्ट कहात॥ ५४

अथ मात्रा नस्ट*

कवित्त छप्पै

मात्रा नस्ट विधान कहत कविराज प्रमांणहु।
सब लघु कर तिण सीस, पूरब जुग अंकां ठांणहु॥
पैलौ पूछै भेद अंक तिणरौ विलोप कर।
तिण लोपै फिर रहै सेस, सौ अंक लोप धर॥
पुरब जु अंक तिण अंकसूं पर मिळाय गुरु कर कहौ।
औ मात्र निस्ट पिंगळ अखत सुकवि 'किसन' यण विध लहौ॥५५

---

५४ विण लखियां—बिना समझे। सुपात-(सुपात्र) कवि। बुधबळ—बुद्धिबल। अखु—कहता हूँ

*मात्रिक नष्ट—

मात्रिक नष्टमें सूचीके पूरे-पूरे अंक स्थापित करो। संख्याके पूर्णांकसे प्रश्नाङ्क घटाओ शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बाईं ओरके जो जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो किन्तु जहां जहां गुरु हों उनके आगेकी एक एक मात्रा मिटा दो।

प्रश्न—बताओ ६ मात्राओंमें ११वां भेद कैसा होगा ?

रीति—पूर्णाङ्क १३में से ११ घटाने शेष २ रहे। २ में से २ ही घट सकते हैं अत २ को गुरु कर दिया और उसके आगेकी मात्रा मिटा दी।

यथा—पूर्ण सूची—१ २ ३ ५ ८ १३
साधारण चिन्ह। । । । । ।
उ०—। ऽ । । । यही ११वां भेद है।

अथ मात्रा ऊदिस्ट*

दूहा

मत ऊदिस्ट सुरूप लिख, पूरब जुगळ सिर अंक।
लघु सिर एकही अंक लिख, गुरु अध ऊरध अंक ॥ ५१
गुरु सिर ऊपर अंक जे, विच प्रस्तार घटाय।
सेख रहै सौ जांण यम, भेद कहौ कविराय ॥ ५२

वरण ऊदिस्ट†

दूहौ

आखर वरण उदीठ पर, दुगण अंकां देह।
ऊपरलां लघु अंकड़ां यक वद भेद असेह ॥ ५३

---

५३ उदीठ–उद्दिष्ठ। असेह–असंख्या।

*मात्रिक उद्दिष्ट—

मात्रिक उद्दिष्टमें जहां गुरुका चिन्ह हो उसके ऊपर और नीचे सूचीके अंक क्रमश: लिखो। लघुके ऊपर भी क्रमश: सूचीके अंक लिखो। गुरुके ऊपरके अक्षरोंको पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो तो भेद संख्या मालूम हो जायेगी।

उदाहरण मात्रिक उद्दिष्ट

प्रश्न–बताओ ६ मात्राओंमें से यह ।ऽऽ। कौनसा भेद है?

उ०–पूर्ण सूची–१ २ ५ ११ पूर्णाङ्क ११
।ऽऽ।
३ ८

गुरुके चिन्हों पर २ और ५ हैं दोनोंका योग ७ हुआ। पूर्णाङ्क ११ में से ७ घटाने पर ६ शेष रहते हैं अतः यह छटा भेद है।

†वर्णिक उद्दिष्ट—

वर्णिक उद्दिष्टमें सूचीके अंक आगे आगे लिखो। उसके नीचे रूप लिखो। गुरु चिन्होंके ऊपर जो संख्या हो उसे पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो। जो शेष रहेगा वही उत्तर है।

उदाहरण

प्रश्न–बताओ ४ वर्णोंमें यह ।ऽऽ। कौनसा भेद है?

उ०–वर्ण सूची–१ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
।ऽऽ।

गुरुके चिन्होंके ऊपर २ और ४ हैं। दोनोंका योग ६ हुआ। ६को पूर्णाङ्क १६में से घटाया तो शेष १० रहे। अतएव १० वां भेद है।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत कढौट फर प्रस्तार लछण ।

दूहौ

अंत गुरु तळ लघु धरौ, आगै पंत समांण ।
ऊबरे सौ गुरु लघु धरौ, पाछै एह प्रमांण ॥ ५७

अथ मात्रा स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर ।

चौपई

अंत निकट लघु सिर गुरु धरौ, अवर पंत सम अग्र विचारौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, कळा थांन विपरीत कहावै ॥ ५८

अथ मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर दोनूं मळा कहे छै ।

चंद्रायणौ

आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै ।
जेम प्रकारांतर गुरु सिर लघु जांणजै ॥
धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर कीजियै ।
संख्या यिहु प्रकार ठलट्ट सुणीजियै ॥ ५९

वारता

सख्या विपरीतका आद लघुका अतकौ लघु पंकि नीचे गुरु करणौ । आग उरध पत सम पत ऊबरे सो लघु करणा । अथ मात्रा सख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर दोनूं मळा कहां छां ।

चंद्रायणौ

अंत रेख तिण आद, हेठ गुरु अख्यजै ।
अत्त प्रकार गुरु अंत, सीम लघु अख्यजै ॥

---

५७. तळ–नीचे । पंत–पंक्ति । समांण–समान । एह–यह ।

५९. संनिध–पास । धुर–प्रथम । पछ–पश्चात् ।

६ हेठ–नीचे । अख्यजै–कहिए । अख्यजै–कहिए ।

अथ वर्ग नस्ट विधि०

दूहो

भाग चौतवी वरण नव लघु करि सम जिण बोड़।
विसम भागमें मेल यक गुर कर कवि सिर मोड़ ॥ ५६

अथ सोळस विधि मात्रा वरण प्रस्तार मिलण विधि कौतुकार्थ लिख्यते।

वारता

एक तौ पिंगळ मत सुधौ प्रस्तार ऊपरासू नीचौ लिख्यौ जाय सौ ज्यौं ही सुद्ध प्रस्तार नीचासू ऊचौ लिख्यौ जाय जीनै प्रकारांत कहीजै। इतरैसू आठ प्रकार तौ मात्रा प्रस्तार। हर आठ प्रकार ही वरण प्रस्तार छै जे कहै छै।

अथ नांम जथा

सुद्ध मात्रा सुद्ध १ मात्रा सुद्ध प्रकारांतर २ मात्रा स्थान विपरीत ३ मात्रा स्थान विपरीत प्रकारांतर ४ मात्रा सख्या विपरीत ५, मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६ मात्रा सख्या स्थान विपरीत ७ मात्रा सख्या स्थान विपरीतकौ प्रकारांतर ८ ए आठ मात्रा प्रस्तार विधि।

वर्णिक नष्ट—

वर्णिक नष्टमें सूचीके अंक आधे-आधे लिखो। उनके पूर्णाङ्कमेंसे प्रश्नाङ्क घटाओ। शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बाईं ओरके जो-जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो।

प्रश्न—बताओ ४ वर्णोंमें ६वां रूप कौन सा होगा ?

रीति—पूर्णाङ्क ८×२=१६ में से ६ घटाये शेष ७ रहे। ७ में से ४ २ और १ ही घट सकते हैं। इसलिए इन तीनोंको गुरु कर दिया।

यथा—अर्ध सूची— १ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
साधारण चिन्ह । । । ।
उ —ऽ ऽ ऽ । यही नष्ट भेद है।

दूसरा प्रकार—

जितने वर्णोंका वर्णिक नष्ट निकालना हो उतने ही अंकोंमें उक्त प्रश्नाङ्कमें २का भाग देकर भागफलको क्रमशः बाईं ओरसे रख दीजिये किन्तु जिन विषम संख्याओंमें २का भाग पूरा-पूरा नहीं जाता हो उनमें १ जोड़ देना चाहिए। सम संख्याके नीचे लघु और विषमके नीचे गुरु रखने पर उत्तर मिल जायगा।

चार वर्णों का ६वां रूप—

रीति—६ ५ ३ २
ऽ ऽ ऽ । यही ऽ ऽ ऽ । उत्तर है।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत कडौट फर प्रस्तार लछण ।

दूहौ

अंत गुरु तळ लघु धरौ, आगै पंत समांण ।
ऊबरे सौ गुरु लघु धरौ, पाछै एह प्रमांण ॥ ५७

अथ मात्रा स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर ।

चौपई

अंत निकट लघु सिर गुरु धरौ, अधर पंत सम अग्र विचारौ ।
ऊधरे सौ पाछै लघु आवै, कळा थांन विपरीत कहावै ॥ ५८

अथ मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर दोनू भळा कहै छै ।

छन्नायणौ

आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै ।
जेम प्रकारांतर गुरु सिर लघु जांणजै ॥
धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर कीजियै ।
संख्या बिहु प्रकार उलट्ट सुणीजियै ॥ ५९

वारता

सख्या विपरीतका आद लघुका अतकौ लघु जीके नीचे गुरु करणौ । आग उरथ पत सम पछ ऊबरे सौ सम करणा । अथ मात्रा सख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर दोनू भळा कहा छां ।

छन्नायणौ

अंत रेख तिण आद, हेठ गुरु अख्यजै ।
भल प्रकार गुरु अंत, सीस लघु भख्यजै ॥

---

५७ तळ—नीचे । पंत—पंक्ति । समांण—समान । एह—यह ।

५९ संनिध—पास । धुर—प्रथम । पछ—पश्चात् ।

६ हेठ—नीचे । अख्यजै—कहिए । भख्यजै—कहिए ।

धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर धारजै ।
संख्या थळ विपरीत उभय संभारजै ॥ ६०

वारता

स्थान विपरीतके सरब लघु कर अंत लघुका आद । लघु नीचे गुरु लखजै । आगे उरध पगत सम पगत करणी पाछे ऊबरे सो सरब ही लघु करणा । इति अरथ ।

मात्रा संख्या प्रकारांतरे आवरा गुरु सिर लघु धरजै । आगे पगत नीचली पगत समान अर पाछे ऊबरे सो दोय ऊबरे तौ गुरु करणो नै तीन ऊबरे तो गुरु कर नै लघु करणो ।

अरथ

प्रकारांतरे स्थान विपरीतके सरब गुरु कर अंतका गुरुके सिर लघु धरणो । आगे नीचली पगत समान पगत करणी । पाछे एक ऊबरे तो लघु करणो दोय ऊबरे तो गुरु करणा गुरु कर लघु करणो । इति अरथ । इति अष्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार संपूरण ।

अथ मात्रा अस्ट प्रकार नस्ट उदिस्ट कथन ।

वारता

मात्रा सूचको अर मात्रा सूचका प्रकारांतरको तो निस्ट उदिस्ट आग सनातनी कहै छै जेहीज जाणणा । हर छ प्रकारका फर कहां छां ।

अथ मात्रा स्थान विपरीत उदिस्ट विधि ।

दूहा

थळ विपरीत उदिस्ट सिर उलटा दीजै अंक ।
गुरु सिर अंकां उरध अध, लघु सिर एकही अंक ॥ ६१
गुरु सिर वाळा अंक गिणि, पूरण अंकसू टाळ ।
बाकी रहैस भेद कवि, बेडर कहे बताळ ॥ ६२

---

६ धुर-प्रथम । पछ-पश्चात् । थळ-स्थान । संभारजै-सम्हालना । लखजै-लिखिए । सनातनी-पूर्वाचार्य । हर-प्रत्येक ।

६२ बेडर-निर्भय । बताळ-बतला कर ।

मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारांतको नष्ट उदिष्ट एकही छै। मात्रा स्थान विपरीत भव छठो ।

११	८	५	३	२	१

११	५	२	१
		ऽ	।
।	ऽ	३	

भव आठमो स्थान विपरीत उदिस्टको ।

११	८	५	३	२	१
।	।	।	।	।	।

११	५	३	२	१
।	ऽ	।	।	।

अथ मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारांतर दोनूंकी नस्ट कहै छै।

चौपई

थळ विपरीत नस्ट कळ कीजै, दक्खिण उलट अंक कम दीजै ।
पूछयौ भेद पूरणसूं टाळै, पाछै रहैस लोप दिखाळै ॥
उलटै क्रम सिर अंकां आवै पूरब मत्त पर मत्त मिळावै ।
गुरु कर रूप भेद सौ गावै, थळ विपरीत नस्ट यम थावै ॥ ६३

११ थळ-स्थान । थावै-होता है ।

मात्रा सुद्ध प्रस्तार	मात्रा सुद्ध प्रस्तार की प्रकारांतर मीचा सूं ऊंचो लिख्यो जाय छै	मात्रा स्थान विपरीत कहीट फेर प्रस्तार	मात्रा स्थान विपरीत की प्रकारांतर प्रस्तार
ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ
।।ऽऽ	।।ऽऽ	ऽऽ।।	ऽऽ।।
।ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।
ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ
।।।।ऽ	।।।।ऽ	ऽ।।।।	ऽ।।।।
।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ
ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	।ऽ।ऽ
।।। ।	।।।ऽ।	।ऽ।।।	।ऽ।।।
ऽऽ।।	ऽऽ।।	।।ऽऽ	।।ऽऽ
।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।
।ऽ।।।	।ऽ।।।	।।।ऽ।	।।।ऽ।
ऽ।।।।	ऽ।।।।	।।।।ऽ	।।।।ऽ

अथ वर्ण नस्ट विधि*

दूहो

भाग चीतवौ वरण नव लघु करि सम जिण वोड़।
विसम भागमें मेल यक गुर कर कवि सिर मोड़॥ ४६

अथ सोड़स विधि मात्रा वरण प्रस्तार मिसरण विधि कातुकार्थ लिख्यते।

वारता

एक तौ पिंगळ मत सुधी प्रस्तार ऊपरासू नीचौ लिख्यौ जाय सो ज्यौं ही सुध प्रस्तार नीचासू ऊचौ लिख्यौ जाय जीमें प्रकारांत कहीज। इणरैसू आठ प्रकार तौ मात्रा प्रस्तार। हर आठ प्रकार ही वरण प्रस्तार छै जे कहै छै।

अथ नांम यथा

सुध मात्रा सुध १ मात्रा सुध प्रकारांतर २ मात्रा स्थांन विपरीत ३ मात्रा स्थांन विपरीत प्रकारांतर ४ मात्रा सख्या विपरीत ५, मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६ मात्रा सख्या स्थान विपरीत ७ मात्रा सख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर ८ ए आठ मात्रा प्रस्तार विधि।

---

*वर्णिक नष्ट—

वर्णिक नष्टमें सूचीके अंक आधे-आधे लिखो। अंतके पूर्णाङ्कमेसे प्रश्नाङ्क घटाओ। शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बाईं ओरके जो-जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो।

प्रश्न—बताओ ४ वर्णोंमें ९वां रूप कौन सा होगा ?

रीति—पूर्णाङ्क ८×२=१६ में से ९ घटाने शेष ७ रहे। ७ में से ४ २ और १ ही घट सकते हैं। इसलिए इन तीनोंको गुरु कर दिया।

यथा—अर्ध सूची— १ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
साधारण चिन्ह । । । ।
उ०—ऽ ऽ । यही नवां भेद है।

दूसरा प्रकार—

जितने वर्णोंका वर्णिक नष्ट निकालना हो उतने ही अंकों तक प्रश्नाङ्कमें २का भाग देकर आगमनको क्रमश बाईं ओरसे रख दीजिये किन्तु जिन विषम संख्याओंमें २का भाग पूरा-पूरा नहीं जाता हो उनमें १ जोड़ देना चाहिए। सम संख्याके नीचे लघु और विषमके नीचे गुरु रखने पर उत्तर मिल जायगा।

चार वरणों का ६वा रूप—

रीति—६ ३ २ १
ऽ ऽ ऽ । यहीं ऽऽऽ। उत्तर है।

अथ मात्रा स्थान विपरीत कहीट फर प्रस्तार लक्षण ।

दूहो

अंत गुरु तळ लघु धरै, आगै पंत समांण ।
ऊबरे सौ गुरु लघु धरौ, पाछै एह प्रमांण ॥ ५७

अथ मात्रा स्थान विपरीतकौ प्रकारांतर ।

चौपई

अंत निकट लघु सिर गुरु धरौ, अवर पंत सम अग्र विचारौ ।
उबरे सौ पाछै लघु आवै, कळा थांन विपरीत कहावै ॥ ५८

अथ मात्रा सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर दोनू मळा कहु छै ।

चन्द्रायणौ

आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै ।
जेम प्रकारांतर गुरु सिर लघु जांणजै ॥
धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर कीजियै ।
संख्या बिहु प्रकार उलट्ट सुणीजियै ॥ ५९

वारता

सख्या विपरीतका आद लघुका अतकौ लघु जीकि नीचे गुरु करणौ । आग चरण पत सम पत ऊबरे सो लघु करणा । अथ मात्रा सख्या स्थान विपरोतको प्रकारांतर दोनू मळा कहा छा ।

चन्द्रायणौ

अंत रेख तिण आद, हेठ गुरु अख्यजै ।
मल प्रकार गुरु अंत, सीस लघु भख्यजै ॥

---

५७. तळ—नीचे । पांत—पंक्ति । समांण—समान । एह—यह ।
५८. संनिध—पास । धुर—प्रथम । पछ—पश्चात् ।
६ हेठ—नीचे । अख्यजै—कहिए । भख्यजै—कहिए ।

धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर धारजै।
संख्या थळ विपरीत उभय संभारजै ॥ ६०

वारता

स्थान विपरीतके सरब लघु कर अंत लघुका भाव। लघु नीचे गुरु समझै। आगे उरध पगत सम पगत करणो पाछे अंकरे सौ सरब ही लघु करणा। इति अरथ।

मात्रा संख्या प्रकारांतरे आन्तरा गुरु सिर लघु धरणो। आगे पगत नीचला पगत समान धर पाछै अंकरे सौ दोय अंकरे तौ गुरु करणो नै तीन अंकर तौ गुरु करे नै लघु करणो।

अरथ

प्रकारांतरे स्थान विपरीतके सरब गुरु कर अंतका गुरुके सिर लघु धरणो। आगे नीचली पगत समान पगत करणी। पाछै एक अंकरे तौ लघु करणो दोय अंकरे तौ गुरु करणा, गुरु कर लघु करणो। इति अरथ। इति अष्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार संपूरण।

अथ मात्रा अस्ट प्रकार अस्ट उदिस्ट कथन।

वारता

मात्रा सूचको अर मात्रा सूचका प्रकारांतरको तो निस्ट उदिस्ट आगे सनातनो कहे छै अहीज ओळखणा। हर छः प्रकारका फेर कहां छां।

अथ मात्रा स्थान विपरीत उदिस्ट विधि।

दूहा

थळ विपरीत उदिस्ट सिर उलटा दीजै अंक।
गुरु सिर अंकां उरध अध, लघु सिर एकही अंक ॥ ६१
गुरु सिर वाळा अंक गिणि, पूरण अंकसूं टाळ।
बाकी रहैस भेद कवि, वेहर कहे मताळ ॥ ६२

---

६० धुर-प्रथम। पछ-पश्चात्। थळ-स्थान। संभारजै-समझाना। लखजै-लिखिए। सनातनो-पूर्वाचार्य। हर-प्रत्येक।

६२ वेहर-निर्भय। मताळ-मतवाला कर।

मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारांतको नष्ट उदिष्ट एकही छै। मात्रा स्थान विपरीत भेद छठो ।

१३	८	५	३	२	१

१३	५	२	१
		ऽ	।
।	ऽ	३	

भद माठमो स्थान विपरीत उद्दिस्टको ।

१३	८	५	३	२	१
।	।	।	।	।	।

१३	५	३	२	१
।	ऽ	।	।	।

मथ मात्रा स्थान विपरीत हर प्रकारांतर दोनूंको नस्ट कहै छै।

चौपई

थळ विपरीत नस्ट कळ कीजै, दक्खिण उलट अंक क्रम दीजै।
पूछ्यौ भेद पूरणसूं टाळै, पाछै रहैस लोप दिखाळै ॥
उलटै क्रम सिर अंकां आवै पूरब मस्त पर मत्त मिळावै।
गुरु कर रूप भेद सौ गावै, थळ विपरीत नस्ट यम थावै ॥ ६३

११ थळ-स्थान। थाव-होता है।

मात्रा सुद्ध प्रस्तार	मात्रा सुद्ध प्रस्तार की प्रकारांतर नीचा सू ऊंचौ मिस्मी नाम छै	मात्रा स्थान विपरीत कहीट फेर प्रस्तार	मात्रा स्थान विपरीत की प्रकारांतर प्रस्तार
ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ
।।ऽऽ	।। ऽ	ऽऽ।।	ऽऽ।।
।ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।
ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ
।।।।ऽ	।।।।ऽ	।।।।	ऽ।।।।
।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ
ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।	। ।ऽ	। ।ऽ
।।। ।	।।।ऽ।	।ऽ।।।	।ऽ।।।
ऽ।।	ऽऽ।।	।।ऽऽ	।। ऽ
।।ऽ।।	।। ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।
।ऽ।।।	।ऽ।।।	।।।ऽ।	।।।ऽ।
ऽ।।।।	ऽ।।।।	।।।।	।।।।ऽ
।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।

मात्रा संख्या प्रस्तार विपरीत प्रस्तार	मात्रा संख्या विपरीतके प्रकारांतर प्रस्तार	मात्रा संख्या स्थान विपरीत कढ़ीट फेर प्रस्तार	मात्रा संख्या स्थान विपरीत प्रकारांतर कढ़ीट फेर मीथा सूं ऊंचो लिख्यो नाम सो प्रस्तार
IIIIII	IIIIII	IIIIII	IIIIII
SIIII	SIIII	IIIIS	IIIIS
ISIII	ISIII	IIISI	IIISI
IISII	IISII	IISII	IISII
SSII	SSII	IISS	IISS
IIISI	IIISI	ISIII	ISIII
SISI	SISI	ISIS	ISIS
ISSI	ISSI	ISSI	ISSI
IIIIS	IIIIS	SIIII	SIIII
SIIS	SIIS	SIIS	SIIS
ISIS	ISIS	SISI	SISI
IISS	IISS	SSII	SSII
SSS	SSS	SSS	SSS

मात्रा सख्या विपरीत सख्या विपरीतको प्रकारांतर क्यों दोमांईको
उदिस्ट कहू छू ।

दूहो

सूवै क मदै अंक सिर, विध संख्या विपरीत ।
गुरु सिर अंकां एक विध, भेद उदिस्ट अमीत ॥ ६४

अब मात्रा सख्या विपरीत हर सख्या विपरीतको प्रकारांतर मां
दोमां कोई नस्ट कहू छू ।

चौपई

नस्ट संख्य विपरीत निदांन, मच्त सीस क्रम अंकसु मांन ।
पूछ्या भेद मांफ घट एक, बाकी रहै सगुरु कर देख ॥ ६५

कढ़ीट–पंक्तिके उलटमेकी क्रिया मा भाव ।

६४ सूवै–सीधा । विध–विधि । अमीत–निर्भय । दोमां–दोनोका ।

६५ मांफ–मध्य ।

पूरब मत्त पर मत्त मिळाय, गुरु करि नस्ट भेद यम गाय ॥ ६६

अथ मात्रा संख्या स्थांन विपरीत हूंर प्रकारांतर यां दोयांईकी उदिस्ट कहूं छूं ।

चौपई

भेद सीस दखिण अत अंक, दै उलटा क्रम हू त निसंक ।
गुरु सिर अंकां मभ्फ सिवाय, एक मेळ कर भेद यताय ॥ ६७

अथ मात्रा संख्या स्थांन विपरीतको हूंर संख्या स्थांन विपरीतको
प्रकारांतर यां दोयांईकी नस्ट कहूं छूं ।

चौपई

क्रम विपरीत अंक लघु सीस, दै पूछ ल यक घाट करीस ।
रहैस पूरब जोड़ पर मत, नस्ट संख्य ऊलट थळ सत ॥ ६८

दूहा

आठ भांत प्रस्तार मत्त, नस्ट ऊदिस्ट प्रकार ।
'किसन' सुकवि जस रांम कज, रटिया मत अनुसार ॥ ६९

इति अस्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार उदिस्ट नस्ट संपूरण ।

अथ अस्ट प्रकार वरण प्रस्तार विधि लिख्यते ।

वारता

वरण सुध प्रस्तारको तो सरूप भाग कह्योईज छै । अब अस्ट वरण प्रस्तार नांम । यथा—

वरण सुध प्रस्तार १ वरण सुध प्रकारांतर २ नीचासूं ऊंचो मंड्यो जाय जींको नांम प्रकारांतर कहिये वरण स्थांन विपरीत ३ प्रस्तार मैं कठोर परा वणी मो स्थांन विपरीत कहीजै । वरण स्थांन विपरीत प्रकारांतर ४ वरण

---

६६ यम-इण प्रकार । गाय-कह ।

६७ सीस-ऊपर । अत-बाद । सिर-ऊपर ।

६८ घाट-घटाना । करीस-करना । पर-पाछैको । मत-मात्रा ।

६९ मत-भाव । कज-लिए । मत-(मति)बुद्धि । रटिया-रतिके उत्पन्नकी क्रिया या भाव । वेरावणी-उत्पन्न ।

सख्या विपरीत ५ बरण सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६ बरण सख्या स्थांन विपरीतकौ कडौट फेर ७ बरण सख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतरमें प्रस्ट बरण प्रस्तारकौ सुकारय मिसां छा।

अथ बरण सुद्ध प्रस्तारका प्रकारांतरकौ लछण।

चौपई

धुर लघुके ऊरध गुरु धरौ, आगे अरध पंत सम करौ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, बरण प्रकार यम सुघ गावै॥ ७०

अथ बरण स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार लछण।

चौपई

अंत गुरु हेठै लघु आंणौ, जुगति अग्र ऊरध सम जांणौ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु लेखौ, बरण स्थांन विपरीत विसेखौ॥ ७१

अथ बरण स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतरकौ लछण।

चौपई

अंत लघु सिर गुरु परठीजै, रूप अरध सम अग्र करीजै।
ऊबरे सौ पाछै लघु लेखौ, प्रकारांतर उलट थळ पेखौ॥ ७२

अथ बरण सख्या विपरीत लछणविनसू प्रस्तार चाले जीने सख्या विपरीत कहीजै

चौपई

आद लघु तळ गुरु धरिये एम तव उरध सम आगे तेम।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण बरण संख्या विपरीत बखांण॥ ७३

फेर–फिर। सुकारय–पंक्तिका अर्थ।

७० धुर–प्रथम। ऊरध–ऊपर। पंत–पंक्ति। येम–इस प्रकार।

७१ हेठै–नीचे। विसेखौ–विशेष।

७२ सिर–ऊपर। परठीजै–रखिये। पेखौ–देखिए।

वरण सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर लछण।

चौपई

धुर गुरु सीस प्रथम लघु धारौ, अग्र अरध सम पंत उचारौ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु देह वरण प्रकार उलट थळ एह॥ ७४

अथ वरण सख्या स्थान विपरीत कठोट फर लछण।

चौपई

अंत लघू तळ गुरु धरि एहौ, उरध पंत सम अग्र अछेहौ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण, संख्या वरण उलट थळ जांण॥ ७५

अथ वरण सख्या विपरीत प्रकारांतर लछण।

चौपई

थिर गुरु अंत सीस लघु थाप, अग्र अरध सम पंत अमाप।
बचै स पाछै गुरु करिवेस, संख्या उलट प्रकार सु देस॥ ७६
पुणिया आठ वरण प्रस्तार वहा सुकव लीजियौ विचार॥ ७७

इति अस्ट विधि वरण प्रस्तार सपूरण।

---

७४ एह–यह।

७५ एहौ–ऐसा। अछेहौ–अच्छा।

७६ थाप–स्थापित कर। करिवेस–करिये। देस–दीजिये।

७७ पुणिया–कहे।

संख्या विपरीत ५ वरण संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६ वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ कड़ौट फेर ७ वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतरमें मस्ट वरण प्रस्तारकौ तुकारथ लिखां छां।

अथ वरण सुद्ध प्रस्तारका प्रकारांतरको लछण।

चौपई

घुर लघुके ऊरध गुरु धरौ, आगे अरध पंत सम करौ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, वरण प्रकार यम सुध गावै॥ ७०

अथ वरण स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार लछण।

चौपई

अंत गुरु हेठै लघु आंणौ, जुगति अग्र ऊरध सम जांणौ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु लेखौ, वरण स्थांन विपरीत विसेखौ॥ ७१

अथ वरण स्थांन विपरीतको प्रकारांतरको लछण।

चौपई

अंत लघु सिर गुरु परठीजै, रूप अरध सम अग्र करीजै।
ऊबरे सौ पाछै लघु लेखौ, प्रकारांतर उलट यळ पेखौ॥ ७२

अथ वरण संख्या विपरीत नष्टवादिक्सू प्रस्तार वासै जींमें संख्या विपरीत कहीजै

चौपई

आद लघु तळ गुरु धरिये एम तव उरध सम आगे तेम।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण वरण संख्या विपरीत वखांण॥ ७३

फेर–फिर। तुकारथ–पंक्तिका अर्थ।

७० धुर–प्रथम। ऊरध–ऊपर। पंत–पंक्ति। येम–इस प्रकार।

७१ हेठै–नीचे। विसेखौ–विशेष।

७२ सिर–ऊपर। परठीजै–रखिये। पेखौ–देखिए।

वरण सख्या विपरीतकौ प्रकारांतर लक्षण ।

चौपई

धुर गुरु सीस प्रथम लघु धारौ, अग्र अरध सम पत उचारौ ।
उवरे सौ पाछै गुरु देह वरण प्रकार उलट यळ एह ॥ ७४

अथ वरण सख्या स्थांन विपरीत कडौट फर लक्षण ।

चौपई

अत लघू तळ गुरु धरि एहौ, उरध पंत सम अग्र अछेहौ ।
उबरे सौ पाछै लघु आंण, संख्या वरण उलट यळ जांण ॥ ७५

अथ वरण सख्या विपरीत प्रकारांतर लक्षण ।

चौपई

थिर गुरु अंत सीस लघु थाप, अग्र अरध सम पंत अमाप ।
वचै स पाछै गुरु करिवेस, संख्या उलट प्रकार सु देस ॥ ७६
पुणिया आठ वरण प्रस्तार वडा सुकव लीजियौ विचार ॥ ७७

इति प्रस्ट विधि वरण प्रस्तार सपूरण ।

---

७४ एह–यह ।
७५ एहौ–ऐसा । अछेहौ–अच्छा ।
७६ थाप–स्थापित कर । करिवेस–करिये । देस–दीजिये ।
७७ पुणिया–कहे ।

अथ प्रस्तारबिध बरण प्रस्तार

बरण सुद्ध प्रस्तार	बरण सुद्ध प्रस्तार प्रकारांतर	बरण स्थान बिपरीत कळौट फेर प्रस्तार	बरण स्थान बिपरीतकौ प्रकारांतर कळौट फर
S SS	SSSS	SSSS	SSSS
ISSS	ISSS	SSSI	SSSI
SIS	SISS	SSIS	SS S
IISS	IISS	SSII	SSII
SS S	SSIS	SISS	SISS
ISIS	I IS	SISI	SISI
SIIS	SIIS	SIIS	SIIS
IIIS	II IS	SIII	S II
SSSI	SSSI	ISSS	ISSS
ISSI	ISSI	ISSI	ISSI
SISI	SISI	ISIS	ISIS
IISI	IISI	ISII	ISII
SSII	SSII	II S	IISS
ISII	ISII	IISI	IISI
III	SIII	IIIS	IIIS
IIII	IIII	IIII	IIII

बरण संख्या बिपरीत प्रस्तार	बरण संख्या बिपरीतकै प्रकारांतर	बरण संख्या बिपरीतकौ स्थान बिपरीत प्रस्तार	बरण संख्या बिपरीत स्थान बिपरीतकौ प्रकारांतर प्रस्तार
IIII	IIII	IIII	IIII
III	SIII	IIIS	IIIS
ISII	ISII	IISI	IISI
SSII	SSII	IISS	IISS
IISI	IISI	ISII	ISII
SISI	SISI	ISIS	ISIS
ISSI	ISSI	ISSI	ISSI
SSSI	SSSI	ISSS	ISSS
IIIS	IIIS	SIII	SIII
SIIS	SIIS	SIIS	SIIS
I IS	IS S	SISI	SISI
SSIS	SIS	SISS	SISS
IISS	IISS	SSII	SSII
SISS	SISS	SSIS	SSIS
IS	I SS	SSSI	SSSI
SSSS	SSSS	SSSS	SSSS

अथ अरट बिध बरण प्रस्तार क्यांका उदिस्ट नस्ट लिखां छां ।

वारता

बरण गुरु १ हुए बरण गुरुका प्रकारांतरको सौ सदा म्है छै उपरीत छ । हुए बाकीरा छ प्रकारको लिखां छां ।

अथ बरण स्थान विपरीतका प्रकारांतर दोयको उदिस्टको लछण ।

चौपई

उलट क्रम दखिणसू अंक रूप बरण सिर धरै नसंक ।
ऊपर गुरु अंक जे आवै पूरण अंक मधि तिके घटावै ॥ ७८
यातें रहैस भेद बिचार, मथ तज भज रायौ गुण सार ॥ ७९

अथ बरण स्थान विपरीत इसा प्रकारांतरको नस्ट कहां छां ।

दूहो

दखिण क्रमसू भाग दे, सम लघु रूप सराह ।
बिखम एक दे गुरु करौ, उलट नस्ट आ राह ॥ ८०

अथ बरण संख्या विपरीतको हुए इसा प्रकारको उदिस्ट कहां छां ।

दूहो

यक स दुगणा रूप सिर, दै क्रम अंक कवण ।
गुरु सिर अंकां एक मिळ, भाखव रूप स्रमेण ॥ ८१

अथ बरण संख्या विपरीत हुए प्रकारांतर नेनुको नस्ट कहां छां ।

चोपई

रूपा क्रमसू कलपौ भाग बिखम थांन लघु करि अनुराग ।
बिखम एक मिळ आध कराय, समथळ गुरु बिखम लघु थाय ॥ ८२

७९ दै-रहे है ।
८० [illegible]
८१ [illegible]
८२ [illegible]

विधयण नस्ट संख्य विपरीत, सुध थळ समझौ सुकवि विनीत ॥ ८३

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतको हर ईका प्रकारांतरको उदिस्ट कहां छां।

चौपई

रूप सीस दखिण व्रत अंक, दै उलटै क्रमसू कवि निसंक।
गुरु सिर अंकां एक मिळाय, भेद कहौ कवि 'किसन' सुभाय ॥ ८४

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतको हर ईका प्रकारांतरको दोन्याको नस्ट कहां छां।

चौपई

भाग कळप दखिण कर ओर, विखम भाग लघु करौ सतौर।
एक मेळ बांटा कर दोय, सम थळ गुरू विखम लघु होय ॥ ८५
नस्ट उदिस्ट आठ परकार, निज कहि 'किसन' वरण निरधार।
तू अन आळ जंजाळ तियाग, रघुवर सुजस सार चित राग ॥ ८६

अथ सोडस प्रस्तार मात्रा वरणका सुगम मिलण विध।

दूहा

सुध सुध विपरीत थळ, संख्या उलट प्रकार।
संख्या उलट प्रकार थळ, गुरु लघु पच्छ विचार ॥ ८७
सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारांत चिहु जांण।
संख्य विपरजय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण ॥ ८८

वारता

सुधमें १। सुध स्थान विपरीतकै २। सख्या विपरीतका प्रकारांतरकै ३।

---

८४ सीस–ऊपर। व्रत–वृत्त। हर ई–प्रत्येक। दोन्याको–दोनोंहीका।

८५ सतौर–ठीक। बांटा–विभाजन। थळ–स्थान।

८६. परकार–प्रकार। अन–अन्य। आळ जंजाळ–झूठा मायामोह। तियाग–त्याग। सार–तत्व। राग–अनुराग।

८७. पच्छ–पीछे।

८८. चिहुं–चारों। विपरजय–विपर्यय। वारता–गद्य।

सख्या स्थान विपरीतका प्रकारांतरक ४ । सम ऊपरे सौ गुरु करणा विसम ऊपरे सौ गुरु करने लघु करणा । सुधका १ । सुध स्थान विपरीतका प्रकारांतर दोयांईके २ । हर सख्या विपरीतक ३ । हर सख्या स्थांन विपरीतके ४ । यां च्यार प्रस्तारांके ऊपरे सौ मरवे पाछै लघु करणा ।

इति प्रस्तार सुगम विष ।

मात्रा वरण उन्स्टि नस्ट सुगम लछण ।

दूहा

सुध बिहु उदिस्ट नस्ट, सुद्धा क्रमसू अंक ।
से संख्या विपरीतरै निज सुद्ध अंक निसंक ॥ ८९

से सुद्ध थळ विपरीतरै, बि थळ संख्य विपरीत ।
आं चहु निस्ट उदिस्ट सिर, अंक उलट क्रम दीत ॥ ९०

क्रम संख्या विपरीत से बि क्रम थि थळ विपरीत ।
पूछ ल यक घट नस्ट गुरु वघ उदिस्ट कहीत ॥ ९१

सुध से सुध थळ उलट से, क्रम बी क्रम घर अंक ।
पूछ सेस घट नस्ट कर, वध उदिस्ट गुरु अंक ॥ ९२

इति रघुवरजसप्रकास ग्रथे मात्रा किसना कृत मात्रा वरण सोळस प्रस्तार उदिस्ट निरूपण सपूरण ।

अथ मेर लछण ।

दूहा

गुण अमका प्रस्तार मझ, सरब गुरू केह ।
एक एक घट फिर अखौ, सब लघु घट लघु जेह ॥ ९३

ऊपरे–शेष रहते हैं । आं–इन ।

८९ बिहु–दोनों ।

९ बि–दो । संख्य–सख्या । सिर–ऊपर । दीत–दीजिये ।

९१ वध–विधि । कहीत–कहते हैं ।

९२ घट–घटाना ।

९३ गुण–कह । अमका–इसका । अखौ–कहो । जेह–जिस ।

विघयण नस्ट संख्य विपरीत, सुघ वळ समभ्कौ सुकवि विनीत ॥ ८३

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतकौ हर ईका प्रकारांतरकौ उदिस्ट कहां छां।

चौपई

रूप सीस दखिण ग्रत अंक, दै उलटै क्रमसू कवि निसंक।
गुरु सिर अंकां एक मिळाय, भेद कहौ कवि 'किसन' सुभाय ॥ ८४

अथ वरण सख्या स्थान विपरीतकौ हर ईका प्रकारांतरकौ दोन्यांकौ नस्ट कहां छां।

चौपई

भाग कळप दक्खिण कर ओर, विखम भाग लघु करौ सतौर।
एक मेळ बांटा कर दोय, सम थळ गुरू विखम लघु होय ॥ ८५
नस्ट उदिस्ट आठ परकार, निज कहि 'किसन' वरण निरधार।
तू मन आळ जंजाळ तियाग, रघुबर सुजस सार चित राग ॥ ८६

अथ सोळस प्रस्तार मात्रा वरणका सुगम लिखण विध।

दूहा

सुघ सुघ विपरीत थळ, संख्या उलट प्रकार।
संख्या उलट प्रकार थळ, गुरु लघु पच्छु विचार ॥ ८७
सुघ सुघ विपरीत थळ, प्रकारांत विहु जांण।
संख्य विपरजय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण ॥ ८८

वारता

सुघकै १। सुघ स्थान विपरीतकै २। सख्या विपरीतका प्रकारांतरकै ३।

---

८४ सीस–ऊपर। ग्रत–घृत। हर ई–प्रत्येक। दोन्यांकौ–दोनोंहीका।
८५ सतौर–ठीक। बांटा–विभाजन। थळ–स्थान।
८६ परकार–प्रकार। मन–मन्य। आळजंजाळ–झूठा मायामोह। तियाग–त्याग। सार–तत्व। राग–अनुराग।
८७ पच्छू–पीछे।
८८ बिहुं–दोनों। विपरजय–विपर्यय। वारता–गद्य।

सख्या स्थांन विपरीतका प्रकारांतरक ४ । सम ऊबर सौ गुरु करणा विसम ऊबर सौ गुरु करने लघु करणा । सुधका १ । सुध स्थांन विपरीतका प्रकारांतर दोर्यांईके २ । हर सख्या विपरीतक ३ । हर सख्या स्थांन विपरीतके ४। ग्रां च्यार प्रस्तारांके ऊबरे सौ सरबे पाछ लघु करणा ।

इति प्रस्तार सुगम विध ।

मात्रा वरण उदिस्ट नस्ट सुगम लछण ।

दूहा

सुध बिहु उदिस्ट नस्ट, सुध्य क्रमसू अंक ।
वे संख्या विपरीतरै निज सुध अंक निसंक ॥ ८९

वे सुद्ध थळ विपरीतरै, यि थळ संख्य विपरीत ।
ग्रां चहु निस्ट उदिस्ट सिर, अंक उलट क्रम दीत ॥ ९०

क्रम संख्या विपरीत वे बि क्रम यि थळ विपरीत ।
पूछ ल यक घट नस्ट गुरु वध उदिस्ट कहीत ॥ ९१

सुध ये सुध थळ उलट वे, क्रम बी क्रम घर अंक ।
पूछ सेस घट नस्ट कर, वध उदिस्ट गुरु अंक ॥ ९२

इति रघुवरजसप्रकास ग्रंथे मात्रा किसना कृत मात्रा वरण सोळस प्रस्तार उदिस्ट निरूपण सपूरण ।

अथ मेर लछण ।

दूहा

सुण अमका प्रस्तार मभ, सरब गुरू केह ।
एक एक घट फिर अखौ, सघ लघु घट लघु जेह ॥ ९३

ऊबरे–शेष रहते हैं । ग्रां–इन ।
८९ बिहु–दोनों ।
९० वि–दो । संख्य–सख्या । सिर–ऊपर । दीत–दीजिये ।
९१ वध–विधि । कहीत–कहते हैं ।
९२ घट–घटाना ।
९३ सुण–कह । अमका–इसका । अखौ–कहो । केह–किस ।

पूछै यूं अन कवि प्रसन, थाप मेर जिण ठांम।
प्रथम मेर मत कवि परठ, रट कीरत रघुरांम ॥ ६४

अथ मात्रा मेर विध।

कवित छप्पै

कर मम बे बे कोठ, अंत यक अंक भरीजै।
आद कोठ यक अंक, दुवौ तिण तर हर दीजै॥
ऊरध जुगळ फिर अंक, देह पैलां कोठां वख।
विध मध कोठा भरण, लछ आखंत सुकवि लख॥
सिर अंक त्याग दछ अंक सौ, समिळ लेख अध कोठ सुज।
कह मत मेर यण विध 'किसन', तूं रट राघव आंन तज॥ ६५

---

६४ यूं–इस प्रकार। अन–अन्य। प्रसन–प्रश्न। थाप–स्थापित कर। मेर–मेरु। ठांम–स्थान। परठ–रच।

६५ कोठ–कोष्ठ। दुवौ–दूसरा। तिण–उस। तर–उस नीचे। ऊरध–ऊर्ध्व। वख–कह। विध–विधि। मध–मध्य। लछ–लक्षण। आखंत–कहते हैं। समिळ–साथ। अध–नीचे। सुज–वह। आंन–अन्य।

अथ वरण मेर भरण विध

अथ एकादस मात्रा मेर स्वरूप ।

अथ पताका लछण ।

दूहौ

मुखिया भेळा मेरमें, गुरु लघु रूप गिनांन ।
जपौ जेण थळ जूजुवा, थपि पताक कह थांन ॥ ९६

अथ मात्रा पताका विध ।

कवित छप्पै

अंक रीत उदिस्ट देहु, पूरण अंक मांमह ।
अंक पूरय ता अंक मेटि, क्रम क्रम विधि तांमह ॥
एक अंक लोपंत, एक गुरु ग्यांन गिणीजै ।
दोय अंक ओपंत, दोय गुरु ग्यांन भणीजै ॥
त्रय लोप त्रि गुरु चव लोप चव, गुरु गियांन यम जांणियै ।
लिख्य मेर संख्य ध्वज मत सौ, जस राघव ध्वज जांणियै ॥ ९७

---

९६ मुखिया—बड़े । भेळा—शामिल । गिनांन—ज्ञान । जूजुवा—जुदा-जुदा । थपि—स्थापित कर । थांन—स्थान ।

९७ देहु—देकर । मांमह—बाकी । तांमह—उसमें । लोपंत—लोप होते हैं । ओपंत—शोभा देता है । त्रय—तीन । चव—चार ।

१																				
२	४	६	२२	३६																
३	६	७	१४	१५	१७	३५	३६	३८	४३											
५	१	११	१२	२३	२४	२५	२७	२८	३	५७	५८	५९	६१	६२	६४	६९	७	७२	७७	
८	१६	१८	१९	२	३७	३९		४	४१	४४		४५	४६		४८		४९	५१		
१३	२६	२९	३१	३२	३३	६	६३	६५	६६	६७	७१	७३	७४	७५	७८	७९	८	८२	८३	८५
२१	४२	४७	५	५२	५३	५४														
३४	६८	७६	८१	८४	८६	८७	८८													
५५																				
८९																				

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताकाका दूसरा रूप यह भी होता है।

१	१५		३५		२८		९		१
SSSSS	IISSSS		IIIISSS		IIIIIISS		SIIIIIIII		IIIIIIIIII
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	९
			८ ६१		२१		५५		
	३ ३५		१		२६		६८		
	४		११ ६२		२९		७६		
	६ ३६		१२ ६४		३१		८१		
	७ ३८		१६ ६९		३२		८४		
	९		१८		३३		८६		
	१४ ४९		१९ ७		४२		८७		
	१५		२ ७२		४७		८८		
	१७ ५६		३ ७७		५				
	२२		२४		५२				
			२५		५३				
			२७		५४				
			२८		६				
			३		६३				
			३७		६५				
			३९		६६				
			४		६७				
			४१		७१				
			४४		७३				
			४५		७४				
			४६		७५				
			४८		७८				
			४९		७९				
			५१		८				
			५७		८२				
			५८		८३				
			५९		८५				

अथ मात्रा पताका अन्य विध।

दूहा

अंक मत्त उदिस्ट लिख, समझ विचार सुजाण।
वळै पताखा दंड विच विध एही बुधवांण॥ ९८

विरळी पूरण अंक विण, थे थे पंक्त थंन।
ऊपरली थे पातरौ, अंक उपंत समंध॥ ९९

अरसी अंक पूरण अंकसू, परठव तीजी पंत।
गुणीयण कहणौ गुरु लघु पहली तरह पढ़ंत॥ १००

अन्य प्रकार नवीन मत दस मात्रा पताका स्वरूप।●

---

९८ वळै-फिर। बुधवांण-बुद्धिमान्।

९९. थांन-स्थान। ऊपत-उत्पत्ति। समंध-सम्बन्ध।

परठव-रख। गुणीयण-कवि।

● दूसरे प्रकारसे अन्य मात्रा पताकाके स्वरूपकी तरह ही मात्रा पताकाका स्वरूप भी लिखा जा सकता है।

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताकाका दूसरा रूप यह भी होता है।

१	१५		३५		२८		९		१
ऽऽऽऽऽ	।।ऽऽऽऽ		।।।।ऽऽऽ		।।।।।।ऽऽ		ऽ।।।।।।।।		।।।।।।।।।।
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
			८ ६१		२१		५५		
	३ ३५		१		२६		६८		
	४		११ ६२		२९		७६		
	६ ३६		१२ ६४		३१		८१		
	७ ३८		१६ ६९		३२		८४		
	९		१८		३३		८६		
	१४ ४९		१९ ७		४२		८७		
	१५		२ ७२		४७		८८		
	१७ ५६		३ ७७		५				
	२२		२४		५२				
			२५		५३				
			२७		५४				
			२८		६				
			३		६३				
			३७		६५				
			३९		६६				
			४		६७				
			४१		७१				
			४४		७३				
			४५		७४				
			४६		७५				
			४८		७८				
			४९		७९				
			५१		८				
			५७		२				
			५८		८३				
			५९		८५				

अथ वरण मेर भरण विध ।

दूहौ

संख्या अक्खर कोठ सझ एकौ आदर अंत ।
सू न कोठ सिर अंक बे, समिल लेख अघ संत ॥ १०१

अथ वरण मेर खड विध ।

दूहौ

परठ दृष्ट सुची पंगत, उत्तर चढ़ा उतार ।
आद अंत भर एकड़ौ, आंन अग्र उगाहार ॥ १०२

अथ मप्त वरण मेर स्वरूप ।

मप्त वरण मेर ।

अथ सप्त मात्रा पताका स्वरूप ।*

१	२	३	५	८	१३	२१
२		५		१३		
४		६		१६		
६		७		१८		
		९		१९		
		११		२		
		१२				
		१४				
		१५				
		१७				

---

* ७ मात्राओंकी पताका निम्न प्रकारसे भी लिखी जाती है।

७ मात्राओंकी पताका

अथ वरण खंड मेर स्वरूप

						१	१
					१	२	१
				१	३	३	१
			१	४	६	४	१
		१	५	१	१	५	१
	१	६	१५	२	१५	६	१
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१

प्राचीन मत च्यार वरण पताका स्वरूप

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१	१५	
		११		
		१३		

यण विध पूरब अंक जुड़, सिर पंक्तरा अंक।
वरण पताका नवीन विध, सूधौ मत निरसंक॥ १०८

अथ मरकटी लक्षण कथन।

छप्प

किव पूछै जौ कोय, ग्यांन रूट मांत एक थळ।
जिणरी अखु जुगत, सुणौ कवि सुमति सठऽजळ॥
किती व्रत्तिके भेद, मात्र कितरीके वरणह।
कितरा गुरु लघु किता, रटौ हिक ठौड़ सु निरणह॥
मांडजै तेण पुळ मरकटी, रूट विध ग्यांन दिखाइयै।
'किसनेस' सुकव घन जनम किव, गुण जौ राघव गाइयै॥१०९

अथ मात्रा मरकटी विध कथन।

कवित छप्पै

पंक्त रूट करि प्रथम, संख्य मत्ता कोठा सम।
पांत मत्त भर प्रथम, एक दौ त्रय चव यण क्रम॥
पूरव जुगळ भर भेद पंत, त्री चवथ पंच तज।
पंत छटी भर पहल, एक बे अंक परठ सुज॥
धर बीय सीस अंकौं सघर, बियौ भेद पंक्त सुमिळ।
लख बीया अग्र पांचौं सुलछ, पांत छठी यम भर प्रघळ॥ ११०

आव सुन्य गुरु पंत, अंक अन गुरु लघु आरख।
गुरु लघु पंकति गिणौ, वरण पंक्त भर पेखख॥

---

१०८. निरसंक–निशंक।

११० पांत–पंक्ति। त्रय–तीन। चव–चार। यण इस। त्री–तीन। चवथ–चौथा। बे–दो। परठ–रख। बीय–दूसरा। बियौ–दूसरा। सुलछ–अच्छे लक्षण। प्रघळ–अच्छी प्रकार।

१११ आरख–समझ। पेखख–निर्णय।

व्रत भेद गुण विन्हैं पंत, विच मत्त पंत धर।
यम खट पंक्त सुकवि सुमत हूता पूरण भर॥
मरकटी मत्त यम 'किसन' मुण खट विघ ग्यांन सु एक थळ।
जनम कर सफळ पायी जिकौ, भ्रास कीत रघुबर भ्रमळ॥ ११

अथ दस मात्रा मरकटी स्वरूप

वृति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
मात्रा	१	४	९	२	४	७८	१४७	२७२	४९५	८९
वरण	१	३	७	१५	३	४८	१ ९	२ १	३९५	९५५
गुरु		१	२	५	१	२	१८	७१	१३	२१५
लघु	१		५	१	२	१८	७१	१३	२१५	४२

अथ बरण मरकटी भरण विध

कवित छप्प

प्रथम परठ खट पंत, कोठ वरणा समांन कर।
व्रत पंत यक दोय तीन, चव पंच सस्ट भर॥
भेद पंत घे प्यार भ्राठ भर दुगुण भ्रंक मण।
व्रखि भेद गुण थिहु, वरण वंकत चौथी घण॥
वरण पंत भ्रंक कर भ्ररघ धर गुरु लघु पंक्त भर गहर।
गुरु वरण पंत जै भ्रंक मिळ, भल मत पंक्त भ्रतीय भर॥ ११२

इति बरण मरकटी।

---

१११ विन्हुं–दोना। हूंता–है। मुण–कहना। एक थळ–एक स्थान। भ्रास–यह। कीत–कीर्ति। भ्रमळ–निर्मल।

११२ कोठ–कोष्ठक। व्रत–वृत। थिहु–या। गहर–गम्भीरता।

यण विध पूरथ अंक जुड़, सिर पंकतरा अंक ।
वरण पताका नवीन विध, सूधौ मत निरसंक ॥ १०८

अथ मरकटी ममरण कथन ।

छप्पै

किव पूछै जौ कोय, ग्यांन स्ट भांत एक थळ ।
जिणरी अखु जुगत, सुणौ कवि सुमति सउज्जळ ॥
किती व्रत्तिके मेद, मात्र कितरीके वरणह ।
कितरा गुरु लघु किता, रटौ छिक ठौड़ सु निरणह ॥
मांडजै तेण पुळ मरकटी, स्ट विध ग्यांन दिखाड़यै ।
किसनेस'सुकव धन जनम किव,गुण जौ राघव गाइयै ॥१०९

अथ मात्रा मरकटी विध प्रथम ।

कवित छप्पै

पंकत स्ट करि प्रथम, संख्य मत्ता कोठा सम ।
पांत व्रत्त भर प्रथम, एक वौ त्रय भव यण क्रम ॥
पूरव जुगळ भर मेद पंत, श्री चवय पंच तज ।
पंत छटी भर पहल, एक मे अंक परठ सुज ॥
भर बीय सीस अंकौ सघर, बियौ मेद पंकत सुमिळ ।
लख बीया अग्र पांचौं सुलह, पांत छठी यम भर प्रघळ ॥ ११०

आद सुन्य गुरु पंत, अंक अन गुरु लघु आरम्म ।
गुरु लघु पंकति गियौ, मरण पंकत भर बेधरम ॥

---

१०८ निरसक–निशंक ।

११ पांत–पंक्ति । त्रय–तीन । चव–चार । पण इस । श्री–तीन । चवय–चौथा । बे–दो । परठ–रख । बीय–दूसरा । बियौ–दूसरा । सुळहै–मच्छे प्रकार । प्रघळ–मच्छी प्रकार ।

१११ आरम्भ–समझ । बेधरम–निर्भय ।

अथ मात्रा छंद वरनण

दूहा

मत्त ग्रन्थमें सुकव मुण, मात्र प्रमांण मुकांम।
आवै समता आखिरां, वरण ग्रन्थ जिण ठांम॥ १

मत्त ग्रंथ छिक अह मुणी, पढि सौ ध्यार प्रकार।
मत्त छंद उप छंद पद, असम सुदंडक धार॥ २

छंद चंद्रायणो *

लग मत्ता चौबीस छंद मत्त लेखजै।
सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै॥
वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै।
ये छंदां मिळ दंडक मत्त वखांणजै॥ ३

अथ मात्रा छंद तत्र गमक छंद

पंच मत, गमक सत।
सीत भर, रांम रग॥ ४

छंद थांम छ मात्रा

छ मत 'थांम' समरि स्यांम।
झूठ धंध, मन म फंध॥ ५

---

१ मुकांम–स्थान। आखिरां–अक्षरोंमें। ठांम–स्थान।
२ छिक–एक। अह–शेषनाग। मुणी–कही।
३ लेखजै–समझिये।
४ सत–सत्य। रग–राम शब्दकी ध्वनि।
५ छ–६ है। मत–मात्रा मति। थांम–एक छंदका नाम भी। स्यांम–स्वामी ईश्वर। धंध–सांसारिक प्रपञ्च। म–मत।

हे मूर्ख! तेरी बुद्धि स्त्रीमें है। तू सांसारिक झूठे प्रपञ्चोंमें अपने मनको मत फंसा और ईश्वरका स्मरण कर।

---

* एक मात्रासे २४ मात्रा तकके पद्यको छंद कहते हैं। २४ मात्रासे अधिक को उपछंद तथा छंद और उपछंदके मेलको दंडक छंद कहते हैं। मतान्तर से ३२ मात्राके छन्दको भी दंडक कहते हैं।

अथ अष्ट बरण मेरकौ स्वरूप ।

वृति	१	२	३	४	५	६	७	८
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४	५७६	१ ४४	३ ७२
बरण	२	८	२४	६४	१६	३८४	८९६	२ ४८
गुरु	१	४	१२	३२	८	१९२	४४८	१ २४
लघु	१	४	१२	३२	८	१९२	४४८	१ २४

अथ सात मात्रा मेरकौ स्वरूप ।

वृति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२	४	७८	१४७
बर्ण	१	३	७	१५	३	५८	१ ९
गुरु		१	२	५	१	२	३८
लघु	१	२	५	१	२	३८	७१

इति मात्रा बरण सोळम करम सपूरण ।

अथ मात्रा व्रति वरणण

दूहा

मत्त व्रत्तमें सुक्व सुण, मात्र प्रमांण मुकांम।
आवै समता आखिरां, वरण व्रत्त जिण ठांम ॥ १

मत्त व्रत इक अह सुणी, पढि सौ च्यार प्रकार।
मत्त छंद उप छंद पद, असम सुदंडक धार ॥ २

छंद बखाणणो *

लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै।
सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै ॥
वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै।
बे छंदां मिळ दंडक मत्त बखांणजै ॥ ३

अथ मात्रा छंद तंत्र गमक छंद

पंच मत, गमक सत।
सीत वर, रांम रर ॥ ४

छंद थांम छ मात्रा

छ मत 'थांम' समरि स्यांम।
झूठ धंध, मन म अंध ॥ ५

---

१ मुकांम—स्थान। आखिरां—अक्षरोंमें। ठांम—स्थान।
२ इक—एक। अह—शेषनाग। सुणी—कही।
३ लेखजै—समझिये।
४ सत—सत्य। रर—राम शब्दकी ध्वनि।
५ छ—६ है। मत—मात्रा मति। थांम—एक छंदका नाम भी। स्यांम—स्वामी ईश्वर। धंध—सांसारिक प्रपञ्च। म—मत।

रे मूर्ख! तेरी बुद्धि अंधी है। तू सांसारिक झूठे प्रपञ्चोंमें अपने मनको मत फँसा और ईश्वरका स्मरण कर।

---

* एक मात्रासे २४ मात्रा तकके पदको छंद कहते हैं। २४ मात्रासे अधिक को उपछंद तथा छंद और उपछंदके मेलको दंडक छंद कहते हैं। मतान्तर से ३२ मात्राके ऊपरको भी दंडक कहते हैं।

छंद कंता सात मात्रा

कळ सत 'कंत', जिण जगणंत।
रट रघुराय, थिर सुख थाय ॥ ६

दूहो

सात मत्त पद प्रत पड़ै, सुगति छंद सौ थाय।
आठ मत्त अंतह तगण, पगण छंद कहवाय ॥ ७

छंद सुगति

भूप रघुवर, सभ्झत धनु सर।
जूझ मंडे, दैंत दंडे ॥ ८

छंद पगण अस्ट मात्रा

रांम महराज, करण जन काज।
कोट रवि कंत, देह दुति वंत ॥ ९

छंद मधु-भार

चव कळ जगांण, मधु भार जांण।
भजि औध भूप, रवि कोट रूप ॥
श्रीरांमचंद्र, त्रिभुवेस चंद।
तन दीघ तास, जपि कीत जास ॥ १०

---

६ कळ–मात्रा संसार। सत–सात सत्य। जिण जगणंत–जिसके अन्तमें जगण होता हो। जिसमें सारा जग विलीन होता हो। थिर–स्थिर। थाय–होता है।
संसारमें सत्य केवल ईश्वर है जिसमें ही जगत विलीन होता है। अतः हे मन ! तू रामचन्द्रजीको रट जिससे तेरे सब सुख स्थिर हो जावें।

७ पद प्रत पड़ै–प्रत्येक चरणमें हो।

८ जूझ–युद्ध। मंडे–रचा। दैंत–दैत्य। दंडे–दण्ड दिया।

९ कंत–कांति। दुतिवंत–दीप्तिमान्।

१० चव–चार, कह। कळ–मात्रा दुख। जगांण–जिसके अंतमें जगण हो सकार।
मधुभार–एक छंद का नाम (मधु–मद्य। भार–बोझ)।

अथ नव मात्रा छंद

छंद रसकल

नौ मात जैरै गुरु अंतपै रै।
रसकळ सुछंद, भज्जि कवसलैंद ॥ ११

अथ दस मात्रा छंद

छंद दीपक

मुण पाय दह्न मात, दीपक्क सुखदात।
जीहा अठूंजाम, संभार स्री रांम ॥ १२

इग्यारे मात्रा छंद

छंद रसिक

चव लघु सिव मत धरण।
वळ रूट पय तिण वरण॥
रसिक जिकण जग रटत।
मुण रघुवर अघ मटत॥
धनख धरण धुर धमळ।
'किसन' समर मुख कमळ॥ १३

विबुधेस-इंद्र। दीय-दिया। तास-उसने। कीत-कीर्ति। जास-जिसकी।

हे मन! तू इस संसारको तुच्छ कर और सांसारिक नशको बोझ समझ। देवताओंके स्वामी इन्द्रके अन्यतम और करोड़ों सूर्यके समान तेजस्वी अयोध्याके स्वामी श्रीरामचंद्रजी जिन्होंने तुझे यह शरीर दिया है उनका स्मरण एवं सदैव कीर्ति-गान कर।

११ नौ-नव न। मात-मात्रा। जैरै-जिसके। अंतपै-अंतमें। कवसलैंद-कौशलेन्द्र श्री रामचंद्र।

१२ पाय-चरण। दह्न-दस। जीहा-जिह्वा। अठूंजाम-अष्टयाम। संभार-स्मरण कर।

१३ चव-कह। सिव-ग्यारह। मत-मात्रा। वळ-फिर। तिण-उस। जिकण-जिसको। मटत-मिटते हैं। धनख धरण-धनुर्धारी। धुर-बोझ। धमळ-वहन करने वाला।

छंद आभीर

जै पय सिव मत जांण।
अंत पयोधर आंण॥
छंद आभीर अछेह।
रट रघुनाथ अरेह॥
हर जस गावण हार।
धन मांनुख तन धार॥१४

बारै मात्रा छंद

उद्योर

कळ भांण पाय कहंत।
उद्योर जिण जगणंत॥
रे किसन भजि सियरांम।
धांनख धर सुख धांम॥१५

त्रयोदस मात्रा छंद

छंद अनांम

तरै मत्त गुर लघु अंत।
किय छंद अनांम कहंत॥
रट सीता नायक रांम।
करै चित तणा सिघ कांम॥१६

---

१४ जै जिस। मत-मात्रा। सिव-ग्यारह। पयोधर-अप्रमुखी चार मात्राका नाम (जगण)। अछेह-अपार। अरेह-निरन्तर।

१५ भांण-(भानु) बारह। पाय-चरण। जगणंत-जिसके अंत में जगण हो।

१६ किय-करि।

चतुरदस मात्रा छंद

छंद हाकल

तै दुज गुर कळ चवद तठै।
जांणौ हाकळ छंद जठै॥
भव सागर तर रांम भजौ।
तै विण आन उपाय तजौ॥१७

छंद झंपताल

गुर अंत मत चवदह गिणी।
भल झंपताळी कवि भणी॥
रघुनाथ जेण रिझावियौ।
पद उरध तै कवि पाइयौ॥१८

पंचदस मात्रा छंद

छंद जैकरी

कळ दह पंच जाण जैकरी।
दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी॥
भज भज सीता राघव मई।
दस सिर जेता अघ हर दई॥१९

छंद चौपई

पद दस पंचह मत्त प्रमांण, जगण अंत चौपई सजाण।
पायौ जै धन मानव पिंड, आखै राघव कीत अखंड॥२०

---

१७. तै–तीन। दुज–४ मात्रा। त विण–उनके बिना। आन–अन्य।
१८. भल–ठीक। रिझावियौ–प्रसन्न किया। उरध–ऊर्ध्व। पाइयौ–प्राप्त किया।
१९. दह–दस। दुज–४ मात्रा। मुर–तीन। प्रिय–दो मात्रा। जेता–विजयी।
२०. पायौ–प्राप्त किया। जै–जो। पिंड–शरीर। आखै–कहे। कीत–कीर्ति।

सौळस मात्रा छंद

दूहो

ध्यार चतुक्कळ सोळमत, सगण अंत पय साज।
सिंह विलोकण छंद सौ, रट कीरत रघुराज॥ २१

छंद सिंह विलोकण

घन घन हरि चाप निखंग धरी।
घर सील सघर क्रत ऊंच करी॥
करतार करां जग भौक जपै।
जय क्रती जिकै खळ पाप खपै॥ २२

छंद चरणा कुळक

सौ पदकूळ पय मत्त सोळै।
अंतक सूं निरभै हर ओळै॥
जै कज हे क्रिव रांम जपीजै।
जांण करंजुळ आयुख छीजै॥ २३

छंद अरिल

दो लघु अंत पयं मत्त खोड़स।
छंद अरिल्ल विना हर खोड़स॥
केसव नांम विना अणभै कर।
कौसळनंद जर्न नरभै कर॥ २४

---

२१ सौ–(घ) यह।

२२ घन–बादल। निखंग–(निषंग) तर्कस। सघर–दृढ़ धनुष। क्रत–कार्य। ऊंच–श्रेष्ठ। भौक–धन्य-धन्य। जयक्रति–विजयी। जिकै–जिसके। खळ–दुष्ट। खपै–नाश होते हैं।

२३ सौ–उसके। पदकूळ–चरणाकुल। अंतक–यमराज। हर–(हरि) ईश्वर। ओळै–ओट। जै–जिस। क्रम–लिये। करंजुळ–हाथका जल। आवरख–आयु। छीजै–नष्ट होती है।

२४ अणभै–निर्भय। जर्न–जन्म। नरभै–निर्भय।

छंद पाधरी

अख मत्त सोळ यक जगण अंत ।
पाधरी छंद कवि जे पढ़ंत ॥
राजाधिराज माराज रांम ।
ते ताज सीस आलम तमाम ॥
'अरिहंत' भग्त अग्रज अहेस ।
जांनुकीकंत मतिवंत जेस ॥
तन स्यांम घणा घण रूप ताय ।
पट पीत यरण तड़िता प्रभाय ॥
आजांणबाहु अद्वितीय अंग ।
निज पांण बांण धनु कटि निखंग ॥
सीय याम अंग मुख अग्र सेख ।
बजरंग पाय सेवत निमेख ॥
इण रूप ध्यान निज अवध ईस ।
कर भजन 'किसन' निस दिन कवीस ॥ २५

छंद बंधमरी

गुरु लघु अनियंम सोळ मता गण ।
छंद यै आवरी सोय विचख्खण ॥
दाटक रांम आलाटक दंडण ।
हाटक कोट अधीस विहंडण ॥

---

२५. आलम-संसार । अरिहंत-शत्रुघ्न । अहेस-लक्ष्मण । मतिवंत-बुद्धिमान । घणाघण-(घनाघन) बादल । तड़िता-बिजली । प्रभाय-चमक । आजांणबाहु-आजानुबाहु । पांण-(पाणि) हाथ । सेख-लक्ष्मण । बजरंग-हनुमान । पाय-चरण ।

२६ अनियंम-नियम नहीं । विचख्खण-विचक्षण । दाटक-समर्थ । आलाटक-दुष्ट । दंडण-दंड देने वाला । हाटक-स्वर्ण । कोट-गढ़ । अधीस-स्वामी । विहंडण-नष्ट करने वाला ।

आस्रय आय ममीखण आतुर।
वेख अवी जिण लंक सियावर॥
एक घड़ी मभ्क दास उधारै।
धांनुंखधार अहा व्रद धारै॥
सौ नित गाव 'किस्मन' सुभायक।
नाथ अनाथ धणी रघुनायक॥ २६

अथ रड्ड

सप्तदस मात्रा

दूहौ

कीजै दूहौ प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय।
सिथ रिव तिथ सिव तिथ, सुपय रड्ड छंद कहाय॥ २७

अथ प्रथम तरे चूडामरण नांम

धारत कर सायक धनुस त्रेमोयण सिरताज।
भजियां जन कारक अभै, जै राघव माहराज॥
राज ममीखण लाज राखण, सरणागत साधारण।
धनंख सायक भुजां धारण, मह असुर खळ मारण॥
जांनुकीवर मरम जाणग तेग अरेसां तायक।
'किसन' भज जन मान रखके, वांन अभै वरदायक॥ २८

---

२६ आतुर-दुखी। वेख-देख। अवी-इनायत की। मभ्क-मध्य। दास-भक्त। धांनुंखधार-धनुषधारी व्रद-विरद। सुभायक-सुखदिकर। धणी-स्वामी।

२७. तिथ-१५। रिव-१२। सिव-११।

२८. त्रैमोयण-त्रिभुवन। साधारण-रक्षा करने वाला। मह-(महि) पृथ्वी। मरम-मर्म। जांणग-जानने वाला। अरेसां-(अरि+ईस) शत्रु। तायक-नाश करने वाला।

नोट—सप्तदस मात्राके रड्ड छंदका लक्षण जैसा ग्रंथकारने दिया है उसके अनुसार उदाहरण नहीं है क्योंकि सत्तरह मात्रा किसी भी चरणमें नहीं हैं।

अथ बीस मात्रा पयगम छंद

प्रथमतरे चंद्रायणो छंद

दूहो

जे रवट कळ लघु गुरु चरण, अंत मत्त इक बीस।
जुगम छंद चंद्रायणो, आख सुजस अवधीस॥ २६

छंद चंद्रायणो

स्यांम घटा तन रूप निरानन सामळा।
धर्‍यौ दुपटा पीत छटा जिम बीजळा॥
कट तट ओप निखंग कोट छिब कांमकी।
रूप अनूप मनूप यसी दुति रांमकी॥ ३०

तवीस मात्रा

छंद महादीप

महदीप छंद तेहि दुग मत पय जांणौ।
यगण जाड़ सुनम रांम नूपत उर मझ आंणौ॥
जनपाळ सा दयाळ सुनग जियगनजांमी।
सगता मभार बिरदधार रघुमांन नांमी॥ ३१

छंद हीर

अथ रस्वकळ अंत रगण नांम छंद हीर है।
सौ प्रभु वय धन्य वदत सांगत रघुबीर है॥

धरण धनुस बांम पांण बाण दच्छ हाथ है।
भंजण गढ़ लंक भूप गंजण दस माथ है ॥ ३२

छंद रोळा

अौयण मत चौबीस होय जिण रोळा आखत।
भल कवि जोड़ग छंद मांझ, राघौ जस भाखत ॥
गैल अौण रज परसत रीजै नारी गौतम।
प्रतिपल 'किसना' रांमचंद्र सौ भज पुरसोतम ॥ ३३

छंद वथुवा

भव तेरह मत अौण, कोय उप दोहा आखै।
अख रोळा ज्यु ऊभै, त्रिविध आनंद ज्यु आखै ॥
दस तेरह मत्त रुद्र रुद्र रुद्रह नव आवै।
राय मिथु तिण नांम रुद्र दस अंन मत गावै ॥ ३४

अथ छंद काव्य

आद मत्त अगीयार दुतीय पद तेर मात दख।
काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख ॥
जिम कोसिक रख जेण, असुर मारीच उडायौ।
मार सुबाह मर्दम, प्रगट रघुवर जय पायौ ॥ ३५

---

३२ बांम—बायां। पांण—(पाणि) हाथ। दच्छ—दाहिना। भंजण—तोड़ने वाला। लंक—लंका। गंजण—पराजित करने वाला। दसमाथ—रावण।

३३ अौयण—चरण। मत—मात्रा। आखत—कहते हैं। भल—उत्तम श्रेष्ठ। जोड़ग—रचना करने वाला। मांझ—मध्य। राघौ—श्री रामचंद्र भगवान। गैल—रास्ता। अौण—चरण।

३४ भव—ग्यारह। आखै—कहते हैं। रुद्र—ग्यारह।

३५ आद—आदि। अगीयार—ग्यारह। मात—मात्रा। दख—कह। अख—कह वर्णन कर। जिम—जब। कोसिक—विश्वामित्र। रख—रक्षा कर। जेण—जिस।

दूहो

मत्त छंद 'किसनै' मुणी, निज कीरत रघुनंद।
सुणौ सुकव भ्रख् सकौ, भ्रव मत्ता उप छंद ॥ ३६

इति मात्रा छंद संपूरण

भ्रथ मात्रा उप छंद वरणण

दूहो

जिण पय मंदाकिण जनम, भ्रघ नासिणी भ्रपार।
जिण भजतां भ्रघ जाणरी, विसमय किसुं विचार ॥ ३७

तत्राहि हरि गीत छंद

घव भ्राद स्टकळ दुकळ गुरु यक पाय मत भ्रठ वीसयं।
हरि गीत सौ जिण भ्रंत लघु सौ रांम गीत मती सयं॥
भ्रपु स्यांमसुंदर मेघ रुचि फवि तड़ित पीत पटंबरं।
भुज बांम चाप निखंग कटि तट दच्छ कर भ्रांमत्त सरं ॥ ३८

छंद रांम गीत

दसमाथ भंज ममाथ भुज रघुनाथ दीन दयाळ।
गुह भ्राह भ्रीधक बंध तै गत ग्रवण भाल विसाळ॥
सुग्रीव निरवळ राखि सरणै सबळ बाळ संघार।
पह जोय 'किसना' नांम परचौ तोय गिरवर तार ॥ ३९

---

१७ पय–चरण। मंदाकिण–(मंदाकिनी) गंगा। भ्रघ–पाप। नासिणी–नाश करने वाली मिटाने वाली। विसमय–(विस्मय) भ्रारचर्य। किसुं–कैसा।

१८. घव–कह। भ्राद–(भ्रादि) प्रथम। वपु–शरीर। रुचि–कांति। तड़ित–बिजली बांम–बायां। चाप–धनुष। निखंग–तर्कश। दच्छ–दक्षिण।

...उपरा। समाथ–समर्थ। पत (पति) मालिक। ... ...

... परचौ–चमत्कार। तोय–पानी। गिरवर–पर्वत।

... गीतमें यही अंतर है कि राम गीतमें अंतिम वर्ण ह्रस्व रहता है। ... गीत में सत्ताईस मात्रा ही है।

छंद सवैया

अंत भगण ईकतीस मत्त पद छैस सवैयौ छाजत।
लख कारज तज समर रांम पद बीजां भजतौ मुद न लाजत॥
संत अनेक उधार सियाबर पै सरणा अनाथां पाळण।
गदवा जै पद वीज सची गथ जनमां तणा दुख सौ जाळण॥ ४०

दूहौ

पद प्रत मत गुणतीस पढ़ि अंत गुरु लघु होय।
राघव जस जिण मझ रटा, कहै मरहट्टा सोय॥ ४१

छंद मरहट्टा

सीता सी रांणी वेद बखांणी, सारंगपांणी सांम।
मीढ न मघवांणी यळ ब्रहमांणी, नहिं रुद्रांणी नांम॥ ४२
जे अंतर जांमी बार नमांमी, स्वांमी जग साधार।
जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, ससि सस वीवं सार॥ ४३

दूहौ

सात चतुकळ चरण मैं, एक होय गुरु अंत।
चवुर पदी कोइक चवै, रुचिरा कोय रटंत॥ ४४

छंद चतुरपदी तथा रुचिरा

दस माथ विहंडण आसुर खंडण, राघव भूप अरोड़ा।
पाथर रच पाजं समुद सकाजं, तैं गढ हाटक तोड़ा॥

---

४० छाजत–शोभा देता है। लख–लाखों। बीजां–दूसरों को।

४१ पद–चरण। प्रत–प्रति। सोय–वह।

४२ सारंगपांणी–(सारंगपाणि) विष्णु श्रीरामचंद्र। सांम–(स्वामी) पति। मीढ़–समता। मघवांणी–इन्द्राणी। ब्रहमांणी–ब्रह्माणी। रुद्रांणी–पार्वती सती।

४३ साधार–रक्षक। पतनी–पत्नी। पीयं–पति। सस–शशि चंद्रमा। वीवं–सूर्य।

४४ कोइक–कोई। चवै–कहते हैं। रटंत–कहते हैं।

४५ विहंडण–नाश करने वाला। अरोड़ा–जबरदस्त। पाथर–पत्थर। पाजं–सेतु, पुल। हाटक–स्वर्ण। रिव–(रवि) सूर्य।

सीताचौ स्वांमी अंतरजांमी रवि कुळ मंडण राजा।
जिण सुजस जपीजै लभ तन लीजै कीजै सुक्रत काजा ॥ ४५

छंद घत्ता

सत दुजवर ठांणी अथ कळ आंणी कहि घत्ता यक तीस कळ।
रटजै मझ राघौ दुख अघ दाघौ फिर तन धारण पाय फळ ॥
द्रुम सात निभेदण क्रमगत छेदण तै जस कह भव सिंधु तर।
सुत स्त्री कौसल्या तार अहल्या, करुणानिध सौ याद कर ॥ ४६

अथातरे घत्तानंद अन्य विध

दस सात मात्रा पर विस्रांम मत सम्रु सतरै मात्रा सो घत्तानंद छंद।

छंद त्रिभंगी

दस अठ अठ ठांमं चव विस्रांमं छंद सुनांमं तिरभंगी।
रघुनाथ समथ्यं हणि दसमथ्यं रखि यळ गथ्यं रिण संगी ॥
ससिबदनी सीता कंत पुनीता दास अमीता कुळदीता।
'किसना' जिण कीता गुण मुख गीता प्रगट पुणीता जग जीता ॥ ४७

अठ प्रकार छंद लक्षण

दूहौ

तिरभंगी १ पदमावती २ दंडकळ ३ लीलावती ४।
दुमिळा ५ जनहर ६ छंद दख अै सम छह अखंत ॥ ४८

---

४५ मंडण–आभूषण। लभ–लाभ। काजा–कार्य।

४६ सत–सात। दुजवर–चार मात्राका नाम। ठांणी–रखो। अथ–तीन। मझ–मध्य। दाघौ–जलाओ। निभेदण–भेदन करने वाला। क्रमगत–कर्मगति। छेदण–नाश करने वाला। भव–संसार।

४७. ठांमं–ठ मात्रा। चव–कह। समथ्यं–समर्थ। हणि–मार कर। दसमथ्यं–रावण। रखि–रख कर। यळ–पृथ्वी। गथ्यं–गाथा वृत्तान्त। ससिबदनी–चन्द्रमुखी। कंत–पति। पुनीता–पवित्र। दास–भक्त। अमीता–निर्भय। कुळदीता–(कुल+आदित्य) सूर्यवंशी। कीता–कीर्ति। गीता–गाथा।

छंद पदमावती

दस वसु रुद्र आठं इक पद पाठं सौ पदमावती छंद सही ।
सौ सुकव सुभागी हरि अनुरागी मत लागी जस रांम मही ॥
सीता वर सुंदर मह गुण मंदर पाय पुरंदर दास पड़ै ।
चव जै जस चारण 'किसन' सकारण धारण सौ यक एक घड़ै ॥४९

छंद दंडकळ

दस अठ चवदेसं दंडकळेसं मत्त मतेसं जेण पयं ।
कह जे मझ कीरत पावत स्रीपत लाभ सधारण देह लयं ॥
अवधेस अभंगं, जीपण जंगं कोटि अनंगं धारी कळ ।
खर दूखर खंडण माळ विहंडण दाप निवारण पाप वळ ॥५०

छंद दुमिळा

दस वसुरुद्र ठांणौ फिर वसु आंणौ दुमिळा ठांणौ करणंता ।
दसरथ सुत नृपवर कळळखयंकर, सौ भव दध तिर निज संता ॥
रवि कौट प्रकासं जपि मुख जासं, देण अमेपद निज वासं ।
निस दिन पन्नासं, हरखि हुलासं, जस प्रतिसासं जपि जासं ॥५१

---

४९ वसु—आठ । रुद्र आठ—चौदह । सौ—वह । सुकव—सुकवि । सुभागी—भाग्यशाली । मत—मति । मह—मही, महान् । पाय—पैर । पुरंदर—इंद्र । दास—भक्त । घड़—[illegible] पक्षमें ।

५० चवदेसं—चवदह । मत्त—मात्रा । मतेसं—बत्तीस । पय—चरण । मझ—(मध्यमें) । अभंगं—वीर । जीपण—जीतने वाला । जंग—युद्ध । कळ—कांति । खर दूखर—खर, दूषण । खंडण—मारने वाला । माळ—मालि । विहंडण—नष्ट करने वाला । दाप—दर्प अभिमान । वळ—समूह ।

५१ वसुरुद्र—चौदह । ठांणौ—स्थापित करो । आंणौ—लाओ । करणंता—जिसके अंतमें कर्ण (ऽऽ) हो । कळळ—कलुष । खयंकर—नष्ट करने वाला । भव—संसार । कौट—(कोटि) समूह । अमेपद—निर्भयता । पन्नासं—पास जाकर । जास—यश । प्रतिसासं—(श्वास प्रतिश्वास) प्रत्येक श्वास ।

छंद लीलावती

गुरु लघु विण नियम तीस वि मत्ता।
लीलावती गुरु अंत कहै।
जौ रघुबर गावै सब सुख पावै,
निभय जिकां जम ताप नहै।
सर गिरवर तारे पदम अठारै,
मेन उतारे जगत सखै।
मिड़ रांत्रण भंजे गढ़हिम गंजे,
अमरां रंजे ब्रह्म अखै।५२

छंद मनहरण

सब लघु पय पय धरि पछ यक गुरु करि,
जळहर कळ सम लछण धरै।
सुज उर दुति सरवर तिम कळ तरवर,
सिघ रघुवर सुजस धरै।
हर अकरण करण सरण असरण हरी,
तरण अतर भव जळधि तिकौ।
कट कट अघ दुघट विकट्ट थट अण घट,
झट झट रट रट 'किसन' जिकौ।५३

छंद करवीर

पव कळ उरोज थळ च्यार बोज,
करवीर छंद कह यम कव्यंद।

---

५२ बिण–बिना। मत्ता–मात्रा। नहै–नष्ट होते हैं। सर–समुद्र। सखै–साखी देता है। मिड़–योद्धा। भंजे–नाश किया। गढ़हिम–गढ़। गंजे–जीत लिया। रंजे–प्रसन्न किया। ब्रह्म–ब्रह्मा। अखै–कहता है।

५३ पय–चरण। पछ–पश्चात्। जळहर–घनाक्षरी नाम। विकट्ट–भयंकर। थट–समूह। अणघट–जो घटित न हो।

५४ कव्यंद–कवीन्द्र महाकवि।

जस वांण जास मधि चित हुलास,
अख पाप नास रघुवंस चंद।
दसरथ कुमार, धनुबांण धार,
जुध असुर जार मरण सधार।
जांनकीनाथ गिरतार पाथ,
सौ है समाथ भव सिंधु सार। ५४

सोरठौ

वीस मत्त विसरांम, दुवै सतर गुरु अंत दस।
तीस सात मत तांम, जिण पद छंद सभूलणा॥ ५५

दूहौ

आठ पंच कळ पाय यक, आख फेर गुरु अंत।
नांम जेण पिंगळ निपुण, उप भूलणा अखंत॥ ५६

छंद भूलणा

वेद चत्र भेद खट तरक नव व्याकरण वळै खट भाख जीहा वखांणै।
भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, ढगत जुगतां तणा भेद आंणै॥
राग खट तीस धुनि व्यंग भूखण सुभ्रम पात पद।
जिकै विण समभ चहूल पंखी जिही जे न रघुनाथचौ नांम जांणै॥ ५७

---

५४ मधि-मध्य। चंद-इन्द्र। असुर-राक्षस। जार-नष्ट कर। पाथ-अर्जुन। समाथ-समर्थ। भव-संसार। सिंधु-समुद्र।

५६ पाय-चरण। यक-एक। आख-कह। अखंत-कहते हैं।

५७. वळै फिर। भाख-भाषा। जीहा-जिह्वा। पौरांण-पुराण। ढगत-उक्ति। जुगतां-युक्तियां। धुनि-(स ध्वनि) वह विषय या काव्य जिसमें शब्द और उनके साधारण अर्थसे व्यंग्यमें विलक्षणता या चमत्कार हो। व्यंग-(सं व्यंग्य) व्यंजना वृत्तिसे प्रकट होनेवाला गूढ़ार्थ। भूखण-अलंकार। विण-समभ-मूर्ख प्राणी। चहूल-एक प्रकारकी काली रंगकी छोटी चिड़िया जो वृक्षों पर बहुत सुन्दर घोंसला बनाती है और बहुत ही मधुर बोलती है। पंखी-पक्षी। जिही-जैसे। जे-जो।

आजांनभुकर सर चाप सुघर,
जिण अतुळ पराक्रम वेद भखै, सिस सूर सखै।
'किसनेस' सुकव वृख सौ निस दिव,
रवि मिं भाखै, भव कंज मखै॥ ६०

दूहौ

कर दुजवर नग्र रगण छिक, चव पै मत चाळीस।
सुकवी खंजा छंद सौ, सुण कीरत लिछमीस॥ ६१

छंद खजा

रखण जन सरण रघुराज कौसळ कंवर,
धनुख सर धरण कर सकळ सुख धांम है।
भरत्थ अरिहा लछण भ्रात अग्रज सुभग महा,
मन हरण घण रूप तन स्यांम है।
सरल तन सहज दन मुक्त दायक सुमत,
गजगमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है।
रात दिन हुलस मन सुजस 'किसनेस' रट,
रखण जन मांम तरुकांम रघु रांम है॥ ६२

दूहौ

बार प्रथम तेरह दुतीय रगण अंत विस्रांम।
मांझ चरण पचीस मत्त, निज गगनागा नांम॥ ६३

---

६० आजांनभुकर आजानबाहु। सर-बाण तीर। चाप-धनुष। सिस-(शशि) चन्द्रमा। सूर-सूर्य। सखै-साखी देते हैं। वृख-वह। निस दिव-रात दिन। रवि-हृदय।

६१ लिछमीस-(लक्ष्मी+ईश) विष्णु, श्रीरामचन्द्र।

६२ भरत्थ-भरत। अरिहा-शत्रुघ्न। लछण-लक्ष्मण। दन-(दान) दाता। मुक्त-मुक्ति मोक्ष। गजगमणी-गजगामिनी। भांम-भामिनी। गुण ग्रांम-गुणों का समूह। मन-मस्त। मांम-प्रतिष्ठा मर्यादा। तरुकांम-कल्प वृक्ष।

६३ बार-बारह। मांझ-मध्य मे।

छंद गगनांगा

खळ दळ समर खपावत किय जग गावत कीरती।
सीता वाहर सम्रतां वसुधा जाहर वीरती॥
'किसना' निस दिन जस कर गुणियण जैतू गावजै।
राघव राजा सौ रट प्रगट उंच पद पावजै॥ ६४

दूहौ

एक छकळ फिर च्यार कळ, पांच होय गुरु अंत।
अठावीस कळ औण प्रत, द्रुपदी छंद दखंत॥ ६५

छंद द्रुपदी

जनक सुता मन रंजण गंजण, असुर अगंजण आहव।
मैं सरणागत कदम सदा मद, मौ लजा रख माहवं॥
दीनानाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारणं।
तौ निज पायनि मौ दसरथ तण, घण पापां सिंघारणं॥ ६६

दूहौ

दस दस पर विसरांम चव, मत चाळीस हुवंत।
गुरु लघु अखिर नियम नहिं, उध्दत छंद अखंत॥ ६७

छंद उध्दत

दळ सभत खळ दाह यभ याज अणथाह,
गह रचण गजगाह नरनाह रघुनाथ।

---

६४ खपावत—नाश करते हैं। कीरती—कीर्ति यश। वाहर—रक्षा। वसुधा—पृथ्वी। जाहर—जाहिर प्रसिद्ध। वीरती—वीरत्व शौर्य। गुणियण—कवि। जैतू—जिसको।

६५. अठावीस—अट्ठाईस। औण—चरण। प्रत—प्रति। दखंत—कहते हैं।

६६ रंजण—प्रसन्न करने वाला। गंजण—नाश करने वाला। अगंजण—जो जीता न जा सके समर्थ। आहवं—युद्ध। घण—बहुत। सिंघारणं—संहार करने वाला।

६७. चव—कह। हुवंत—होते हैं होती है। अखंत—कहते हैं।

६८ यभ—इभ हाथी। वाज—घोड़ा। अणथाह—अपार। गह—गंभीर महान। गजगाह—युद्ध।

सट पटत भर सेस अति चकित अरेस,
दिन धं धळ दिनेस थरराहइ भर साथ।
निहसंत नीसांण ह्वै घाज हींसांण,
समझ काज घमसांण अपांण भड़ ओघ।
नृप दासरथनंद सौ कारुणासिंध,
जस राच राजिंद मुख राच आमोघ॥ ६८

दूहो

दुजबर नव ता पछ रगण, करण ता पछै होय।
अघ फेर गाथा अघर, माळा कहजै सोय॥ ६९

छंद माला

अवधपति अनम भुज, तेज रवि कोट सम,
सियपति सरम रख लख जनां आधार है आखा।
नृप राघव जगनायक लायक,
भूपाळ तेण जम लाखां॥ ७०

दूहो

सात टगण फिर त्रिकळ यक, अंत रगण इक आंण।
मत सैंताळी पायमें, पंच वदन सौ जांण॥ ७१

---

६८ अरेस-(अरीश) शत्रु। धू धळ-धूलि धारणकरि धूमिल धुंधला। दिनेस-सूर्य। थरराहइ-कांपायमान हुआ है। भर (भरि)-सब। साथ-सेना दल समूह। निहसंत-बजते हैं। नीसांण-नगारा। ह्वै होता है हाथी है। हींसांण हिनहिनाहट। घमसांण-युद्ध। अपांण-शक्तिशाली। ओघ-समूह। सौ-वह। कारुणासिंध-(करुणा सिंधु) दयासागर। आमोघ (अमोघ)-अव्यर्थ अचूक।

६९ करण दो दीर्घ का नाम। सोय वह।

७० रवि-सूर्य। कोट-करोड़। जम-जामा। लाखां-रखता है।

७१ पाय-चरण।

छप्पय पद-वहन

रघुवर महाराज गाव नह्चै यक पळ न लाव,
रंक करै सोई राव सुख भाव सांम रे।
दीनबंधु देवदेव भाखत स्रुति ब्रहम भेव,
जेता जग सौ ग्रजेव गहर गरुड़ गांम रे।
जळद नील देह जेह तड़िता पट पीत तेह,
गोब्यंद सत क्रत गेह सीत नेह संजणं।
राखण मिथळेसराज लाखत्रात ग्रघट लाज,
करि ग्रमाप समळ करग भरग चाप भंजणं॥ ७२

दूहौ

ग्रै मात्रा उपछंद, कहिया मत माफक 'किसन'।
नह्चै सुण रघुनंद, निज सेवगां निवाजसी॥ ७३

इति मात्रा उपछंद संपूरण।

ग्रथ मात्रा ग्रसम चरण छंद वरणण

दूहौ

मरण जनमचौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है संभार।
जंम मौ सळ भंजै जिसौ, कौसळ राजकंवार॥ ७४
नर तन पावै जे नरा, गुण गावै गोब्यंद।
जनम सफळ थावै जिकै, फिर नावै जम फंद॥ ७५

---

७२ राव-राजा। सांम-स्वामी। ब्रहम ब्रह्मा। भेव-भेद। जेता-जीतने वाला। ग्रजेव (ग्रजय)-जो किसीसे जीता न जा सके। गहर-गंभीर। जळद-बादल। जेह-जिस। तड़िता-बिजली। तेह-उस। गोब्यंद-गोविन्द। सीत-सीता जानकी। नेह-स्नेह प्रेम। संजणं-सायन करने वाला। करग-हाथ। भरग-भृगु मुनि परशुराम। चाप-धनुष। भंजणं-भजन करने वाला।

७३ ग्रै-ये। मत-मति बुद्धि। माफक-माफिक। निवाजसी-प्रसन्न होंगे।

७४ चौ-का। सळ-कष्ट। सलभ-सुलभ। संभार-स्मरण कर। मौ-मेरा। जिसौ-जैसा।

७५. गुण-यश कीर्ति। गोब्यंद-गोविंद। फंद-पाश बंधन।

अथ मात्रा असम चरण छंद वरणण ।

तत्रादि दोहा छंद

दूहौ

तेर मत्त पद प्रथम त्रय, दुव चव ग्यारह देख ।
अख सम पूरब उत्तर अघ, लछ्छण दूहा लेख ॥ ७६

अथ लछ्छण दूहा

दूहौ

मुज उलटायां सोरठौ, सांकलियौ आदंत ।
मध्य मेळ दूहौ मिळै, तव तूंबेरी तंत ॥ ७७

दूहौ

अजामेळ पर आविया, साठ सहंस जम साज ।
नांम लियां हिक नारियण, भड़ सोह छूटा भाज ॥ ७८

सोरठौ

प्रगट ऊम्हाणै पाय, आयौ सोह जांणै यळा ।
सिंधुरतणी सिहाय, कीधी धरणीधर 'किसन' ॥ ७९

सांकलियौ दूहौ

मत जकड़ी भव माग, मकड़ी जाळा जेम मन ।
हर द्रढ कर पकड़ी हिया, लकड़ी हगी पळ लाग ॥ ८०

---

७६ तेर—तेरह । मत्त—मात्रा । त्रय—तृतीय । दुव—दूसरा द्वितीय चव—चतुर्थ । लछ्छण—लक्षण ।

७७. मध्य मेळ दूहौ—वह दोहा छंद जिसकी तुकबंदी द्वितीय और तृतीय चरणसे की जाती है । इस दोहा छंदका दूसरा नाम तूंबेरा (तुंबेरी) भी है । तव—कह । तंत—उसे ।

७८. सहंस—सहस्र । जम—यम यमदूत । साज—सुसज्जित होकर । हिक—एक । नारियण—नारायण । भड़—योद्धा । सोह—सब । भाज—भग कर ।

७९ ऊम्हाणै—नग पैर । यळा—इला पृथ्वी संसार । सिंधुर—गज हाथी । तणी—की । सिहाय—सहाय सहायता । कीधी—की धरणीधर—ईश्वर ।

८ सांकलियौ—वह दोहा छंद जिसकी तुकबन्दी प्रथम चरण और चतुर्थ चरणसे की जाती है । इस दूहा (दोहा) छंदका दूसरा नाम अजामेळ भी है । कहीं-कहीं इसे बड़ा दूहा भी कहा गया है । मत—मति बुद्धि । जकड़ी—बन्धन की गई । भव—संसार । मकड़ी—(सं मर्कटक) आठ पांवों और आठ पैरों वाला एक कीड़ा जो दीवारों आदि पर अपना जाल बनानेमें प्रसिद्ध है ।

दूहो तूंबेरो

मेवा तजिया मछमहण, दुरजोधनरा देख।
केळा छोत विसेख, जाय बिदुर घर जीम्हिया ॥ ८१

दूहो

सौ दूहा तेईस सुज, नांम सहत निरधार।
जोड़ देखाऊ जुजुवा, सुणौ रांम जस सार ॥ ८२

कवित छप्पै

भ्रमर १ भ्रामरौ २ सरभ ३ सैन ४,
मंडुक ५ मरकट ६ सख।
करभ ७ नरछ ८ मुमराळ ९,
श्रवर मदकळ १० पयधर ११ अख ॥
चळ १२ वांनर १३ कछ भ्रकळ १४,
मच्छर १५ कच्छप १६ सादूळ्ह।
अहिवर १८ बाध १९ बिडाळ २०,
सुनकर २१ ऊदर २२ सप २३ यूळ्हा ॥
तेईस नांम दूहां तणौ,
वरणे 'किसन' वखांणियौ।
यळ भ्रय जनम खोयौ अवस,
ज्यां हरि नांम न जांणियौ ॥ ८३

उदाहरण

दूहो

भमर भ्रखिर छाईस भण, चत्र लघु गुरु बाईस।
यक गुर घट बे लघु बधै, सौ सौ नांम कवीस ॥ ८४

---

८१ मछमहण–विष्णु, ईश्वर। छोत–छिलका। विसेख–विशेष। जीम्हिया–भोजन किया।
८२ सौ–वे। जोड़–रच कर। जुजुवा–पृथक-पृथक।
८३ यळ–व्यर्थ। अवस–अवश्य।
८४ भ्रखिर–अक्षर। छाईस–छब्बीस। भण–कह। चत्र–चार। यक–एक। बे–दो।

अथ भ्रमर नाम
अक्खर २६ गुरु २२ लघु ४

दूहौ

ना कीज्यौ सैणा नरां, काची बीजौ कांम ।
राखै लाजा संतरी, राजा साचौ रांम ॥ ८५

अथ भ्रामर नाम
अक्खर २७ गुरु २१ लघु ६

दूहौ

कोड़ां पापां कीजतां, कोपै घ् की नास ।
जीहा राघौ जौ जपै, तौ नांही तिल त्रास ॥ ८६

अथ नाम सरभ
अक्षर २८ गुरु २ लघु ८

दूहौ

मांनौ बारंबार मैं, देखे नां नर देह ।
गायां स्री राघौ गुणां, औ पायां फळ एह ॥ ८७

अथ नाम सैन
अक्खर २९ गुरु १९ लघु १

दूहौ

मौळा प्रांणी रांम भज, सं तज झौड़ समांम ।
दीहा छेव्है देख रे, कैसे हं ता कांम ॥ ८८

अथ मंडूक नाम
अक्खर ३० गुरु १८ लघु १२

दूहौ

जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई रंज ।
भाग धडाई जनकरी, गाई बेद अगंज ॥ ८९

---

८५. अक्खर-अक्षर। सैणा-सज्जन। काचौ-कच्चा। बीजौ-दूसरा। लाजा-लज्जा। साचौ-सत्य।

८६ तिल-किंचित। त्रास-भय। राघौ-श्री रामचन्द्रजी।

८८. झौड़-कलह प्रपंच। दीहा-दिन। छेव्है-पश्चिम।

८९. जमाई-जामाता। रंज-प्रसन्न खुश। अगंज-न मिटने वाला।

अथ मरकट नांम
अख्यर ३१ गुरु १७ लघु १४
दूहौ

हर मत छाडै रै हिया, लिया चहै जौ लाह।
दिल साचै तेड़ौ दियां, नेड़ौ लिछमी नाह ॥ ९०

अथ करभ नांम
अख्यर ३२ गुरु १६ लघु १६
दूहौ

मांनवियां छाडौ मती, कर गाढ़ौ भज टेक।
जाडौ दळ फिरियां जमां, आडौ राघव अेक ॥ ९१

अथ नर नांम
अख्यर ३३ गुरु १५ लघु १८
दूहौ

रोम रोममें रम रि'यौ, देख अखंड दईव।
चोगी जिणसूं नह चलै, जावक भोळा जीव ॥ ९२

अथ मराळ नांम
अख्यर ३४ गुरु १४ लघु २०
दूहौ

मूरख जाचक जाच मत, जाच जाच जगदीस।
के रंकां राजा करै, एक पलक मझ ईस ॥ ९३

अथ मदकळ नांम
अख्यर ३५ गुरु १३ लघु २२
दूहौ

भख पुंहचावै भूधरौ, अजगर रै अनव्यास।
किम भूलै संता 'किसन', संभरतां सुख रास ॥ ९४

---

९० हर-इच्छा। छाडै-त्याग। लाह-लाभ। तेड़ौ-बुलावा। नेड़ौ-निकट। लिछमी-लक्ष्मी। नाह-नाथ पति।

९१ मांनवियां-मनुष्यो। छाडौ-त्यागो। छोड़ो। गाढ़ौ-दृढ़ मजबूत। जाडौ घना अधिक। आडौ-रक्षक।

९२ दईव-देव ईश्वर। जावक-बहुत मूर्ख। भोळा-अजानो।

९३ जाचक-याचक। रंकां-गरीबों। मझ-मध्य में। ईस-ईश्वर।

९४ भख-भोजन। -भूधरौ-भूधर, ईश्वर। अनव्यास-अनायास बिनाश्रम।

अथ भ्रमर नांम

अक्ष्यर २६ गुरु २२ लघु ४

दूहौ

ना कीज्यौ सैणा नरां, काचौ बीजौ कांम ।
राखै लाजा संतरी, राजा साचौ रांम ॥ ८५

अथ भ्रामर नांम

अक्ष्यर २७ गुरु २१ लघु ६

दूहौ

कोड़ां पापां कीजतां, कोपै घ की नास ।
जीहा राघौ जौ जपै, तौ नांही तिल त्रास ॥ ८६

अथ नांम सरभ

अक्षर २८ गुरु २० लघु ८

दूहौ

मांनौ वारंवार मैं, देखे नां नर देह ।
गायां स्री राघौ गुणां, श्रै पायां फळ एह ॥ ८७

अथ नांम सेन

अक्ष्यर २९ गुरु १९ लघु १०

दूहौ

मौळा प्रांणी रांम भज, त तज भौड़ तमांम ।
दीहा छेहै देख रे, कैसे ईला कांम ॥ ८८

अथ मंडूक नांम

अक्ष्यर ३० गुरु १८ लघु १२

दूहौ

जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई रंज ।
भाग बडाई जनकरी, गाई बेद अगंज ॥ ८९

---

८५. अक्ष्यर-अक्षर । सैणा-सज्जन । काचौ-कच्चा । बीजौ-दूसरा । लाजा-लज्जा साचौ-सत्य ।

८६ तिल-किंचित । त्रास-भय । राघौ-श्री रामचन्द्रजी ।

८८. भौड़-कलह प्रपंच । दीहा-दिन । छेहै-अन्तिम ।

८९ जमाई-दामाद । रंज-प्रसन्न खुश । अगंज-न मिटने वाला ।

अथ पयोधर नांम
अख्यर ३६ गुरु १२ लघु २४
दूहौ

मन दुख दाधा ढौल मत, साधा जग तज साव ।
मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव ॥ ६५

अथ चळ नांम
अख्यर ३७ गुरु ११ लघु २६
दूहौ

सह्र रांचै जन साविंयां, मत बहुरौ कर मांन ।
कीड़ी पग नेवर झणक, मणक सुणै भगवांन ॥ ६६

अथ वांनर नांम
अख्यर ३८ गरु १ लघु २८
दूहौ

रै चित ग्रत द्रढ़ प्रेम रख, मूरत स्यांम मझार ।
मेल्ह सुरत नट वांसमैं, प्रगट बरत व्है पार ॥ ६७

अथ त्रिकळ नांम
अख्यर ३९ गुरु ९ लघु ३
दूहौ

केसव भजतौ हरख कर, मत कर आळस मूढ़ ।
जिण दीधौ मनखा जनम, गरभ कौल कर गूढ़ ॥ ६८

अथ मच्छ नांम
अख्यर ४ गुरु ८ लघु २
दूहौ

चित जे मत व्है चळ विचळ, भज भज नहचळ भाय ।
कूक करै जिण दिन कुटंब, स्रीवर करै सिहाय ॥ ६९

---

६५. दाधा—दग्ध जला हुआ । साव—स्वाद । भव—संसार । भीता—भीति डर भय ।
६६ सांविंयां—पुकार करने पर । बहुरौ—बहुरा । नेवर—पैरोंका आभूषण विशेष । झणक—ध्वनि । मणक—आवाज शब्द ।
६७ मूरत—मूर्ति । स्यांम—स्याम श्रीकृष्ण । मझार—मध्य में । सुरत—ध्यान । बरत—वरत चमड़ेका बना मोटा रस्सा ।
६८ मूढ़—मूर्ख । दीधौ—दिया । मनखा जनम—मनुष्य जन्म । कौल—वादा प्रण । गूढ़—गुप्त ।
६९ चळ विचळ—डांवाडोल कूक—पुकार । स्रीवर—श्रीवर विष्णु । सिहाय—सहाय ।

अथ मच्छप नांम

अख्यर ४१ गुरु ७ लघु ३४

दूहौ

मिळै न पुळ पुळ तन मनख, धनरख-धरण चित धार।
पात झडै तरवर पहव, चढ़ै न फेर विचार॥ १००

अथ सादूळ नांम

अख्यर ४२ गुरु ६ लघु ३६

दूहौ

घन घन कुळ पित मात घन, नर अथवा घन नार।
रघुवर जस अह निस रटै, जे घन अवन मझार॥ १०१

अथ अहिवर नांम

अख्यर ४३ गुरु ५ लघु ३८

दूहौ

हर हर जप अनम कर हर, परहर अहमत पोच।
व्यापक नर हर जगत विच, अंतर गत आलोच॥ १०२

अथ बाघ नांम

अख्यर ४४ गुरु ४ लघु ४

दूहौ

अमरत दध नह तिय अधर, विधु यिमरत न वखांण।
कै जन अजरांमर करण, जस हर यिमरत जांण॥ १०३

---

१ पुळ पुळ—बार बार। तन—शरीर। मनख—मनुष्य। धनख धरण—धनुषधारी श्री रामचंद्र। पात—पत्ता पान। पहव—प्रथम।

१ १ घन घन—धन्य धन्य। पित—पिता। मात—माता। नार—नारी स्त्री। अह निस—रात दिन। अवन—अवनी भूमि। मझार—मध्यमें।

१ १ दध—उदधि समुद्र। तिय—स्त्री। अधर—ओष्ठ। विधु—चंद्रमा। यिमरत—अमृत। अजरांमर—वह जो न वृद्ध हो और न मृत्युको प्राप्त हो। हर—हरि विष्णु, ईश्वर। जांण—समझ।

अथ पयोधर नांम
अख्यर ३६ गुरु १२ लघु २४
दूहौ

मन दुख दाधा डौल मत, साधा जग तज साव ।
मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव ॥ ९५

अथ चळ नांम
अख्यर ३७ गुरु ११ लघु २६
दूहौ

सह रांचे जन सादियां, मत बहरौ कर मांन ।
कीड़ी पग नेवर भणक, भणक सुणै भगवांन ॥ ९६

अथ वांनर नांम
अख्यर ३८ गुरु १ लघु २८
दूहौ

रै चित ग्रस ग्रद प्रेम रख, मूरत स्यांम मझार ।
मेरुह सुरत नट वांसमैं, प्रगट वरत व्है पार ॥ ९७

अथ त्रिकळ नांम
अख्यर ३९ गुरु १ लघु ३
दूहौ

केसव भजतौ हरख कर, मत कर आळस मूढ़ ।
जिण दीधौ मनखा जनम, गरभ कौल कर गूढ़ ॥ ९८

अथ मच्छ नांम
अख्यर ४ गुरु ८ लघु ३२
दूहौ

चित जे मत व्है चळ विचळ, भज भज नहचळ भाय ।
कूक करै जिण विन कुटंब, स्रीवर करै सिहाय ॥ ९९

---

९५. दाधा–दग्ध जला हुआ । साव–स्वाद । भव–संसार । भीता–भीति डर भय ।
९६ सादियां–पुकार करने पर । बहरौ–बहरा । नेवर–पैरका आभूषण विशेष । भणक–ध्वनि । भणक–आवाज शब्द ।
९७ मूरत–मूर्ति । स्यांम–स्याम श्रीकृष्ण । मझार–मध्य में । सुरत–ध्यान । वरत–वरत चमड़ेका बना मोटा रस्सा ।
९८. मूढ़–मूर्ख । दीधी–दिया । मनखा जनम–मनुष्य जन्म । कौल–वादा प्रण । गूढ़–गुप्त ।
९९ चळ विचळ–डावांडोल । कूक–पुकार । स्रीवर–श्रीवर विष्णु । सिहाय–सहाय ।

अथ चरणा दूहा विचार

पहल त्रतीय पद सोळ मत, दुव चत्र ग्यारह दाख।
चरणा दूहा चुरस कर, मल किव तिणनूं भाख॥ १०८

उदाहरण

चरणा दूहौ

दट अणघट अघ त्रिकूट दळांरौ, राजा साचौ रांम।
घळ सौ है दिन जन निमळांरौ, नित जापौ तै नांम॥ १०६

पंचा दूहौ लक्षण

पहलै तीजै बार पद, उभये वेद इग्यार।
पंचा दूहा सौ पुणै, सुकव जिके मतसार॥ ११०

उदाहरण

रांम भजनसूं राता, महत भाग जे मांन।
ज्यां सारीखौ जगमें, उत्तम न जांणै आंन॥ १११

अथ नंदा दूहा तथा बरवै छंद

मोहणी लक्षण

दूहौ

धुर तीजै मत बार धर, सुज बे चौथे सात।
नंदा दोहा मोहणी, बरवै छंद कहात॥ ११२

---

१ ८ सोळ–सोलह। मत–मात्रा। दुव–दूसरा। चत्र–चतुर्थ। दाख–कह। चुरस–रीति अनुसार नियमानुसार। मल–श्रेष्ठ। किव–कवि। तिण–उस। भाख–कह।

१ ६ दट–दूर। अणघट–अपार। अघ–पाप। साचौ–सच्चा। सौ–वह। जापौ–जपो। तै–उसका।

११ पहलै–प्रथम। बार–बारह। इग्यार–ग्यारह। पुणै–कहते हैं। मत–बुद्धि मति।

१११ राता–अनुरक्त लीन। महत–महान। भाग–भाग्य। सारीखौ–सदृश समान। आंन–अन्य।

११२ धुर–प्रथम। मत–मात्रा। बार–बारह। बे–दूसरा।

नोट– ग्रंथकर्त्ताने नंदा मोहणी और बरवैको एक-दूसरेके पर्याय मान कर रचना नियमके एक ही लक्षण प्रथम तथा तृतीय चरणमें बारह मात्रा और द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सात-सात मात्रा मानी हैं पर नंदा मोहणी और बरवैमे पूर्वाचार्य्योंके मतसे कुछ-कुछ भिन्न लक्षण होते हैं। बरवैमें प्रथम तृतीय चरणमे बारह-बारह मात्रा तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमे सात-सात मात्रा सहित अंतमें जगण होना आवश्यक माना गया है। इसी प्रकार मोहणी छंदके अन्तमे सगण होना आवश्यक होता है।

अथ विशाळ नांम

अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२

दूहौ

जिण हर सरजत नर जनम, सुजवी रसण समाथ।
कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ॥ १०४

अथ सुनक नांम

अक्ष्यर ४६ गुरु २ लघु ४४

दूहौ

परगट कट तट तड़त पट, सरस सघण तन स्यांम।
गह भर समपण कनक गढ़, रहचण दस सिर रांम॥ १०५

अथ ऊवर नांम

अक्ष्यर ४७ गरु १ लघु ४६

दूहौ

राघव रट रट हरख कर, मट मट अघ दळ मह्त।
जनम मरण भय हरण जन, कज भव हर रिख कह्त॥ १०६

अथ सरप नांम

अक्ष्यर ४८ गुरु लघु ४८

दूहौ

हर रिण दस सिर विजय हित, धर निज कर सर धनक।
पढ़त 'किसन' किम्र सरण पय, जय रघुवर जग जनक॥ १०७

---

१०४ सरजत-रचता है। रसण-जिह्वा जीभ। समाथ-समर्थ। झटपट-शीघ्र। कवियण-कविजन कवि। नित प्रत-नित्य प्रति सदैव।

१०५ परगट-प्रकट। कट-कटि कमर। तड़त-तड़िता बिजली। पट-वस्त्र। कनक गढ़-लंका। रहचण-नाश करने वाला। दस सिर-दशानन।

१०६ मट-मिटते हैं। अघ-पाप। दळ-समूह। मह्त-महान। कज-वास्ते। भव-महादेव। हर-हरि, विष्णु। रिख-ऋषि। कह्त-कहते हैं।

१०७ कर-हाथ। सर-बाण। धनक-धनुष। जग-संसार। जनक-पिता

अथ चरणा दूहा विचार

पहल त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख।
चरणा दूहा चुरस कर, मल किव तिणनूं भाख॥ १०८

उदाहरण

चरणा दूहौ

दट अणघट अघ विकट दळांरी, राजा सांचौ रांम।
यळ सौ है दिन जन निवळांरौ, नित जापौ तै नांम॥ १०९

पचा दूहौ लखण

पहलै तीजै यार पद, उभये वेद इग्यार।
पंचा दूहा सौ पुणै, सुकव जिके मतसार॥ ११०

उदाहरण

रांम भजनसूं राता, महत भाग जे मांन।
ज्यां सारीखौ जगमें, उत्तम न जांणै आंन॥ १११

अथ नवा दूहा तथा बरवै छं

मोहणी लछण

दूहौ

धुर तीजै मत बार धर, सुज बे चौथे सात।
नवा दोहा मोहणी, बरवै छंद कहात॥ ११२

---

१०८ सोळ–सोलह। मत–मात्रा। दुव–दूसरा। चव–चतुर्थ। दाख–कह। चुरस–रीति अनुसार नियमानुसार। मल–श्रेष्ठ। किव–कवि। तिण–उस। भाख–कह।

१०९ दट–दूर। अणघट–अपार। अघ–पाप। सांचौ–सच्चा। सौ–वह। जापौ–जपो। तै–उसका।

११० पहलै–प्रथम। बार–बारह। इग्यार–ग्यारह। पुणै–कहते हैं। मत–बुद्धि मति।

१११ राता–अनुरक्त लीन। महत–महान। भाग–भाग्य। सारीखौ–सदृश समान। आंन–अन्य।

११२ धुर–प्रथम। मत–मात्रा। बार–बारह। बे–दूसरा।

नोट– प्रबन्धतनि नवा मोहणी और बरवैको एक-दूसरेके पर्याय मान कर रचना नियमके एक ही लक्षण प्रथम तथा तृतीय चरणमें बारह मात्रा और द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सात-सात मात्रा मानी हैं पर नवा मोहणी और बरवैमें पूर्वाचार्योंके मतमें कुछ-कुछ भिन्न लक्षण होते हैं। बरवैमें प्रथम तृतीय चरणमें बारह-बारह मात्रा तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सात-सात मात्रा सहित अन्तमें जगण होना आवश्यक माना गया है। इसी प्रकार मोहणी छन्दके अन्तमें सगण होना आवश्यक होता है।

उदाहरण बरव नवा

दूहौ

पह ज्यांरा चित लागा, रघुवर पाय।
पुळ पुळमें त्यां पुरखां, थिर सुख थाय॥ ११३

अथ चौटिया दूहा लछण

चौटियौ दूहौ

दूहा पूरब अरध पर, अधक चार मत होय।
उत्तरारध दस मत अधक, दुहौ चौटियौ सोय॥ ११४

उदाहरण

चौटियौ दूहौ

महाराजा रघुवंसमण, भुज रावण समयरा धनु सर पांणां धारै।
वायक सत सीतावरण, नृप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै॥ ११५

अथ दूहाकौ नांम काढ़ण विध

दूहौ

दूहा लघु गिण आध कर, ज्यां मझ घट कर एक।
रहेस बाकी नांम रट, वीदग अघट विसेक॥ ११६

इति भ्रमरादिक तेवीस दूहा नांम करण विध संपूरण।

छन्द चूळियाळा

दूहा अध पर पंच मत, चूळियाळा सौ जांणसु।
कविवर देह लियां फळ एह, दख वद जीहा वाखांण स रघुवर॥ ११७

---

११३ पह–प्रथम। ज्यांरा–जिनके। पाय–चरण। थिर–स्थिर, अटल।
११४ अधक–अधिक। सोय–वह।
११५ रघुवंसमण–रघुवंशमणि। धनु–धनुष। सर–बाण। पांणां–हाथों।
११६ वीदग–विदग्ध कवि पंडित।
११७ एह–यह। दख–कह। वद–वर्णन कर। जीहा–जिव्हा। वाखांण–वर्णन यश।

छंद निसेरणी

मम्भ तेरह धुर फेर दस, जांणी निस्रेणी।
गिव नारी तरणी हरी, परमत पग रेणी॥
जेण रांम जस दिवस निस, किव 'किसन' जपीजै।
लाभ देह रसना ससुख, पायांरौ लीजै॥ ११८

छंद चौबोला

धुर मत्त सोळ अवर चवदह धर, अंत गुरु चौबोल अखै।
सो भज 'किसन' रांम सीतावर, संत तार अद निगम सखै॥
रांवण कुंभ मेघ खर रहचे, कथ सो बेद पुरांण कही।
धरणी भूपां भूप धमीधरण, सरणागत हित लंक सही॥ ११९

छंद कुकुभा

कळ धुर सोळ धार सौ कुकुभा, उप चौधालक कहावै।
सुगुण सौ सुभ छंद, जगमें गुण सीतावर गावै॥
जांपण मरण मरण फिर नांमण जग नट रौटी जांणी।
सो दुख मेट अखै पद समपण, केसव नांम कहांणी॥ १२०

दूहौ

चार दूजार धर प्रथम पद अंत जगण गण आंण।
दूनौ तुर दूज मान धर, नगण सिखा सो नांण॥ १२१

[illegible]

उदाहरण चरण नदा

दूहौ

पहु ज्यांरा चित लागा, रघुबर पाय ।
पुळ पुळमें त्यां पुरखां, थिर सुख थाय ॥ ११३

अथ चौटिया दूहा लछण

चौटियौ दूहौ

दूहा पूरब अरध पर, अधक मार मत होय ।
उत्तरारध दस मत अधक, दुहौ चौटियौ सोय ॥ ११४

उदाहरण

चौटियौ दूहौ

महाराजा रघुवंसमण, भुज रावण समथरा धनु सर पांणां धारै ।
वायक सत सीतावरण, नृप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै ॥ ११५

अथ दूहाकौ नांम कारण विध

दूहौ

दूहा लघु गिण आध कर, ज्यां मभ घट कर एक ।
रहेस याकी नांम रट, वीदग अघट विमेक ॥ ११६

इति भ्रमरादिक तेवीस दूहा नांम करण विध संपूरण ।

छंद चूळियाळा

दूहा अघ पर पंच मत, चूळियाळा सौ जांणजु ।
कविवर देह लियां फळ एह, दख बद जीहा वाखांण स रघुबर॥११७

---

११३ पहु-प्रथम । ज्यांरा-जिनके । पाय-चरण । थिर-स्थिर, अटल ।
११४ अधक-अधिक । सोय-वह ।
११५ रघुवंसमण-रघुवंशमणि । धनु-धनुष । सर-बाण । पांणां-हाथों ।
११६ वीदग-विदग्ध कवि पंडित ।
११७ एह-यह । दख-कह । बद-वर्णन कर । जीहा-जिह्वा । वाखांण-बखान करो ।

छंद सिख

सर धनुख सम्रत जन सरण,
रख करण सुख रट सु म्रट रांम।
'किसन' किव समर पल यक न कर,
गहर सुण धर विरद भज सुख धांम॥ १२२

छंद रस उल्लाला

पनरै तेरैह मत्त पय, छंद उल्लाल पिछांणजै।
रघुनाथ सुजस सौ छंद रच, मीदग मुख वाखांणजै॥ १२३

रस उल्लारा भेद

दूहा

रस उल्लाल तिथ तेर मत, छवीस सम पद स्यांम।
स्यांमक रस दूहा सहित, सुण तै छप्पय नांम॥ १२४
उलटौ रस उलाल उण, ग्राख वरंग उलाल।
दाख त्रिदस फिर पंच दस, तुक विहुं वै पड़ताळ॥ १२५
पनर पनर मत दोय पय, कांम उलाल कहंत।
यण विध छंद उलालरा, भेद पांच भाखंत॥ १२६

अथ गाहा छंद लछण ०

प्रथम त्रीये मत बार पढ़, ग्रख पद बियै अठार।
चौथै पनरह मात रच, यम गाथा उच्चार॥ १२७
सात चतुर कळ ग्रंत गुरु, जगण छठे थळ जोय।
उत्तर दळ छट्ठे सुयळ, दुज कै यक लघु होय॥ १२८

---

१२३ मीदग–(म विरल्प) परिच कवि।
१२४ तिथ–पन्द्रह।
१२५ त्रिदस–तेरह।
नोट—ग्रन्थकर्ताने निम्नलिखित रस उल्लालाके पांच भेदोंके नाम बताये हैं उनके उदाहरण नहीं दिये। १ रस उल्लाला २ स्यांम उल्लाला ३ छप्पय उल्लाला ४ वरंग उल्लाला ५ कांम उल्लाला।
० ग्रन्थकर्ताने अन्तर्द्वंद्व शीर्षक देकर नीचे गाथा अर्थात् आर्या छन्दका विवरण दिया है।

तीस समत पूरब अरध, उत्तर सत्ताईस ।
सत्तावन मता सरव, आखव्र नांम छवीस ॥ १२९

अथ गाथा उदाहरण

गिरिस गिरा गौ गौरी, हर गिर हिम हंस हास सिस हीरा ।
सुसरि सेस सुरेस ए, स्रीराम क्रत आरख्यं ॥ १३०

अथ गाथा गुण दोस कथन

छंद बेअक्खरी

निज आखै कवि 'किसन' निरूपण, सुणौ गाहा गुण दोस सुलछण ।
सात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठे थळ जगण तथा दुज ॥ १३१
यांधव पूरव अरध एण विध, यम छिज जांण जगण उत्तरारध ।
काय छठे थळ यक लघु कीजै, दुसट विखम थळ जगण न दीजै ॥ १३२
मत्त सतावन सब गाथा मह, कळातीस पूरवा अरध कह ।
वीस सात कळ उतर अरध विच, रेणव्र श्रेम छंद गाथौ रच ॥ १३३
पाय प्रथम पद हंस गमण पर, कह गत दुवै पाय विध केहर ।
गज गत तीजै पाय गुणीजै, श्रौण चवथ गथ सरप अखीजै ॥ १३४
एक जगण जिण मांहि आवै, कुळवंती सौ गाहा कहावै ।
द्वे जगण परकीया वखांणी, जगण घणा तिण गनका जांणी ॥ १३५
जगण विनां सौ राड गणीजै, किणी मांम सौ गाहा न कीजै ।

---

१२९ आखव-कहे । छवीस-छब्बीस ।
१३१ निरूपण-निर्णय । थळ-स्थान । दुज-चार मात्रा ।
१३२ एण-इस । यम-ऐसे । छिज-ही । यक-एक ।
१३३ मत्त-मात्रा । मह-में । रेणव-कवि । गाथौ-गाथा ।
१३४ पाय-चरण । विध-विधि । श्रौण-चरण । चवथ-चतुर्थ ।
१३५ मांहि-में । गाह-गाथा गाहा ।

नोट—गाहा छंदमें जगण (ISI) गण गाथा पवित्र माना गया है। जिस गाथा छंदमें एक जगण होता है उस गाहा छंदको कुलवंती गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें दो जगण हो उसको परकीया गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें जगण अधिक आ जाते हैं उसे गणिका गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें जगण न हो उसे विधवा गाथा कहते हैं।

विप्री तेरह लघुव वीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै ॥१३६
सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।
बिण अनुसार अंध का वाचत, सुज अनुसार एक कांणी सत ॥१३७
यंदु दोय सुनयणा विसेखौ, बहु अनुसार मनहरा येखौ।
विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत ॥१३८
च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतावी।
गण योह करण जिका बाळा गण, मुगधा करतळ घणा तिका मुण ॥१३९
भगण बहुत सौ प्रौढ़ा भणजै, गण योह विप्र वरधका गिणजै।

---

१३६ राज–विप्रता। मांझ–(मध्य) में। जिस गाथा छंदमें १३ लघु वर्ण होते हैं उसे विप्र कहते हैं। २१ लघु वर्ण जिस गाथामें आ जाते हैं उसे क्षत्रिया संज्ञा दी गई है। इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें २७ लघु वर्ण आ जाय उसको वैश्य संज्ञा दी गई है और जिस गाथा छंदमें २७ से भी अधिक लघु वर्ण आ जाते हैं उसकी शूद्रा संज्ञा मानी जाती है।

१३७ गाथा छंदमें अनुस्वार आना जरूरी माना गया है। जिस गाथा छंदमें अनुस्वार न हो उसकी संज्ञा अंध मानी गई है। जिस गाथा छंदमें एक ही अनुस्वार होता है उसे एकाक्षी कहते हैं। इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें दो अनुस्वार आते हैं उसको सुनयणा कहते हैं और जिसमें अनुस्वारों की बाहुल्यता होती है उसे मनोहरा गाथा कहते हैं।

१३८ जिस प्रकार गाथा छंदमें अनुस्वार लेना ठीक माना गया है ठीक उसके विपरीत सकार अक्षरका न प्रयोग करना ही सुंदर गिना जाता है। जिस गाथा छंदमें सकार नहीं होता है उसकी संज्ञा पद्मिनी मानी गई है। जिसमें एक भी सकार आ जाय उसे चित्रणी जिसमें चार सकार आ जाय उसे हस्तिनी तथा सकार-बाहुल्या गाथाको संखणी कहते हैं।

१३९. गण–गाथा छंदमें चार मात्राके समूहको गण कहते हैं। ऐसे चतुष्कलात्मक सात गण और एक गुरुके विन्याससे गाथा छंदका पूर्वार्द्ध बनता है। ये चतुष्कलात्मक पांच गण निम्न प्रकारके होते हैं—

प्रथम गण— (ऽऽ) चार मात्राका। इसका दूसरा नाम कर्ण भी है।
द्वितीय गण—(।।ऽ) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम करतळ या करताळ भी है।
तृतीय गण—(।ऽ।) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम पयहर पयोहर,पयोधर भी है।
चतुर्थ गण—(ऽ।।) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम वसु पद भी है।

जिस गाथामें दो दीर्घ मात्राका करण (कर्ण) गण बहुत आता हो उसे बाला गाथा कहते हैं तथा जिस गाथामें करतळ या करताळका [।।ऽ प्रथम दो ह्रस्व मात्रा तथा एक दीर्घ मात्रा कुल चार मात्राके समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे मुग्धा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें भगणका [प्रथम दीर्घ फिर दो ह्रस्वके चार मात्राके समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे प्रौढ़ा कहा गया है। ठीक इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें विप्रका [द्विज—द्विज चार मात्राके ही समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे वरधका [वृद्धा] गाथा कहा जाता है।

कक्का दोय मम्फ गौरी कहीयै, चंपा अंगीक केहि कच हीयै ॥१४०

मीना अंगी तीन कक्के भण, तव बौहू ककां नांम काळी तण।
अंमी वसत्र सेत तन मासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत ॥१४१

पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्यांम वसन गण।
गौरे वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा ॥१४२

मीनै रंग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक।
मुगता भूखण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत ॥१४३

रूपा भरण वैसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत।
ऊजळ तिलक विप्रणी ओपत, तिलक सुद्रणी लाल ओपत ॥१४४

पीळौ तिलक वैसणी परगट, रुच सुद्रणी स्यांम टीलौ रट।
गाहा तणौ छंद कुळ गायौ, वेद पिता कवि जणां बतायौ ॥१४५

सरस भाख माता सुरसत्ती, उप राजक ब्रह्मांण उकत्ती।
स्रवण नखित्र मम्फ जनम तास सुण, कहियौ सरस गाह चौकारण।
गाथा नांम छवीस गिणावै, ग्रंथ अनेक वडा कवि गावै ॥१४६

---

१४ जिस गाथा छंदमें दो 'क' होते हैं उसकी गौरी संज्ञा होती है। जिसमें एक ही 'क' हो उसकी संज्ञा चंपा वर्ण मानी गई है। जिसमें तीन 'क' होते हैं उसका वर्ण (रंग) स्यामता लिए हुए गौर माना गया है और जिसमें 'क' की बाहुल्यता होती है उसकी काली संज्ञा मानी जाती है।

१४१ सेत–स्वेत। खित्रणी–क्षत्रिया।

१४२ पीत–पीला। दुकूळ–वस्त्र। वैसणी–वैश्य (स्त्री)। सुद्रणी–शूद्रा। वसन–वस्त्र।

१४३ विप्री–विप्रा। खित्रिणि–क्षत्रिया। हिम–सोना।

१४४ वैसणी–वैश्य (स्त्री)। राजत–शोभा देती है। विप्रणी–ब्राह्मणी। ओपत–शोभा देती है।

१४५ टीलौ–तिलक।

१४६ भाख–भाषा। उकत्ती–उक्ति। नखित्र–नक्षत्र। मम्फ–(मध्य) में। तास–उस।

अथ गाथा छंद छवीस नांम कथन

कवित छप्पै

लच्छी रिद्धी बुद्धी, लज्जा विद्या खम्या।
लहदेवी गौरी धात्री, कविस चूरणा छाया॥
कह कांती मह माया, ईस कीरती सिद्धी।
मांणणि रांमा गाहेणि, वसंत सोभा हरणी॥
सुणा चक्कवी, सारसी, कुररी चवी सिंघी हंसी सारिख।
छावीस नाम गाथा छजै, मल राघव जस भाखिए॥ १४७

अथ गाथा नांम गाथा लक्षण

सतावीस गुरु त्रय लघू, लछी आखर तीस।
यक गुरु घट बे लघु वधै, सौ सौ नांम कवीस॥ १४८

लछी गाथा उदाहरण

अक्षर ३० गुरु २७ लघु ३

तौ सारीखौ तूं ही, जै जै स्री रांम जीपणा जंगां।
सीता वाळा स्वांमी, भूपाळां मौड़ हूं भांमी॥ १४९

गाथा नांम रिद्धी

अक्षर ३ गुरु २६ लघु ४

रै झौका स्रीरांमं, तूं साते ताळ वेधणा तीरं।
थूरै दैतां थौका, दीनांधा नाथ जगदाता॥ १५०

---

१४७ चवी-कही। भखैं-शोभा देते हैं।

१४८ त्रय-तीन। यक-एक।

१४९ तौ-तेरे। सारीखौ-सदृश समान। जीपणा-जीतने वाला। जंगां-युद्धों। मौड़-मस्तक। हूं-मैं। भांमी-बलैया लेता हूँ न्यौछावर होता हूँ।

१५ झौका-धन्य-धन्य। ताळ-ताड़ वृक्ष। थूरै-नाश करता है। दैतां-दैत्यों। थौका समूह।

नोट—गाथाकी उक्सारा छप्पय मूल प्रतिके अनुसार ही है किन्तु ठीक प्रतीत नहीं होता।

गाथाओं के २६ नाम—लच्छी रिद्धी बुद्धी लज्जा विद्या खम्या देवी गौरी धात्री चूरणा छाया कांती महामाया कीरती सिद्धी माणणि रामा गाहेणि वसंत सोभा हरणी चक्रवी सारसी कुररी सिंही हंसी।

गाथा नांम बुद्धी

अक्ष्यर ३२ गुरु २५ लघु ७

जीहा राघौ जपै, मोटी छै माग जेणरी मूमं ।
तोटी ना'वै त्यांरै, केसौ पय सेव अधिकारी ॥ १५१

गाथा नांम लज्जा

अक्ष्यर ३३ गुरु २४ लघु ९

कां कहणी कौसल्या, मोटी तैं कीध पुन्य ध्री ध्रमरमं ।
जै कं खै खळ जेता, आखै जग रांम औतारं ॥ १५२

गाथा नांम विद्या

अक्ष्यर ३४ गुरु २३ लघु ११

वेदां भेदां वेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौरांणं ।
राघौ नांम सरीखं, नह कौ नर देव नागिंद्र ॥ १५३

गाथा नांम खम्या

अक्ष्यर ३५ गुरु २२ लघु १३

है कांनै मौताहळ, कर पं ची कंठमाळ पै संकळ ।
राघौ नांम विहूं णा, अनखाणौ ढोर आदम्मी ॥ १५४

गाथा नांम देवी

अक्ष्यर ३६ गुरु २१ लघु १५

सुंदर स्यांम सरीरं, माधौ कट रांम पीत पीतंमर ।
काळै वादळसं कै, वीटांणी वीज वरसाळै ॥ १५५

---

१५१ जीहा–जिह्वा । जपै–जपता है । मूमं–भूमि । तोटी–कमी । त्यांरै–उनके । केसौ–केशव विष्णु । पय–चरण ।

१५२ मोटी–महान । कीध–किया । पुन्य–पुण्य । ध्रमरमं–ब्रह्म परब्रह्म । जै–जिस । कूंखै–कुक्षि । खळ–असुर, राक्षस । जेता–जीतने वाला । औतारं–अवतार ।

१५३ वेखौ–देखिये देखो । पेखौ–देखो । दह–दस । हेर–देख कर । पौरांणं–पुराण । सरीखं–समान सदृश । नागिंद्र–(नागेन्द्र) नाग ।

१५४ कांन–कानोंमें । मौताहळ–मोती । कर–हाथ । पं ची–हाथकी कलाईका आभूषण विशेष । विहूंण–बिना रहित । अनखाणौ–अन्न खाने वाला । ढोर–पशु ।

१५५ कट–कटि, कमर । पीत–पीला । वीटांणी–वेष्टित हुई । वीज–बिजली । वरसाळै–वर्षा ऋतुमें ।

गाथा नाम गौरी

अख्यर ३७ गुरु २ लघु १७

सज्झी न राघव सेव, सेवा सौ जाय घरोघर साझे ।
निज सिर हूरी न ना'यौ, उण ना'यौ सीस जग अग्गां ॥ १५६

गाथा नाम धात्री

अख्यर १८ गुरु १९ लघु १९

पद सीतावर प्रांणी, जगचा तज आंन आळ जंजाळ ।
उंबर अंजुळि आव, नहचै आ जांण थिर नांही ॥ १५७

गाथा नाम चूरणा

अख्यर ३९ गुरु १८ लघु २१

रिख सिख गंगा रांम, सेवै पद कंज मंजु सीतावर ।
सौ राघौ पै 'किसना', चींतव निस दिवस ठर चंगा ॥ १५८

गाथा नाम छाया

अख्यर ४० गुरु १७ लघु २३

रट रट स्त्री रघुरांम, वस सिर जे तार तारके वीनं ।
करुणा ऊदध कर कंज, सीतावर संत साधारं ॥ १५९

गाथा नाम कांती

अख्यर ४१ गुरु १६ लघु २५

अजामेळ यक वारं, आखे अणजांण नारायण ।
जांण आंण जम हरिजन, जुड़ियौ नह मग्गा घर जेणं ॥ १६०

---

१५६ सज्झी—हुई । सेव—सेवा । सौ—वह । ना'यौ—नमाया । उण—उस । अग्गां—अगाड़ी ।

१५७ प्रांण—प्राणी । आळ—असत्य झूठ । जंजाळ—प्रपंच । उंबर—उम्र आयु । आव—पानी । नहचै—निश्चय । थिर—स्थिर ।

१५८. कंज—कमल । मंजु—सुंदर । चींतव—स्मरण कर । चंगा—श्रेष्ठ उत्तम स्वस्थ ।

१६ यक—एक । वारं—समय । आखे—कहा । अणजांण—अज्ञानावस्था । जुड़ियौ—प्राप्त हुआ । मग्गा—मार्ग । जेणं—जिस ।

गाथा नांम महामाया

अख्यर ४२ गुरु १५ लघु २७

आळस न कर अजांणे, निज मन कर हरख भजन रघुनाथं ।
सुपन रूप संसारं, विण संतां देहनां वारं ॥१६१

गाथा नांम कीरती

अख्यर ४३ गुरु १४ लघु २९

कमळनायण कमळाकर, कमळा प्रांणेस कमळकर केसौ ।
तन कमळ भातेसं, जे मुख ध्यार कमळभू जपै ॥१६२

गाथा नांम सिद्धी

अख्यर ४४ गुरु १३ लघु ३१

रिख्य मख कर रखवाळ, तागी रिख घरण चरण रज हूं ता ।
राख जनक पण रघुवर, भागौ कोवंड भूतेसं ॥१६३

गाथा नांम मांणणी

अख्यर ४५ गुरु १२ लघु ३३

जिण दिन रघुवर जंपै, सुकियाअरथ दिवस सोय नर संभळ ।
दखै न राघव जिण दिन, जांणे सोय आळजंजाळ ॥१६४

गाथा नांम रांमा

अख्यर ४६ गुरु ११ लघु ३५

निज कुळ कमळ दिनेसं, चवि सुर गण नखत जांण तिण चंदं ।
मुनि धन रखण म्रगाधिपं, रघुवर अवतं(स) राजेसं ॥१६५

---

१६१ अजांणे–अज्ञान । सुपन–स्वप्न ।

१६२ कमळाकर–विष्णु । कमळा–लक्ष्मी । प्रांणेस–पति । कमळभू–ब्रह्मा ।

१६३ रिख्य–ऋषि । मख–यज्ञ । रखवाळ–रक्षा । घरण–स्त्री पत्नी । हूंता–से । पण–प्रण । कोवंड–धनुष । भूतेसं–महादेव ।

१६४ जंपै–जपता है स्मरण करता है । सुकियाअरथ–सफल । दिवस–दिन । सोय–वह । संभळ–समझ । दखै–कहता है । आळजंजाळ–व्यर्थ ।

१६५ दिनेसं–सूर्य । चवि–कह कर । नखत–नक्षत्र । म्रगाधिपं–मृगेन्द्र सिंह । अवतं(स)–शिरोमणि । राजेसं–सम्राट ।

गाथा नाम गाहेणी
अक्खर ४७ गुरु १ लघु ३७

असमझ समझ भखीजै, तौ पण हरि नाम अवस जन तारत।
जिम परसत अजांणं, दगघत तन समथ्थ दावानळ ॥१६६

गाथा नाम वसत
अक्खर ४८ गुरु ९ लघु ३१

रघुवर सौ प्रभु तज कर औयण जे अवर अमर अभियासत।
अखित सुरसुरी तीरह, खिती कूप खणत नर मूरख ॥१६७

गाथा नाम सोमा
अक्खर ४९ गुरु ८ लघु ४१

अघ हर सुखकर अमळ, रट रट जस अघट भाग घन रघुवर।
गावण जिण फळ गहरं, वगै वलमी करिख धिमुधा ॥१६८

गाथा नाम हरिणी
अक्खर ५ गुरु ७ लघु ४३

नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर।
सुकरत करण सवीक्त, सोहत भै करत सत पुरसं ॥१६९

गाथा नाम चक्रवी
अक्खर ५१ गुरु ६ लघु ४५

अह मत तज भज ईसर, करणाकर सधर सु तन दसरथ्थकौ।
यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुनंदे ॥१७०

---

१६६ असमझ–मूढ़ अवस्था। समझ–ज्ञान बुद्धि। भखीजै–कहा जाय। पण–भी। अवस–अवश्य। जन–भक्त। तारत–उद्धार करता है। परसत–स्पर्श करते हैं। अजांणं–भूलसे। दगघत–जलाता है। समथ्थ–समर्थ। दावानळ–दावाग्नि।

१६७ सौ–जैसा। प्रभु–प्रभु, ईश्वर। औयण–चरण। अभियासत–अभ्यास करते हैं स्मरण करते हैं। अखित–अर्पित प्यासा। सुरसुरी–गंगानदी। तीरह–तट। खिती–पृथ्वी। खणत–खोदता है।

१६८. अमळ–पवित्र। गहरं–गंभीर। वलमी–वल्मीकि बांबी। करिख–कर्षण कर। धिमुधा–पृथ्वी।

१६९ कमळावर कमलापति विष्णु। सुकरत–श्रेष्ठ कार्य सुकृत्य। सवीक्त–सदैव नित्य।

१७ अह–अभिमान गर्व। मत–बुद्धि। करणाकर–करुणाकर दयालु। यक–एक छिन–क्षण

गाथा नांम सारसी

अख्खर ५२ गुरु ५ लघु ४७

जन लज रख्खण जरूरह,
दसरथ सुत सकळ सुजन सुखदायक।
सिरदस घायक समहर,
सत वायक रांम सरसत सुभ ॥१७१

गाथा नांम कुररी

अख्खर ४५ गुरु ४ लघु ४१

भुज भळ खळ-दळ भंजण,
निज जन सुख करण सरण राख्खण नित।
कहत वरण कथ जग कर,
आपण दत लंक चित अपहड़ ॥ १७२

गाथा नांम सिघी

अख्खर ५४ गुरु ३ लघु ५१

असन वसन जळ अहनिस,
मत कर मन फिकर समर महमाहण।
पोख्खण भरण दिवस प्रत,
निज जन फिकर चिंत रघुनायक ॥ १७३

गाथा नांम हंसी

अख्खर ५५ गुरु २ लघु ५३

जगत जनक हरि जय जय,
भय जांमण मरण हरण कर निरभय।

---

१७१ जरूरह–अवश्य। सिरदस–रावण। घायक–संहारक नाशक। समहर–युद्ध। वायक–वाक्य वचन।

१७२ आपण–देने वाला। दत–दान। लंक–लंका। अपहड़–उदार।

१७३ असन–भोजन। वसन–वस्त्र। अहनिस–रात दिन। महमाहण–विष्णु ईश्वर। चिंत–चित। प्रत–प्रति।

१७४ जांमण–जन्म। हरण–मिटाने वाला।

गाथा नांम गाहेणी
अक्खर ४७ गुरु १० लघु ३७

असमझ समझ अखीजै, तौ पण हरि नाम अवस जन तारत।
जिम परसत अजांणं, दगधत तन समथ्थ दावानळ ॥१६६

गाथा नांम वसत
अक्खर ४८ गुरु ६ लघु ३६

रघुबर सौ प्रभु तज कर औयण जे अवर अमर अभियासत।
त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कूप खणत नर मूरख ॥१६७

गाथा नांम सोमा
अक्खर ४६ गुरु ८ लघु ४१

अघ हर सुखकर अमळ, रट रट जस अघट भाग घन रघुबर।
गावण जिण फळ गहरं, वगै वलमी करिख विमुधा ॥१६८

गाथा नांम हरिणी
अक्खर ५ गुरु ७ लघु ४३

नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर।
सुकरत करण सदीवत, सोहत अै करत सत पुरसं ॥१६९

गाथा नांम चक्की
अक्खर ५१ गुरु ६ लघु ४५

अह मत तज भज ईसर, करणाकर सधर सु तन दसरथकौ।
यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबरे ॥१७०

---

१६६ असमझ—अज्ञ अवस्था। समझ—ज्ञान बुद्धि। अखीजै—कहा जाय। पण—भी। अवस—अवश्य। जन—भक्त। तारत—उद्धार करता है। परसत—स्पर्श करते हैं। अजांणं—भूलसे। दगधत—जलाता है। समथ्थ—समर्थ। दावानळ—दावाग्नि।

१६७ सौ—जैसा। प्रभु—प्रभु, ईश्वर। औयण—चरण। अभियासत—अभ्यास करते हैं स्मरण करते हैं। त्रखित—तृषित प्यासा। सुरसुरी—गंगानदी। तीरह—तट। खिती—पृथ्वी। खणत—खोदता है।

१६८ अमळ—निर्मल। गहरं—गंभीर। वलमी—वाल्मीकि ऋषि। करिख—कर्षण कर। विमुधा—पृथ्वी।

१६९ कमळावर कमलापति विष्णु। सुकरत—श्रेष्ठ कार्य सुकृत्य। सदीवत—सदैव नित्य।

१७० अह—अभिमान गर्व। मत—बुद्धि। करणाकर—करुणाकर दयालु। यक—एक छिन-क्षण।

गाथा नांम सारसी

अख्यर ५२ गुरु ५ लघु ४७

जन लज रखण जरूरह,
दसरथ सुत सकळ सुजन सुखदायक।
सिरदस घायक समहर,
सत सायक रांम सरसत सुभ॥१७१

गाथा नांम कुररी

अख्यर ५१ गुरु ४ लघु ४१

भुज भळ खळ-दळ भंजण,
निज जन सुख करण सरण राखण नित।
कहत वरण कथ जग कर,
आपण दत लंक चित अपहड़॥१७२

गाथा नांम सिंघी

अख्यर ५४ गुरु ३ लघु ५१

असन वसन जळ अहनिस,
मत कर मन फिकर समर महमाहण।
पोखण भरण दिवस प्रत,
निज जन फिकर चित्त रघुनायक॥१७३

गाथा नांम हसी

अख्यर ५५ गुरु २ लघु ५३

जगत जनक हरि जय जय,
भय जांमण मरण हरण कर निरभय।

---

१७१ जरूरह–अवश्य। सिरदस–रावण। घायक–संहारक नाशक। समहर–युद्ध। सायक–बाण शस्त्र।

१७२ आपण–देने वाला। दत–दान। लंक–लंका। अपहड़–उदार।

१७३ असन–भोजन। वसन–वस्त्र। अहनिस–रात दिन। महमाहण–विष्णु ईश्वर। दिवस–दिन। प्रत–प्रति।

१७४ जांमण–जन्म। हरण–मिटाने वाला।

'किसन' मुकव्र सिर धर कर,
रक्खरा चरण सरण रघुनायक ॥ १७४

दूहो

विध यण गाथा वरणिया, सुजस रांम कथ सार।
विव कोई चूकौ वरणतां, सत किव्र पढौ सुधार ॥ १७५

अथ गाहा १ गाहू २ विगाहा ३ उगाहा ४ गाहेणी ५ सीहणी ६ खंधांणा ७।

विभार लक्षण वरणण।

गाहा विगाहा लक्षण

छंद बेग्रक्खरी

गाहा१ मात्र सतावन गावै, गाहौ२ उलट विगाह गिणावै।
चौपन मत गाहू३ उचरीजै, उगाहौ४ मत्त साठ अखीजै ॥१७६
गाहेणी५ बासठ मत गावत, किर्यां उलट सीहणी६ कहावत।
चौसठ मत खंधांण७ चवीजै, कळ विभाग यां पद प्रत कीजै ॥१७७

गाथारै पद प्रत मात्रा वरणण

आद बार मत दुवै अठारह, बार अतीय चव पनर विचारह।

विगाह पद प्रत मात्रा

पद धुर बार दुवै पनरह पुण, तीयै बार अठार चवथ तिण ॥१७८

गाहू पद प्रत मात्रा

प्रथम बार मत्त पनर दुवै पद, वळ तिय बार पनर चौथै वद।

उगाहा पद प्रत मात्रा प्रमांण

पहला बार अठार दुवै पद, तीजै बार अठार चवथ प्रद ॥१७९

---

१७५ विध–विधि। यण–इस। किव–कवि।
१७६ मात्र–मात्रा। उचरीजै–कहिए। अखीजै–कहिए।
१७७ मत–मात्रा। कहावत–कहा जाता है। चवीजै–कहिए। पदप्रत–प्रति पद प्रति चरण।
१७८. पद–चरण। धुर–प्रथम। बार–बारह। दुव–दूसरे। पुण कह। तीयै–तृतीय।
चवथ–चतुर्थ।
१७९ वळ–फिर। तिय–तृतीय।

गाहेणी पद प्रत मात्रा

आद बार अट्ठार दुतीय अख, भुज तिय बार बीस चोथै सख ।

सींहणी पद प्रत मात्रा

आद आद दूसरै बीस अळ, कह तिय बार अठार चवथ कळ ॥१८०

खंधांणा पद प्रत मात्रा

मात्र बतीस च्यार तुक मांही, दोय गुरु पद अंत दियांही ।
निज कित्र किसन किया यम निरखै, यह कवि सीय रांम जस वरखै ॥१८१

अथ गाथा अथवा गाहा उदाहरण

महकुळ धिन पित मातं, सौ घर न धन्य सुरग पित्रेसुर ।
सौ धन भवन सकाजं, वासै जै दास रघुवरकौ ॥१८२

अथ विगाही उदाहरण

करणी धन कौसळ्या, उदरे जिण रांम औतारं ।
भण दसरथ बडभागं, जिण घर सुत रांमचंद्र जग जेता ॥१८३

अथ गाहू उदाहरण

सुखदाता सरणायां, निज संतां जानुकी नायक ।
दस सिर भंज दुवाहं, राहं जग कीत राजेस्वर ॥१८४

अथ उगाहो

तूं जो चाहै तरणौ, जप मत मन आंन आळ जंजाळ ।
नित जप राघव नामं, तिण पाथर नाव उदध कपि तारे ॥१८५

---

१८० आद–आदि प्रथम । दुतीय–द्वितीय । अख–कह । भुज–फिर । तिय–तृतीय । कळ–मात्रा ।

१८१ मात्र–मात्रा । मांही–में प्रदर । यम–इस प्रकार

१८२ धिन–धन्य । पित–पिता । मातं–माता । सुरग–स्वर्ग । धन–धन्य ।

१८४ सरणायां–शरणागत पाया हुआ । दुवाहं–वीर ।

१८५ तरणौ–तैरना उद्धार करना । आंन–अन्य । आळ जंजाळ–व्यर्थ का प्रपंच । पाथर–पत्थर । उदध–उदधि सागर । कपि–बंदर ।

अथ गाहिणी

नन घणस्यांम तराजं, तड़िता छिब भात पीत पीतंबर।
सुकर बांण मारगं, सीता अंग वांम रांम भज नृप सिघ ॥१८६

अथ सीहणी

आखर वखत उचारै, जीहवा घन रांम नाम रट झट जौ।
पोखणतौ भर पायौ, भोजन अढार भांतचौ भरणौ ॥१८७

अथ खंधाणा

दीन करण प्रतपाळ दासरथ, भारत खळदळ सबळ विभंजे।
घनस घरण तन बरण नीरधर, रघुबर जनक सुता मन रंजे ॥१८८
सुंदर रूप अनूप स्यांमता, अंजण नयण मुनी रिख अंजे।
तीनकाळदरसी व्है ततपुर, गौरव कांम क्रोध अघ गंजै ॥१८९

अथ एकसूं लगाय छवीस तांई गाथा नांवण विध

दूहौ

गाथारा लघु आखिर गिणि, जां मझ एक घटाय।
आध कियां सूं उबरै, सोई नांम सुभाय ॥ १९०

अरथ

हरेक गाथारा लघु आखिर गिणणा ज्यांमेंसूं पैली तौ एक आखिर घटाय देणौ पछै बाकी रहै ज्यांनै दोय भागमांसूं एक भाग परौ काढणौ बाकी रहै आखिर जतरमौ नांम छै, यूं जांणणौ।

---

१८६ घण—घन बादल। तराजं—समान। तड़िता—बिजली। छिब—कांति शोभा। भात—भांति। सुकर—हाथ। बांण—तीर। मारगं—धनुष।

१८७ आखर—आखिर अंतिम। वखत—समय। जीहवा—जिह्वा जीभ। पोखणती—पोषण करता हुआ।

१८८ दीन—गरीब। प्रतपाळ—पालन-पोषक। विभंजे—नाश किये। नीरधर—बादल। रंजे—प्रसन्न किया।

१८९ तीनकाळदरसी—त्रिकालदर्शी।

१९ आखिर—अक्षर। जां—जिन। मझ—मध्य। आघ—आधा। सोई—वही। ज्यां—जिन।

अथ गद्य छंद लछण विध

दूहो

गद्य पद्य बे जगतमें, जांण छंदकी जात।
सम पद पद्य सराहजे, छूटक गद्य छ जात॥ १६१
दवावैत फिर वात दख, जुगत वचनका जाण।
औछ अधक तुक असम औ, चौवग गद्य बखांण॥ १६२

अथ दवावैत

माहाराजा दसरथके घर रांमचंद्र जनम लिया।
जिस दिन सै आसरू नै उद्वेग देवत नै हरख किया।
विसवामित्र मख-रख्याके काज अवधेसतैं जाच लिये।
माहाराजा दसरथ उसी वख्त तईनाथ किये।
सात रोज निराहार एकासण सनद्ध रहै।
रिखराजका जिगकी रछ्याकाज रजवाटका बिरद भुजदंड गहे।
सुबाहूकूं बांणसे छेद जमराजके भेट पुहुचाया।
मारीचके तांई घाय बांणसे मार उडाया।
रज पायसे तारी गौतमकी घरणी।
खंडपरसका कोदंड खंड कर जांनुकी परणी।

---

१६१ सम पद—यहां पद शास्त्रानुसार अक्षरोंके नियममें बंधे हुए पद्य व वाक्य। सराहजे—सराहना कीजिए। छूटक—जिन पदोंमें पद शास्त्रानुसार नियम न हो गद्य।

१६२ औछ—कम। अधक—अधिक। चौवग—विशेष चतुर कवि।

१६३ आसरू—असुर राक्षस। उद्वेग—उद्वेग चिंता। मख-रख्या—यज्ञकी रक्षा। जाच लिये—मांग लिये। तईनाथ—तैनात किसी काम पर लगाया या नियुक्त किया हुआ। निराहार—बिना भोजन। एकासण—एक ही आसन या बैठक। सनद्ध—(संनद्ध) कटिबद्ध। जिग—यज्ञ। रछ्या—रक्षा। रजवाट—क्षत्रियत्व वीरता। बिरद—विरुद। गहे—धारण किये। तांई—लिये। रज—धूलि। पाय—चरण। घरणी—स्त्री पत्नी। खंडपरसका—खण्डपरशु महादेवका। कोदंड—धनुष।

अवधक॒ आते दुजराजक॒ सुख भाव किया ।
जननीसे सलाम कर सपूतीका बिरद लिया ।
ऐसा स्री रामचंद्र सपूत॒का सिरमोड़ ।
अरोड़ का रोड़ ।
गौ बिप्र॒का पाळ ।
अरेस॒का काळ ।
सरणायं॒-साधार ।
हाथका उदार, दिलका दरियाव ।
रजवाटकी नाव ।
भूप॒का भूप साजोतका रूप ।
काछवाचका सधूत ।
माहाराज दसरथका सपूत ।
भरथ लछमण सत्रुघणका बंधु ।
करुणाका सिंधु । १६३

वचनका

हांजी ऐसा माहाराजा रामचंद्र असरण-सरण ।
अनाथ नाथ बिरदक॒ धारै ।
सौ ग्राहक॒ मार न्याय ही गजराजक॒ तारै ।
और भी नरसिंघ होय प्रवाड़ा जगजाहर किया ।
हरणाकुसक॒ मार प्रहलादक॒ उबार लिया ।
प्रळै का दिन जांण संत वेस उबारणक॒ मच्छ देह धारी ।

१६३ जननी—माता । सलाम—प्रणाम । सपूती—सुपुत्र होनेका भाव । अरोड़—वह जो किसीके बंधन या रोकमें न रह सके । रोड़—रोक बंधन । अरेस—अरीश शत्रु । काळ—मृत्यु । सरणायं-साधार—शरणमें आने वालेकी रक्षा करने वाला । साजोतका रूप—ज्योति स्वरूप । काछवाचका सधूत—जितेन्द्रिय मितवाक्या और सत्य-वच । सिंधु—समुद्र ।

१६४ असरण-सरण—जिसे कोई शरण न देने वाला हो उसे भी शरण देने वाला । प्रवाड़ा—महान् कार्य चमत्कारपूर्ण कृत्य । हरणाकुस—हिरण्यकशिपु । प्रळै—प्रलय काल । मच्छ—मत्स्यावतार ।

सतव्रतकी भगती जगजाहर करी।
ऐसा स्रीरामचंद्र करुणानिध।
असरण-सरण न्याय ही वाजै।
जिसके तांई जेता बिरद दीजै जेता ही छाजै॥ १९४

बारता

रांमचंद्र जिसा मिंथ रजपूत कोई वेळापुळ होवै है।
ज्यांके प्रताप देव नर नाग खटग्रन सुख नींद सोवै है।
राजनीतका निघांन सींह बकरी एक घाटै नीर पावै है।
पंछीकी पर यागां बाज दहसत खावै है।
तपके प्रभाव पांणी पर सिला तरै है।
भ्रगुपत सा त्र्यंबक ज्यांका बळ काढ़ सरणक्मुधा करै है।
बाळ दहकंधसा अरोड़ान् रोड़ जमींदोज कीजै है।
सुग्रीव भभीखण जिसा निरपखांन् केकधा लंक दीजै है।
जांका भाग धन्य जे रांमगुण गावै है।
जांमण मरण भय मेट अभैपद पावै है॥ १९५

---

१९४ करुणानिध–करुणानिधि दयासागर। तांई–लिए, निमित्त। जेता–जितने। छाजै–शोभा देते हैं शोभित होते हैं।

१९५ जिसा–जैसा। मिंथ–मित्र और। वेळापुळ–समय कभी। खटग्रन–षट्वर्ण ब्राह्मण आदि छः जातियें विशेष। निघांन–खजाना। पर–पंख। बाज–शिकारी पक्षी विशेष। दहसत–भय डर। सिला–पत्थर। भ्रगुपत–परशुराम। त्र्यंबक–त्रिपुर नामक दैत्य को मारने वाले महादेव। बळ–गर्व। सरणक्मुधा–बिलकुल सीधा। बाळ–बालि बंदर। दहकंध–दशकंधर, रावण। अरोड़ा–जबरदस्त। जमींदोज–जो गिर कर जमीनके बराबर हो गया हो जमीनके बराबर। अरोड़ान–निर्माण। निरपखां–जिसका कोई पक्ष या सहायक न हो। केकंधा–(किष्किंधा) दक्षिणके वानरोंका देश प्राचीन नाम। जांरा–जिसके। जांमण–जन्म। अभैपद–मोक्ष।

अवचक भ्राते दुजराजक सुठ भाव किया ।
जननीसे सलाम कर सपूतीका बिरद लिया ।
ऐसा स्री रांमचंद्र सपूत का सिरमोड़ ।
अरोड़ का राड़ ।
गौ विप्र का पाळ ।
अरेस का काळ ।
सरणायं-साधार ।
हाथका उदार, दिलका दरियाव ।
रजवाटकी नाव ।
भूपं का भूप साजोतका रूप ।
काछवाचका सपूत ।
माहाराज दसरथका सपूत ।
भरथ लछमण सत्रुघणका बंधु ।
करुणाका सिंधु । १८३

वचनका

हांजी ऐसा माहाराजा रांमचंद्र असरण-सरण ।
अनाथ नाथ बिरदकं धारै ।
सौ ग्राहक मार न्याय ही गजराजकं तारै ।
और भी नरसिंघ होय प्रवाड़ा जगजाहर किया ।
हरणाकुस्सकं मार प्रहलादकं उधार लिया ।
प्रळै का दिन जांणु मंत दंस उधारणकं मच्छ देह धारी ।

१८३ जननी-माता । सलाम-प्रणाम । सपूती-सुपुत्र होनेका भाव । अरोड़-वह जो किसीके दबाव या डरमें न रह सके । रोड़- ... वचन । अरेस-शत्रु । काळ-मृत्यु । सरणायं-साधार-शरणागत आने वालेका रक्षा करने वाला । साजोतका रूप-ज्योति स्वरूप । काछवाचका सपूत जितेन्द्रिय नियमाप्या और सत्य-पथ । सिंधु-समुद्र ।

१८४ असरण-सरण जिसे कहीं शरण न देने वाला हो उसको भी शरण देने वाला । प्रवाड़ा-प्रताप वाले चमत्कारपूर्ण कार्य । हरणाकुस हिरण्यकशिपु । प्रळै-प्रलय काल । मच्छ-मत्स्यावतार ।

सतव्रतकी भगती जगजाहर करी।
ऐसा स्रीरांमचंद्र करणानिध।
असरण-सरण न्याय ही वाजै।
जिसके तांई जेता बिरद दीजै जेता ही छाजै॥ १६४

वारता

रांमचंद्र जिसा सिंघ रजपूत कोई वेळापुळ होवै छै।
ज्यांके प्रताप देव नर नाग स्वप्न सुख नींद सोवै छै।
राजनीतका निधांन सींह बकरी एक घाटै नीर पावै छै।
पंखीकी पर यागां बाज दहसत खावै छै।
तपके प्रभाव पांणी पर सिला तरै छै।
भ्रगुपत सा त्र्यंबक ज्यांका बळ काढ़ सणकसुधा करै छै।
बाळ दहकंधसा अरोड़ांन रोड़ जमींदोज कीजै छै।
सुग्रीव भभीखण जिसा निरपखांन केकंधा लंक दीजै छै।
जांका भाग धन्य जे रांमगुण गावै छै।
जांमण मरण भय मेट अभैपद पावै छै॥ १६५

---

१६४ करणानिध—करुणानिधि दयासागर। तांई—लिए, निमित्त। जेता—जितने। छाजै—शोभा देते हैं शोभित होते हैं।

१६५ जिसा—जैसा। सिंघ—सिंह वीर। वेळापुळ—समय कभी। स्वप्न—स्वप्नमें जाग्रतादि अवस्थाओं विलास। निधांन—खजाना। पर—पंख। बाज—शिकारी पक्षी विशेष। दहसत—भय डर। सिला—पत्थर। भ्रगुपत—परशुराम। त्र्यंबक—शिव धनुष अथवा त्र्यंबक महादेव। बळ—गर्व। सणकसुधा—जिसपुत्र सीता। बाळ—बालि बंदर। दहकंध—दशकंधर, रावण। अरोड़ा—जबरदस्त। जमींदोज—जो गिर कर जमीनके बराबर हो गया हो जमीनके बराबर। भभीखण—विभीषण। निरपखा—जिसका कोई पक्ष या सहायक न हो। केकंधा—(किष्किंधा) दक्षिणके वानरराज देशका प्राचीन नाम। जांका—जिनके। जांमण—जन्म। अभैपद—मोक्ष।

दूहौ

असम चरण मात्रासु यम, कहीया छंद 'किसन' ।
राघव जस छंदां रहस, बुध सारीख न ॥ १९६

इति मात्रा असम चरण छंद संपूरण ।
अथ मात्रा दंडक छंद वरणण

दूहौ

भगवत गीताऊ भणै, बीता अघ सरब्बेण ।
सीता नायक समरै, जन भीता नह जेण ॥ १९७

सोरठौ

पेट हेक कज पात, मेट सोच सांसौ म कर ।
रे संभर दिन-रात, नांम विसंभर नारियण ॥ १९८

अथ मात्रा दंडक छंद लछण

दूहौ

ये छंदां मिळ छंद व्है, मात्रा दंडक सोय ।
छप्पै कुंडळियौ कवित्त, फिर कुंडळिया होय ॥ १९९

अथ छप्पै लखण

दूहौ

कायब उल्लालौ मिळै, छप्पै तिण थळ होय ।
ग्यार तेर मत च्यार पय, पनर तेर पय दोय ॥ २००

छप्पै उदाहरण
कवित छप्पै

पंखी मुनि मन पंख, तीर भव सिंधु तरायक ।
मुक्त क्रिया सुख मूळ, स्रवण तार्टंक सुभायक ॥

---

१९६ यम-ऐसे । रहस-रहस्य भेद ।
१९७ भणै-कहते हैं । बीता-व्यतीत हो गये । अघ-पाप । सरब्बेण-सब समस्त । समरै-स्मरण कर । भीता-भयभीत । जेण-जिससे ।
१९८ पेट हेक कज-एक पेटके लिए । पात-पाप कवि । सोच-चिंता । सांसौ-संशय शक । संभर-स्मरण कर । विसंभर-विश्वंभर, ईश्वर । नारियण-नारायण ।
१९९ सोय-वह ।
२०० कायब-काव्य काव्यछंद । थळ-स्थान । मत-मात्रा । पय-चरण ।
२०१ पंखी-पक्षी । तीर-तट, किनारा । भव-सिंधु-संसार रूपी समुद्र । तरायक-तैरने वाला । मुक्त-मुक्ति । स्रवण-कान । तार्टंक-कर्ण-भूषण । सुभायक-सुन्दर ।

अव कळ घोर अंधार, बिंब रवि चंद्र निकासण ।
प्रगट धरम द्रुम उभय यम स्रुति नयण सुभासण ॥
घद 'किसन' रकार मकार बिहु, सत रथ चक्र समायका ।
भव जन तमांम कारक अभय, नांम अंक रघुनायका ॥ २०१

अजय नांम छप्पै लछण

दूहो

विध यकहत्तर छप्पय नद, सतर गुरु लघु धार ।
अजय जिकौ गुरु घट अधै, घेलघु नांम निहार ॥ २०२

अजय छपै उदाहरण

छप्पय

जै जै भूपा भूप, सदा संतां साधारै ।
दीनां दाता देव, मेद्र मानेकां मारै ॥
सीता स्वांमी सूर, धीर धारां धांगारसां ।
लंका जैहा लेर, दांन देणौ सू दासां ॥
सेहाई संता मेघगां, ताइ दणा तापग ।
झौनाड़ा गघी भू अखै, पांणां धाड़ा आपग ॥ २०३

अथ यकहत्तर छप्पै नांम कथन

छप्पय

अजय १ विजय २ बल ३ करण ४,
वीर ५ वैताळ ६ व्रहंजळ ७ ।
मरकट ८ हरि ९ हर १० ग्र[illegible]हम ११,
इंद १२ चंदण १३ सुभकर १४ वळ ।

१ १ अघ-पाप। बउ-समूह रवि-सूर्य। बिब प्रति बंब। भव-संसार। कारक-करने वाला।
२ १ साधारै-रक्षा करता है। मद्र-[illegible] असुर मानेकां-अनेक। सूर-शूरवीर। धारां-धारने वाला धारण कर धांगारसां-[illegible]। लंका-सैना। दासां भक्त। सेहाई-सहायक। ताई पापनाशी दूर। ताप-पाप। झौनाड़ा-वीर। पांणां-हाथों। धाड़ा-बल-समूह।

स्वान १५　सिंघ १६　सादूळ १७,
कूरम १८ कोकिल १६ खर २० कुंजर २१ ।
मदन २२　मद्य २३　तालंकर २४,
सेस २५　सारंग २६　पयोधर २७ ।
कछ कुंद २८ कमळ २६ वारण ३० सरभ ३१,
जंगम ३२　जुतिस्ट ३३　पखाण जग ।
दाता ३४ सर ३५ सुसरह ३६ समर ३७ वख,
सारस ३८　सारद ३६　कह सुभग ॥ २०४

फेर नांम
छप्पै

मेर ४० मकर ४१ मद ४२ सिद्ध ४३,
बुद्धि ४४ करतळ ४५ कमळाकर ४६ ।
घवळ ४७ सुमण ४८ फिर मेघ ४६,
कनक ५० क्रस्णह ५१ रंजन ५२ घर ।
ध्रुव ५३ ग्रीखम ५४ गरुड़ह ५५,
गिणा (य) ससि ५६ सूर ५७ सल्य ५८ सख ।
नवरंग ५६　मनहर ६०　गगन ६१,
रतन ६२ नर ६३ हीर ६४ भ्रमर ६५ अख ।
सेखर ६६ कुसम ६७ कहि दीप ६८ संख ६६,
वसु ७०　सबद ७१　माखीणीये ।
कवि छपय नांम जसराम कज,
जग　यकहतर　जांणीये ॥ २०५

१ अजय—म ८२ गु ७ ल १२ । २ विजय—म ८३ गु ६६ ल १४ । ३ बल—म ८४ गु ६८ ल १६ । ४ करण—म ८५ गु ६७ ल १८ । ५ बीर—म ८६ गु ६६ ल २ । ६ बैताल—म ८७ ग ६५ ल २२ । ७ ब्रहंनल—म ८८ गु ६४ ल २४ ।

८ मरकट—म ८९ गु ६३ स २६। ९ हरि—म० ९० गु ६२ ल २८। १० हर—म ९१ गु ६१ ल ३०। ११ ब्रहम—म ९२ गु ६ स ३२। १२ इंद्र—म ९३ गु ५९ स ३४। १३ चंदण—म ९४ गु ५८ ल ३६। १४ सुभकर—म ९५ ग ५७ स ३८। १५ स्वांन—म ९६ गु ५६ स ४ । १६ सिंघ—म ९७ गु ५५ स ४२। १७ सारदूल—म ९८ गु ५४ स ४४। १८ कूरम—म ९९ गु ५३ ल ४६। १९ कोकिल—म १ ० गु ५२ स ४८। २० खर—म १०१ गु ५१ स ५०। २१ कुंजर—म १ २ गु ५० स ५२। २२ मदन—म १०३ गु ४९ स ५४। २३ मछ—म १ ४ ग ४८ ल ५६। २४ तालंक—म १०५ गु ४७ स ५८। २५ सेस—म १ ६ गु ४६ स ६ । २६ सारंग—म १०७ गु ४५ स ६२। २७ पयोधर—म १ ८ ग ४४ स ६४। २८ कुंद—म १०९ गु ४३ स ६६। २९ कमल—म ११० गु० ४२ ल ६८। ३० बारण—म १११ गु ४१ स ७ । ३१ सरभ—म ११२ ग ४० स ७२। ३२ जगम—म ११३ गु ३९ ल ७४। ३३ जुतिष्ट—म ११४ गु ३८ स ७६। ३४ दाता—म ११५ गु ३७ स ७८। ३५ सर—म ११६ गु ३६ स ८ । ३६ सुसर (सुस्सू)—म ११७ ग ३५ स ८२। ३७ समर (प्रद्य नाळीक जात)—म ११८ म ३४ स ८४। ३८ सारस—म ११९ गु ३३ स ८६। ३९ सारद (ईनै वळेसा सस कैवे छै)—म १२ ग ३२ ग ८८। ४० मेर—म १२१ ग ३१ स ९ । ४१ मकर—म १२२ ग ३ ल ९२। ४२ मद—म १२३ गु २९ स ९४। ४३ सिध—म १२४ गु २८ ल ९६। ४४ बुद्धि—म १२५ गु २७ स ९८। ४५ करतल (मगलाम्रह)—म १२६ गु २६ स १ ०। ४६ कमलाकर—म १२७ गु २५ स १ २। ४७ धवल—म १२८ गु २४ स १ ४। ४८ सुमण—म १२९ गु २३ ल १०६। ४९ मेघ—म १३० गु २२ स १ ८। ५० कनक (कमिळ्याध भ्रम नगण मरवत्र)—म १३१ गु २१ स ११ । ५१ क्रस्ण—म १३२ ग २ स ११२। ५२ रजन—म १३३ गु १९ स ११४। ५३ ग्रब—म १ ४ गु १८ स ११६। ५४ ग्रीसम (ग्रीष्म)—म १३५ गु १७ स ११८। ५५ गरुड़ (द कवितकी मांम ममयळवि विधांन नहै छ)—म १३६ ग १६ म १२ । ५६ ससि—म १३७ गु १५ म १ २। ५७ सूर—म १ ८ गु १४ स १२४। ५८ सल्य (शल्य)—म १३९ गु १ स १२६। ५९ नवरंग—

म १४ गु १२ स १२८। ६० मनहर (मनोहर)—म १४१ गु ११ स १३। ६१ गयन्द—म १४२ गु १ स १३२। ६२ रतन—म १४३ गु ६ स १३४। ६३ नर—म १४४ गु ८ स १३६। ६४ हीर—म १४५ ग ७ स १३८। ६५ भ्रमर—म १४६ गु ६ स १४। ६६ सेखर—म १४७ गु ५ स १४२। ६७ कुसम (ईंनी नांम मात्रासम कवछ)—म १४८ गु ४ स १४४। ६८ दीप—म १४९ गु ३ स० १४६। ६९ सख—म १५ गु २ स १४८। ७० वसु—म १५१ गु १ स १५। ७१ सब्द—म १५२ गु स १५२।

अथ छप्पै नांम काढण विध। छप्परा लघु आखर व्है ज्यांमेंसूं दस घटाय दोय भाग करणा एक भाग घटायां बाकी रहै जतरमो छप्प छै।

अथ प्रजयान्कि यकहुत्तर छप्पै नांम काढण विध।

दूहा

गिण छप्पयचा अरण लघु, त्यां मज्झे दळ टाळ।
आधा कीधां ऊमरै, वेहर नांम वताळ॥ २०६

इति यकहुत्तर विध छप्पय अख्खर गुरु लघु प्रमांण नांम कथन संपूरण।

सुभं भवतु

अथ मात्रा छन्द मात्रा उपछन्द मात्रा प्रसम चरण मात्रा दडक छन्द गुरु लघु काढण विध।

अथ दूहौ

पूछै अन कवि छंद पदि, गिण जिण मत्त प्रमांण।
घटै म गुरु कह गुरु घटै, सेख रहै लघु जांण॥ २०७

अरथ

पैला कवेस्वर दूहो पढ ने कहै—यणमें गुरु कितरा लघु कितरा सौ कहौ। जठ दूहारी सरब मात्रा अड़तालीस गिणणी अड़तालीसमें घटै जतरा गुरु अक्षर जांणणा नें गुरु हुव सौ घटायां बाकी रहे सौ लघु जांणणा। यूं सरब मात्रा छंद गीत कवितादिक जांणणा।

---

२०५ ज्यांमेंसूं-जिनमें। जतरमो—उतना। यकहुत्तर-इकहत्तर।
२०६ वेहर-निर्णय। वताळ- बतला।
२०७ काढण-निकालने प्रसम-प्रथम। सेख-शेष। पैला-प्रथम। कवेस्वर-कवीश्वर। यण-इस। कितरा-कितना। जतरा-उतने जितने। यूं-इस प्रकार।

उदाहरण

दूहो

रे चित ग्रत ग्रद एम रख, मूरत सांम मम्फार।
मेल्ह सुरत नट बांसमें, प्रगट वरत व्है पार ॥ २०८

ग्ररथ

इण दूहारा ग्रड़तीस ग्रखिर छै, न दूहो छ" ग्रठ्ताळीस मात्रारी व्है छै। ग्रठ्ताळीस मांहासूं दस ग्रखिर गिया जद ग्रड़तीस रह्या।

सो ई दूहामें दस गुरु ग्राखिर छै, नै ग्रड़तीस मांसूं दस गुरु ग्राखिर घटाया जद ग्रठाईस रह्या सो ग्रठाईस ग्राखिर लघु छै, यूं समस्त मात्रा छ" जांणणा।

दूहो

वळ ग्रह पिंगळ कवितरी, वटी जात ग्रावीस।
तयूं नांम भाग तिकै, वळ नोखा वरणीस ॥ २०६

ग्रथ बावीस छप्पै नांम

कवित छप्प

ग्रळता १ जाता मेख २ कमळजेधह ३ ममगळ ४ कह।
लघु ५ ग्रटनाळीक ६ छत्र ७ नीमरणीनेधह ८ ॥
नाट ६ चोप १० संकळह ११ ग्रनै मुगताग्रह १२ ग्रक्खव।
कुंडळियौ १३ चोटियौ १४, वेध-हीग १५ कर-पल्लव १६ ॥

---

२०८ एम-इस प्रकार। मूरत-मूर्ति। सांम-स्याम स्वामी श्रीरामचंद्र भगवान। मम्फार-मध्य में। मेल्ह-रख। सुरत-ध्यान। वरतन-वरत यमड़ेका मोटा रस्सा।

२०६ वट-फिर। ग्रह्-पिंगळ-नागराज पिंगल ग्राचार्य। वटी-नहीं। तयूं-वरणन् है। तिक-वे

२१ २२ छप्पय कवितोंके नाम—

१ ग्रळता (ग्रडता-ग्रग) जाता नम ३ कमळजेध ४ ममगळ (ममगट विधान ग्रथवा ममगळ दिपानीक) ५ लघुनाळीक ६ ग्रटनाळीक ८ छत्रवध नीमरणी वध ६ नट १० चाप (ग्रग्रागम चार्प छप्पै कवित) ११ संकट (संकटग्रह) १२ मुगताग्रह १३ कुंडळियौ १४ चोटियौ (चोटीबंध) १५ वेधहीरा (हीरावेधी) १६ करपल्लव।

एक-लवयग १७ मज्झ अक्खरौ १८,
विधांनीक १९ हल्लव २० विहद्द ।
ताळ्र-ब्ब्यंव २१ अहरेअळग २२,
वीस दोय छप्पय सुवद ॥ २१०

अथ ग्रंथानुक्रमसे छप्पै नांम

दूहा

वळ्ता १ जाता २ संख लघू ३ वम्र-नाळीक ४ ।
समवळ ५ नाट ६ चौटियौ ७, ताळब्यंव ८ तह्तीख ॥ २११
चोप ९ हल्लव १० क्वीत ए, दिया नाग दरसाय ।
यकहृतरसं अधिक कहि, कीधी जुगत न काय ॥ २१२
कर विचार मनहं कहं, वरणग सुध्द वणाय ।
तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय ॥ २१३

उक्त छप्प

दूहा

कमळ १ छत्रबंधह २ कवित, निसरणीबंध ३ नाम ।
मुगताग्रह ४ करपल्लवी ५, तव कुंडळियौ ६ ही तांम ॥ २१४
हीरावेधी ७ इक वयण ८, मज्झ अखिरौ ९ विधांन १० ।
अहरअळग ११ संकळयता १२, मुणिया नाग सुमांन ॥ २१५
द्वादस छपय ग्रह दखे, जुगत रूप सुघ जांण ।
यावीसह छप्पय वदं, वरणे रांम वखांण ॥ २१६

---

१७ एकळवयण (इकलवयण) १८ मज्झअखरी १९ विधानीक २० हल्लव २१ ताळ ब्यंव २२ अहरेअळग (अहरअळग) ।

नोट—उपर्युक्त २२ ही छप्पय कवित कविने आगे इसी क्रमसे नहीं दिये हैं ।

२११ यकहृतर-इकहत्तर । कीधी-की । जुगत-युक्ति ।

२१२ काय-कुछ । तगसीरी-तकसीर कमी । छिम-क्षमा कीजिए ।

२१३ तव-कह ।

२१५ मुणिया-कहे । नाग-नागराज पिंगल शेषनाग ।

२१६ वदूं-कहता हूँ । वखांण-यश कीर्ति ।

अथ समवळ विधांन छप्पै मात्रा वरण लछण

दूहौ

आद अंत छप्पय नगण, गुरु पनरहै उगुणीस।
यक सौ सैंतीसह अखर, बद लघु सौ बावीस॥ २१७

अरथ

छ ही चरणके आद अंत नगण आव एकसौ सैंतीस सरब अखिर। पनरै गुरु अखिर होवै लघु अखिर एकसौ बावीस होवै अर उपम उपमानको सम भाव वरणै सो समवळ विधांन कवित छप्पै।

दूहौ

जिणमें समता वरणजै, उपमे अर उपमांन।
जांणौ छप्पै अह जपै, सौ सम वळह विधांन॥ २१८

समवळ विधांन छप्पै उदाहरण

नयण कंज सम निपट, सुभग आंणण हिमकर सम।
जप सम 'श्रीवह' जळज, तवत सम हीर दसण तिम॥
अधर व्यंब सम अरुण, समह भुज नागरौ ज सख।
मिल समांन उर समर, अथघ सम स्यंघ उदर अख॥
कह सम मयंद अत छीण कट, जयत खंभ रिण सुपय जिम।
समवळ विधांन खटपद 'किसन', सुज राघव रवि कोट सम॥२१६

जाता सख लछण दूहौ

रस स्यंगार य हासरस, भिच जिण कवित वखांण।
जाता संख जिणनु कहै, वरणव रांम वखांण॥ २२०

---

२१७ उगणीस—उन्नीस।

२१ समता—समानता सादृश्य। उपमे—उपमेय जिसकी उपमा दी जाय वर्णनीय। उपमांन—वह पदार्थ जिससे किसी दूसरे पदार्थको उपमा दी जाय। अह—शेषनाग।

२१६ कंज—कमल। सम—समान। निपट—अत्यन्त। सुभग—सुन्दर। आंणण—आनन मुख। हिमकर—चन्द्रमा। जळज—शंख। हीर—हीरा। दसण—दांत। अधर—ओष्ठ। व्यंब—बिंब। अरुण—लाल। समह—समान। नागरौ—हाथीका। समर—युद्ध। अथघ—अपार। स्यंघ—सिंधु। मयंद—सिंह। छीण—क्षीण। कट— कटि कमर। खंभ—स्तंभ। सुपय—चरण पैर। खटपद—छप्पय।

२२ स्यंगार—शृंगार। हास रस—हास्यरस। वखांण—वर्णन। वरणव—वर्णन कर। वखांण—यश कीर्ति।

आता सम छप्पै उदाहरण हास्यरस

सगर सुतण जिग करत, अगत हकनाहक दीनी।
वर करतां सुपनखा, कांन नासा विण कीनी॥
जाचंतां निज रूप, कियौ नारद मुख बंदर।
त्यागी सोळ हजार, घाल कुब्ज्या घर अंदर॥
कैळासे नरग उधार कीय, अजामेळ उतावळां।
आदेस करै 'किसनौ' अनंत, राघव कौतक रावळां॥ २२१

अथ वळता सम छप्पै लछण

दूहौ

वदीस तुक पाछी वळै, पर लाटानुप्रास।
वळता संख वखांणजै, सको कवित सर रास॥ २२२

अरथ

पैली कही सो तुक फर पाछी कहै लाटानुप्रास अमतकार ज्यूं तथा सीह चला गीत ज्यूं सो वळता सम कवित तुकां पाछी वळै जींसू।

अथ वळता सम उदाहरण

कवित छप्पै

जिण भजियौ जगदीस, जिकौ जमदूत न भजियौ।
नह तजियौ रघुनाथ, तेण अंत जांमण तजियौ॥
निज लीधौ हरि नाम, जिकण जम नांम न लीधौ।
तिण नह अम्रत त्रखा, रांम नांमांम्रित पीधौ॥

---

२२१ सुतण–सुत पुत्र। जिग–यज्ञ। अगत–अधोगति। हकनाहक–व्यर्थ। दीनी–दी। वर–पति। नासा–नाक। विण–बिना रहित। कीनी–की। बैळा–क्रीड़ा खेल। नरग–नरक। उतावळां–शीघ्रता करने वालो। आदेस–नमस्कार। अनंत–विष्णु ईश्वर। कौतक–कौतुक खेल क्रीड़ा। रावळां–आपके।

२२२ वदीस–कही जाती। वळै–फिर। वखांणजै–वर्णन कीजिये। सको–वह। ज्यूं–जैसे। जींसू–जिससे।

२२१ जिण जिस। भजियौ–भजन किया स्मरण किया। जिकौ–वह। जमदूत–यमराजके। भजियौ–भागा। अंत–मृत्यु। जांमण–जन्म। लीधौ–लिया। जिकण–जिसका। त्रखा–तृषा प्यास। नांमांम्रित–नाम रूपी अमृत पीधौ–पिया।

नर ध्यार असी नाचै निकं, निज हरि आगळ नाचियौ ।
जाचणौ जिकां रह्यौ न जग, ज्यां रघुनायक जाचियौ ॥

अथ संकल जात छप्पै लछण

एक सबदकी तेवड़ी, व्है आवरत व्रिसेस ।
कहियौ अह तिण कवितरौ, संकळ नांम कवेस ॥ २२४

सांकळ कवित उदाहरण

छप्पै

पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय ।
हाथ जुड़त सिल चढ़ न, हाथ डुळ हाथ हजूरिय ॥
दिल ऊजळ नर उजळ, लखिन ऊजळ सिर लेखीय ।
दौलत दौलत मिलि न, लगी दो लत द्रिढ़ लेखीय ॥
कवि किस्ण किस्ण चित दुरन किय, क्रस्ण जगत देखोय कपट ।
रे रांम मंत्र रट रांम रट, रांम रांम रट रांम रट ॥२२५

कमळबंध लछण

दूहो

द्वादस दळ द्वादस तुकां, अखर एक तुक अंत ।
सौ अधविच तुक चौतरफ, कमळबंध स कहंत ॥ २२६

---

२२१ आगळ-अगाड़ी अग्र । जाचणो-याचना । जिकां-जिनको ।

२२४ तेवड़ो-तीन बार । आवरत आवृत्ति ।

२२५ पूर-पूर्ण । अपूरिय-अपूर्ण । पिण-भी । दौलत-परिभ्रमण । दौलत-धन सम्पत्ति । लेखीय-समझिये ।

२२६ द्वादस-बारह । दळ-पंखोरी पंखड़ी । सौ-वह । अधविच-बीच मध्यमें । चौतरफ-चारों ओर । स वह । कहंत-कहा जाता है ।

कमळबंध उदाहरण

छप्पय

कौसळ्या सुख करण, नेत-बंध दसरथ नंदण।
ब्रत खित्रवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण॥
रिख सुबाह संघरण, असुर मारीच उडावण।
रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण॥
ब्रत जनक राख सीतावरण, धांनुखभंजण जटधरण।
मुण 'किसन' सुजस रघु-बंस-मण, सीतापत्त असरण सरण॥ २२७

२२७ नेत-बंध—अपना निशान झंडा पर स्थापित रखने वाला वीर। नंदण—पुत्र। व्रत—दृढ़ आधार। खित्रवट—क्षत्रियत्व वीरता धैर्य। निरवहण—वहन करने वाला धारण करने वाला निभाने वाला। निकंदण—संहार करने वाला मारने वाला। रिख—ऋषि। संघरण—संहार करने वाला मारने वाला। रज—धूलि। पै—चरण पैर। तरण—उद्धार करने वाला। जम—यम यमराज। त्रास—भय डर। जन—भगत। सीतावरण—सीतापति श्रीरामचन्द्र। धांनुख—धनुष। भंजण—तोड़ने वाला। जटधरण—महादेव। मुण—कह वर्णन कर। रघु-बंस-मण—रघुवंशमणि। सीतापत्त—सीतापति।

अथ छत्रबंध छप्पै लछण

दूहौ

सरब कवितकौ अरथ सो, अंत चरण आभास।
आद अखर तुक नीसरै, जपै छत्रबंध जास॥ २२८

छत्रबंध उदाहरण

छप्प

कहू सेवा की कहै १ ?, नांम परजंक कवण भण २ ?।
अखके मामां अयन ३ ?, नांम की सिंभ जयौ जिण ४ ?॥
कहजै वुवां किसं ५ ?, महत आदरैन केन ६ ?।
दूधां सिंघ कुण दूध ७ ?, मित्र दाखन कीजै नं ८ ?॥
रिप पंड कवण कहू नांम जिण ९ ? संतां तार सुरेसके।
कित्र 'किसन' छत्रयंघहू कवित, ओप छत्र अवधेसके॥२२९

---

२२९ परजंक—पर्यंक पलंग। कवण—क्या। भण—कहै। भण—कहै। के—किसने। अयन—सूर्य अथवा चंद्रकी उत्तर दक्षिणकी ओर गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन भी कहते हैं। जयौ—जीता। रिप—शत्रु। पंड—पांडव। कवण—कौन। सुरेस—इंद्र।

नोट—१ चोवण (चरण)। २ पलंग। ३ प मामा। ४ मयूर। ५ समर। ६ बड़ाई। ७ बनड़ो। ८ समरण। ९ कैरव। इन शब्दोंके आदि अक्षरके पढ़नेसे 'ओप छत्र अवधेसके' इस तुकका उत्तर बनता है।

अथ मझ अखिरा छप्य लछण

दूहौ

कवित अरथ बाहर लिखै, अखिर मझ विचार।
और जठै प्रगटै अरथ, सौ मझ अख्यर धार ॥ २३०

अथ मझ अखिरा छप्पै उदाहरण

स्वाद मीठा कह किसौ १ ?, किसं मूरखनं कहजै २ ?।
की कह भ्रात कनेठ ३ ?, नांम रेखा की लहजै ४ ?॥
कहै धरानं किसं ५ ?, रंक किण नांम जितं कह ६ ?।
मंदभाग की मुवै ७ ?, ठहै तारा किण ठांमह ८ ?॥
रघुनाथ भगौ की जनकधर ९ ?,
मल सुध किसं भणीजियै १० ?।
कवि 'किसन' कवित मझ अख्यिर कह,
जस रघुनाथ जपीजियै ॥ २३१

अथ लघुनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

अखर अठारह चरण चव, बे चरणां बावीस।
कवित लघु नाळीक कहि, बरणत सरय कवीस ॥ २३२

अथ लघुनाळीक छप्पै

तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळे।
हण सुबाह मारीच, पैज खित्रवट ध्रम पाळे॥

२३० जठै–जहां। प्रगटै–प्रकट होता है। अख्यर–अक्षर।
२३१ मीठ–मीठा। किसौ–कौनसा। किसूं–क्या। की–क्या। कनेठ–कनिष्ठ। धरा–धरनी पृथ्वी। जितूं–जीता। मदभाग–मन्दभाग्य। मुवै–मरते हैं। ठहै–ठहरते हैं। ठामह–स्थान। भगौ–तोड़ा। अखियर–अक्षर।
नोट—१ मिश्रीको। २ मजाए। ३ धनुष। ४ समीर। ५ मदन। ६ मस्तको। ७ ममागी। ८ नयग। ९ जनक। १ सुमत। इनके मध्याक्षरके पढ़नेसे भी जानुकी वल्लभाय नाम बनता है।
२३२ अक्खर–अक्षर। चव–चार। बे–दो।
२३३ तिण–जिस उस। जिकण–जिस। रिख–ऋषि। मख–यज्ञ। रखवाळे–रक्षा की। हण–मार कर। पैज–मर्यादा नियम प्रतिज्ञा। खित्रवट–क्षत्रियत्व वीरता धर्म। ध्रम–धर्म। पाळे–पालन किया।

नग रज गौतम नार, जेण उधरी जग जांणै।
धनुख भंज सीय धरी, प्रथी भुज जोर प्रमांणै॥
रे ग्रधम समभ्क मुख नांम रट, सीत-धर समरायकौ।
कह जीहहूं त 'किसना' कवी, नितप्रत जस रघुनाथकौ॥ २३३

अथ ग्रधनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

उगणीसह चव पद ग्रखिर, ग्रकवीसह बे ग्रौण।
कवित ग्रधनाळीक कवि, भणै नाग त्रय-भौण॥ २३४

अथ ग्रधनाळीक छप्प उदाहरण

जिण राघव जापियां, धम्र घर नवनिध धावत।
जिण राघव जापियां, प्रसध ईजत नर पावत॥
जिण राघव जापियां, सुलभ भवसागर तरसी।
जिण राघव जापियां, सरब मन कारज सरसी॥
जापियां जेण रघुवर सुजस, धरै ऊंच विरदां धरा।
तै नांम जोड़ ना ज्याग तप, नित राघव जप जप नरा॥ २३५

अथ निमरगीबंध छप्प लछण

दूहौ

एक दोय ग्रण पेण क्रम, छप्पय करै ग्रखांण।
गत जिम चन्ज गातियां, निमरगीबंध जाण॥ २३६

---

२३३ नग—चरण। रज—धूलि। नार—नारी स्त्री। जेण—जिस। ग्रधम—नीच पतित। सीत-धर—सीतापति श्रीरामचन्द्र भगवान। समरायकौ—समर्थ का। जीहहूं त—जिह्वा से। नितप्रत—नित्यप्रति।

२३४ उगणीसह—उन्नीस। बे—दो। ग्रौण—चरण। त्रय-भौण—त्रिभुवन।

२३५ जिण जिस। जापियां—जपने या भजन करने पर। धम्र—स्थिर। नवनिध—नवनिधि। धावत—आ जाती है। प्रसध—प्रसिद्धि। पावत—प्राप्त करता है। भवसागर—संसार रूपी समुद्र। कारज—कार्य काम। सरसी—सफल होंगे सिद्ध होंगे। जेण—जिस। विरद—विरुद कीर्ति। तै—उस उसके। जोड़—समान बराबर। ना—नहीं। ज्याग—यज्ञ।

२३६ [illegible]

अथ निसरणीबंध छप्पै कवित उदाहरण

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण वख ।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंघ सख ॥
आठ कुळाचळ अनड़, नाग नव नाथ निरंतर ।
दस द्रिगपाळ दुआह, रुद्रह एकदस सर तर ॥
सम्भ सम्भ उमंग बारह सघण, त्रिभुव चित्त कायक वयण ।
तेरहा भांण पय रांमतौ, भल सेवै चवदह भुयण ॥२३७

अथ नाट नांम छप्पै लछण

दूहौ

नाट सबद जिण कवित्तमें, आद अंत लग होय ।
नाट नांम तिणनूं कहै, सुकव महा-मत सोय ॥ २३८

अथ नाट छप्पै उदाहरण

लाभ नहीं अहलोक, नहीं परलोकह निरमय ।
सुमति नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय ॥
जीवण सुख नहिं जिकां, नहीं ज्यां मुवां मुक्त निज ।
नहीं जिके नहच्यंत, कदे ज्या नहीं सरै कज ॥
निकळंक थांण ज्यांरी नहीं, दसा नहीं सुभ ज्यां दपै ।
ज्यां नहीं सफळ मनखा जनम, जिके नहीं रघुवर जपै ॥ २३९

---

२३७ अहनिसा–रात-दिन । रवि–सूर्य । चंद–चंद्र । वख–वह । तत–तत्व । पंच–पांच । सपत–सात । सिंघ–समुद्र । कुळाचळ–आठ पर्वतोंका समूह मतांतरसे सात पर्वतोंका समूह कुलपर्वत । अनड़–पर्वत । द्रिगपाळ–दिक्पाल । दुआह–महान रुद्र । उमंग–तरंग इच्छा । सघण–घन बादल । पय–चरण । भल–ठीक श्रेष्ठ । भुयण भवन ।

२३८ नाट–नहीं नहीं शब्दका प्रयोग । महा-मत–महामतिवान । सोय–वह ।

२३९ अहलोक–इस लोक इस संसारमें । सुमति–श्रेष्ठ मति । स्यांन–बुद्धि । खांत–विचार । ज्यां–जिन । खय–नाश । मुक्त–मुक्ति, मोक्ष । नहच्यंत–निश्चित । कज–काम । दपै–प्रकाशमान होती है । मनखा जनम–मनुष्य जन्म ।

अथ चोपई नांम छप्प लछण

दूहौ

चीस चीस चोपद चरण, दोय चीस दो पाय।
चोप कवित जिण चोपसुं, रटीयौ पनंगाराय ॥ २४०

अथ चोपई छप्प उदाहरण

चोप अरच्च हरि चरण, चोप फिर रे परदछण।
चोप करे करजोड़, जनम सरजत आगळ जण ॥
चोप करे चित चीच, नांम सिर अगर सु नर हर।
चंनण घस जुत चोप, कमळ त्यं तिलक चोप कर ॥
अत चोप भजन सी-वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।
कवि चहै चोप रघुराजकौ, कर कर चोप स भजन कर ॥२४१

अथ मुकताग्रह नांम छप्पै लछण

दूहौ

आद अंत तुकरै झमक, अरथ अत्र उर आंण।
गं्रथ मुकत जिम छपय गत, मुगता ग्रह परमांण ॥ २४२

अथ मुक्ताग्रह कवित उदाहरण

भव ब्रह्मा जिण भजै, भजै तिण नाम पाप भर।
भर टाळण मह भूम भूम-पतनकौ जेण सर ॥
सर धनु धार समाथ, माथ दस भंज समर मह।

२४० चोपद चार पद या चरण। चरण-पतर। पाय-चरण। चोप-रुचि चतुराई उत्साह। पनंगाराय-शेषनाग।

२४१ अरच-पूजा कर। परदछण-प्रदक्षिणा। जनम सरजत-जो जन्म देता है याने रचता है। चांप्ण-चमारी। त्यं-जिम। चोप-ध्यान। कमळ-शिर मस्तक। सी-वर-सीतावर श्री रामचन्द्र। उचर-उच्चारण कर, भजन कर। चोप-पूजा दया।

२४२ झमक-यमकानुप्रास। ग्रंथ-रच बना। मुकत-मोती।

२४३ भव-महादेव शिव। ब्रह्म-ब्रह्मा। भर-भार बोझ। भूम-भूमि। भूमपत-भूमिपति। सर-बाण तीर। धनुं धनुष। समाथ-समर्थ। माथ-मस्तक सिर। समर-युद्ध। मह-में।

महृ राखण मुरजाद, जादपत पर्ब्बै तार जह ॥
जह दुसह्‌ पाळ जन सांमरथ, रथ खगेस मारुत सजव।
सज मख सिहाय भंजण सुभुतज, भज रघुवर तर उदध भव ॥२४३

अथ सर्प्पं नाम कवित कुंडळिया लछण

दूहौ

पहलां दूहौ एक पुण, आद अंत तुक जेण।
पलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियौ तेण ॥ २४४

अथ कुंडलिया उदाहरण

जपै रसण रघुवर जिकै, अघ त्यां कपै अमांण।
जनम मरण सुधरै जिकां, जे वड़भागी जांण ॥
जे वड़भागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ।
त्यां जिग किया तमांम, कांम सुक्रत ज्यां कीधौ ॥
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ ॥
धन मात पिता जिण वंस घर, कळुस तिकां दरसण कपै।
कवि 'किसन' कहै धन नर तिकै, जिके रसण रघुवर जपै ॥२४५

---

२४३ महृ–मही पृथ्वी। मुरजाद–मर्यादा। जादपत–यादपति समुद्र। पर्ब्बै–पर्वत। जह–जिस। सांमरथ–समर्थ। खगेस–गरुड़। मारुत–पवन। सजव–वेग सहित। मख–यज्ञ। सिहाय–सहाय। उदध–उदधि समुद्र। भव–संसार।

२४४ पहलां–प्रथम। पुण–कह। धुर–प्रथम। तव–कह।

२४५ रसण–रसना जिह्वा। अघ–पाप। कपै–नाश होते हैं। अमांण–अपार। वड़भागी–बड़े भाग्यशाली। जांण–समझ। दे–दे दो। लीधौ–लिया। त्यां–उन्होंने। जिग–यज्ञ। तमांम–सब समस्त। सुक्रत–पुण्य। कीधौ–किया। वां–उन्होंने। हिरण–हिरण्य सोना। हथ–हाथ। सधिया–साधन किये। अठ-जोग–अष्ट-योग। कौटक–करोड़ों। धन–धन्य। मात–माता। कळुस–पाप। तिकां–जिनके पनसे। जिके–जो वे।

अथ चौटीबंध छप्प लछण

दूहौ

आद कहै सौ अंतमें, नांम गणत नरवाह ।
सिरै कवित बंधै सिखा, चौटीबंध सराह ॥ २४६

अथ चौटीबंध छप्प उदाहरण

सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम ।
उर दाहक सम आग, तीर सुर-राज राज तिम ॥
सत हरचंद समान प्रगट दरियाव अथघपण ।
सुर तर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण ॥
रवि अमी आग इंद चंद हरि, दध सुरतरमण आद ले ।
परभाव आठ निज कांम पर, एक रांम तन ऊमळै ॥ २४७

अथ हीराबंधी छप्प लछण

दूहौ

एकण हीरौ विहरियां, दूजौ हीरौ थाय ।
हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय ॥ २४८

अथ हीराबंधी छप्प उदाहरण

नारंगी संभार नीम, ऊ नर कर अंजह ।
करणा सुभ करतूत, काल हर कदमां कंयह ॥

---

२४६ सिरै-मस्तक । सराह-प्रशंसा कर सराहना कर ।

२४७ सूरजपणौ-सूर्यरत सूर्यका गुण । स्रवण-प्रवाण करना । हिमकर-चंद्रमा । सम-समान । दाहक-जलाने वाला । सुरराज-इन्द्र । सत-सत्य । हरचंद-हरिश्चंद्र हरि चंदन । अथघपण-अथाहपन गहरापन । अमी-अमृत । सुरतर-कल्प वृक्ष । मण-मणि । आद-आदि । ऊमळै-प्रभाव दिखाता है ।

२४८ विहरियां विभाजित करने पर बींधने पर ।

२४९ [illegible]-वृक्ष विशेष । [illegible]-नाम । करणा-वृक्ष विशेष व उमदा पर । करतूत-[illegible] काम [illegible] । कदमां-कदम्ब वृक्ष विशेष । कंयह-[illegible] ।

बोर छोड़ आवळा, खैर करमद बकायण।
बीजा धव मट बैत, ईख सुरतर नारायण॥
खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अंमर सवै।
सैंमळ सगीस तज आंन सुण, दाख रांमफळ सेवदे॥ २४९

अथ करपल्लव नांम छप्पै लखण

दूहौ

आंगळियां करसूं अरथ, जेण कवितरौ होय।
आखी विध अह आक्खियौ, करपल्लव कह सोय॥ २५०

अथ करपल्लव छप्पै कवित उदाहरण

यूं जे तैं न कियौ, करसु यूं जण जण आगळ।
यूं न लिया हरि अगे, लेस नितप्रत गदगद गळ॥
कीध यूं नह कदे, करसु तोपण विध दुख तन।
यूं न कियौ उण हेत, देस तौ यूं जग वन दन॥
यम येम ए मन कीयौ अधम, मूरख यूं जम मारसी।
यूं कियौ ज तैं अहनिस अवस, यूं रघुनाथ उधारसी॥ २५१

अरथ

हे प्राणी तैं स्री रांमचंद्र आगे हाथ नहीं जोड़्या तौ तूं जणा जणा आगळ हाथ जोड़सी। जो तैं बसी आंगळ प्रभु आगै मुखमें न लिया तौ जगत आगै

२४९ बोर-बदरी नामक वृक्ष या उसका फल। आवळा-मूर्ख। खैर-वृक्ष विशेष कुसम। करमदा-वृक्ष विशेष तथा उसका फल। बकायण-नीम जैसा एक वृक्ष। बीजा दूसरा एक वृक्ष विशेष या उसका फल। धव-वृक्ष विशेष। वट-बरगदका वृक्ष। बैत-बेंत एक लता। ईख-ऊख यथा इक्षु। सुरतर-कल्पवृक्ष। आंन-अन्य। दाख-द्राक्षा कह। रांमफळ-सरीफा सीताफल।

२५० अह-अहि शेषनाग। अक्खियौ-कहा।

२५१ यूं-ऐसे। तैं-तूने। आगळ-अगाड़ी। अगै-अगाड़ी। लेस-किंचित। नितप्रत-नित्य-प्रति। गदगद गळ-गदगद कंठ। कीध-किया। कदे-कभी। तोपण-तो भी। हेत-स्नेह। अवस-अवस्य। आंगळ-अंगुली।

गदगद कंठ होय नित हाहा भासी नै आंगळी मूढामें ससी । जे तैं थी राम आगै ऊभी आंगळी न कीदी सो सरीरमें दुख पाय जणा जणा आगै ऊभी आंगळी करसी । ऊंप ईस्वर निमत यू कैतां देवारै वासतै हाथ पांची आंगळ्यांसूं ऊंची न कीधी तौ थारै जगत मांयामें यूं पांची आंगळ्यांसूं हूचका देसी । यम कैतां प्रभुनै यगी पांच ही आंगळ्यांसू चम्पा पुसप चढ़ाया परस्या नहीं फेर एम कैतां प्रभुरी आरती उतारी नहीं फेर यम कैतां प्रभुनै नमसकार प्रणाम कीधी नहीं सो यू जम मार देसी, अर कदा'क तं यू कैतां आंगळ्यांसू रात दिन माळा फेरे नै भजन कीधी छै तौ यूं कहतां मोह पकड़ नै भवसागर मांसूं यू स्रो रघुनाथ उधारसी इति करपल्लव कवित अरथ ।

अथ हेमल्लवयण छप्प लछण

दूहौ

यक सौ अर बावन अखर, जठै सरब लघु जाण ।
एकल वयणौ कवित यूं, वदियौ नाग वखांण ॥ २५२

अथ हेमल्लवयण छप्प कवित उदाहरण

तरण सरम छय तरण, सरण अमरण हरखण सक ।
मरण जनम भय मटण, घरण जड थरद रहत घक ॥
अजर जग्ग रण असह, धन जस ससर सम बढ दह ।
लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथघ कह ॥
भल करम मन धतन, अन दलभ, अखत वयण अह नर अमर ।
कर हरख पहर अठ कव 'कमन', भचर समन रघबर समर ॥२५३

२५१ आंगळी–उंगुली । कीदी–की । निमत–निमित्त लिए । वासतै–लिए । कीधी–किया । हूचका–मुट्ठी बंद करके मध्यमा अंगुली को इस स्थिति रखना जिसमें उसका पीछला भाग दूसरी उंगलियों से कुछ आगे निकला हुआ हो । इस ढंग हुए भाग से किया जाने वाला प्रहार या चोट । कदा–कभी । कदा'क–कभी ।

२५२ यक सौ–एक सौ । जठै–जहां । वदियौ–कहा । नाग–पिंगलनाग ।

२५३ तरण–तरणि सूर्य । सरम–समान । तरण–तरणी । जड–जड़ । थरद–स्थिर । सक–स्पर्धा । रण–युद्ध । असह–असह्य । लहर–तरंग । अथघ–अपार । दलभ–दुर्लभ । अखत–कहता है । अह–नाग । अमर–देवता । रघबर–रघुवर । समर–याद कर स्मरण कर ।

अथ हल्लव नांम कवित लछण

दूहौ

वीस वीस चौतुक अखर, येतुक कह बावीस ।
हल्ल सबद वरणै सुमभ, हल्लव नांम कहीस ॥ २५४

अथ हल्लव नांम कवित उदाहरण

हल हल्लिय गिर आठ, सपत हल्लिय जळ सायर ।
घूजह हल्लिय धरण, गिरद हल्लिय नभ छायर ।
सिर हल्लिय अघ सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय ।
हल्लिय दाढ वराह, बुमह हल हल्ल दहल्लिय ।
हल हल्लिय लंक गढ़ बंकसौ दस-ध्रू पै हल काहल्लिय ।
हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ॥ २५५

अथ कवित छप्पै नांम ताळूरम्यब लछण

दूहौ

लागै पढ़तां ताळवै, जीहा अग्र जरूर ।
कहजे छप्पय 'किसन' कवि, तिकौ म्यंभ ताळूर ॥ २५६

अथ ताळूरम्यब छप्पै उदाहरण

रट रट रे नर ईस, नाय औरो जिण सीस ।
चाळ-भाल कर चहू, वेस ईछत जगदीस ॥
ईस अचळ सरणाय रीझ इज्जत द्रढ रक्खयण ।
वट वट अकत दूठ, ईस नां छोड अघक्खण ॥

---

२५४ चौतुक—चार तुक ।

२५५. हल हल्लिय—कंपायमान हुए । सपत—सप्त सात । सायर—सागर समुद्र । घूजह—भय । वराह—विष्णुका एक अवतार विशेष । दहल्लिय—भयभीत हुए, कंपायमान हुए । दस-ध्रू—दस सिर वाला रावण ।

२५६ ताळव—तालु, तालू । जीहा—जिह्वा । तिकौ—वह । म्यंभ ताळूर—तालूर म्यंभ ।

२५७ नाय—नमा कर । औरो—औरोंमें । सरणाय—शरण देने वाला । रक्खयण—रखने वाला । वट—नाश कर । अकत—दुष्कर्म पाप । दूठ—दुष्ट भयंकर । नां—नहीं । अघक्खण—अघक्षण ।

तीरथा इळा अट अट स तै, देणौ चित सतसंग दुस ।
वस सिर खळ गंजण दाख रे, जानकीनायक सुजस ॥ २५७

अहर अळग कवित छप्पै

दूहौ

पढ़तां होठ मिळै नहीं, ऊ प फ ब भ म न आण ।
कहियौ अह अन कवि कहै, अहर अळग सौ जांण ॥ २५८

अथ अहर अळग छप्पै उदाहरण

नारायण नरकार, नाथ नरहर जग-नायक ।
कंज नयण कर कंज, तरण संतां खळ-तायक ॥
धरणीधर गिरधार धनौ स्रीधर धू धारण ।
हाथी ग्रह निज हाथ, तोयहू ता अट तारण ॥
करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय ।
रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार औधेस जय ॥ २५९

अथ त्रिधांनीक जात छप्पै कवित लछण

दूहौ

ले ग्रटहू ता नव लगै, धरणै मांझ विधान ।
त्रिधांनीक छप्पय वदै, वडा सुकवि बुधवान ॥ २६०

अथ सप्त त्रिधांन छप्पै उदाहरण

कमळ उदध कळारद्ध, भांण मघवाण, मेर ससि ।
वदन, सहज, दत, तेज, राज, गरूवत दीठ लसि ॥

२५७ उद्ध–प्रचुर [illegible] । गंजण–नाश करने वाला । दाख–कह ।

२५८. अह–दोषनाम । अन–अन्य । अहर–अधर, होठ । अळग–दूर पृथक ।

२५९ नरकार–निराकार । कंज–कमल । कर–हाथ । तरण संतां–संतों का उद्धार करने वाला । खळ-तायक–दुष्टों का संहार करने वाला । तोयहूंता–पानी से । अट–शीघ्र । तारण–उद्धार करने वाला । कोदंड–धनुष । चालण–चलने वाला । यळ–इळा पृथ्वी । नय–नीति । दिनेस–सूर्य औधेस–अवधेश श्रीरामचंद्र ।

२६ त्रिधान–किसी कार्य की विधि या व्यवस्था । वदै–कहते हैं । बुधवान–बुद्धिमान ।

२६१ उदध–उदधि समुद्र । कळारद्ध–कल्पवृक्ष । भांण–सूर्य । मघवांण–इन्द्र । मेर–सुमेरु पर्वत । ससि–चंद्र । वदन–मुख । दत–दान । गरूवत–गंभीर भारी । दीठ–दृष्टि ।

सजळ, सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्र ग, ससीतळ।
प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह्, राका मिळ॥
प्रफुलंत, अयघ, दतवार, तप, ओज, सरण, स्रावण, अम्रत।
तन एक राम दसरथ सुतण, विहद सात गुण निरवहत॥ २६१

इति पुरस प्रत विधांनिक
अथ सत्री प्रत विधांनिक छप्पै

सेस, इंदु, म्रग, दीप, जांण, कोकिल, म्रगपति, गज।
वेण, वदन, चख, नाक, बोल, कटि जंघ, चाल, सज॥
असित, सकळ, चळ, सुथिर, गुप्त, अगिरात, अक्रमत।
सुरत्रि, व्योम, घन अयन, नूत, पव्वय, सुव्यंघ, थित॥
मण, सरद चकित, निस, रतिपतिह, लंघणीक, मंदह चलत।
मिथलेस कुंवरि सीता सुतन, कवि एती ओपम कहत॥ २६२

इति विधांनिक सपूरण
अथ नाट सभा छप्प लछण
दूहौ

यक तुक तौ थापै अरथ, अन्न तुक दियै उडाय।
नाट सलौ तिण कवित नै, सुकवि कहै सुभाय॥ २६३

---

२६१ प्रात-प्रातःकाल। पुनिम-पूर्णिमा। मधु-बसंत अथवा मधु-बसंत मधु-चैत है, मधु मदिरा मकरंद। मधुर्प मधुहरि मधुसुधा मधुमाधव गोविन्द॥ राका-पूर्णिमा। दतवार-दान। स्रावण(स्रावण)-श्रवण करने वाला। सुतण-सुत। विहद-अपार। निरवहत धारण करते वहन करते।

२६२ प्रत-प्रति। सत्री-स्त्री नारी। सेस-शेष यहां कृष्ण-सर्प अर्थ है। इंदु-चंद्रमा। म्रग-हरिण। दीप-दीपक दिया। कोकिल-कोयल। म्रगपति-सिंह। गज-हाथी। वेण-वेणी अंगी स्त्रियोंके सिरके बालोंकी चोटी। वदन-मुख। चख-चक्षु नेत्र। बोल-शब्द आवाज वचन। कटि-कमर। जंघ-जांघ ऊरु। चाल-गति। असित-श्याम काला। सकळ-शुक्ल सफेद। चळ-चंचल। सुथिर-स्थिर। सुरभि-सुगंधि सुगंध्। व्योम-आकाश। नूत-धाम धाम। पव्वय-पर्वत। थित-स्थित। मण-मणि। निस-निशा रात्रि। रतिपतिह-कामदेव। लंघणीक-भूखा कृशोदर। मंदह-मद। मिथलेस-राजा जनक। सुतन-पुत्री। एती-इतनी। ओपम-उपमा। कहत-कहता है।

२६३ यक-एक। थापे-होता है। अन-अन्य दूसरी। उडाय-मिटा कर। सुभाय-सुन्दरतर।

अथ नाट सभा छप्य

उदाहरण

सूर प्रभवतौ तेज, तेज नह इम्रत स्रायक।
यिम्रत स्रायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक॥
स्यांम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावंतह।
मायावंतह साह, साह नाहीं खर अंतह॥
खर अंत ततौ चित्रक अखव, नह चित्रक नर जाणिये।
नर नहीं नरां नायक निपट, प्रभव-भांण पहचाणिये॥ २६४

अथ सुद्ध क डळियौ लछण

कायब दूहासूं मिळै, कुंडळियौ सुध कत्थ।
अम्रत-धुन अनुप्रास घण, स्री रघुनाथ समत्थ॥
स्री रघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक।
सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक।
सीतानाथ सुजांण, पांण खग घन ब्रद पायब।
कुंडळियौ सौ कहै, मिळै दूहासूं कायब॥ २६५

२६४ सूर-सूर्य। प्रभवतौ-उत्पन्न करता है उत्पन्न करता हुआ। इम्रत-अमृत। स्रायक-स्रावक चवने वाला देने वाला। सुभायक-रुचिकर, मनोहर। मायावंतह-धनाढ्य। साह-सेठ। खर-खरदूषण राक्षससे तात्पर्य है। अखव-कह। चित्रक-हरिण। प्रभव भांण-सूर्यवंशी।

नोट—नाट नामक छप्पयका उल्लेख पूर्व २२ छप्पयोंमें मय उदाहरणके हो चुका है—यह नाटसभा भी उसीका एक भेद प्रतीत होता है।

२६५ कायब-काव्य छंद यह रोला छंदका ही एक भेद है जिस रोला छंदके चारों चरणोंमें ११वीं मात्रा ह्रस्व हो उसे काव्य-छंद कहते हैं। किसी-किसीके मतसे दोहाके पश्चात् रोला छंद। जोड़ने से ही कुंडलिया छंदकी रचना मानी गई है। कत्थ-कह। अम्रत-धुन-अमृत-ध्वनि। यह भी छ चरणका एक मात्रिक छंद है जो दोहा और रोलाके पश्चात् २४ मात्रा अथवा रोला छंदके जोड़नेसे ही बनता है परन्तु अमृत-ध्वनिमें यमकालंकारको तीन बार लगवाके आठ-आठ मात्रा सहित रचा जाता है। घण-बहुत। समत्थ-समर्थ। हत्थ-हस्त हाथ। धनु-धनुष। सायक-बाण तीर। सरण सधार-शरणागत रक्षक। लेख-देव देवता। खग-तीर बाण। ब्रद-विरद यश। पायब-प्राप्त करने वाला।

अथ कुंडळियौ झड़ उलट लछण

दूहौ

दूहौ धुर धुर पच्छ तुक, आद अंत उलटंत।
वीस मत्त चौ तुक अळै, सौ झड़ उलट समंत॥ २६६

कुंडळिया झड़ उलट उदाहरण

भुज दंड लीजै भांमणा, अभियांमणा अभीत।
विध विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत॥
जीत जुध पावणा, आव असुरां जरे।
सीस दस कुंभ घण, नाद सा स्यंघरे॥
सधर कर भभीखण, रवि जस रसामण।
भुजा रघुवर अडर, लीजिये भामणा॥ २६७

अथ कुंडळियौ जात दोहाळ लछण

दूहौ

मुख कुंडळिया अंत भुज, एक दूहौ फिर आख।
कुंडळियौ दोहाळ कह, भल राघव जस भाख॥ २६८

अथ कुंडळियौ दोहाळ

उदाहरण

केकंधा लंका कहै, जस रघुनाथ सुजांण।
कहै भभीखण रविजकी, मुख हू अवळीमांण॥

---

२६६ धुर-प्रथम। पच्छ-पश्चात्। मत्त-मात्रा। चौ चार। तुक-चरण। अळै-फिर।

२६७ भांमणा-बलैया। अभियांमणा-वीर जबरदस्त शक्तिशाली। अभीत-निडर निर्भय। विध-विध-तरह-तरहसे। दास-भक्त। वचावणा-बचाने वाला। पावणा-प्राप्त करने वाला। सजीत-विजयी। जरे-नष्ट कर,मार कर। सीस दस-रावण। कुंभ-कुंभकर्ण। घणनाद-मेघनाद इन्द्रजीत। सा-समाना जैसा। स्यंघरे-संहार किये। सधर-दृढ़ मजबूत निर्भय निशंक राज्य या पद सहित। भभीखण-विभीषण। रवि-रवि सूर्य। रसामण-रश्मि किरण।

२६८ आख-कह। भल-श्रेष्ठ उत्तम। भाख-कह।

२६९ केकंधा-किष्किंधा। रविजकी-सूर्यवंशीकी श्रीरामचंद्रजीकी। हू-से। अवळीमांण-अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला वीर।

मुसह्ह अवळीमांण, किसं पायक जस कत्थै।
दत देखा दत दह्ह, सुजस जग कह्है समथ्थै॥
कासीद्री गुण करै, जिका कथ सह्ह जग जांणै।
केतक डमरां कुसम उरह भमरां दळ भांणै॥
जुग जुग मुख 'किसना', जपै नित नव नव एह्नांण।
केकंधा लंका कह्है, जस रघुनाथ सुजांण॥ २६६

अथ कुंडळणी लछण

दूहौ

उगाहौ कर आद यक, तुक पलटै धुर अंत।
कायनरी तुक च्यारि कह्, कुंडळणी स कहंत॥ २७०

अथ कुंडळणी उदाहरण

यिक रघुनाथ उजाळौ सारौ, रघुवंस जेण दुति सरसत।
विध जं है कळ वाळौ, मभ्भ सह्ह नभं तेज करस तेजोमय॥
तेजोमय नभ होत, चंदहूंता जग चावौ।
एक सेस अजवाळ, सरब कुळ सरप सुभावौ॥
हेक मेर गिर हुवै, सौ भगिर बंस सिघाळौ।
विध जिण सह्ह रघुवंस, एक रघुनाथ उजाळौ॥ २७१

कवित कुंडळिया १ सुध कुंडळिया २ भड़ उलट कुंडळिया ३ दोहाळ कुंडळिया ४ कुंडळणी ५—इति पंच प्रकार कुंडळिया संपूरण।

---

२६६ अवळीमांण-मारने ऐरावतका उद्योग करने वाला वीर। किसूं-जैसे। पायक-सेवक। कथ-कहे। दत-दान। समथ्थै-समर्थ। कासीद्री-कासिदका कार्य हरकाराका कार्य। सुजस-नाम। कथ-कथा। सह्-सब। केतक-केतकी केवड़ा। डमरां-सुगंधि महक। कुसुम-पुष्प फूल।

२७१ यिक-एक। दुति-द्युति। विध-विधु चन्द्रमा। जूं-जैसा। कळ-कला। नभ-नभ्य। सह्-सब। नभं-आकाश। तेजोमय-प्रकाशमय। चदहूंता-चन्द्रमासे। चावौ-प्रसिद्ध। मेर-गिर-सुमरु-पर्वत। सौ-जैसा। भगिर-भगीरथ नरेश दिलीपके पुत्र भगीरथ। सिघाळौ-श्रेष्ठ। उजाळौ-प्रकाश रौशनी।

दूहा

मात्रा वृंदक वरणिया, इण विध छंद उदार।
'किसन' रिझावण जस कियौ, रांमचंद्र रिझवार॥ २७२
किव राजांसं किसन किव, यम झक्खै अरदास।
माफ करौ तगसीर मौ, देख रांम पय दास॥ २७३

इति मात्रा व्रत संपूरण

••••••••••

२७२ रिझावण–प्रसन्न करनेके लिए। रिझवार–प्रसन्न होने वाला।
२७३ यम–ऐसे। झक्खै–कहता है। अरदास–प्रार्थना। तगसीर (तकसीर)–कमी। मौ–मेरी। पय–चरण। दास–भक्त।

अथ वरण व्रत (वृत) वरणण

दूहा

स्री गणनायक सारदा, दीजै उकत दराज।
वरण व्रति 'किसनौ' वदै, जस राघव महराज॥ १
वरण व्रति सौ दोय विधि, कहै वडा कवि कत्य।
वरणछंद उपछंद वद, स्री वर सुजस समथ्य॥ २
जेरव्व वरण छवीस लग, वरण छंद सौ वेस।
आखर छविसां ऊपरां, सौ उपछंद सरेस॥ ३

अथ एक वरणसूं लगाय छवीस वरण तांई छंदांरी जातरा नांम वरणण।

कवित छप्प

उक्ता अत्युक्ताह अरक्त, मघ्या, वखांणत।
वळे प्रतिस्ठा वेस, जगत सु प्रतिस्ठा जांणत॥
गायत्री उसणीक अनुस्टप, व्रहती पंगत।
त्रिस्टुप जगती तवां, अती जगती सकरी मत।
अत सकरी अस्टती यिस्टि अख धति॥
अति धती, क्रती प्रक्रतीय।
आक्रति, विक्रति, फिर संसक्ती॥
अतक्रति, उतक्रति, हरि भजीय॥ ४

दूहौ

यकसूं वरण छवीस लग, वरण छंदकी जात।
कीत रांम वरणण किया, सुकवि सुमुख सरमात॥ ५

नोट—छप्पयमें आए हुए छंदोंके शुद्ध संस्कृत नाम—
१ उक्था २ अत्युक्था ३ मध्या ४ प्रतिष्ठा ५ सुप्रतिष्ठा ६ गायत्री ७ उष्णिक ८ अनुष्टुप ९ बृहति १० पंक्ति ११ त्रिष्टुप १२ जगती १३ अतिजगती १४ शक्वरी १५ अति शक्वरी १६ अष्टि १७ अत्यष्टि १८ धृति १९ अति धृति २० कृति २१ प्रकृति २२ आकृति २३ विकृति २४ संस्कृति २५ उत्कृति २६ अभिकृति।

अथ छंद वरणण

दूहौ

एक गुरु स्री छंद कहि, दु गुरु छंद कहि कांम।
दोय लघु मधु, लघु गुरु, महि छंद रटि रांम ॥ ६

अथ स्री छंद, आठ उकता (ग)

गै । गै । स्री । थी । रां । कां ॥ ७

कांम छंद (ग ग)

गौ दौ । कांमौ । गावौ । रांमौ ॥ ८

दोय वरण छंद आठ अत्युकता

मधु छंद (ल ल)

हरि । हरि । ररि । ररि ॥ ९

मही छंद (ल ग)

रमा उमा। पियं वियं। रटौ उठौ। भवं दधं ॥ १०

दूहौ

गुरु लघु सार वखांणजै, फेर मगण प्रस्तार।
आठ छंद तिण ऊपना, वे कवि नांम उचार ॥ ११

ताळी १ ससी २ प्रिय ३ रमण ४,
तवि मुणि पंचाळ ५ म्रगिंद्र ६।
किसन फेर मंदर ७ कमळ ८,
चवि जस राघवचंद्र ॥ १२

---

७ उकता–उक्ता छंद।

९ अत्युकता–अत्युक्ता छंद।

११ सार–छंद का नाम। फेर–फिर। तिण–उससे। ऊपना–उत्पन्न हुए।

१२ ताळी–शब्द कोषमें भी है अत इसने भी यहां ताली ही रखा है—परन्तु यहां पर नारी शब्द होना चाहिए। तवि–कह कर। मुणि–कह कर। चवि–कह कर। राघवचंद्र–रामचंद्र।

सार छंद (ग स)

रांम, चंद, भूप, वंद, कीत गाय धन्य थाय ॥ १३

तीन चरण छंद जात मध्या छंद ताळी (ग ग ग)

जौ वंदै, गोबंदै, तौ देही, नां रेही ॥ १४

छंद ससी (ल ग ग अथवा यगण)

रटौ रांमचंदं, कटौ पाप कंदं ।
करौ सुद्ध देहं, बढौ लाभ एहं ॥ १५

छंद प्रिया (ग ल ग अथवा रगण)

रांम सीतापती, और वी अक्रती ।
सिंध साभाय जे, पंकज पाय जे ।
जीभ वीधी जकौ, क्यं न गावै तकौ ॥ १६

छंद रमण (ल ल ग अथवा सगण)

रट दासरथी, कथ बेद कथी ।
रज जे पगरी, रिख नार तरी ॥
हर चाप जिया, सत खंड किया ।
रट सौ रसना, किव तं किसना ॥ १७

छंद पंचाल (ग ग ल अथवा तगण)

स्री रांम राजेस, मेत्रो 'किसनेस' ।
जोधौ जसं जेस, भाखै भुजंगेस ॥ १८

---

१३ वंद–नमस्कार कर । कीत–कीर्ति । गाय–वर्णन कर । थाय–हो हो कर ।
१४ गोबंदै–गोविन्द । तौ–तेरी । देही–(देह) शरीर । नां–नहीं । रेही–रहेगी ।
१५ कंदं–मूल । एहं–यह ।
१६ वी–उस उसकी । अक्रती–आकृति बनावट । सिंध–(सिंधु) समुद्र । साभाय–स्वभाव । जे–जो । पंकज–कमल । पाय–चरण । जकौ–जिसने । तकौ उसको ।
१७ दासरथी–श्री रामचन्द्र भगवान । रज–भूमि । जे–जिसके । रिख–ऋषि । नार–नारी । चाप–धनुष । रसना–जिह्वा । किव–कवि ।
१८ राजेस–राजाओंका राजा सम्राट । जसं–(यश) कीर्ति । जेस–जिसका । भुजंगेस–शेषनाग ।

छंद मिर्गेद्र (स ग स अथवा जगण)

नमौ रघुनाथ, सधीर समाथ ।
गर्णा गजगाह, दसानन दाह ॥
भभीखण आय, सु आस्रय पाय ।
स्रवी जिण रंक, लछीवर लंक ॥ १९

छंद मद (भ स स अथवा भगण)

सीत-पती कह, ओघ अघं दह ।
देह अमै करि, रांम रदे धरि ॥
गावत पांमर, झूठ पर्यंपर ।
ऊमर सौ वित, कांय गमावत ॥ २०

छंद कमळ (न स स अथवा नगण)

भगत-विछळ, नयण कमळ ।
जगत जनक, धरण-धनक ॥
सिर नमि नमि, चरण पदम ।
'किसन' रसण, रघुवर भण ॥ २१

अथ च्यार अखिर छंद जात प्रतिस्ठा

दूहौ

जीरण चरणह च्यार गुरु, घांनी रल पछिचांण ।
जगण निगल्ली अंत गुरु, संमोहा गुरु मांण ॥ २२

---

१९ मिर्गेद्र—मृगेन्द्र । सधीर—धैर्यवान । समाथ—समर्थ । गजगाह—युद्ध । दसानन—रावण । दाह—जलाने वाला ध्वंसक । भभीखण—विभीषण । आसय (आश्रय)—शरण पनाह । पाय—प्राप्त कर । स्रवी—प्रदान की दे दी । रंक—गरीब । लछीवर—लक्ष्मीपति लंक—लंका ।

२० सीत-पती (सीतापति)—श्रीरामचन्द्र । ओघ—समूह । अघं—पाप । रदे—हृदय । पांमर—नीच तुच्छ । ऊमर (उम्र)—आयु । वित—धन । कांय—क्यों । गमावत—गमाता है नाश करता है ।

२१ भगत-विछळ—भक्त-वत्सल । धरण-धनक—धनुष धारण करने वाला । पदम(पद्म)—कमल । रसण—जिह्वा जीभ । भण—कह ।

२२ प्रतिष्ठा चतुरक्षरनिरा नाम है जिसके प्रस्तार भेदसे क्रमशः १६ भेद होते हैं । उन सोलह भेदोंके अंतर्गत जीरण (मतांतरसे तीर्णा) धांगी और निम्नलिखित आदि हैं । र ल रगण ग्रार लघु ।

छंद जीरणा (जीर्णा) (म ग)

सीता राघौ गावै सोई, जीता है जम्मारा जोई।
चेता राघौ नां चीतारै, है सोई जम्मारा हारै ॥ २३

छंद धानी (र ल)

ईस चंद्रमा अहेस, साधना करै महेस।
सीतनाथ रांमचंद, सीस नांम पाय वंद ॥ २४

छंद निगल्सिका (ज ग)

वसाननं विनासनं, असेख पाप नासनं।
सदाजनं सिहायकं, नमामि सीत-नायकं ॥ २५

पचगुरु अक्षिर, पचा अक्षिर छंद वरणण बात प्रतिस्ठा

छंद समोहा (म ग ग)

सीता प्राणेसं, राजा-राजेसं।
गावौ स्री रामं, पावौ जे धांमं ॥ २६

दूहौ

हारी तगण सु करण यक, हंस भगण करणेण।
नगण दुलघु, मिळ जमकहि, जस भण राघव जेण ॥ २७

---

२१ जीरणा (जीर्णा) इसका दूसरा नाम तीर्णा या कन्या भी है। सोई—वही। जम्मारा—जीवन। जोई—वही। चेता—चित्त। चीतारै—स्मरण करता है।

२४ अहेस—(अहीश) शेषनाग। सीतनाथ (सीतानाथ)—श्री रामचन्द्र भगवान। नांम—नमा कर, झुका कर। पाय—चरण।

२५ वसाननं—रावण। विनासनं—नाश करने वाला। असेख (असंख्य)—अपार। नासनं—नाश करने वाला। सिहायकं—सहायक। सीत-नायकं—सीतापति।

नोट—मूल हस्तलिखित प्रतिमें पांच गुरु अक्षिर पंचाक्षिर छंद वरणस बात प्रतिष्ठा है परन्तु पंचाक्षरा वृत्तिका शुद्ध नाम सुप्रतिष्ठा पंचाक्षरा वृत्ति है।

२६ प्राणेसं (प्राण+ईश)—पति। राजा-राजेसं—(राजाओंका राजा) सम्राट। श्री—तिलका। धांमं—स्थान मोक्ष।

२७ करण (कर्ण) दो दीर्घका नाम ऽऽ। करणयक—दो दीर्घ ऽऽ से। जस—यश। जेण—जिस जिससे।

छंद हारी (स ग ग)

घांनंख-धारी, पै नीत चारी ।
सौ सीळ सींधू, मातंद बंधू ॥
सोहै सकाजं, जांनंक राजं ।
जामात जोई, संभार सोई ॥
रेवंस रूपं, भूपाळ भूपं ।
सारंगपाणं, जीहा जपांणं ॥
दी भौध ईसं, पै वंद सीसं ।
तूं धन्य तांमं, रे सेव रांमं ॥ २८

छंद हंस (भ ग ग)

रांम भजीजे, भौड़ तजीजे, लाभ सदेही, वेद वदेही ।
संत सिहाई, राघवराई, यौं हरि गावौ, पै उध पावौ ॥ २९

छंद जनक (न ल ल)

घर धनक, जग जनक ।
दहण दुख, समुद सुख ॥
अवधपत, सरस सत ।
कमळकर, समर हर ॥ ३०

---

२८ धांनंख-धारी—धनुषधारी । पै—चरण । नीत-चारी—नीति पर चलने वाला । सींधु—(सिन्धु) समुद्र । मातंद-(मात+धर—पवनाशन—सर्प—शेषनाग) लक्ष्मण । जांनंक-राजा जनक । जामात—जामाद । जोई—जो यह । संभार—स्मरण कर । सोई—वही उसी । रेवंस (रवि-वंश)—सूर्यवंश । सारंगपाणं (सारंगपाणि)—सारंग नाम धनुष धारण करने वाले विष्णु श्री रामचन्द्र । जीहा—जिह्वा । जपांणं—जप कर भजन कर ।

२९ हंस—इस छन्द का दूसरा नाम शक्ति भी है । भौड़—प्रपंच । तजीजे—तजिये । वदेही—कहते हैं । सिहाई—सहायक । राघवराई—श्री रामचन्द्र । पै—पद । उध—उद्धार ।

३० जनक—इस छंद का दूसरा नाम करता भी है । धनक—धनुष । जनक—पिता । दहण—जलाने वाला । समुद (समुद्र)—सागर । अवधपत्त (अयोध्यापति)—श्री रामचन्द्र । कमळकर—कमल समान हाथ । समर—युद्ध ।

अथ षडाक्षर छंद गायत्री

दूहौ

दोय मगण सेखा, तिलक मगण दु, रगण दोय।
वीजोहा दुजअर करण, सौ चऊरसा होय॥ ३१

छंद सेखा (म म)

राघौजी जौ गावौ, आम्ही लच्छी पावौ।
संतां कारी साता, देखी दीनां दाता॥ ३२

छंद तिलका (स स)

रघुनाथ रटौ, क्रत हीण कटौ।
कवसल्ल सुतं, दिननाथ दुतं॥
तन स्यांम सुमं, घण रूप लुमं।
कट पीत पटं, छज ओप छटं॥
कवि तूं 'किसना', रट सौ रसना॥ ३३

छंद विजोहा (र र)

नांम है रांमकौ, ओक आरांमकौ।
साच राघौ कथा, वांण दूजी अथा॥ ३४

---

३१ षडाक्षर–षडाक्षर छ अक्षर। गायत्री–छ वर्णोंकी एक वर्ण-वृत्ति जिसके कुल ६४ भेद होते हैं। उनमेंसे कुछका उल्लेख ग्रन्थकर्त्ताने भी किया है। दुजअर–चार लघु मात्रा। करण–दो दीर्घ मात्रा।

३२ आम्ही–बहुत अपार। लच्छी–लक्ष्मी। कारी–करने वाला। साता–सुख।

३३ क्रत–कार्य काम। हीण–तुच्छ, बुरा। कटौ–काट डालो। कवसल्ल–कौसल्या। सुतं–पुत्र। दिननाथ–सूर्य। दुतं–(द्युति) कांति दीप्ति। तन–शरीर। सुमं–शुभ। घण–(घन) बादल। लुमं–शोभाय मान करने वाला। कट–(कटि) कमर। पीत–पीला। पटं–वस्त्र। छज–शोभा शोभा देता है। ओप–कांति दीप्ति। छटं–(छटा) बिजली। रसना–जिह्वा जीभ।

३४ विजोहा–विमोहा नाम ६ वर्णका छंद जिसके अन्य नाम जोहा द्वियोधा विज्जोहा भी मिलते हैं। ओक–घर। साच–सत्य। राघौ–राम। वांण–वाणी शब्द। अथा–व्यर्थ।

छंद चऊरस (स भ स स ग ग)

रिख मख्ख त्राता, दित कुळ घाता।
सु भुज निघायौ, किरण उडायौ॥
गवतम नारी, रज पय तारी।
भव जय भाखी, सुर मुनि साखी॥ ३५

दूहौ

यगण संखनारी उभय, दोय तगण मंयांण।
दुजगण प्रियगण मिळ दहू, मदनक छंद प्रमांण॥ ३६

छंद संखनारी तथा विराज (य य)
(तथा छंद रसावळा)

रिखं साथ रांमं, गये कांम धांमं।
सुरं तीन भूपं, तहां आय नूपं॥
दसग्रीव वांणं, उभै जोर आंणं।
थियं आय तत्थं, ठयं मंच जत्थं॥
भुजं-बीस मल्लं, धनू काज हल्लं।
कसै चाप केमं, जती चीत जेमं॥
हजार दसानं, नूपं भंग मानं।
पड़े जार पोषं, अनंगेस सोषं॥

---

३५ रिख–ऋषि। मख–यज्ञ। त्राता–रक्षक। दित–दैत्य असुर। घाता–संहारक नाशक। गवतम–गौतम। रज–धूलि। पय–चरण। भव–महादेव। भाखी–कही। साखी–साक्षी।

३६ दुजगण–चार लघु मात्राका नाम।
प्रियगण–दो लघु मात्राका नाम।

३७ संखनारी–इसका दूसरा नाम सोमराजी भी है। रिखं ऋषि। दसग्रीव–रावण। उभै–हुआ। मंच–ऊंचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठ कर सर्वसाधारणके सामने किसी प्रकारका कार्य किया जाय। तत्थं–नृप समूह। भुजं-बीस–रावण। मल्लं–ठीक योद्धा। धनू–धनुष। काज–लिये। हल्लं–चला। चाप–धनुष। केमं–कैसे। जती–(यती) जितेन्द्रिय। चीत–चित्त मन। जेमं–जैसे। दसानं–रावण। मानं–प्रतिष्ठा। पोषं–कम। अनंगेस–महादेव। सोषं–मद।

छंद मधांणी (त ग)

सीता रमा सोय, कीजै सम कोय ।
भाखौ परीब्रम्म, राघौ महारंभ ॥ ३८

छंद मधुभार (ज ग)

सहदत सत, दसरथ सुत ।
रविकुळमण, रघुवर भण ॥ ३९

दूहौ

दोय जगण यक चरणमें, सौ मालती सुभाय ।
कीरत जिणमें 'किसन' कवि, रट रट स्त्री रघुराय ॥ ४०

छंद मालती (ज ज)

वडौ घन वेस, म खोय मुढेस ।
धर्मा चित चेत, पुणौ मत प्रेत ॥
भणां घन भाग, रघुब्बर राग ॥ ४१

अथ सप्त वरण छंद जात उस्णिक

दूहौ

रगण जगण पय अंत गुरु, समानिका कह सोय ।
दुजवर भगण पयेण जिण, छंद सुवासन होय ॥ ४२

छंद समानिका (र ज ग)

रांम नांम गाव रे, पाय कंज धाव रे ।
जांनकीस जांण रे, वस तं जवांण रे ॥ ४३

---

३८ रमा-लक्ष्मी । सोय-वह । सम-समान । कोय-किस । परीब्रम्म-(परब्रह्म) परमात्मा । महारंभ-(महारम्भ) जिसके प्रारम्भ करनेमें महान यत्न करना पड़े महान बड़ा ।

३९ रविकुळमण-रविकुलमणि । भण-कह ।

४१ वडौ-महान बड़ा । वेस-आयु उम्र म-मत । खोय-गमा नष्ट कर । मुढेस-मूर्ख । धर्मा-कहता हूं । चेत-सतर्क हो । पुणौ-कहा । भणां-कहता हूं । राग-प्रेम अनुराग ।

४२ पय-चरण । सोय-वह । दुजवर-चार लघु मात्रा । पयेण-चरण ।

४३ पाय-चरण । कंज कमल । धाव-ध्यान कर । जांनकीस-श्री रामचन्द्र भगवान । जांण-समझ । वस-आयु उम्र । जवांण-जवान बना ।

छंद सवासन
(४ लग अथवा नजल)

खर खळ खंडण, महपत मंडण ।
रसण वडापण, रघुवर जंपण ॥ ४४

दूहौ

दुजबर जगण पयेण जिण, सौ करहंची सुणंत ।
सात गुरु पय जास मध, सोखा छंद सुभंत ॥ ४५

छंद करहंची
(४ सज अथवा नसल)

लसत चख लाज, सुकर धनु साज ।
सभण सगराम, रसण भज रांम ॥ ४६

छंद सिखा
(७ ग अथवा ममग)

जांणै सौ राघौ जाणै, ठांणै सौ राघौ ठांणै ।
जीवाड़ै राघौ जैनं, तौ मारै केहौ तैनं ॥ ४७

अथ प्रस्ताखिर छंद वरणण जात अनुस्टप

दूहौ

आठ गुरू पद छंद जिण, विद्युन्माल्या अक्खं ।
गुरु लघु क्रम अठ वरण पद, सौ मल्लिक विसक्ख ॥ ४८

---

४४ छंद सवासनका ठीक सगण नगण जगण और एक लघुसे बैठता है परन्तु कविने अपनी रचनासे चार लघु और एक जगण कर दिया । खर-एक राक्षसका नाम । खळ-असुर । खंडण-नाश करने वाला । महपत-(महीपति) राजा । मंडण-आभूषण । रसण-जिह्वा जीभ । जंपण-जपना ।

४५. दुजबर-चार लघु मात्रा । पयेण-चरण । पय-चरण करहंची-इसका दूसरा नाम करहंस है । जास-जिसके । मध-मध्य । सुभंत-शोभा देता है ।

४६ लसत-शोभा देता है शोभा देती है । चख-(चक्षु) नेत्र नयन । सुकर-श्रेष्ठ हाथ । धनु-धनुष । सभण-सुसज्जित होनेके लिए । सगराम-युद्ध । रसण-जीभ ।

४७ जांणै-जानता है । ठांणै-विचारता है । जीवाड़ै-जीवित रखता है । जैनं-जिसको । केहौ-कौन । तैनं-उसको ।

४ प्रस्ताखिर-अष्टाक्षर । अक्खं-कह । अठ-आठ । विसक्ख-विशेष ।

छंद विद्युन्माला
(८ ग अथवा म म ग ग)

राघौ राजा सीता रांणी, वेदांमें धाता वाखांणी ।
सौ गावै जोई है साचौ, कीटांनं गावै सौ काचौ ॥ ४९

छंद मल्लिका (र ज ग ल)

आच आब जेम आय, जोव तांस छीज जाय ।
कोय अंत नाय कांम, रे अबूझ गाय रांम ॥ ५०

छंद प्रमांणी तथा अरध नाराज तथा तुंग
(ज र ल ग)

दूहौ

लघु गुरु क्रम वरण अठ, छंद प्रमांणी कथ्थ ।
दोय नगण फिर करण दे, सो कह तुंग समथ्थ ॥ ५१

छंद प्रमांणी

नमौ नरेस राघवं, वराज पाय दाघवं ।
उपंत स्यांम अंगयं, मनीर अब्भ ढंगयं ॥
वकूळ पीत लोभयं, सुरूप बीज सोभयं ।
निखग पीठ रज्जयं, सुचाप पांणि सज्जयं ॥
मुखारविंद मोहनं, सुमंद हास सोहनं ।
जु वांम अंग जांनकी, सु सोभना समांनकी ॥

४९ धाता—ब्रह्मा । वाखांणी—वर्णन की यश गायन किया । सौ—उस यह । जोई—वही । साचौ—सच्चा । कीटांनं—कीटोंको तुच्छ देवोंको । काचौ—कच्चा ।

५० मल्लिका प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे रखे हुए आठ वर्णका छंद । आच—हाथ । आब—पानी । जेम—जैसे । आय—आयु, उम्र । छीज जाय—नाश हो रही है, नाश होती है । कोय—कुछ । अबूझ—मूर्ख ।

५१ प्रमांणी—प्रमाणिका छंद । कथ्थ—कह । करण—दो दीर्घ मात्राका नाम । समथ्थ—समर्थ ।

५२ वराज—मंगा विशाल । उपंत—शोभा देता है । स्यांम—श्याम । अंगयं—शरीर । मनीर—कांतिवान । वकूळ—वस्त्र । पीत—पीला । लोभयं—शोभायमान करने वाला । बीज—बिजली । सोभयं—शोभायमान । निखग (निषङ्ग)—तर्कश । रज्जयं—शोभायमान । सुचाप—सुंदर धनुष । पांणि—हाथ । सज्जयं—धारण किए हुए है । मुखारविंद—कमल स्वरूपी मुख । मोहनं—मोहित करने वाला । सुमंद—सुंदर और मंद । हास—हँसी । सोहनं—शोभायमान होती है । वांम—दायां

वसंत ध्यांन मंजयं, ह्रदे महेस कंजयं ।
तवै ज कीत तासयं, जनंम धन्य जासयं ॥ ५२

छंद स्वग तथा सुग (न न ग ग)

दस सिर खळ दाहं, सुचित सुजन चाहं ।
जप जप रघुरांमं, सु भुज समर लामं ॥ ५३

दूहौ

दुजबर जगण सु अंत गुरु, कमळ छंदस कहांण ।
भगण करण फिर सगण मिळ, मांनक्रीड़ सु वखांण ॥ ५४

छंद कमल (४ स च ग)

रवि सुनिभ राजही, सुकर धनु साजही ।
सुकव धर सीस जौ, अवधपुर ईस जौ ॥ ५५

छंद मांनक्रीड़ा (भ ग ग स)

स्याम भजै तांम सुखी, दांम भजै और दुखी ।
सीतपती गाव सदा, राख जिकौ ध्यांन रिदा ॥ ५६

दूहौ

च्यार तुकां लघु पंचमौ, खट आठम गुरु आंण ।
दूजी चौथी सातमौ, लघु अनुस्टुप जांण ॥ ५७

---

५२ मंजयं–मध्यमें। ह्रदे–हृदय। महेस–महादेव। कंजयं–कमल। तवै–कहता है स्तवन करता है। कीत–कीर्ति यश। तासयं–उसका। जासयं–जिसका।

५४ दुजबर–चार लघु मात्राका नाम। कहांण–कहा गया। करण–दो दीर्घ मात्राका नाम।

५५ रवि–सूर्य। सुनिभ–समान आभा प्रभा। राजही–शोभा देता है। साजही–शोभा देता है। अवधपुर–अयोध्या।

५६ स्यांम–स्वामी श्याम श्रीराम। तांम–बहुत अधिक। सीतपती–(सीतापति) श्रीराम यह भगवान। जिको–वह उस। रिदा–हृदय।

नोट—जिसके चारों चरणोंमें पांचवां अक्षर लघु और छठा अक्षर दीर्घ हो और सम पदोंमें सातवां अक्षर भी लघु हो इनके अलावा अन्य अक्षरों पर कोई खास नियम न हो उसे श्लोक तथा अनुष्टुप कहते हैं। ग्रंथकारने जो अनुष्टुपका लक्षण दिया है वह लक्षणके ग्रंथोंसे मेल नहीं खाता।

वारता

जीके च्यार ही तुकां पघमों अखिर लघु आवै अर छठौ आठमो गुरु आव दूजै चौथै सातमो लघु आवै, च्यार ही तुकां सो अनुस्टुप छंद छै। पैलो तीजी अखिरको गुरु लघुको नेम ही नहीं गुरु आवै भावै लघु, पचमौ अखिर च्यार ही तुकां लघु, छठौ च्यार ही तुकां गुरु। दूजी चौथी तुकरा सातमो अखिर लघु आवै सौ अनुस्टुप कै छै।

छंद अनुस्टुप

राघव जपतौ प्रांणी, मूढ आळस मां करै ।
आव दरब आळपं, चेता अंध सचेत रे ॥ ५८

अथ ब्रहती जात नव अखिर छंद बरणण

दूहौ

महालिछमी पद मही, तीन रगण दरसंत ।
दुजभर करणाह सगण दखि, सारंगिका लसत ॥ ५९

छंद महालछिमी (र.र.र.)

रांम राजै रसा रूप रे, नेतबंधी धणी नूप रे ।
मीत याळौ पती साच रे, रे मना जेणह् राच रे ॥ ६०

छंद सारंगिका

(४ लगगग अथवा नयस)

रघुबर भीली कर रे, पिलकुल सीतावर रे ।
रुचि करकंधू फळ रे, जमि हसि पीधौ जळ रे ॥ ६१

---

५८ मूढ–मूर्ख। मां–मत। आव–आयु उम्र। दरब–(द्रव्य) धन-दौलत। आळपं(अल्प)–अल्प कम। चेता–चितसे।

५९ ब्रहती–(बृहती)। नव-अखिर–नवाक्षर वृत्ति। महालिछमी–महालक्ष्मी। पद–चरण। मही–में। दरसंत–दिखाई देते हैं देखे जाते हैं। दुजभर–चार लघु मात्राका नाम। करणाह–दो दीर्घ मात्राका नाम। दखि–कह कर। लसंत–शोभा देता है शोभा देती है।

६० महालछिमी–महालक्ष्मी राजै–शोभा देता है। रसा–पृथ्वी। नेतबंधी–अपना निजका झंडा या ध्वजा रखने वाला वीर। मीत–मीता। याळौ–का। मना–मन। जेणह्–जिसमें। राच–अनुरक्त या लीन रह।

६१ भीली–भिलनी। कर–हाथ। सीतावर–सीतापति श्रीरामचंद्र। करकंधू (कर्कन्धु)–बेरका फल या वृक्ष बदरीफल। जमि–खा कर। हसि–हंस कर। पीधौ–पिया।

दूहौ

मगण भगण फिर सगण मुणि, पायत छंद प्रकास ।
गण बे दुजअर एक गुर, रति पद सौ सुख रास ॥ ६२

छंद पायत (म भ म)

तौ पै घळी मिल तरगी, वारी सारै हि ।
ऊ ही राघौ तरणि उडै, छै ज्यौ साकौ स कुळ छुडै ॥
धोवौ पै तौ कदम धरौ, कै कीरौ कै करौ ॥ ६३

छंद रतिपद (न म ग अथवा न म म)

धरण कर धनक है, जगत सह जनक है ।
समर कळतरस है, सुज जनम सरस है ॥ ६४

दूहौ

न म य त्रिय तोमर सगण, यक वे जगण स कोय ।
च्यार करण गुरु एक सौ, रूपामाळी होय ॥ ६५

छंद त्रिय (न म य)

मुण महण तार माथै, सुज गिरवर समाथै ।
खळ सयळ वंस खोयौ, जग सरब तेण जोयौ ॥
जस 'क्रिमन' ते अपीजै, लभ रमण देह लीजै ॥ ६६

---

६२ मुणि—कह कर। पायत—एक छंद का नाम इस छंद का दूसरा नाम पाईता भी है। बे—(दो) दो। दुजअर—चार लघु मात्रा का नाम।

६३ तौ—नदी। पै—नीर। सिल—पत्थर। वारी—जल। ऊ ही—वैसे ही। राघौ—श्रीरामचंद्र भगवान। तरणि—नौका नाव। छुडै—छूट जाय। तौ—तब। कदम—चरण। क करता है। कीरौ—कीर धीवर, मल्लाह। कै—या अथवा। करत—किराया या कर देने वाला।

६४ धरण—धारण किए हुए। कर—हाथ। धनक—धनुष। जनक—पिता। समर—स्मरण कर। कळतरस (कल्पतरु)—कल्प वृक्ष। सरस—उत्तम।

६५ न म य—नगण मगण यगण का मिश्रित रूप। त्रिय—एक छंद का नाम। यक—एक। करण—दो दीर्घ मात्रा का नाम ऽऽ। रूपामाळी—एक छंद का नाम।

६६ महण—महार्णव सागर समुद्र। माथ—ऊपर। समाथ—समर्थ महान। खोयौ—नाश किया। जोयौ—देखा। ते—उससे। अपीज—[illegible] जपना चाहिए। लभ—लाभ। रमण—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। देह—[illegible]।

छंद तोमर (स ज ज)

कटि तूंण चाप कराग, खळ भंज राखण खाग।
पहु सिद्ध बंधण पाज, मनमोट स्री महराज॥
तिय जांनुकी भरतार, कुळमौड़ भू करतार।
जप पात तू अठजांम, रवि वंस ओपम रांम॥ ६७

छंद रूपमाली (१ ग अथवा म म म)

आपे लंकासी मौजां यूं ही, तौ जेहौ आखां दाता तूं ही।
पूरै जंगां के दैतां थौका, फौका फौका जी राघौ फौका॥ ६८

अथ दस अखिर छंद वरणण जात पंक्ति

दूहौ

एक सगण बे जगण गुरु, मंजुतका सौ गाय।
चंपक माळा म म स गुरु, त्रिभग सारवति ठाय॥ ६९

छंद संजुतका (स ज ज ग)

जय रांम संत सिहायकं, घण दैत आहव घायकं।
मिथळेस राजकुमारयं, उरहार प्रांण अधारयं॥

---

६७ कटि–कमर। तूंण (तूण)–तर्कष भाथा। चाप–धनुष। कराग (कराग्र)–हाथमे। खळ–राक्षस। भंज–नाश कर। पहु–प्रभु। सिद्ध–सफल प्रयत्न। पाज–सेतु। मनमोट–उदार। तिय–स्त्री। जांनुकी–सीता। कुळमौड़–कुलश्रेष्ठ। भू–भूमि। पात (पात्र)–कवि। अठजांम–अष्ठ याम आठों पहर। रवि (रवि)–सूर्य। ओपम–शोभा कांति।

६८ आपे–दे दी प्रदान कर दी अर्पण कर दी। लंकासी–लंकाके समान। मौजां–दान। यूंही–ऐसे ही। तौ–तेरे। जेहौ–जैसा। आखां–कहता हूं। दाता–दातार। पूरै–नाश करता है संहार करता है। दैतां–दैत्यों। जंगां–युद्धोंमें। थौका–समूह। फौका–व्यर्थ।

६९ संजुतका–एक छंदका नाम इसका दूसरा नाम संयुत भी है। म म स–मगण मगण सगणका संक्षिप्त रूप। त्रिभग–तीन भगण और एक गुरुका संक्षिप्त नाम। सारवति–एक छंदका नाम।

७० सिहायकं–सहायक। घण–बहुत अधिक। दैत–दैत्य। आहव–युद्ध। घायकं–नाश करने वाला। मिथळेस–राजा जनक। राजकुमारयं राजकुमारी। अधारयं–आधार।

तन कंद स्यांम सुभावनं, पटपीत व्रिधुत पावनं।
'किसनेस' पात उधारयं, धनु धांण पाणसु धारयं ॥ ७०

छंद चपळमाळा (भ भ म ग)

गोह सरीखा पांमर गाऊ, व्याध कबंधा ग्रीध बताऊ ।
नै सट पापी गौतम नारी, ते रज पावां मेटत तारी ॥
देव सदा दीनां दुख दाधौ, रे भज प्रांणी भूपत राघौ ॥ ७१

छंद सारवती (भ भ भ ग)

चाप करां नृप रांम चढ़े, मांझ रजी तद भांण मद्दे ।
खोहण के असुरांण खपे, पंख सिवा पळ खाय ध्रपे ॥
रे नित सौ जन भीड़ रहै, कंण जना दुख देण कहै ॥ ७२

दूहो

तगण यगण भगणह गुरु, सुखमा छंद सुभाय।
नगण जगण नगणह गुरु, अम्रित गत यण भाय ॥ ७३

---

७० तन—शरीर । कंद—बादल । सुभावनं—सुन्दर । पटपीत—पीताम्बर । विद्युत—बिजली । पावनं—पवित्र । धनु—धनुष । पाणसु—हाथमें । धारयं—धारण किए हुए ।

७१ गोह (गुह)—प्रसिद्ध राम भक्त निषादराज जो शृंगवेरपुरका स्वामी था । सरीखा—समान सदृश । पांमर—नीच । व्याध (विराध)—एक राक्षसका नाम जिसको दण्डकारण्यमें लक्ष्मणने मारा था । कबंधा—एक दानव जो दैत्याका पुत्र था इसका मुंह इसके पेटमें था । कहते हैं कि इन्द्रने इसको एक बार वज्रसे मारा इससे सिर और पैर पेटमें घुस गये थे । इस पूर्वजन्मका [illegible] लिखा है । रामचन्द्रजीसे इसका दण्डकारण्यमें युद्ध हुआ था । रामचन्द्रजीने इसका हाथ काट कर इसको जीवित भूमिमें गाड़ दिया । ग्रीध—जटायु नामका पक्षी । नै—और । सट—मूर्ख । रज—धूलि । पावां—पैरों । मेटत—स्पर्श करते ही । तारी—उद्धार कर दिया । दाधौ—जलाया समान माना । भूपत (भूपति)—राजा । राघौ—श्री रामचंद्र ।

७२ चाप—धनुष । करां—हाथों । मांझ—मध्य में । रजी—धूलि । तद—तब । भांण—सूर्य । मद्दे—आच्छादित हो गया । खोहण (अक्षौहिणी)—सेना । असुरांण—असुर राक्षस । खपे—नाश हो गये । पंख—पक्षी । सिवा (शिवा)—शृगाली । पळ—आमिष । ध्रपे—संतुष्ट हुए अघाये । सौ—सब । भीड़—सहाय मदद । कण—कौन । जनां—मनुष्यों । देण—देनेको ।

७३ सुभाय—अच्छा लगे । यण—इस । भाय—प्रकार ।

छंद सुखमा (त-य भ ग)

नागेस भजै राघौ नत ही, साधार धरा भासै सत ही।
जे गाव कवि तू धन्य जथा, क्यूं और वखांणै श्राळ कथा ॥ ७४

छंद प्रमित पति (न ज न ग)

दसरथ राजकँवर है, सुभ कर धानख सर है।
रघुवर सौ किव रट रे, मळ तनचा सब मट रे ॥ ७५

अथ एकादस अखिर छंद वरणण जात त्रिस्टुप

दूहौ

तीन भगण दो गुरु जठै, दोधक छंद स दाख।
दोय लघु अय सगण पद, सौ सुमुखी अहि साख ॥ ७६

छंद दोधक (भ भ भ ग-ग)

राघव ठाकुर है सिर ज्यांरै, तौ किसड़ी घर ऊणत त्यांरै।
की जिण राक्खस सेव करी सी, देख भभीखण लंक धरी सी ॥ ७७

छंद सुमुखी (न ज-ज-ल ग अथवा न ज ज ल ग)

जय जय राघव दैतजई, महपत मूरत साचमई।
हरण अनेक विघन हरी, कमळ कर प्रतपाळ करी ॥ ७८

---

७४ नागेस–शेष नाग। नत–नित्य। साधार–आधार, सहारा। धरा–पृथ्वी। भासै–मालूम होता है शोभा देता है। सत–सत्य। औ–अवर। जथा (यथा)–कथा वृत्तान्त। क्यूं–क्यों। वखांणै–वर्णन करता है। श्राळ–व्यर्थ असत्य।

७५ कर–हाथ। धानख–धनुष। सर–बाण। सौ–वह, उस। किव–कवि। मळ–मैल। तनचा–शरीर का। मट–मिटा दे।

७६ जठै–जहां। स–वह। दाख–कह। सौ–वह। अहि–शेषनाग। साख–साक्षी।

७७ ठाकुर–स्वामी। ज्यांरै–जिनके। तौ–तब। किसड़ी–कैसी। ऊणत–अभाव कमी। त्यांरै–उनके। राक्खस–राक्षस। सेव–सेवा। भभीखण–विभीषण। धरी–धारण की।

७ दैतजई–दैत्यों (असुरों) को जीतने वाला। महपत (महिपति)–राजा। मूरत–मूर्ति। साचमई–सत्यमयी। कर–हाथ। प्रतपाळ–रक्षा। करी–हाथी अथवा की।

दूहो

दोय नगण फिर रगण दो, अंत एक गुरु आण।
सुणियौ रवग कहियौ सरप, छंद मालिनी जांण॥ ७९

छंद मालिनी

(८ न न म य य अथवा न न न न ग ग)

गाथ गायी गोभणी पात गाढ़ी।
आर्ख वांणी यूं 'किसन्नेस' आढ़ी॥
ते भूला गायौ, विगुती भवि त्यांरी।
जांणुसी पीछै वडौ भाग ज्यांरी॥ ८०

दूहो

दो दुजवर अनह सगण, मदनक छंद सुणंत।
गुरु लघु क्रम ग्यारह धरण, सो मेनका सुणंत॥ ८१

छंद मदनक (८ न न अथवा न न न न न ग)

हरण कमठ जन हर है।
विमळ वदन रघुवर है॥
सरय सगुण सह सरस।
दनुज दहण भुज दरस॥ ८२

---

७९ करण–दो दीर्घ मात्रा का नाम ऽ ऽ। कोप–या कर। सम–बदर। सरप–दास्नाग।

८० गायो–श्री रामचन्द्र। सोभणी–सोभा देने वाला। अथवा–सो = वह सभी = बड़ो। पात (पात्र)–कवि। गाढ़ी–दृढ़ गंभीर। आर्खे–कहता है। आढ़ी–आढ़ा गोत्र का चारण। ते–वे। विगुती–बरबाद हुवा, व्यर्थ गया। भवि (भव)–जन्म या संसार। त्यांरो–उनका। जांणसी–जानना। पीछै–पश्चात्। वडौ–महान। भाग–भाग्य। ज्यांरो–जिनका।

८१ दुजवर–चार लघु मात्रा ।।।।। सुणंत–कहा जाता है। सुणंत–सुना जाता है।

८२ विमळ–पवित्र। वदन–मुख या शरीर। दनुज–राक्षस। दहण–नाश करनेवाला। दरसं–दिखाई देता है।

छंद सैनिका
(ग ल ग ल ग ल ग ल ग ल ग अथवा र ज र ल ग)

माथ पंच दूण जुध मारणं ।
धांनुखं सरेण पांण धारणं ॥
यार बार रांम क्रीत बोल रे ।
ताहरी वडौ कवेस तौल रे ॥ ८३

दूहौ

मालतिका ग्यारह गुरु, थि तगण ज करण जांण ।
छंद इंद्र वज्रा छजै, यह कवि रांम वखांण ॥ ८४

छंद मालतिका
(११ ग अथवा म म म ग ग)

राघौ रूढ़ौ स्री सीता स्वांमी राजै ।
भारांथां लाखां दैतां थौका भांजै ॥
जैनूं जीहा रातौं-दीहा जी जंपौ ।
कांतौ थे कीनासाहूं ता ही कंपौ ॥ ८५

छंद इंद्र वज्रा (त त ज ग ग)

गोपाळ गोब्यंद खगेस-गांमी ।
नागेस सज्या कत मैन नांमी ॥

---

८३ माथ (मस्तक)—शीश । दूण—दुगना । मारणं—मारने वाला । धांनुखं—धनुष । सरेण—बाण बाणसे । पांण (पाणि)—हाथ । धारणं—धारण करने वाला । क्रीत(कीर्ति)—यश । ताहरी—तेरा । कवेस (कवीश)—महाकवि । तौल—मान प्रतिष्ठा ।

८४ थि (है)—था । ज—जगण । करण—दो गुरु मात्रा SS । छजै—शोभा देता है । वखांण—वर्णन कर ।

८५ रूढ़ौ—बढ़िया । राजै शोभा देता है । भारांथां—युद्धों । थौका—समूह । भांजै—नाश करता है तोड़ता है । जैनूं—जिसको । जीहा—जीभ । रातौं-दीहा—रातदिन । जी—जीव प्राण । जंपौ—याद करो स्मरण करो । कांतौ—पति । कीनासाहूंता—यमराजसे । कंपौ—कम्पायमान है ।

८६ गोब्यंद—गोविंद । खगेस-गांमी—पक्षी पर सवारी करने वाला गरुड़के वाहनसे गमन करने वाला । नागेस—शेषनाग । सज्या—शय्या । कत—करने वाला । मैन शयन । नांमी—नाम वाला ।

हैं जंग वागां दस-माथ हंता।
माहेस वाह्वळ्य सुकंठ मीता॥ ८६

दूहो

जगण तगण जगण करण, छंदस वज्रउपेंद।
धज्र इंद ऊपयंद पख, मिळ उपजाती छंद॥ ८७

उपेंद्रवज्रा (ज त ज ग ग)

अरेस जेतार जुधां अथाह।
विसाळ ऊरसु अजानबाह॥
धनेस देवेस दुजेस ध्यावै।
गुणीस राघौ नित क्यूं न गावै॥ ८८

छंद उपजात

सी जानुकीनाथ सदा सराही।
चितम बीजौ भजवा न चाही॥

---

८६ जंगवागां-युद्ध होने पर। दस-माथ-रावण। हंता-मारने वाला। माहेस-शिव। वाह्वळ्य-वात्सल्य। सुकंठ-सुग्रीव। मीता-मित्र।

८७ वज्रउपेंद-उपेन्द्रवज्रा नामक छंद। ऊपयंद-उपेन्द्रवज्रा छंद। उपजाती (उपजाति)-इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे बना छंद कहलाता है। इस प्रकारके छंद संस्कृत साहित्यमें १४ हैं जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे ही बनते हैं यथा कीर्ति वाणी माला शाला हंसी माया जाया बाला आर्द्रा भद्रा प्रेमा रामा ऋद्धि और सिद्धि।

नोट-कहीं-कहीं इन्द्रवंशा और वंशस्थ तथा कहीं-कहीं शार्दूलविक्रीड़ित और स्रग्धरा छंदके योगसे बनने वाले छंदोंको भी उपजाति मानी गई।

अरेस (अरीश)-महाराज। जेतार-जीतने वाला। अथाह-अपार। ऊरसु-उसके हृदयमें [illegible]। अजानबाह-आजानुबाहु। धनेस-कुबेर। देवेस-इन्द्र। दुजेस (द्विजेश)-बड़े-बड़े ऋषि नारद आदि। गुणीस (गुणीश)-महाकवि। राघौ-श्रीरामचन्द्र। क्यूं-क्यों? न-नहीं।

८८ उपजात-उपजाति। सदा-नित्य। सराही-प्रशंसा करो सराहना करो। चितम-चित्तमें। बीजौ-दूसरा। भजवा-भजन करनेको। चाही-इच्छा करता।

दीनांदयावंछित मौज दाता ।
भला गुणां जोग अहेस भ्राता ॥ ८९

दूहो

रगण नगण रगणह ध्वजा, रथोध्धिता सौ होय ।
रगण नगण भगणह करण, जिकौ स्वागता जोय ॥ ९०

छंद रथोद्धिता (र न र ल ग)

गौर स्यांम सिय रांम गाव रे, पात तूं सपद ऊंच पाव रे ।
नेक पाप हर जेण नांम रे, राज गज जगमौड़ रांम रे ॥ ९१

छंद स्वागता (र न भ ग ग)

रांम नांम सर पाथर तारे, आप पांण कपि सेन उतारे ।
जेण नांम सिव संकर जापै, मांझ कासि नर मोख समापै ॥ ९२

अथ द्वादसाखिर छंद जात जगती

च्यार यगण पदप्रत चवां, छंद भुजंगप्रयात ।
लिखमीधर पदप्रत सुलछ, रगण च्यार दरसात ॥ ९३

छंद भुजंगप्रियात

निमौ रांम जेणं नरी भ्रम्ह नारी ।
यूंहीं ताड़का मार भांणां उधारी ॥

---

८९ दीनांदयावंछित—दीनों पर दया करनेकी इच्छा वाला अथवा है दीनों को तुम अपने पर दया की इच्छा करते हो। मौज—दान। दाता—देने वाला। भला—श्रेष्ठ। जोग—योग्य। अहेस (अहीस)—लक्ष्मण।

९ ध्वजा—एक लघु और एक दीर्घ मात्राका नाम। जिकौ—वह।

९१ रथोद्धिता—रथोद्धता नामक छंद। सिय—सीता। पात (पात्र)—कवि। नेक—थोड़ा किंचित। जेण—जिसका। जगमौड़—संसार-सिरोमणि।

९२ सर—सागर समुद्र। पाथर—पत्थर। पांण—शक्ति बल भुजा हाथ। सेन—सेना। जापै—जपते हैं। मांझ—मध्यमें। मोख—मोक्ष। समापै—देते हैं।

९३ द्वादसाखिर छंद—द्वादशाक्षरावृत्ति। पदप्रत—प्रति पद या चरण। चवां—कहता हूं।

९४ भ्रम्ह—ब्राह्मण यहां गौतम ऋषिसे अभिप्राय है जिनकी स्त्रीका नाम अहल्या था। यूंहीं—ऐसे ही।

सुग्राहं कियौ खंड खंडं सरंखे ।
निमौ ग्यारसै कोस मारीच नंखे ॥
करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्जं ।
दखे जै जया घोल अनेक दुज्जं ॥
चितं चाय सीता सपीता अचूकं ।
कियौ चाप भूतेसरौ टूक-टूकं ॥
'किसन्नेस' ग्राखै अरज्जी कविंदं ।
बडौ ग्रासरौ रांम पाधारव्यंदं ॥ ६४

छंद लछमीधर (र ऽ र र र)

रांम वाळी रजा मीस ज्यांरै रहै ।
कंण त्यांनै हुग्रा हीण मांणौ कहै ॥
वीसरै जीवहूं जेहु सीतावरं ।
न्यायहीणा मर्दा होय तेता नरं ॥ ६५

दूहौ

ग्यार स तोटक ग्यार तहु, कहु सारंग मुतत्य ।
ग्यार ज मुत्तीय दांम चव, ग्यार म मोदक कत्य ॥ ६६

---

६४ सरंखे–बाणसे । ग्यारसै–ग्यार सौ । नंखे–फेंक दिया जाता । ज्याग–यज्ञ । स्याहाय–सहायता । मूनेस (मुनीश)–विस्वामित्र मुनि । कज्जं–लिए । दखे–कहते हैं । जै–जय । जया–जय । ग्रनेक–ग्रनेक । दुज्जं (द्विज)–ब्राह्मण । चाय–चाह कर । चाप–धनुष । भूतेसरौ–महादेवका । टूक-टूकं–खंड-खंड । ग्राखै–कहता है । ग्ररज्जी–प्रार्थना । कविंदं (कवीन्द्र)–महाकवि । ग्रासरौ–ग्राश्रय सहारा । पाधारव्यंदं–(पादारविंद) कमलस्वरूपी चरण ।

६५ लछमीधर–इस छंदके ग्रन्य नाम कामिनीमोहन लछमीधरा स्रग्विणी तथा मर्णिवणी भी हैं । रजा–ग्राज्ञा । ज्यांरै–जिनके । मीस–शीश । त्यांनै–उनको । हीण–रहित । वीसरै–विस्मरण करता है । जीवहूं–जीवसे । जेहु–जिसको । सीतावरं–श्रीरामचंद्र । तेता–उतने ।

६६ स–सगण ।।ऽ । तहु–तगण ऽऽ। । ज–जगण ।ऽ। । चव–कह । म–मगण ऽऽऽ । कत्य–कह ।

छंद तोटक (स स स स)

रघुराज सिहायक संत रहै ।
कथ भेद जिकौ अज वेद कहै ॥
दसमाथ विभंज भराथ वखं ।
पहुनाथ समाथ अनाथ पखं ॥
पत-सीत प्रवीत सनीत पढं ।
वळ जीत लस्यां रिण जीत चढं ॥
रसना 'किसना' जिण कीत रटौ ।
दुख प्राचत ओघ अमोघ दटौ ॥ ९७

छंद सारंग (त त त त)

राजेस स्रीरांम जे नैण राजीव ।
पातां अभै दांनकी जांनकी पीव ॥
औधेस आछेहके संत आधार ।
सारंग-पांणी 'किसन्नेस' साधार ॥ ९८

छंद मोतीदांम (ज ज ज ज)

दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणां खळ घायक सेवग-पाळ ।
चढै दसमाथ विभंजण वंक, लछीवर देण भभीखण लंक ॥९९

९७ सिहायक—सहायक । जिकौ—जिस तरह । अज—ब्रह्मा । दसमाथ—रावण । विभंज—नाश कर । भराथ (भारथ)—युद्ध । पहुनाथ (प्रभुनाथ)—ईश्वर । समाथ—समर्थ । पखं—पक्ष मदद । पत-सीत (सीतापति)—श्रीरामचन्द्र । प्रवीत—पवित्र । वळ—सेना । रिण—युद्ध । रसना—जीभ । जिण—जिसकी । कीत—कीर्ति यश । प्राचत—पाप दुष्कर्म । ओघ—समूह । अमोघ—निष्फल न होने वाला अव्यर्थ । दटौ—नाश करो ।

९८ राजेस (राजेश)—सम्राट । जे—जिसके । राजीव—कमल । पातां—कवियों । पीव—पति । औधेस—अयोध्या-नरेश श्रीरामचन्द्र । आछेह—अपार । सारंग-पांणी (सारंग-पाणि)—सारंग नामक धनुषको धारण करने वाला विष्णु, श्रीरामचंद्र । साधार—रक्षक ।

९९ दिपै—शोभायमान होते हैं । पुणां—कहता हूं । खळ—असुर राक्षस । घायक—विध्वंस नाश करने वाला । सेवग-पाळ—सेवक या भक्तकी रक्षा करने वाला । दसमाथ—रावण । विभंजण—नाश करनेको मिटानेको । वंक—बांका वीर । लछीवर—लक्ष्मीपति श्रीराम चंद्र । देण—देनेको । भभीखण—विभीषण । लंक—लंका ।

छंद मोदक (भ भ भ भ)

नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर।
सीत तणौ पत संत सघारण, चाव करे भज तू थिन चारण॥ १००

दूहौ

थ्यार नगण पद अेकमें, तरळनयण भण तास।
नगण भगण बे सगण निज, सौ सुंदरी सुभास॥ १०१

छंद तरळनयण (न न न न)

विकट कसट हर रघुवर।
सम्रत सुकर निज धनु सर॥
भगतविछळ जिण ब्रद भण।
सुकवि 'किसन' तिण भज सुण॥ १०२

छंद सुंदरी (न भ भ स)

समरमें दसकंठ जिण सजे, पहु वडा हर चाप वळ पजे।
मनव ते घन जांण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता॥ १०३

चौपई

सगण जगण सगणह बे पच्छ।
सौ प्रमिताखिर छंद सुलच्छ॥ १०४

---

१०० नरेसर–नरेस्वर। देवतरेसर (देवतरु)–कल्प-वृक्ष। सीत–सीता। तणौ–का। पत–पति। सघारण–रक्षक सहायक। चाव–उत्साह उमंग इच्छा। थिन–धन्य।

१०१ भण–कह। तास–उसको। सौ–वह।

१०३ समरमें–युद्धमें। दसकंठ–रावण। जिण–जिस। सजे–संहारे, मारे। पहु–प्रभु राजा। वडा–महा। हर–महादेव। चाप–धनुष। वळ–समूह। पजे–पराजित किये दबा दी। मनव–मानव मनुष्य। घन–धन्य। जांण–समझ। मता (मति)–बुद्धि। जस–जो। रता–अनुरक्त, लीन।

१०४ बे (ह)–दो। पच्छ–पश्चात। सौ–वह। प्रमिताखिर–प्रमिताक्षरा नामक छंद।

छंद प्रमिताक्षिरा (स ज स स)

लिछ्मीस रांम अरण-भंग लखौ ।
परमेस पाळ जन दीन पखौ ॥
हर पाप ताप दुख-ताप-हरी ।
तिण पाय रेण रिख नार तरी ॥ १०५

अथ अयोवस अखिर छंद वरणण जात अतिजगति

दूहौ

पंच गुरू सगणह भगण, करणसु माया जांण ।
तोटकमें गुरु एक वध, तारक छंद वखांण ॥ १०६

छंद माया

(५ ग स भ ग ग अथवा म त य स ग)

राघौ राघौ जंपणरी, ढील म राखै ।
देवा दैतां मांनव नागा, सह दाखै ॥
सीतारौ सांमी, जन पाळै ।
सतधारी थासी आ देही धन गायां जण धारी ॥ १०७

छंद तारक (स स स स ग)

घणस्यांम सरूप अनूप घणौ रे ।
तड़ता पळकौ पटपीततणौ रे ॥

---

१ ५. अण-भंग—न भागने वाला अथवा धीर । लखौ—समझो । परमेस—परमेश्वर । पाळ—रक्षक । जन—भक्त । पखौ—पक्ष मदद । दुख-ताप-हरी—दुख और ताप मिटाने वाला । तिण—उस । पाय—चरण । रेण—धूलि । रिख (ऋषि)—गौतम । तरी—उद्धार हुआ ।

१ ६ अयोवस अखिर छंद—अयोदशाक्षरा वृत्ति । करणसु—दो दीर्घ मात्रायें । वखांण—वर्णन कर ।

१ ७. राघौ—श्री रामचंद्र । जंपणरी—जपनेकी । ढील—विलंब देरी । म—मत नहीं । देवा—देवता । दैतां—दैत्यों । मांनव—मनुष्य । नागा—नाग सर्प । सह—सब । दाखै—कहते हैं । सांमी—स्वामी । सतधारी—सत्य या पतिव्रतको धारण करने वाला । थासी—होगी । आ—यह । देही—शरीर । धन—धन्य-धन्य । गायां—गाने पर । जण—जिसको । थारी—तेरी ।

१ ८. तड़ता (तड़िता)—बिजली । पळकौ—चमक । पटपीततणौ—पीताम्बरका ।

धनु सायक पांण सुभायक धारै ।
रघुनायक लायक संतसु तारै ॥ १०८

दूहो

छंद भुजंगी पर लघू, ग्रेक वधै सो कंद ।
पंकाग्रळि यक गुरु छ लघु, धि भगण कहत फुणिंद ॥ १०९

छंद कंद (यययय ल)

नरांनाथ सीतापती रांम जै नांम ।
सत्रां भंज लाखां भुजां पांण संग्रांम ॥
महाबाह बांणावळी कं ण जे मीढ ।
अखां रांम छै रांम राजेस ही ईढ ॥ ११०

छंद पंकावळी (ग भ ल भ भ)

धांनुख-धर कर पंकज धारत ।
सेवग अगणत काज सुधारत ॥
जांमण मरणतणौ भय भंजण ।
राघव समर सिया मन रंजण ॥ १११

दूहो

सम पद दुज सगण जगण, करण ग्रंत निरधार ।
दुज भगण रगण यगण, विसम अजास विचार ॥ ११२

---

१०८ धनु—धनुष । सायक—बाण । पांण (पाणि)—हाथ । सुभायक—शोभा देने वाला सुंदर । तारै—उद्धार करते हैं ।

१०९ धि (हि)—दो । फुणिंद—शेषनाग ।

११० भंज—नाश करता है नाश करने वाला । महाबाह—महाबाहु बड़ी-बड़ी भुजाओं वाला समर्थ । बांणावळी—धनुर्विद्या में प्रवीण । कं'ण—कौन । जे—जिसके । मीढ—समान समानता । अखां—कहता हूं । ईढ—प्रतिस्पर्द्धा ।

१११ धांनुख-धर—धनुषधारी । कर—हाथ । पंकज—कमल । अगणत (अगणित)—अपार । काज—कार्य । सुधारत—सुधारता है । जांमण—जन्म । भंजण—मिटाने वाला । समर—युद्ध । सिया—सीता । रंजण—प्रसन्न करने वाला ।

११२ दुज—चार लघु मात्राका नाम । करण—दो दीर्घ मात्राका नाम ।

छंद प्रमाण

(विषम-पद ४ स स ज ग ग सम-पद ४ स भ र य)

गढ कनक जिसा अभंग गाहै, सुर नर नाग महेस सा सराहै ।
कुळ-तरण जनों सिहायकारी, धनुसर पांण रहै सधीरधारी ॥ ११३

अथ चतुरदस अखिर छंद बरणण जात सककरी

दूहौ

कहि बसंत तिलका त,भ ज दोय करण जिण अंत ।
आद अंत गुरु मध्य लघु, बारह चक्र लसंत ॥ ११४

अथ बसंततिलका (त भ ज ज ग ग)

सारंगपांण जय रांम तिलोकस्वांमी ।
भूपाळ-भूप भुजदंड प्रचंड भांमी ॥

---

११३ कनक—स्वर्ण सोना। अभंग—जिससे कोई जीत न सके अजयी। गाहै—नष्ट कर देता है ध्वंस कर देता है। सुर—देवता। महेस—महादेव। सराहै—प्रशंसा करते हैं स्तुति करते हैं। कुळ-तरण (तरकुल)—सूर्यवंशी। सिहायकारी—सहायता करने वाला। सधीरधारी—धैर्यवान।

नोट छंद प्रमाणके जो लक्षण ग्रंथकर्त्ताने दोहेमें दिये हैं उनसे उदाहरण नहीं मिलता।

११४ चतुरदस अखिर छंद—चतुर्दशाक्षरावृत्ति। सककरी—शक्कर या शक्वरी। चौदह अक्षरों वाले छंदोंकी संज्ञाके अंतर्गत निम्नलिखित वर्णवृत्त संस्कृत साहित्यमें हैं उनमेंसे ग्रंथकर्त्ताने सिर्फ उपर्युक्त दो वर्णवृत्तोंका ही उल्लेख किया है। वे वर्णवृत्त ये हैं—बसंत तिलका असंबाधा अपराजिता प्रहरणकलिका वासंती मंजरी कुटिल इन्दुवदना चक्र, नांदीमुख लाली तथा अनंद। उपर्युक्त वर्ण वृत्तोंमें बसंततिलकाको कवि-समाजमें अधिक महत्त्व दिया गया है। वैसे प्रस्तार भेदसे चौदह अक्षरों वाले छंदोंकी कुल संख्या १६३८४ होती है। त—तगण। भ—भगण। ज—जगण। दोय—दो। करण—दो दीर्घ मात्राका नाम। ग्रंथकर्त्ताने चक्रछंदका लक्षण लिखते समय अपनी प्रखर बुद्धिसे सिर्फ यह सिद्ध किया कि जिसके आदि और अंतमें दीर्घ वर्ण और मध्यमें बारह लघु वरण हों तो भी अति सुंदर लगता है। इस छंदमें सात-सात वर्ण पर यति होती है।

११५ सारंग-पांण (सारंगपाणि)—विष्णु श्री रामचन्द्र भगवान। तिलोकस्वांमी—त्रिलोकपति। भूपाळ-भूप—राजाओंका राजा सम्राट। भांमी—बलैया बलैया लेता हूं। न्यौछावर होता हूं।

भूतेस चाप छिनमेक चढाय भंज्यौ।
राजाधिराज सिय मांनस कंज रंज्यौ॥ ११५

छंद चक्र

(ग., १२ ल ग अथवा भ म न न न स ल ग) ७७

रांम भजन विण अहळ जनम रे।
नांम समर पय सिर नित नम रे॥
मांम असत तन चरमसु मळ रे।
स्त्रीवर रट रट रसण सफळ रे॥ ११६

अथ पनरह अखर छंद वरणण जात अतिसक्वरी

दूहौ

गुरु लघु क्रम आखिर पनर, सौ चांमर सुखकंद।
यि नगण २ करण १ यि रगण २ गुरु छजै सालिनी छंद॥ ११७

छंद चांमर (र ज र ज र)

कौड़ दैत भंज संज, पाण चाप सायकं।
नागराज भ्रात संग, मीत सीतनायकं॥
दत्रराट कीत खाट, नाट बोल ना दखै।
रे नरेस राघवेस, गावजै भजै रिखै॥ ११८

---

११५ भूतेस—महादेव शिव। चाप—धनुष। छिनमेक—एक क्षण। भंज्यौ—तोड़ा। सिय—सीता। मांनस (मानस)—चित्त हृदय मन। कंज—कमल। रंज्यौ—प्रसन्न किया।

११६ अहळ (अफल)—निष्फल व्यर्थ। समर—स्मरण कर। पय—चरण। नित—नित्य सर्वदा। असत (अस्थि)—हड्डी। चरमसु—चमड़ी। मळ—मैल, विष्टा। स्त्रीवर (श्रीवर)—विष्णु श्रीरामचंद्र। रसण (रसना)—जिह्वा जीभ।

११७ पनरह अखर छंद—पंचदशाक्षर वृत्ति। पनरह वर्णोंके वृत्तोंकी संज्ञा अतिशक्वरी कही जाती है जिसके अंतर्गत कुल वृत्त प्रस्तार भेदसे ३२७६८ तक हो सकते हैं।

११८ कौड़ (कोटि)—करोड़। दैत (दैत्य)—असुर। भंज—नाश कर, संहार कर। संज—अस्त्र शस्त्र उपकरण। चाप—धनुष। सायकं—बाण। नागराज—शेषनाग लक्ष्मण। भ्रात—भाई मीत (मित्र)—सूर्य। सीतनायकं—सीतापति श्रीरामचंद्र। दत्रराट—इन्द्र। कीत—यश। खाट—प्राप्त कर। नाट—नहीं। बोल—वचन। ना नहीं। दखै—कहे जाते हैं। नरेस (नरेश)—यहां यह शब्द नरके लिये प्रयोग हुआ है राजा। राघवेस (राघवेश)—श्रीरामचंद्र। भज—भजन है। रिखै—ऋषि।

छन्द सालिनी (न-म ग र र र ग)

महण मथण राघौ वाग संसार माळी।
तिपुर घड़ण भंजै वाजन्तां हेक ताळी॥
अहनिस भज तैनूं आव संसार ओछी।
छ-दरस यम आखे, जे बिना सब्ब छोछी॥ ११९

दूहौ

सगण पंच भमरावळी, स ज दौ भ रह विवेक।
सुकळ हंस चवदह लघू, रभस गुरु पद एक॥ १२०

छन्द भ्रमरावली (स स स स स)

कर साभत रांम सुचाप सरं कळहं।
दुगमं खळ सीस-दुपंच जिसास दहं॥
रघुनायक धारत मौज सुचित्त रूड़ी।
गढ लंक जिसा दत आपत हेक घड़ी॥ १२१

छन्द कमलहंस (स ज ज भ र)

रघुनाथ भंज दुपंच-नाथ अभंग रे।
जयवांन भूप अमांन आसुर जंग रे॥

---

१११ महण (महार्णव)—सागर, समुद्र। मथण—मथन करने वाला। तिपुर—त्रिपुर, त्रिलोक। घड़ण—रचना करना गढ़ना है। भंजै—नाश कर देता है। वाजन्तां—बजने पर। हेक—एक। अहनिस—रात-दिन। तैनूं—उसको। आव—आयु। ओछी—कम। छ-दरस (षड्दर्शन)—न्याय मीमांसादि हिंदुओंके षड्दर्शन या छ शास्त्र। यम—ऐसे। आखे—कहते हैं। जे—जिस। सब्ब—सर्व सब। छोछी—व्यर्थ निष्फल।

१२ स—सगण। ज—जगण। भ—भगण। रह—रगण।

१२१ कर—हाथ। साभत—धारण करते हैं। सुचाप—सुंदर धनुष। सरं—बाण। कळहं—युद्ध। दुगमं—जबरदस्त महान। खळ—असुर। सीस-दुपंच—रावण। जिसास—जैसे। दहं—नाश नाश करने वाला। सुचित्त—उदार चित्त। घड़ी—घड़िया भाग। जिसा—जैसा। दत—दान। आपत—देते हैं वे दिया। हेक—एक।

१२२ भंज—नाश करने वाला। दुपंच-नाथ—रावण। अभंग—न भागने वाला। अमांन—अपार। आसुर (असुर)—राक्षस। जंग—युद्ध।

जळधार तार गिरंद बंधण पाज रे।
लिछमीस दास अनाथ राखण लाज रे॥
मछराळ देव दयाळ ग्रीवसु म्यंत रे।
'किसनेस' गाव सचाव सीत कंत रे॥ १२२

छंद रभस
(१४ लग अथवा न न न न म) ६१

रविकुळ मुकट अघट रघुवर है।
सुरतर सर भर जिकण सुकर है॥
हरण सकळ अघ करण अमर है।
घव जस 'किसन' चवत थिर चर है॥ १२३

अथ सोळै अखिर छंद वरणण जात असिट

दूहो

भ ज स न र ह पनरह अखिर, निसपाळिका सु गाव।
लघु गुरु क्रम सोळह अखिर, सौ नाराज सुभाव॥ १२४

छंद निसपालिका (भ ज स न र)

रांम सरखा नरप कोय थळ ना रजै।
छात्रपत रांम सम रांम करगां छजै॥

---

१२२ लिछमीस (लक्ष्मीश)—लक्ष्मीपति विष्णु, श्रीरामचंद्र। दास—भक्त। मछराळ (मत्सर वाला)—महान जबरदस्त। ग्रीवसु—सुग्रीव। म्यंत (मित्र)—मित्र। सचाव—उत्साहपूर्वक उमंगपूर्वक। सीत-कंत (सीताकांत)—सीतापति श्रीरामचंद्र भगवान।

१२३ रविकुळ (रविकुल)—सूर्यवंश या सूर्यवंशी। अघट—जिसके समान दूसरा न हो अद्वितीय। सुरतर—कल्पवृक्ष। सर भर—समान। जिकण—जिसका। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। सकळ—सब। अघ—पाप। घव—यह। चवत—कहते हैं। थिर—स्थावर अटल। चर—जंगम।

नोट—रभस छंदका दूसरा नाम ससिकला भी है।

१२४ सोळै अखिर छंद—षोडशाक्षरावृत्ति। असिट (अष्टि)—सोलह वर्णोंकी वर्ण-वृत्ति जिसके क्रम भेद ६५५३६ तक हो सकते हैं।

१२५ सरखा (सदृश)—समान। नरप (नृप)—राजा। कोय—कोई। थळ—पृथ्वी। छात्रपत (छत्रपति)—राजा। सम—समान। करगां—हाथ। छजै—शोभा देना है।

कोड़ अघ ओघ जिण नांम अरचै कटै ।
रे 'किसंन' सांत कर क्यूं न तिणनै रटै ॥ १२५

अथ तीस अखिर छंद ब्रद्धिनाराच
(ज र ज र ज ग)

न रूप रेख लेख मेख तेख तौ निरंजणं ।
न रंग अंग लंग भंग संग ढंग संजणं ॥
न मात तात भ्रात जात न्यात गात जासकं ।
प्रचंड बाहु डंड रांम खंड नौ प्रकासकं ॥ १२६

दूहौ

पांच भगण गुरु अंत पद, सौ पद-नील सुछंद ।
गुरु लघु कम सोळह चरण, कहि चंचळा कव्यंद ॥ १२७

छंद पदनील (भ भ भ भ भ ग)

कौड़क तीरथ राज चिहूं दिस धाय करै ।
सौ लख कौड़ अखंड वडा व्रत जे सुधरै ॥
ज्याग महा असमेघ धरादिक दांन जते ।
तौ पण रांम प्रमांण तणौ तिल जोड़ न ते ॥ १२८

---

१२५ अरचै—पाता । सांत—विचार । तिण—उस ।

१२६ वृद्धिनाराच—वृहद नाराच । मेख (मेष)—पहुलाणा । तेख—तीक्ष्णता अथवा तेज । तौ—तेरा । निरंजणं—मायारहित दोषरहित परमात्मा । लंग (लिंग)—चिन्ह । मात—माता । तात—पिता । गात (गात्र)—शरीर । जात—जाति । न्यात (ज्ञाति)—जाति । जासकं—जिसके । डंड—देख । नौ—नव ।

नोट—वृहन्नाराच छंदका दूसरा नाम पंचचामर भी है । प्राकृतने इसके लक्षणमें प्रथम लघु फिर गुरु इस क्रमसे सोलह वर्ण माने हैं ।

१२७ सौ—वह । पद-नील—छंदका नाम । इस छंदके अन्य नाम नील अश्वगति लीला और विशेषक भी मिलते हैं । चंचळा—छंदका नाम विशेष । इस छंदका दूसरा नाम चित्र भी मिलता है । प्राकृतने प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे सोलह वर्णका प्रत्येक चरण माना है । कव्यंद (कवीन्द्र)—महाकवि ।

१२ कौड़क—करोड़ । चिहूं—चारो । दिस—दिशा । धाय करै—दौड़ करे, परिभ्रमण करे । जे—जो अगर । ज्याग—यज्ञ । असमेघ—अश्वमेध यज्ञ । धरादिक—भूमि आदि । जते—जितने । तौ पण—तो भी । जोड़—बराबर, समान । ते—वे ।

दूहो

दुज ज भ त गुर पायप्रत, सौ माळाधर कथ्य।
ल गुरु पंच लघु पंच तस, सौ सिखरणी समथ्य ॥ १३२

छंद माळाधर

(४ म ज भ ज स ल ग अथवा न स ज य भ ल ग)

नर जनम जे दियौ समर जांनकीनाथ सौ।
अज अहप ईस रे जपत है सदा गाथ जौ ॥
मत विलम तू करै भजण रांम माहीप रे।
जप 'किसन' नांम जे जनम औ लियौ जीप रे ॥ १३३

छंद सिखरणी

(१ म ४ य म न स भ ल ग अथवा य म न स भ ल ग)

तवौ राघौ राघौ करम अघ दाघौ तनतणा।
महाराजा सीता-वलभ कुळ-मीता विण-मणा ॥
धरां जैता जंगां अडर यक-रंगां जग अखै।
सकौ गावौ जीहा अवस निस-दीहा अज सखै ॥ १३४

---

१३२ दुज-चार लघु मात्राका नाम। भ-भगण। ज-जगण। त-तगण। पायप्रत-प्रति चरण। सौ-वह। माळाधर-छंदका नाम। कथ्य-कह। तस-तगण उपरांत। समथ्य-समर्थ।

१३३ जे-जिन। समर-स्मरण कर। जांनकीनाथ-सीतापति श्री रामचन्द्र भगवान। सौ-उस वह। अज-ब्रह्मा। अहप-(अहिप) शेषनाग। ईस-(ईश) महादेव। सदा-नित्य। गाथ-कथा। जौ-जिस। विलम-(विलम्ब) देरी। माहीप (महि-पति महीप)-राजा। जे-जिस प्रकार। औ-यह। जीप-जीत विजय कर।

१३४ तवौ (स्तवन)-स्तवन करो यश-गान करो। अघ-पाप। दाघौ-जला दो भस्म करो। तन-शरीर। तणा-के। सीता-वलभ (सीतावल्लभ)-सीताप्रिय रामचंद्र। कुळ-मीता (कुल + मित्र)-सूर्य वंश सूर्य वंशधर। विण-मणा-महान अपार। धरां (धरित्रा)-पृथ्वी। जैता-जीतने वाला। अडर-निर्भय। यक-रंगा-एक ही रंगवाला एक ही स्वभाववाला। अखै-कहता है। सकौ-सब जन। जीहा-जीभ। अवस-अवश्य। निस-दीहा-रात-दिन। अज-अद्य। सखै-साक्षी देता है।

दूहो

मगण भगण फिर नगण मुणि, तगण दोय फिर जोय ।
करण एक अहराज कहि, मंदाक्रांता होय ॥ १३५

छंद मंदाक्रांता (म भ न त त ग ग) ४ ६ ७

सीता सीतारमण हरही नेक संताप संतां ।
मींता मींता सकुळ धर ही भेख लज्जा समंतां ॥
माधौ माधौ रसण जप ही भाग छै जेण मोटी ।
त्यांरा दासां सरब सुख रे आथरो नांहि तोटो ॥ १३६

दूहो

नगण सगण मगणह रगण, सगण एक ध्वज अंत ।
खगपत सुण अहपत अखै, हरिणी छंद कहंत ॥ १३७

छंद हरिणी (न स म र स ल ग)

भजन करणौ जीहा भूपां पती रघु भूपरी ।
बिरद धरणौ धंका रे कोट भांण सरूपरी ॥
सुजन चित दगो लेणौ कीत गाय सधीर है ।
हरण दुख व्है संतां मात पिता रघुबीर है ॥ १३८

---

१३५ मुणि-कहकर । करण-दो दीर्घ मात्राका नाम । अहराज (अहिराज)-शेषनाग ।

१३६ सीतारमण-सीताके साथ रमण करने वाला श्री रामचन्द्र भगवान । हरही-दूर करेगा मिटायगा । नेक-थोड़ा । संताप-पीड़ा कष्ट । माधौ-माधव विष्णु श्री रामचन्द्र । रसण-(रसना) जिह्वा जीभ । भाग-भाग्य । छै-है । जेण जिनका जिसके । मोटी-महान । त्यांरा-उनके । दासां-भक्त । आथरो (पर्यन्त)-धनका । नांहि-नहीं । तोटो-अभाव कमी ।

१३७ ध्वज-प्रथम लघु फिर दीर्घ मात्राका नाम । खगपत (खगपति)-गरुड़ । अहपत (अहिपति)-शेषनाग । कहंत-कहते हैं कहा जाता है ।

१३८ जीहा जिह्वा जीभ । भूपां पती-(भूपति) सम्राट । रघु-रघुवंशी भूपरी-राजाका । बिरद (बिरुद)-यश । धरणौ-धारण करने वाला । धंका-बांकुरे, बहादुर । कोट (कोटि)-करोड़ । भांण (भानु)-सूर्य । सरूपरी-स्वरूपका । सुजन-सज्जन सत्पुरुष । चित-हृदय मन-चित्त । दगो-देने वाला । लेणौ-लेने वाला । कीत-कीर्ति । गाय-गाकर । सधीर-धैर्यवान है ।

अथ अठारै वरण छंद जात प्रति

दूहौ

छ गुरु भगण मगणह सगण, मगण छंद मंजीर ।
र स ज ज फिर भगणह रगण, सौ चच्चरी सधीर ॥ १३९

छंद मंजीर
(६ ग म म स म अथवा म म भ म स म)

हाथी कीड़ी कांटे हेकण सो तोलै, जग जांणै सारौ ।
रंकां रावां जोड़े रास्त, तैं कीजै निबळां निस्तारौ ॥
दीनां लंका जे हाथां न कजै दीधा जग सारौ जांणै ।
वेदां भेदां धाता वीठळ वारंवार रटै वाखांणै ॥ १४०

छंद चरचरी (र स ज ज भ र)

देव राघव दीन पाळ दयाळ वंछित दायकं ।
नाग मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायकं ॥
माथ-पंच दुयेण भंज अगांज भूप महाबळ ।
वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळ ॥ १४१

दूहौ

पड़ै यगण खट चरण प्रत, क्रीड़ा छंद कहाय ।
'किसन' सुकव महपत कहै, रट कीरत रघुराय ॥ १४२

---

१३९. अठारे वरण छंद-अष्टदशाक्षरावृत्ति । जात प्रति-अठारह वर्णोंके वृत्तोंकी संज्ञा जिसमें हरिणी प्लुता चित्रलेखा मंजीर आदि हैं और जिनकी संख्या २६२१४४ तक है । चरचरी-एक छंद । इस छंदका दूसरा नाम चंचरी भी है ।

१४० कांटे-तराजूके पलड़ेमें । हेकण-एक । सारौ-सब । रंकां-गरीबों । रावां-राजाओंको । जोड़े-समान बराबर । निस्तारौ-उद्धार । धाता-ब्रह्मा । वीठळ-विष्णु, ईश्वर ।

१४१ वंछित-वांछित अभीष्ट । दायकं-देने वाला । रटंत-रटते हैं । सीय सुनायकं-सीता पति श्री रामचंद्र भगवान । माथ-पंच-रावण । दुयेण-जो यहां दो हाथोंसे तात्पर्य है । भंज-नाश किया । पात-कवि । सुपाय-सुन्दर, मोह । जे-जो जिसके । जन-भक्त । वाछळ-वात्सल्य ।

१४२ प्रत-प्रति हर एक । क्रीड़ा छंद-इस छंदका दूसरा नाम महामोदकारी भी है । महपत (महिपति)-रोपनाथ ।

छंद क्रीड़ा (यययययय)

रटौ जांम आठूं सदा हो जना चूंपसूं रांम रांमं।
महाबाहु सीतापती राखणौ सेवकां संत सांमं॥
कटी तूंण पांणं सरं चाप आमाप तेजं कळासै।
नरां नाथ सामाथ आंनेक ओघं अघं दैत नासै॥ १४३

अथ उगणीस अख्यर छंद जात प्रतिध्रति

दूहौ

मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक।
सारदूळविक्रीड़तह, वरणौ छंद विसेक॥ १४४

छंद सारदूल विक्रीड़त (मसजसततग)

जैं जैं औध नरेस संत सुखदं स्रीरांम नारायणं।
सीतानाथ सुनाथ, दास करणं संसार सारायणं॥
देवाधीस रिखीस ईस अजयं ते सेव पारायणं।
पायं कंज 'किसन्न' रक्खि सरणं आणंदकारायणं॥ १४५

---

१४३ जांम आठू–यहयाम आठ पहर। जना–भक्त। चूंपसु–उत्साहसे चतुराईसे। महाबाहु (महाबाहु)–विशाल भुजा वाला। सीतापती (सीतापति)–श्री रामचन्द्र। राखणौ–रखने वाला। सांमं–स्वामी। कटी (कटि)–कमर। तूंण–तरकस भाथा। पांणं (पाणि)–हाथ। सरं–बाण। चाप–धनुष। आमाप–अपार असीम। सामाथ–समर्थ। आंनेक–अनेक। ओघं–समूह। अघं–पाप। दैत–असुर दैत्य। नासै–नाश करता है।

१४४ उगणीस अख्यर छंद (ऊनविंशत्याक्षर वृत्ति)–उन्नीस अक्षरोंके छंद। छंद जात प्रतिध्रति (प्रतिधृति) उन्नीस वर्णोंके छंदोंकी संज्ञा जो कुल प्रस्तार भेद से ५२४२८८ तक होते हैं। विसेक–विशेष।

१४५ जैं जैं–जय-जय। औध-नरेस–अयोध्या नरेश श्रीरामचंद्र भगवान। सुखदं–सुख देने वाला। सारायणं–शरण देने वाला। देवाधीस (देवाधीश)–इन्द्र। रिखीस (ऋषीश)–महर्षि। ईस–शिव महादेव। अजयं (अज)–ब्रह्मा। सेव–सेवा। पारायणं–पूर्ण। पायं–पैर चरण। कंज–कमल। आणंद-कारायणं–आनंद करने वाला।

पुन अथ्य प भपछ स भाखा

सारदूल विक्रीड़त (म स ज स-स-त ग)

आस्चर्य रघुनाथ भूप-महदं त्वनांममुच्चारणम् ।
जन्मं संचिदघोरघोर कळुसं नासं तमेकं-छिनम् ॥
ते अंभोरुह अंघ्रि एन सरण प्राप्तं नांमामीस्वरम् ।
तेसां विघ्नविलीयमांन तुरितं ध्वांतमिव भास्करम् ॥ १४६

दूहो

अखिर गुणीसह अवर लघु, ग्यारहमौ गुरु होइ ।
छ नगण गुरु अंतह सु फिर, घवळ कहावै सोर ॥ १४७

छंद धवळ

(१० लग ८ ल अथवा न न न ज न न न ल)

कळह मभ्फ गहत जव रांम धनु निज सुकर ।
हरत रिम कटक घण-माळ उर सम्भत हर ॥
खुलत रिख नयण सुण पंख पळचर खरर ।
डगमगत थर धुसत भाज परबत डरर ॥ १४८

---

१४६ महदं–उत्सवदायक । त्वनामं–तेरा नाम । संचितघोरघोर (संचित+अघोर+घोर)–संग्रह किये हुए महान भयंकर । कळुसं–पाप । नासं–नाश । तमेकं-छिनम्–एक ही क्षण भरमें । ते–तेरा तेरे । अंभोरुह–कमल । अंघ्रि–चरण । एन (अयन)–घर । प्राप्तं–प्राप्त होकर । तेसां (तेषाम्)–उनका उनके । विघ्न–बाधा अड़चन । विलीयमान–नाश । तुरितं–शीघ्र । ध्वांतमिव–अंधेरेके समान । भास्करम्–सूर्य ।

१४७ अखिर–अक्षर । गुणीसह–उन्नीस ।

१४ कळह–युद्ध । मभ्फ (मध्य)–में । गहत–धारण करता है करते हैं । जव–जब । सुकर–श्रेष्ठ हाथ । हरत–मिटाते हैं मिटाता है । रिम–शत्रु । कटक–सेना । घण माळ (सिर मुख+माळ=माला)–रुंडमाला । सम्भत–धारण करते हैं । हर–महादेव । रिख–ऋषि । पंख–पर पक्ष । पळचर–मांसभक्षी । खरर–आवाज ध्वनि विशेष । डगमगत–डांवाडोल होते हैं कम्पायमान होते हैं । थर (धरि)–पृथ्वी । धुसत–प्रवेश करते हैं । परबत–पर्वत पहाड़ । डरर–डरके ।

पुन अन्य विधि छंद धवल
(न न न न न न ग)

जिण पय सुरसरि अघहर सरित जनम है ।
करत मजन तिण जळ जन कटत अकम है ॥
विबुध सकळ अहनिसमु जपत सियवर है ।
तव नित 'किसन' रसन रघुवर सुरतर है ॥ १४९

दूहो
सगण तगण यगणह भगण, सात गुरू पय पच्छ ।
अहपत खगपतसं अखै, संभू छंद सुलच्छ ॥ १५०

छंद संभू
(स त य भ ७ ग अथवा स त य म भ ग)

जग माथै राजत ओ जेतै हरि एहो आनूपा जापं ।
तितरें मां मांनव तूं त्रामे जमवाळी मांने घू तापं ॥
'किसनी' यूं भासत आचाके, बहुनांमी भांमी जाया रे ।
करणारो वारध है केसो, अघ नांमे संता ऊधारै ॥ १५१

अथ बीस अक्षिर छंद वरणण जात कृति
दूहो
मगण जगण ये भगण सुण, रगण सगण ध्वज थाय ।
मर्को गीतिका गंडिका, वीस गुरू लघु पाय ॥ १५२

---

१४९ जिण-जिस । पय-चरण । सुरसरि-गंगा नदी । अघहर-पापोंका मिटाने वाली । सरित-नदी । मजन-स्नान । तिण-उस । कटत-कटते हैं । अकम-पाप । विबुध-देवता । सकळ-सब । अहनिसमु-रातदिनमें । सियवर-सीतापति श्रीरामचंद्र भगवान । तव-स्तवन कर । रसन-रसना जीभ । सुरतर-कल्प-वृक्ष ।

१५० पच्छ-पश्चात बादमें । अहपत-शेषनाग । खगपतसं-गरुड़से । सुलच्छ-अच्छा लक्षण ।

१५१ माथै ऊपर पर । राजत-शोभा देता है । एहो-ऐसा । आनूपा (अनूप)-अनोखा । तितरें-तब तक । मां-मन । त्रामे-डरे । घू-निश्चय । तापं-भय । भासत-कहता है । बहुनांमी-बहुनाम नामी वाला ईश्वर । भांमी-न्यौछावर, बलैया । जाया ईश्वर । करणा (करुणा)-दया । वारध (वारिधि)-सागर । अघ-पापी । नांमे-नाममें । ऊधारै-उद्धार करता है ।

१५२ बीस अक्षिर छंद-जिस [illegible] । बीस [illegible] [illegible] मानी गई है जिसके [illegible] भेदसे १ ४ २०६ [illegible] होते हैं । ध्वज-प्रथम [illegible] फिर [illegible] दूसरा नाम । थाय-हो । गंडिका-[illegible] दूसरा नाम । पाय-चरण ।

छंद गीतिका

(स ज ज भ र स म ग) १२८

करतार भू अधार केसव धार पांण सुधांनखं।
रघुनाथ देव समाथ राजत मां विसार स मांनुखं॥
जळ पाज बंध उतारजै कपि साज सेन सकाजयं।
रसना 'किसन्न'सु जांम-आठ उचार सौ रघुराजयं॥ १५३

छंद मल्लिका (र ज र ज र ज ग ल)

रांम नांम आठ-जांम गाव रे सुपात एह देह सार।
और धंध फंद सौ अनास रे न आखरे गणां नकार॥
औध-ईस जेण सीस आच रे थया सकौ सुनाय थाय।
जेण पाय कंज लीध आसरौ जके जनंम जीत जाय॥ १५४

अथ इकवीस वरण छंद वरणण जात प्रकृति

दूहौ

मगण रगण भगणह नगण, यगण तीन प्रति पाय।
वीस एक सोमित वरण, सौ स्रगधरा सुमाय॥ १५५

---

१५३ गीतिका—इस छंदके प्रथम चरणकी रचनामें छंद शास्त्रके नियमका निर्वाह नहीं हुआ। सुधांनखं—श्रेष्ठ मनुष्य। समाथ—समर्थ। मां—मत। विसार—विस्मरण कर। स—उसको। मांनुखं—मनुष्य। रसना—जीभ। जांम-आठ (अष्ट याम)—आठों पहर। सौ—उस वह।

१५४ चंचला गंडिका मल्लिका छंद—रत्नका आदि इस छंदके अन्य नाम हिंदी व राजस्थानी भाषामें मिलते हैं। इसे छंद शास्त्रमें वृत्त भी कहा गया है। प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे बीस वर्णका यह वृत्त माना गया है। ऐसा ही लक्षण ग्रंथकर्त्ताने दिया है। आठ-जांम (अष्टयाम)—आठों पहर। सुपात (सुपात्र)—श्रेष्ठ कवि। एह—यह। सार—सारांश तत्त्व रूप। धंध—धंधा कार्य काम। फंद—बंधन जाल। अनास (अनाहक)—नाहक व्यर्थ। औध-ईस—श्री रामचंद्र भगवान। जेण—जिसके। आच—हाथ। थया—हुए। सकौ—सब वह। पाय—चरण। कंज—कमल। लीध—लिया। आसरौ—सहारा आश्रय।

१५५ इक्कीस वरण छंद—एक विंशत्याक्षरावृत्ति। इक्कीस अक्षरोंके छंदकी संज्ञा प्रकृति कही जाती है जिसमें प्रस्तार भेदसे २०९७१५२ भेद होते हैं।

छंद स्त्रगधरा (म र भ न य य य)

जै राघौ राज राजं अमर नर अहृ कीत जे जीह जापै ॥
आचारी झौक लागे छिनक मझ करां खंक सा दांन आपै ॥
धींगां जाड़ा मरोड़ै अडर कर उभै, थांण धांनंख धारै ।
तौनूं जीहा रटतां जनम अघ हरै, दास घू जेम तारै ॥१५६

दूहो

भगण रगण दुजवर नगण, दोय भगण गुरु दोय ।
अहृपत खगपतसं अखै, छंद नरिंद सकोय ॥ १५७

छंद नरिंद
(म र ४ ल भ भ भ ग ग अथवा भ र न न ज ज ज य) १३ ८

धारण मांण पांण सर धनखह रांम धद्धा अव धारै ।
आपण मोख दांन जस जग जिण, आठहृ-जांम उचारै ॥
सागर रूप सूरपण सरसत ध्यार दसा मझ चावौ ।
गौ दुज पाळ तार निज जन जग गैवर-तारण गावौ ॥ १५८

चौपई

आठ गुरु बारह लघु होय, दीपै जिण अंतै गुरु दोय ।
सी कह हंसी छंद सकाज, अंपै नाग सुणौ खगराज सांवै ॥१५९

---

१५६ जै-जय । अमर-देवता । अहृ (अहि)-नाग । कीत-कीर्ति । जीह-जीभ । जापै-जपते हैं । आचारी-उदार दातार । झौक-धन्य-धन्य । छिनक-क्षण । मझ-मध्य । करां-हाथोंमे । सा-समान । आपे-दे दिया । धींगां-जबरदस्त । जाड़ा-जबाड़ा जड़ । मरोड़-मरोड़ देता है । उभै-दोनों । धांनंख-धनुष । तौनूं-तुमको । जीहा-जीभ । अघ-पाप । दास-भक्त । हरै-मिटाता है । घू-भक्त ध्रुव । जेम-जैसे । तारै-उद्धार करता है

१५७ दुजवर-चार लघु मात्राका नाम । अहृपत-शेषनाग । खगपत-गरुड़ । अखै-कहता है । नरिंद-नरेंद्र छंद । सकोय-सब ।

१५ पांण (पाणि)-हाथ । सर-बाण । धनखह-धनुष । आपण-देनेको । मोख-मोक्ष । आठहृ जांम (अष्टयाम)-आठो पहर । सूरपण-शौर्य वीरता । सरसत-सरसाता है । मझ-मध्य । चावौ-प्रसिद्ध विख्यात । गैवर-तारण-गजको उद्धार करने वाला ।

१५९ दीपै-शोभा देता है । अंखै-कहता है । नाग-शेषनाग । खगराज-गरुड़ ।

छंद हंसी (म म त म न म स ग) = १४

सारी वार्ता नीकौ सोहै, रघुवर जस सह जग यम साखै ।
भाळी रूड़ौ खोजै सेणा, भव ससि निगम ब्रह्म रवि भाखै ॥
माधौ राघौ केसौ एहौ, समरण कर छिन छिन सुख मूळ ।
जाडा पापां दाहै जेही, तिलकण दहण भ्रमण-मण तूळ ॥१६०

दूहो

सात भगण मदिरा वदै, गुरु सुंदरी कहंत ।
सात भगण दो गुरु मिळै, मत्त गयंद सुणंत ॥ १६१

छंद मदिरा (भ भ भ भ भ भ भ)

रांम अभंगम सोभत अंग धनू सर हाथ सुधारण ।
रांम समाथ कहै जग गाथ तकौ सर पाथर तारण ॥
रांम दयाळ अनास्रय पाळ अनेक अनाथ उधारण ।
पारस रांम सरै सब कांम चवौ अठ-आंमसु धारण ॥ १६२

---

१६ नीकौ—उत्तम श्रेष्ठ। सोहै—शोभा देता है। यम—ऐसे। साखै—साक्षी देता है। रूड़ौ—उत्तम। सेणा—सज्जन। भव—महादेव। ससि—चंद्रमा। निगम—वेद। ब्रह्म ब्रह्मा। रवि—सूर्य। माधौ—माधव। राघौ—राघव श्रीरामचंद्र। केसौ—केशव। एहौ—ऐसा। छिन-छिन—क्षण-क्षण। जाडा—घना अधिक। दहण—जलाने वाला। भ्रमण-मण—भ्रमणशील मन। तूळ—रूई।

नोट—हंसी छंदको इक्कीस अक्षरोंके वृत्तोंमें लिखा है परन्तु वास्तवमें यह वृत्त २२ वर्णका होता है।

१६१ वदै—कहते हैं। सुणंत—सुनते हैं।

१६२ अभंगम—नहीं टूटने वाला। धनू—धनुष। समाथ—समर्थ। गाथ—कथा वृत्तांत। तकौ—वह इस। सर—सागर, समुद्र। पाथर—पत्थर। तारण—तारने वाला तैराने वाला। अनास्रय—जिसका कोई आश्रय न हो। पाळ—पालन करने वाला। उधारण—उद्धार करने वाला। सरै—सफल होते हैं। चवौ—कहो।

नोट—मदिरा छंद २२ अक्षरका वर्ण वृत्त होता है जिसमें ७ भगणोंके बाद एक दीर्घ वर्ण होना आवश्यकीय माना गया है परन्तु यहां पर केवल सात भगण ही दिये गये हैं।

छंद सुंदरी अथ भाखा
(स स भ स स भ भ ग)

आसन स्यंघ घटा तन स्याम, पटंबर पीतसु विद्युत है।
चाप सिलीमुख पांन त्रिमोह सु धांम विभाग सिया जुत है॥
त्यौं अरिहा सुत ककयको कर चौंर अनंत विनै कत है।
पाय पलौटत वात-तनै यह ध्यान रघुव्वर राजत है॥१६३

छंद मत्तगयंद (भ भ भ भ भ भ भ ग ग)

गौतम नार सु पाहन तैं रज पाय लगे रघुनायक तारी।
पांमर जात पुलिंद जु योरसु जेवत स्रीमुख धार न धारी॥
हाथनतैं करि स्राध जटायुसु पायनकी रजके सहि भारी।
सौ रघुनाथ विसार भजै, अन तौ नर मूरख बात बिगारी॥१६४

छंद चकोर लछण
चौपई

मात भगण गुरु लघु जिण अंत, तिणनै चंद चकोर तवंत॥१६५

छंद चकोर (भ भ भ भ भ भ भ ग ल)

स्रीरघुनाथ अनाथ सिहायक दायक नौ निधि पंछित दांन।
संग्रण मे खळ घायक मंगर माधव है सय लायक मांन॥
पूरण स्रीहम अर्व अज ईस प्रथीप धरैं धनु मायक पान।
मा सियारांम भज्यौ नहिं नक जनम व्रथा जगमें जिहिं जान॥१६६

---

१६३ पटंबर-पीत वस्त्र। विद्युत-बिजली। चाप-धनुष। सिलीमुख (शिली-मुख)-बाण तीर। धांम-धाम। वाम-बायां। सिया-सीता। अन-भुजा। त्यौं-तैसे ही। अरिहा-शत्रुघ्न। वात-तन (वात तनय)-वायु-पुत्र हनुमान।

१६४ नार-नारी स्त्री। पाहन-पत्थर। रज-धूलि। पुलिंद-एक प्राचीन जंगली जाति। धार-[illegible]। बिसार-भूल कर। अन-अन्य।

१६६ सिहायक-सहायक। दायक-देने वाला। नौ-नव। पंछित-वांछित मनोरथ। घायक मार [illegible]। मंगर-[illegible]। खळ-दुष्ट। ईस-[illegible]। प्रथीप-राजा। मायक बाण [illegible]। पान (पाणि)-हाथ। जिहिं-जिसका।

अथ चौवीस अक्षिर छंद जात संस्कृति

दूहौ

आठ भगण किरीट कहि, आठ स दुमिळा यात।
आठ यगण पद परत सौ, महाभुजंगप्रयात॥ १९७

छंद किरीट (८ भ)

कौटिक तीरथ धाय करौ,
अरु कौटि करौ व्रत देह व्रिथा करि।
कौटिक ज्याग करौ,
असमेध रु कौटि करौ गवदांन दुजेसर॥
कौटिक जोग-अठंग सधौ,
अरु कौटि तपौ तप नेम धरावर।
ये 'किसना' सुपनै न कहूं,
यक स्री रघुनायक नांम बरावर॥ १९८

छंद दुमिला (८ स)

जर नैन व्रियी जननी,
जठरा हरि धाय कै आय सिहाय कियौ।
जनम्यौ जयत जिन पोख,
रम्यौ तन आस्रय तौम्के टारि लियौ॥
तरुनाइमें आपहि इम भयौ,
जगदीसकूं मूरख भूलि गियौ।

---

१९७ चौवीस अक्षर छंद चतुर्विंशत्यक्षरावृत्ति। इस वर्णिक छंद नाम से वृत्ति भी है जिसके प्रस्तार १६७७७२१६ वृत्त प्रस्तार भेदसे बनते हैं। त–गगण। यात–होता है।

१९८ कौटिक–करोड़। कौटि–करोड़। व्रिथा–व्यर्थ। ज्याग–यज्ञ। असमेध–अश्वमेध। गवदांन–गोदान दुजेसर (द्विजेश्वर)–ब्राह्मण [illegible]। जोग-अठंग (अष्टांग योग)–अष्टांग योग। सधौ–साधन करो। तप–तप।

१९९ जठर–उदर मध्ये [illegible]। तरुनाई–युवावस्था। नैन–[illegible]।

'किसना' भजि रांम सियावरकौ,
जिन चांच बनायके चून दियौ ॥ १६९

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

मुख मंगळ नाम उचार सदा तन के अघ ओघन दाघव रे।
हनमंत बिभीखन आंन तनै जिन कीन वडे जन लाघव रे॥
भुजगेस महेस दुजेस रिखी नित पै रज चाहत माघव रे।
तजि आंन उपाय सबै 'किसना' भज राघव राघव राघव रे ॥१७०

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

वयकुंट विलासनकौ तजि के अघ कौन चहै जमपासनकी।
म्रगराज पळासन त्यागनके चित हूंस धरौ नहि घासनकी॥
कबहू नहि संगत और पिया तजि संगत गौर ब्रखासनकी।
रघुनाथ जु रावरे दासनके चित आसन आंन उपासनकी ॥१७१

छंद पुनरपि दुमिला (८ स)

हम कीन अनेक गुन्हैं हरिजू तुम एक न लेख उतारिएजू।
हम पापि महा जिद काहे करै, बिरद रावरकी पर पारिएजू॥
करुनामय राघव जांनकीवल्लभ ए विनती उर धारिएजू।
गुन छोडि हमारि ये नावरि थांनकी गवर ओर निहारिएजू ॥१७२

---

१६९ चून (चूर्ण)-भोजन।

१७० बिभीखन-बिभीषण। कीन-किया। भुजगेस-शेषनाग। महेस-महादेव। दुजेस (द्विजेस)-महर्षि। रिखी-ऋषि। आंन-अन्य।

१७१ विलासन-विलास करने वाला। अघ-पाप। म्रगराज (मृगराज)-सिंह। पळासन-मांसाहारी। हूंस-अभिलाषा इच्छा।

१७२ कीन-किए। करै-अपराध। बिरद-प्रतिज्ञा मर्यादा। थांन-स्थान। ओर-तरफ। निहारिएजू-देखिए।

स्वारथके काज जळ घांम सीत सहै,
नित रहत विलंबी के अनुरूप धांममें।
एरे मन मेरे तेरे हितकी कहत हूं मैं,
तजि रे अन्हेरे कांम देरे द्रग रांममें॥ १८०

छंद पुन कवित

भूत याकौ मूळ भ्यार भूतते सथूळ कं़त,
गं़थ दुख सहिके अभूत पूत जायेकौ।
हाडनकी माळा मांस छाळाते लपेटी भरी,
मळके मसाला ताळा पवन लगाये कौ॥
भिटचार आखर विराज्यौ ऐसे पिंजरामें,
अंत उडि जैहैं पंछी भेद भेद गाय कौ।
पर उपगार केयौ देयौ कछु दांन,
सीताघर भजि लेयौ फळ पैयौ देह पाय कौ॥ १८१

छंद पुन कवित

पाय जुवराज मंद अंध दुरजोघन सौ,
भयौ मतिमंद रिंद फंद कर केतोई।
किसन' कहत सिर घं़त विदुर संत,
मुख भयौ मंघ द्रोन भीखम सहे तोई॥
पांथ पूत पंडके पटकि बैठे हिम्मतकौ,
चूकि गौ छभाकौ भवतव्य वस चेतोई।

---

१८ घांम-गर्मी। सीत-सर्दी। विलंबी-संत न अनुरूप अनुकम समान उपयुक्त। धांम-स्वर्ग। अन्हेरे-अन्य अनुचित। द्रग-नेत्र नयन।

१८१ भूत-भूत। याकौ-इसका। भूतते-आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी आदि। सथूळ-स्थूल। कं़त-मान कर समझ कर। अभूत-अनोखा। छाळा-चमड़ी। भिटचार-ग्राम-सूकर।

१८२ द्रोन-द्रोणाचार्य। भीखम-भीष्मपितामह। पूत-पुत्र। पंड-पाडु। छभा-सभा। भवतव्य-भवितव्य। चेतोई-ज्ञान चेतना।

छंद महाभुजंगप्रयात (८ य)

नमौ रांम सीतावरं औघनाथं समाथं महाबीर संसार सारं ।
अनद्दं अघट्टं अरोड़ं अगंजं अनंमं अछेहं अरेहं उदारं ॥
अनेकं असंकं अलटं अरेसं खगां पांण आजांणबाहू खपावै ।
गहीरं सधीरं रघूराज बीरं गरीबं निवाजं कवी क्यौं न गावै ॥१७३

अथ वरण उपछंद वरणण तत्र आद सालूर छंद तिण लछण वरणण

दूहौ

एक करण दुजबरसु खट, सगण अंत दरसाय ।
पिंगळ मत अहपत पुणै, सौ सालूर कहाय ॥ १७४

छंद सालूर

(ग ग २४ स स अथवा ल+८न+स ग)

पापोघ हरत अत जन चितवत ।
तिन हरख करत दुख हरत हरी ॥
सीतावर जसधर सुमति सदन सुभ्र ।
कळुख सघन बन दहन करी ॥

---

१७३ औघनाथ—अयोध्यानाथ श्रीरामचंद्र भगवान। समाथं—समर्थ। अनद्दं—अनहद। अघट्टं—अद्वितीय अपार। अरोड़ं—जबरदस्त। अनंमं—अनमी। अछेहं अपार। अरेहं—निष्कलंक पवित्र। असंकं—शंका वा भयरहित। अरेसं—शत्रु। पांण—प्रभाव प्रताप। आजांणबाहू आजानबाहु। खपावै—नाश करता है। गहीरं—गंभीर। सधीरं—धैर्यवान।

नोट—छंदकृतांनि अगले ग्रंथमें मात्रा छंद प्रकरणमें छंद उपछंद और दण्डका भेद अति संक्षेपमें बतलाया है। वहां पर लिखा है कि २४ मात्राका छंद २४ से २६ मात्रा तक उपछंद और छंद और उपछंदके मेलसे दण्डक छंद बनता है। यहां पर अर्ध छंदोंमें उदाहरणमें जो उल्लेख किए हैं वे वास्तवमें दण्डक वृत्तोंके अन्तर्गत ही आते हैं। दण्डकवृत्तका लक्षण यही है कि जिन वर्ण वृत्तमें प्रत्येक चरण २६ वर्णसे अधिक वर्ण हों वह वृत्त दण्डक कहा जायगा। ये दण्डक वृत्त भी दो प्रकारके माने गये हैं—एक साधारण दण्डक जो नगणबद्ध होते हैं दूसरे मुक्त दण्डक जो गणोंके बंधनसे मुक्त रहते हैं।

१७४ करण—दो दीर्घ मात्राका नाम। दुजबर—चार लघु मात्राका नाम। खट (षट)—छ। अहपत (अहिपति)—शेषनाग। पुणै—कहता है।

१७५ पापोघ—पापोंका समूह। हरत—मिटाता है। सदन—घर। समुद्र (समुद्र)—सागर। सघन—घना।

सारंग समथ सर सभ्भत सुकर जुध ।
असुर दसह सिर अडर जरी ॥
सौ रांम 'किसन' किव समर समरि ।
जिहिं विजय जिगन करि सियहिं वरी ॥ १७५

दूहौ

सोळह पनरह अखिर पर, होय जठै विसरांम ।
यक्तीसाखिर अंत गुरु, निहचै मनहर नांम ॥ १७६

छंद मनहर
छद इकतीसौ कवित्त

कपटी कळ की क्रूर कातर कुचाळ कोर ,
'किसन' कहत कैसौ कळही अकांम हूं ।
वैंडौ हूं अकौरौ हूं बुरौ हूं बेसहूर वादी ,
निलज निमोही नाथ निपट निर्मांम हूं ॥
जसहीन जुलमी जनात जीव जातनाकौ ,
जुगति घिनांही भखौ झूठ जांम जांम हूं ।
गरुरके गांमी सुनौ रांमचंद्र सांमी,
गाढौ गरीबी गुनाही तौ हूं रावरौ गुलांम हूं ॥ १७७

अन्य कवित्त

जानुकी पुकारै जातुधानकी विनास काजैं ,
आये वेग जलपै गिरंदनकी पाजक ।

---

१७५ सारंग–धनुष । समथ–समर्थ । दसह-सिर–रावण । जिगन–यज्ञ । सिय–सीता । वरी–वरण किया पाणि-ग्रहण किया ।

१७६ अखिर–अक्षर । जठ–जहां । विसरांम–विश्राम । यक्तीसाखिर–इकतीस अक्षर । निहचै–निश्चय ।

१७७ कातर–कायर । कुचाळ–बुरी चाल चलने वाला । अकांम–बिना मतलब का व्यर्थ का । वैंडौ–उद्दण्ड । अकौरौ–बातूनी वाचाल । बुरौ–[illegible] । निपट–बहुत । निर्मांम–मर्यादाहीन । जातना–यातना । गरुर–गरुड़ । सांमी (स्वामी)–मालिक । गाढौ–गहरा । गुनाही–गुनहगार ।

१७८ जांनुकी–सीता । जातुधान–राक्षस । गिरंदन–पर्वत । पाज–सेतु पुल ।

स्वारथके काज जळ घांम सीत सहै,
नित रहत निलैयी के अनुरूप धांममें।
एरे मन मेरे तेरे हितकी कहत हूं मैं,
तजि रे अन्हेरे क्रांम दर द्रग रांममें॥ १८०

छंद पुन कवित्त

मूत थाकी मूळ प्यार भूतते सथूळ करत,
गंध्र दुख सहिके अभूत पूत जायेकौ।
हाडनकी माळा मांम छाळाते लपेटी भरी,
मळके ममाला ताळा पवन लगाये कौ॥
पिटचार आखर विगड्यौ ऐसे पिंजरामें,
अंत उडि जेहैं पंछी भेद मेद गाय कौ।
पर उपगार केयौ देयौ कछु दांन,
सीतावर भजि लेयौ फळ पैयौ इह पाय कौ॥ १८१

छंद पुन कवित्त

पाय जुवराज मंद अंध दुरजोधन सौ,
भयौ मतिमंद गिरि फंद कर केनोइ।
किसन कहत सिर धूत विदुर मंत,
मुख भयौ अंध द्रोन भीखम सहे तोइ॥
पांच पूत पंडके पटकि छैठे हिम्मतकौ,
चूकि गौ छमाकौ भवतव्य वस चेतोइ।

१ घांम-गर्मी। सीत-सर्दी। निलैयी-आश्रय अनुरूप अनुरूप समान उपयुक्त। धांम-घर। अन्हेरे-अन्ध अनुचित। द्रग-नैन नयन।

११ मूत-मूत्र। थाको-उसका। सथूल-पांचतत्व पवन अग्नि जल पृथ्वी नभ। गंध्र-गर्भ। गंध-नाभ वर समस्त वर। अभूत-अनोखा। छाळा-चमडी। पिटचार-चाम-चूरा।

१२ द्रोन-द्रोणाचार्य। भीखम-भीष्मपितामह। मुख-मुख। अंध-धृतराष्ट्र। छमा-क्षमा। भवतव्य-भवितव्य। चेतोई ज्ञान करना।

द्रौपदीकी लाज ब्रजराज जौ न राखै तौ ,
गुलांम दूसासन तौ कलांम छीन लेतोई ॥ १८२

छंद पुनः कवित्त

गंगके सुथांन नख करत प्रकास भांन ,
रहन सदीव उर मधि पंचमाथके ।
पापहारी प्रगट अहल्याके उधारी सिर ,
मंडन सिखारी बनचारिनके साथके ॥
कोमळ बिमळ कोकनदसे अरुन जे ,
सलासे जुत कुंकम सुगंध रमा हाथके ।
अकरम नास मेरे हिये बसिबौ करौ ,
वे धरमनिवास ऐसे पद रघुनाथके ॥ १८३

दूहौ

सोळह सोळह अख्खिर पर, है विसरांम हमेस ।
अंत लघु घण अख्खिरी, बरणाव छंद विसेस ॥ १८४

छंद घणाखिरी व्रज भाखा कवित्त

केसव कमळ नैन संत सुख वेन संभु ,
भूमि पार भजतै अनेक भांत टार भय ।
निपट अनाथनके नाथ नरस्यंघ नांम ,
नरक निवारन नरेस्वर निपुन नय ॥

---

१८२ कलांम—वाक्य वचन ।

१८३ सदीव—सदैव । मधि—मध्यमें । पंचमाथ—महादेव हनुमान । पापहारी—पापको मिटाने वाला । उधारी—उद्धार करने वाला । कोकनद—लाल कमल । अरुन—लाल ।

१८४ अख्खिर—अक्षर । विसरांम—विश्राम । घण अख्खिरी—घनाक्षरी नामक कवित्त । घणाखिरी—घनाक्षरी ।

१८५. भांत— भांति प्रकार । नरस्यंघ—नृसिंहावतार । निपुन—निपुण चतुर, दक्ष । नय—नीति ।

'किसन' कहत करुनाके निध कौसलेस,
परत सुरेस भुजंगेस औ रिखेस पय।
सियानाथ भक्तन काज जन लाज रख,
जग सिरताज माहाराज रघुराज जय॥ १८५

चौपई

तेरै कोड़ धीयाळी लाख, सतरै सहँस सातसै साख।
वळ छावीस कहै विख्यात, जांण छत्रीस वरण छंद जात॥ १८६

अरथ

एक वरणसूं लगाय छाईस वरण छंदगी प्रतरी जात छै। यथा—११
तेरै कोड़ ४२०००० बीयाळीस लाख १७०० सतरै हजार ७ सातसै २६
छाईस। तेरै करोड़ बीयाळीस लाख सतरै हजार सात सौ छाईस प्रतरी छवीस
वरण छंदकी जात छै।

दूहा

जपिया 'किसनै' रांम जस, एम वरण उपछंद।
अघ आंमय करसी अळग, नहचै दसरथ नंद॥ १८७
संमत अठारौ असीयौ, चौथ तिथ सुद माह।
बुधवार जिण दिन जनम, लियौ ग्रंथ सुभ लाह॥ १८८

इति श्री रघुवरजसप्रकास पिंगळ ग्रंथ आढा किसना विरचिते वरण छंद
वरण उपछंद नाम चरण प्रसि संपूरण।

---

१८५ सुरेस–इंद्र। भुजंगेस–शेषनाग। रिखेस–महर्षि। पय–चरण पैर।
१८६ धीयाळी–बयालिस। छावीस–छब्बीस। छत्रीस–छत्तीस। छाईस–छब्बीस। बीयाळीस–बयालिस।
१८७ आंमय–रोग। नहचै–निश्चय। नंद–पुत्र।
१८८ संमत अठारौ असीयौ–वि० १८८०। चौथ–चतुर्थी। तिथ–तिथि। सुद(सुदि)–शुक्ल। माह–माघ मास। लाह–लाभ।

अथ गीत छंद वरणण

दूहा

हीमत कर भज भज हरी, गादू मत गींघाय ।
धींग सदा करणो धणी, संतांतणी सिहाय ॥ १

स्रुणिया नह तजता स्रवण, भजतानै भगवांन ।
मीरां स्री अंगमें मिळी, मनां रळी घर मांन ॥ २

सोरठो

पेट हेक कज पात, मेट सोच संसौ म कर ।
रे संभर दिन रात, नांम विसंभर नारियण ॥ ३

अथ गीत लछण

गीत ओटपा घाटरा बांका अनै त्रिबंक ।
गीत अनोखा गोखरा सूधा मणो सरणंक ॥
भूप रचेता भींतड़ां ईसर नीमंधी आव ।
गाई तिणसूं गीतड़ो, अघक आव अहराव ॥ ४

सोरठो

कसै पथर कमठांण, एक ठौड़ परठै इळा ।
मुख मुख नीम मंडांण, तिणसूं न ढगै गीतड़ा ॥ ५

---

१ गादू-मूर्ख कायर। गींघाय-मनके बुरे भाव प्रकट कर बदबू देना। धींग-समर्थ। संतांतणी-संतोंकी। सिहाय-सहायता।

२ स्रवण (श्रवण)-कान। रळी-आनंद।

३ हेक-एक। कज-लिए। पात (पात्र)-कवि। सोच-चिन्ता। संसौ (संशय)-शक संदेह। म-मत। संभर-स्मरण कर। विसंभर-विश्वम्भर ईश्वर। नारियण-नारायण।

४ ओटपा-अद्भुत विचित्र। घाट-रचना। बांका-वक्र। अनै-और। त्रिबंक-टेढ़ा कठिन। रचेता-रचने वाला बनाने वाला। भींतड़ा-भवन। ईसर-ईश्वर। नीमंधी-रची बनाई। आव-आयु उम्र। गाई-वर्णनकी। तिणसूं-इसलिये। गीतड़ो-काव्यो छंदो। अघक-अधिक। आव-आयु। अहराव-शेषनाग।

५ कसै-रच जाते हैं। बंधनसे कस लेते लिया। कमठांण-मकान आदि बनानेका बड़ा कार्य। परठै-रचते हैं बनाते हैं। इळा-पृथ्वी। मंडांण-रचना।

अथ गीतका अधिकारी कवि

गीतकी भाखा वरणण

दूहौ

अधिकारी गीतां अवस, चारण सुकवि प्रचंड ।
कीजै प्रकास गीतकी, सुरधर भाखा मंड ॥ ६

अथ अगण दघक्खर दोस हरण

दूहौ

वैणसगाई वरणियां, अगण दघक्खर खैर ।
थई सगाई जेण थळ, वळै न रहियौ वैर ॥ ७

अथ गीतांकी नव उक्ति ग्यारै जथा ग्यारै दोस ।

इम वैणसगाई नांम लछण उदाहरण वरणण

दूहौ

उकतसु नव ग्यारह जथा, दोख अग्यारह दाख ।
वयणसगाई दसह विध, भांणव रूपग भाख ॥ ८

अधिकारी—योग्यता या क्षमता रखने वाला, उपयुक्त पात्र । अवस—अवश्य । प्रचंड—महान । मंड—रचना ।

अगण—छंद शास्त्रमें चार प्रकारके गण जिनके नाम क्रमशः जगण, तगण, रगण और सगण हैं । डिंगल काव्यमें इनका रखना अमांगलिक माना गया है । दघक्खर (दग्धाक्षर)—पद-रचनामें प्रथम प्रयोग न किए जाने वाले वे अक्षर या वर्ण जिनका छंदोंमें प्रथम उपयोग अमांगलिक माना गया है । वैणसगाई—वयण-सगाई । डिंगल भाषाके गीत छंदोंकी रचनाका एक नियम विशेष जिसमें जिस वर्णसे आरम्भ पद (चरण) शुरू होता है वही वर्ण उसकी समाप्ति पर समाप्ति अन्तिम चार वर्णोंमें कहीं न कहीं अवश्य लाया जाता है । इस प्रकारसे गण-दोष एवं अगण या दग्धाक्षर के दोष दूर हो जाते हैं अगर ये एक रचनामें आ जावें तो वैण-सगाई होनेसे उनका दोष नहीं लगता । दघक्खर—दग्धाक्षर । खैर—कुशल-क्षेम । थई—हुई । सगाई—संबंध रिश्ता । जेण—जिस । थळ—स्थान । वळै—फिर । वैर—शत्रुता दुश्मनी ।

अथ नव उक्ति नांम

कवित्त छप्पै

सनमुख पहली सुद्ध १ दुई गरभित सनमुख सुख २ ।
परमुख सुद्ध प्रसिद्ध ३ अनै गरभित परमुख अख ४ ॥
सुद्ध परामुख सरस ५ परामुख गरभित होई ६ ।
सुद्ध स्रीमुख सातमी ७ सुकवि स्रीमुख संजोई ८ ॥
उचरजै नमी मिस्रित उकति ९ पलटै पयण वदाळ प्रति ।
रघुनाथ सुजस गावण रहस, अखी 'किसन' नव विध उक्त ॥ ९

वारता

कैहवा-वाळा प्रसगीनूं सनमुख कवि कहै सो सुद्ध सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

दससिर खळ मारण दुसह, हाथी तारण हाथ ।
क्रपा रूप 'किसनौ' कहै, निमौ भूप रघुनाथ ॥ १०

वारता

सनमुख अन्योक्ति कर कहणौ सो गरभित सनमुख उक्ति कहावै और उनरै कहै मैं आपरा मनमैं समझावणौ सो गरभित सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

उचरै आळ-जंजाळ औ, व्रथा करै बकवाद ।
निज मन 'किसना' अहनिसा, अवधेसर कर याद ॥ ११

---

९ दुई–द्वितीय दूसरी । अनै–और । अख–कह । उचरजै–कहिए । पयण–वचन । वदाळ–दिवस जीनका वार बारणका समूह । रहस–रहस्य । अखी–कही । कैहवा-वाळा–कहने वाला । प्रसंगी–वह जिसके विषयमें प्रसंग चले सम्बन्धी ।

१० दससिर–रावण । खळ–राक्षस । दुसह–महा भयंकर । उचरै–कहता है वर्णन करता है । आळ-जंजाळ–व्यर्थका बकवाद । अहनिसा–रात दिन । अवधेसर–श्रीरामचंद्र भगवान ।

अथ नव उक्ति नाम

कवित्त छप्पै

सनमुख पहली सुद्ध १ दुई गरभित सनमुख दख २।
परमुख सुद्ध प्रसिद्ध ३ अनै गरभित परमुख अख ४॥
सुद्ध परामुख सरस ५ परामुख गरभित होई ६।
सुद्ध स्त्रीमुख सातमी ७ सुकवि स्त्रीमुख संजोई ८॥
उचरजै नमी मिस्रित उकति ६ पलटै पयण दवाळ प्रति।
रघुनाथ सुजस गावण रहस, अखी 'किसन' नव विध उक्त॥ ६

वारता

कैहवा-वाळा प्रसगीरै सनमुख कवि कहै सो सुद्ध सनमुख उक्ति कहावै।

अथ सुद्ध सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

दससिर खळ मारण दुसह, हाथी तारण हाथ।
क्रपा रूप 'किसनौ' कहै, निमौ भूप रघुनाथ॥ १०

वारता

सनमुख अन्योक्ति कर कहणो सो गरभित सनमुख उक्ति कहावै और दूसरे कहे मैं आपरा मनमैं समझावणौ सो गरभित सनमुख उक्ति कहावै।

अथ गरभित सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

उचरै आळ-जंजाळ औ, मथा करै बकवाद।
निज मन 'किसना' अहनिसा, अवधेसर कर याद॥ ११

---

१ दुई—द्वितीय दूसरी। अनै—और। अख—कह। उचरजै—कहिए। पयण—वचन। दवाळ—विपस मीनका चार चरणका समूह। रहस—रहस्य। अखी—कही। कैहवा-वाळा—कहने वाला। प्रसंगी—वह जिसके विषयमें प्रसंग चले सम्बन्धी।

१ दससिर—रावण। खळ—राक्षस। दुसह—महा भयंकर। उचरै—कहता है वर्णन करता है। आळ जंजाळ—प्रपंच्य बखेड़ा। अहनिसा—रात दिन। अवधेसर—श्रीरामचंद्र भगवान।

दूहौ

साठ सहस सुत सगररा, नहचै मुवा निकाम ।
तै घन ग्रीध जटाय तै , रिण रहियौ छळ राम ॥ १२

वारता

जीनै रूपग कहै जीसूं अपूठो कहीजै सो सुद्ध पर मुख उक्ति कहावै, औररो जस औरं प्रतसूं भाखण करणो सो सुद्ध परमुख उक्ति।

अथ सुध परमुख उक्ति उदाहरण

सोरठौ

जीपे दससिर जंग, समंदां लग दीपै सुजस ।
ऊ रघुनाथ अभंग, जन पाळग समराथ जग ॥ १३

वारता

परमुख उक्तिनै प्रयोकिरी कर कहणो सो गरभित परमख उक्ति कहावै।

अथ गरभित परमुख उक्ति उदाहरण

दूहा

हर समरौ होसी हरी, जीते जमरौ जंग ।
कर उदिम रोलंब करै, भमरौ कीटी अंग ॥ १४
जिणनूं जांण अजांणरौ, ईखौ भेव अभंग ।
लाठी खर ऊपर लगत, पूजै जगत पगंग ॥ १५

वारता

कवि किसा वरणनीय नै वैसौ वैसाने कहै सो सुद्ध परामख उक्ति कहावै।

---

१२ नहचै-निश्चय। निकाम-व्यर्थ। रिण-युद्ध। छळ-लिए। जीनै-जिसको। रूपग-गीत छंद। जीसूं-जिससे। अपूठो-उलटा। और-अन्य दूसरा। प्रत-प्रति लिए। भाखण-भाषण।

१३ जीपे-जीत कर। दससिर-रावण। जंग-युद्ध। लग-पर्यन्त तक। दीपै-शोभा देता है। पाळग-पालन करने वाला। समराथ-समर्थ।

१४ जंग-युद्ध। उदिम-उद्यम उद्योग। रोलंब-भौंरा। भमरौ-भौंरा। कीटी-छोटा कीड़ा। अंग भौंरा।

१५. जिणनूं-जिसको। अजांणरौ-अज्ञानता। ईखौ-देखो। खर-गधा। पगंग-घोड़ा।

अथ नव उक्ति नाम

कवित्त छप्पै

सनमुख पहली सुद्ध १ दुई गरभित सनमुख दख २ ।
परमुख सुद्ध प्रसिद्ध ३ अनै गरभित परमुख भख ४ ॥
सुद्ध परामुख सरस ५ परामुख गरभित होई ६ ।
सुद्ध स्रीमुख सातमी ७ सुकवि स्रीमुख संजोई ८ ॥
उचरजै नमी मिस्रित उकति ९ पलटै पयण दयाळ प्रति ।
रघुनाथ सुजस गावण रहस, अखी 'किसन' नव विध उकत ॥ ९

वारता

कैहणा-वाळा प्रसंगीरै सनमुख कवि कहै सो सुद्ध सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

दससिर खळ मारण दुसह, हाथी तारण हाथ ।
क्रपा रूप 'किसनौ' कहै, निमो भूप रघुनाथ ॥ १०

वारता

सनमुख अन्योक्ति कर कहणौ सौ गरभित सनमुख उक्ति कहावै और अगै कहे मैं आपरा मनने समझावणौ सो गरभित सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

उचरै आळ-जंजाळ मैं, व्रथा करै बकवाद ।
निज मन 'किसना' अहनिसा, अवधेसर कर याद ॥ ११

---

१ दुई-द्वितीय दूसरी । अनै-और । भख-कह । उचरजै-कहिए । पयण-वचन । अखाड़-[illegible] चार चरणका समूह । रहस-रहस्य । अखी-कही । कैहणा-वाळा-कहने वाला । प्रसंगी-वह जिसके विषयमें प्रसंग चले सम्बन्धी ।

१ दससिर-रावण । खळ-दुष्ट । दुसह-महा भयंकर । उचरै-कहता है वर्णन करता है । आळ-जंजाळ-प्रपंच बखेड़ा । अहनिसा-रात दिन । अवधेसर-श्रीरामचंद्र भगवान ।

वारता

श्राठमी कवि-कल्पित स्रीमुख उक्ति कहावै जिणमें कवियण नै स्रीमुखरी वयण वार्मूई नीमरै ।

वारता

स्रीरामजीरौ वचन लछमणप्रतिनै यूं कहियौ—श्रवधेस कवियण दोनूं मळा छै ।

अथ कवि कल्पित स्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

कोपै तूं मौ राज कज, सांमळ वायक सेस ।
गरवां मत ग्रहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस ॥ १६

वारता

नवमी मिस्रत उक्ति जठै गीत कवित्त छन्दादिकमें तुक-तुक प्रति तथा दवाळा दवाळा प्रति वचन पलटै सौ मिस्रित उक्ति कहावै ।

अथ मिस्रित उक्ति उदाहरण

सोरठौ

वांणी सराहै वांणि, खाग सराहै समर खळ ।
मौज उमळ महरांणि, सारा है रघुवर सुकव ॥ २०

इति नव उक्ति निरूपण ।

अथ अग्यारह प्रकार जिसकी जथा निरूपण

अथ अग्यारह जथा नांम छंद चंद्रायण

विधांनीक सर सिर फिर वरण वखांणजै ।
अहिगत आदस्रु अंत सुध पिण आंणजै ॥

---

१८ कवियण—कविजन कवि । दोमूंई—दो ही ।

१९ मौ—मेरे । कज—लिए । सांमळ—सुन । सेस—लछमण । अवधेस—श्री रामचन्द्र ।

२० दवाळा—गीत छंदके चार चरणका समूह । वांण—वाणी । वांण—सरस्वती या पंडित । खाग—तलवार । समर—युद्ध । खळ—शत्रु । मौज—उदारता दान । उमळ—तरंग लहर । महरांण (महार्णव)—सागर । सारा है—प्रसंसा करते हैं । निरूपण—निर्णय विचार ।

२१ ग्यारह जथाग्रोंके नाम—विधानीक सर सिर, वरण अहिगत आद अंत सुध अधिक न्यून और सम । पिण—भी ।

अथ सुद्ध परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

समपी लंका सोवनी, दीन भभीखण दांन ।
जेण रांम उज्जळ सुजस, जपै सकळ जिहांन ॥ १६

वारता

सकळ नांम सिवरौ है सो सिवप्रत पारवती वचन छै । पैलौ वैसानै कहै सो परामुख उक्त जिण रांम सो परमुख उक्त अदभुतरस पारवतीरौ वयण सो परामुख उक्त नै सिवप्रत सभाखण ।

वारता

परामुखमें सममुखरी छाया मीसरै सो गरभित परामुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हर जैरै कच-कूप मह, वसै कोड़ महमंड ।
केम प्रभू मावै तिके, परगट कीड़ी पिंड ॥ १७

वारता

सातमीं सुद्ध सीमुख नांम उक्ति जठै परमेस्वरकौ वचन तथा कोई देवताकौ तथा राजाकौ वचन तथा मात वचन सो सारा रूपगमे एक निज है सो सुद्ध सीमुख उक्ति कहाव ।

अथ सुद्ध सीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हूं आखूं नय वयण हिक, सांमळ भरथ सुजांण ।
करणौ तौ मौ अवस कर, पितची हुकम प्रमांण ॥ १८

---

१६ समपी-दी । सोवनी-स्वर्णकी । दीन-गरीब । भभीखण-विभीषण । सकळ-समस्त सब अथवा महादेव शिव । जेहांन-संसार । पैली-पहिला या दूसरा । प्रत-प्रति । संभाखण-सम्भाषण ।

१७ हर (हरि)-विष्णु । जैरै-जिसके । कच-कूप-रोम-कूप रोम-छिद्र । मह-में । महमंड-ब्रह्माण्ड । कैम-कैसे । तिके-वे । परगट-प्रकट । पिंड-शरीर ।

१८ हूं मैं । आखूं-कहता हूं । नय-नीति । वयण-वचन । हिक-एक । सांमळ-सुन । भरथ-भरत । सुजांण-चतुर । पितची-पिताका ।

वारता

आठमी कवि-कल्पित स्रीमुख उक्ति कहावै जिणमें कवियण नै स्रीमुखरी वयण दोनूंई नीसरै।

वारता

स्रीरामजीरौ वचन लखमणप्रतिनै यूं कहियौ—अवधेस कवियण दोनूं मेळा छै।

अथ कवि कल्पित स्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

कोपै तू मौ राज कज, सांमळ वायक सेस।
गरवां मत ग्रहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस॥ १९

वारता

नवमी मिस्रत उक्ति जठै गीत कवित्त छंदादिकमें तुक-तुक प्रति तथा दवाळा दवाळा प्रति वचन पलटै सौ मिस्रित उक्ति कहावै।

अथ मिस्रित उक्ति उदाहरण

सोरठौ

वांणी सराहै वांण, खाग सराहै समर खळ।
मौज उमंळ महरांण, सारा है रघुवर सुकव॥ २०

इति नव उक्ति निरूपण।

अथ ग्यारह प्रकार डिंगळकी जथा निरूपण

अथ ग्यारह जथा नांम छंद चंद्रायण

विधांनीक सर सिर फिर वरण वखांणजै।
अहिगत आवस अंत सुध पिण आंणजै॥

---

१८ कवियण-कविजन कवि। दोनूंई-दो ही।

१९ मौ-मेरे। कज-लिए। सांमळ-सुन। सेस-लक्ष्मण। अवधेस-श्री रामचन्द्र।

२० दवाळा-गीत छंदके चार चरणका समूह। वांण-वाणी। वांण-सरस्वती या पंडित। खाग-तलवार। समर-युद्ध। खळ-शत्रु। मौज-उदारता दान। उमंळ-तरंग लहर। महरांण (महार्णव) सागर। सारा है-प्रशंसा करते हैं। निरूपण-निर्णय विचार।

२१ ग्यारह जथाओंके नाम—विधानीक सर सिर, वरण अहिगत आव अंत सुध अधिक न्यून और सम। पिण-भी।

अधिक न्यून सम नांम अग्यारह उच्चरै ।
'किसन' जथा अै डिंगळ कवि अारै करै ॥ २१

वारता

प्रथम तौ विधांनीक जथा कहावै श्रठै विधांनीक तिसर गीत वर्णै छै ।

प्रथ विधांनीक नांमा जथा उदाहरण
गीत सुपंखरौ
यात विधांनीक तिसर गीत

वंसी ऐराकरां छ-भाख पैराकरां खड़गवाहां ,
जोस मेघा आखरां आसुरां भंज जंग ।
मोड़ाकरां नायकां-याकरां अरांतोड़ा मनै ,
साकुरां आखरांजोड़ा ठाकुरां स्रीरंग ॥
अछेहां पै घाव सिघां सभाव पटैत अंगां ,
कछ अंबा भांण कुळां अरेहां सकांम ।
दौड़ घाद जीपणां लूणचै काज मंजे देहां ,
रेवंतां नीपणां सूरां रंजै श्रेहां रांम ॥
तेजरा जळोघां वाक अरोघां विरोघां तीखा ,
तातां पै निघातां जंगी होदां तेग ताव ।

---

२१ अारै करै—स्वीकार करते है ।

२२ वंसी—वंशका । ऐराकरां—नस्ल विशेषके घोड़ों । छ भाख—छ भाषाओं । पैराकरां—पार करने वाले । खड़गवाहां—योद्धाओं । मेघा—स्मरण रखनेकी शक्ति, धारण शक्ति, धारणा शक्ति । आसुरां—शत्रुओंको राक्षसोंको । भंज—संहार करते हैं । जंग—युद्ध । मोड़ाकरां—नस्ल विशेषके घोड़े । नायकां-याकरां—कवि । अरांतोड़ा—शत्रुओंका नाश करने वाले । साकुरां—घोड़ा आखरांजोड़ा—कवि । ठाकुरां—योद्धाओं । स्रीरंग (श्री रंग)—विष्णु श्री रामचन्द्र । अछेहां—बहुत । घाव—चोट । सिघां—सिंहों । पटैत—योद्धा । कछ—देश विशेष जहांके घोड़े प्रसिद्ध होते हैं । अंबा—देवी शक्ति । भांण—सूर्य । अरेहां—शत्रुओंको मारने वाले अथवा निष्कलंक । दौड़—शीघ्र गमन या गति । काज—कार्य । जीपणां—जीतने वाला । लूणचै—नमकके । मंजे—नाश करते हैं । रेवंतां—घोड़ो । नीपणां—नदियों । सूरां—योद्धाओं । रंजै—प्रसन्न होता है । श्रेहां—ऐसों पर । जळोघां (जलधि)—सागर । वाक—वाणी । तीखा—तेज । तातां—तेज स्वभाव चपल । निघातां—अति तेज । जंगी—बड़ा । होदां—हाथीकी पीठ पर रखनेकी अमारी । तेग—तलवार । ताव—जोश ।

मेग ऐण रोघां बैण सबोधां सकोधां वंदै ,
बाजंदां कव्यंदां जोधा इसां औधराव ॥
सींधुरां दहाड़ सत्रुआं दहाड़ बिभाड़ सत्रां ,
घाव सिघ्र बिरदाई प्रवाड़ धरेस ।
तुरंगां कव्यंदां बांबराड़ भड़ां रांम ताला ,
निखंगां रीभरणा धाड़ जांनकी नरेस ॥ २२

वारता

दूजो सर नांमा जथा सौ गीतरा दूहांरी तीन तुकमें तौ और बात बरणै नै च्यार ही दूहांरी चौथी तुकमें कहै सौ बात लिखी चाहै । आगै सात सांणौरां मांहैं बेलियौ सांणौर गीत छै जीं मांहैं चरणारबिंदांरी नांम च्यार ही दूहांरी चौथी तुकमें साबत लिख्यौ छ सौ देख लीज्यौ ।

अथ सरजथा उदाहरण
गीत बेलियौ सांणौर

औयण जे रांम सिया नित अरचै ,
सुज चरचै सिव ब्रहम सकाज ।
जग अघहरण सुरसरी जांमी ,
राजतणां चरणां रघुराज ॥ २३

वारता

तीजौ सिर नांमा जथा कहावै जठै प्रमांणिक चौसरसूं नगाय नै प्रमांणीक सत सर तांई रूपग बणी छै सौ जगांरी रूपगमें है सम सर सुधो सांणौर कह्यौ छै सो देख लीज्यौ ।

---

२२ मेग-नदि । एण-हरिण । बैण-वचन । सबोधां-ज्ञान वाला । बाजंदा-बोला । कव्यंदां-कवियो । जोधां-योद्धाओं । औधराव-श्री रामचंद्र भगवान । सींधुरां-हाथियों । दहाड़-चिंघाड़ वाला । सत्रुआं-शत्रुओं दहाड़-गर्जना घोर ध्वनि । बिभाड़-संहार करने वाले । सत्रां-शत्रुओं । घाव-चोट । बिरदाई-विरुद वाले । प्रवाड़-युद्ध । धरेस-धारण करने वाले । तुरंगां-घोड़ा । कव्यंदां-कवियों । बांबराड़-जबरदस्त । ताला-महान जबरदस्त । निखंग-वह जो किसीका प्रभाव या रोब न मानता हो परन्तु स्वतन्त्रतापूर्ण हो । निशंक । रीभरणा-प्रसन्न होने वाले । धाड़-समूह-झुण्ड । मह-मैं चंवर । चरणारब्यंदां (चरणारविंद)-कमल-चरण ।

२३ औयण-चरण । सुज-वह । ब्रहम-ब्रह्मा । सुरसुरी-गंगा । जांमी-पिता जनक । राजतणां-राजाके मानके । रूपग-गीत (छंद) ।

अथ सिर नांमा जथा उदाहरण
सुद्ध साणोर सतसर गीत

अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रु्त आसती ,
नीम वर कार कळ जोग तप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय थंद बुध नीत थट ,
मेर रवि समंद चंद भव ब्रहम रांम ॥ २४

अथ चौथी अरथ नाम जथा कहावै ।

वारता

चौथी अरथ नांम जथा कहावै जिण मांहे गनसूं समास सिर तांई, तथा सिरसूं अगाय भल तांई अरथण होवै सो यण अंथ मध्ये बावीस चातरा छप्पे वरण्या कठै एक सो समवळ बिधान छप्पे देख लीज्यो । दूजो बावीस छप्पेमें रवी अठै बिधामीक छप्पे ।

अथ अरथ जथा उदाहरण
समवळ बिधान छप्पै

नयणांकंज सम निपट, सुभत आंनन हिमकर सम ॥ २५

इत्यादि तृतीय बिधामीक छप्पे
तुक

सेस इंदु म्रग दीप, जांण कोकिल म्रगपति गज ।
वेणि मदन चख नाक, बोल कटि जंघ चाल सज ॥ २६

वारता

पांचमी अहिगत नांम जथा कहवै जिण गीतरी आदरी तुकरा आदमें जो पदारथ कहै जिणरो सबंध तुकरा अंतमें मीडरै वर्ण और बात वरणी आपरीगत ज्यूं इणरा वरणणरी व्यवगति होय सो अहिगत नांम जथा कहावै ।

---

२४ अडग—न डिगने वाला अटल । अणथघ—जिसका थाह न हो अपार । स्रु्त (श्रुति)—वेद । आसती—आस्तिकत्व । कार—मर्यादा सीमा । कळ—कला (चंद्रकला) । जोग—योग । तप—तपस्या । थिर—स्थिर । प्रभा—कांति । पय—समुद्र । थंद—इन्द्र । बुध—बुद्धि । नीत—नीति । थट—है । मेर—सुमेरु पर्वत । रवि—सूर्य । समंद—समुद्र । भव—महादेव । ब्रहम—ब्रह्मा ।

नोट—सिर नामके उदाहरणका गीत सतसर नामकी मात्राके दिया गया है, उसे पढ़ कर पाठक समझें ।

अथ भाव अथा उदाहरण
पांचवध वेसियो गीतरी दूहो छै

गीत

सरण वखांणै जगत चित विखांणै जेम सिंध ,
मौज किव वखांणै चंदनांमा ।
बुध गिरा रांम हथवाह रिम वखांणै ,
वखांणै काछदढ़पणौ वांमा ॥ २८

वारता

सातमी भ्रत नांमा अथा कहावै अठै चौटीवध रूपग वणै । जो रूपग सारामें वरणन करै सो भ्रतरा दवाळामें कहणो सो इण प्रकारै भाव वाचीस कवितां मध्ये चौटीवध कवित छै सो वेस नीज्यो यूंही गीत जांणज्यो ।

अथ भ्रत अथा उदाहरण चौटीवध

छप्पै

सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम ॥ २६

वारता

आठमी सुध नांमा अथा कहावै सो अठै रूपगरी एक गाह जिमै पैहला दूहारी पहली तुकमे भाव सो ध्यार ही दूहांरी पहली तुकम भाव । वैल्हारी दूजी तुकमे भाव सो सारा दूहांरी दूजी तुकमे भाव । पैमारी तीजी तुकमे भाव सो सारा दूहांरी तीजी तुकमें भाव । पैलारी चौथी तुकमे भाव सोही दूजा दूहांरी चौथी तुकमे भाव होय सो सुध अथा कहावै सो यण रूपगमे आगे चौडाल्यो गीत छै सो देख लीज्यो ।

---

२ दूहो–गीत छवक चार चरणका समूह । वखांणै–वर्णन करते हैं । प्रशंसा करते हैं । सिंध–(सिंधु) समुद्र । मौज–उदारता । चंदनांमा–यश कीर्ति । बुध–पंडित । गिरा–वाणी । हथवाह हाथसे किया जाने वाला शस्त्र-प्रहार । रिम–शत्रु । काछ-दढ़पणौ जितेन्द्रियता । संयमशीलता । वांमा–स्त्री । यूंही–ऐसे ही ।

२६ स्रवण–श्रवण । अम्रत–अमृत । हिमकर–चंद्रमा । सम–समान । अठै–यहां । रूपग–गीत एवं काव्य । कहावै–कही जाती है । यण–इस ।

अथ सुद्ध अधा उदाहरण

घोड़दमो गीत

राघव गहृ पला कीर कहृ पै रज ,
सिला उडी जाणै जुग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौ तौ नाव पधारौ ॥ ३०

वारता

नवमो अधिक नामा अधा कहावै जठै रूपगमें अधिकासूअधिकौ वरणण होवै एक तौ फलांणासूं फलांणो अधिको यूं होय हर दूजी गणमा क्रमसूं होय । एक दोय तीन च्यार पांच इत्यादिक क्रमसूं दो मांयकी अधिक अधा ।

अथ अधिक अधा उदाहरण

सोरठौ

रट नर अधिका राज, राजां अधिका सुर रटै ।
सुरां अधिक सुर राज, अवधेसर सुरपत अधिक ॥ ३१

वारता

दूजी यण प्रमरा बावीस छप्पै मध्ये नीसरणीबध नाम छै छप्पैमें देख लीज्यौ अधिक क्रम छै सौ देख लीज्यौ ।

नीसरणीबध छप्पै कवित्त

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण दख ।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख ॥ ३२

---

१ गहृ–पकड़ कर । पला–पंचल । कीर–धीवर नाविक । पै–चरण । जुग–संसार । सारौ–समस्त । दिस–तरफ । अधिकासूं अधिकौ–अत्यधिक । अधिकौ–अधिक । यं–ऐसे ।

३१ राज–राजा । सुर–देवता । सुरराज–इन्द्र । अवधेसर–श्री रामचंद्र महाराज । सुरपत–इन्द्र । पत–इन्द्र ।

३२ सपत–सप्त सात । सिंध–(सिंधु) समुद्र ।

इत्यादिक अधिक जथा दुबिधि

वारता

दसमी सम नांमा जथा कहाव जिण मह् अभेद सम रूपग वरणै तथा मवि सय सावयव रूपकालंकार वरणै, तथा वागटौ जागटौ मागटौ बादेटौ रूपग गीत वरणै सौ सम जथा कहावै। इण उदाहरणरा दूहा माफक गीत कवित नीसांणी छंद जांण लीज्यौ।

अथ सम जथा उदाहरण

दूहौ

अवधि गगन धाजी अयण, सयण कुमुद सुख साज।
जस कर सिय रोहिणी जुक्त, रांमचंद्र महराज॥ ३२

वारता

अठै अधिक न्यून हौ छै। श्री रांमचंद्रजीनै हर चंद्रमानै समांन वरण्या छै जींसू सम जथा जांणज्यौ।

वारता

ग्यारमो न्यून नांमा जथा कहावै सौ आगै सुध नांमा आठमी जथा कही जींनै क्रम भंग कर अस्तव्यस्त कर कहणी सौ न्यून जथा जांणज्यौ। पण रूपग मध्ये अडउथल्ल नांमा गीत छै। पैल्हा दूहारी पैली दोय तुकांरौ धरम तौ तीन दूहांमें नहीं छै, हर पाछला दूहारौ धरम आगला दूहांमें नहीं जींसू क्रम भंग छै। अस्तव्यस्त पद छै जींसू न्यून जथा छै।

अथ न्यून जथा उदाहरण

अडउथल्ल गीत

जम लग कठै मै सीस जियां,
तन दासरथी नित थास तियां।
तन दासरथी नह दाम तियां,
जम लगसी माथै जोर जियां॥ ३४

इति ग्यारह जथा संपूरण

२१ जिण—जिस। मह्—में। अभेदसमरूपग—अभेदसम रूपकालंकार। सावयव रूपकालंकार—रूपकालंकारका एक भेद विशेष।

३२ सयण—सज्जन। सिय—सीता। जुक्त—युक्त। हर—और। जींस—जिससे।

३४ कठै—कहां। मै—डर मत। माथै—ऊपर। जियां—जिसके।

अथ गीतांरा एकादस दोख निरूपण

छप्पै कवित

उकतसु सनमुख आदि निभै नह जिकौ अंध १।
निज वरणै भाख विरोध सही छवकाळ दोख सुज २॥
नह व्हे जात पित नांम हीण दोखण सौ कहिये ३।
वरण होय विमुख निनंग दोखण ते नहिये ४॥
पद छंद भंग सौ पांगळौ ५ अधिक ओछ कळ ऊचरै।
वेलिया खुड़द चिच जांगड़ौ धरौ सजात विरुद्ध रे ६॥
अरथ होय आमं भ्रम अपम ७ सौ दोख उचारत।
जथा निभै नह जगण नाळछेदक निरधारत॥
तिकौ दोख पख तूट जोड़ कच्ची जिण मांझळ।
सुभ आखर मुड़ असुभ लखावै बधिर १० जिकौ वळ॥
यक आद अंत धाळौ अखिर करै अमंगळ सोमकर।
अगीयार दोख कवि आखिया अे निवार रूपग ऊचर॥ ३५

अथ यथादिक [illegible]

छप्पै कवित

कहियौ मे पे कहं किम अंधा तै कहियौ।
लिना पांन धनंख राम छनकाळौ लहियौ॥
भ्रज अजर जग इम निर्मौ न हीण भाख निज।
रत नर्दानगत कथंध माग इम मनी निनंग सुज॥

३५. [illegible]

३६. [illegible]

कवि छंदोभंग पंग कह तुक धुर लच्छण तोरमें।
जात विरुध जांगड़ारौ दूहौ वयौ लघू सांणोरमें॥ ३६

विस्णु नांम कुळ विस्ण विस्णु सुत मित्र अपस वद।
कच अहिमुख ससि लंक स्यंघ कुच कोक नाळ छिद॥
मनभ्र्या मत विललाय गाय प्रभुजी पख तूटल।
रांमण हरियौ रांम गृह खावौ तारक खळ॥
यण भांत कहै बहरौ यळा महपतमें पय रांम रे।
तुक एण अमंगळ आद अंत कवियण विघ गुण नह करे॥ ३७

अथ ग्यारह दोस छप्पै अरथ

कहियौ में अरथ धमुखादिक नव उक्ति कही ज्यां महसी एक ही उक्तिरी रूप जिमें नहीं उक्तिरी ठीक पड़े नहीं सो अंध दोस। कहियौ में के कहूं जिसूं अठै कवि वचन छै के कोई और वचन छै, के देव नर नाग वचन छै के मांनसी विचार छै, अठै वचनरी खबर नहीं संदेह छै, उक्तिरौ रूप छळियौ छै। मनमुख छै के परमुख छै, के परामुख छै, के स्रीमुख छै, के गरभित छै के मिस्रित छै। अठै कांई निस्चय नहीं जिणसूं अंध दोस छै। १

भासा विरुध सौ छबकाळ दूसण कहावै। सिता पांन धनस रांम। सिता पंजाबी भासा छै। पांन ब्रज भासा छै। रांम देस भासा। अठै तीन भासा सामल जिणसूं छबकाळ दोस छै। २

जातरी पितारौ मुखौ जाहर न होवै सौ हीण दोस कहावै। ब्रज धजेस जगदीस नमौ। अठै ब्रज सिवनै कह्यौ के विस्णु नै कोई ब्रजेस कोई जगतरा ईस छै, यां दोयांईरै जात किसी नै मा बाप किसा फेर अजन्मारै मा बापरौ सबौ कांई ठीक नहीं नांमरी पण ठीक नहीं। जिण तावै हीण दोस हुवौ। ३

---

३६ पंग—पांगळा नामक एक साहित्यिक दोषका नाम।

३७ नाळ छिद—नाळ छेद नामक साहित्यिक दोषका नाम। पख-तूटळ—वह जिसका पक्ष खंडित हो—एक साहित्यिक दोषका नाम। खावौ—भंग किया मारा। तारक—तारकासुर नामक राक्षस। बहरौ—एक साहित्यिक दोषका नाम।

१ ज्यां—जिन। महसी—मध्यसे। ठीक—ज्ञान पता। के—या अथवा। मांनसी—मनुष्य सम्बन्धी। छळियौ—नष्ट हुआ।

२ दूसण—दोष। सामल—साथ।

विना ठिकांणै विकळ बरणण होय सौ निनग दोस तथा नग्न दोस । पैली कहवारी वात पछै वरणै पछै वरणवारी वात पैहली वरणै सौ विकळ वरणण दाखै ज्यूं प्रठै रत नव विरत कवंध सार इम भसी । पैहली तरवार वासै जद सोही धावै जद नदी वहै प्रठै पैहलो सोहीरी नदी वरणी फिर कवध बरण्या जठा पछै तरवार भसी कही ठिकांणाचूक वरणण छै जींसू निनग दोस हुवौ । ४

छव मागै सौ छन्भग पांगुळौ दोस कहावै । तुक कवि छन्भग कह इण तुकमे एक मात्रा घाट छ । गगा कका विचै सबो चाहीज छ्मीरी नवमी तुकरै तथा पांचमी तुकरै पूरवाग्धमें पनरै मात्रा चाहीजै सो प्रठै चवदै मात्रा छै । एक मात्रा कम छै । छद मागो जींसूं छदभग पांगळौ दोस हुवौ । ५

जात विरोध सौ लघु सांणोर मही गीत ४ भेळिमी सुहणी सुहद भेद मळा होवै पिण जांगडौ भळौ न हुवै । जांगड़ारी दुहौ वरणै सौ जात विरोध (दोस) हुवौ । ६

जठै प्रमुख्यौ अरथ होय दस्टकूट गुढा ज्यूं विसस्टारथ ज्यू महाकस्टसूं ग्ररथ होय सो अपस दोस कहावै ज्यूं विसण नाम कुळ विसण विसण सुत मित्र । इति विसण को नाम हरीमें हरी नाम सूरजको जीसू सूरजका वंसका रांमचद्र सूरज छै। फेर विसण को हरी नाम मै हरी नाम सूरजको जींसू सूरजका सुत सुग्रीवका मित्र स्री रांमचद्र इसी तरै महा कस्टसू अरथ होय सो अपस दोस कहाव । ७

श्री रुपगमें विधांनीक ग्रादि नव जथा महीं निभै सौ माळ छेद नांम दास कहावै कव ग्रहि मुन ससि स्याम लक कुच कोक माळ छिद चोटी कही मुख कही कमर कही मै पछै कुच कह्या जींसू क्रम भंग हुवौ चोथी बरण नांमा जथा जठै सिख नखलै वरणण होय सौ प्रठै निभी नहीं । जींसू माळ छेद दोस हुवौ । ८

जिण रूपगमे पतळौ जोड़ होय सौ पख तूट दोस कहावै मनस्या मत बिससाय गाय प्रभूभी पख तूटस । ग्ररथ मनस्या पन कथो जोड़ ग्रामीण विसोवड़ी विस साय चौपद । गायक चौपद प्रभूजी प्रभूपद ठीक पिण जोकारासूं यो पण कथौ । इसी कथो पतळौ जाड जो रूपगमें होय सो पख तूट दोस कहाव । ९

---

१ सुहणी-ज्ञान   सोभाई-शोभा है।

४ ठिकांणी-स्थान ।

५ घाट-कम ।

७ प्रमुख्यौग्ररथ-कठिन या गहरा बहु अर्थ जो भावार्थमें प्रचलन न था ऐसे दुष्कर अर्थ । दस्टकूट-दृष्टकूट । विसस्टारथ-विस्तार्थ ।

८ श्री जिन । दाख - गौण छंद या साम्य ।

सुमवायक है सो मुह नै पाछौ असुम मालम हुवै सो बहरी दोख कहावै। रांमण हणियौ रांम गुह लाघो तारक खळ हणियौ पद रांम रांवण सब्द बिचै छै सो दुवांसू अरथ लागै छै, रांम हणै या रामण हणै। रांम रांमणनै हण्यौ कै रांमण रांमनै हण्यो निरधार नहीं तारकासुर दैतनै गुह नांम स्वामी कारतिकरी छै सो तारक खळ दुस्टनै स्वामी कारतिक लाघो। जुधमें बिनास कियो अरथ छै, जींको सुमपणो मुहै नै असुम अरथ मालम होव छै। गुह लाघो इसो ग्लांण सब्दारथ असुम मासै छ जीसू बहरी दोख छै, तथा कोई कवि सींगमक विण इण दोखमै कहै छै। १

रूपगरी आदरी सुकरो आद अखिर नै रूपगसू पूरण होय जिण अतरी तुकरी अतरी अखिर मिळायां असुम अरथ प्रगटै सो अमगळ दोख कहावै छै। ज्यूं महपतमै पय रांम रै। अम सुकरो आदरी मकार अतरी रैकार मळा कियां मरै। यसी असुम सब्द मासै छै जिणसू अमगळ नांम दोख हुवो। ११

इति एकादस प्रकार दोख सपूरण।

अथ नीसाणी त्रिबिधि बैण सगाई नांम लक्षण उदाहरण

दूहो

वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अंत।
मध्य मेल हरि मह महण, तारण दास अनंत॥ १८

वारता

दूहारी पैहलीरी दोय तुकामें तुकरा आद अखिररी तुकतरा आद अखिरसू सबध जिणसू बैण सगाई हुई।१। सो यमक कहीजै। दूहारी तीजी तुकमे मध्य मळ वयण सगाई हुई सो समबेण सगाई।२। दूहारी चौथी तुकमें अंत वयण सगाई, सो न्यून बैण सगाई।३। आदरी अखिर तुकतरा अखिर हेठै आवै सो ती उतिम बैण सगाई।१। आदरो अखिर तुकंतरा दोय अखिरां हेठै आवै सो मध्यम बैण सगाई हुवै।२। आदरी अखिर तुकतरा तीन अख्यरां नीचै आवै सो मध्यम बैण सगाई हुई।३। नै आदरी अखिर तुकतरा च्यार अखिरां हेठै आवै सो अधमाधम बैण सगाई कहीजै।४। अठा सवाय सो निकमी सिथळ वयण छै।

१ दुवां–दोनो। हण्यौ–मारा संहार किया। लाघो–प्रसण किया प्राप्त किया। निरधार–निश्चय। ग्लांण–ग्लानी।

२ महमहण (विष्णु)–ईस्वर। यमक–अधिक। अखिर–अक्षर। हेठै–नीचे। उतिम–उत्तम श्रेष्ठ। वयण–वर्ण मैत्री वयण सगाई।

अथ उतिम मध्यम ग्रधिम ग्रधमाधम च्यार प्रकार वैण सगाई उदाहरण

सोरठौ

तेगा देगा लंक, भुजडंड राघव भामणौ।
आपायत अणसंक, सूर दता दसरथ तणा ॥ ३९

वारता

पैली तुकमें उतिम ।१। दूजी तुकम मध्यम ।२। तीजी तुकमें ग्रधम ।३। चौथी तुकमें ग्रधमाधम ।४। ये च्यार वण सगाई। तीस भाग कह्या इण प्रकार मात वैण सगाई सही। पैला दूहामें ग्राद वण सगाई कही सो न दूजा दूहामें उतिम वैण सगाई कही सो एक गिणां तो छ भगमैं जुदी दोय गिणां तो सात भेद छ। इण प्रकार वण सगाई समझ लीज्यौ।

अथ गावरणी प्रतिरारी प्रसरोट वण सगाई वरणण

गीताणी

आ ई उ ए य व यता मित्र वरग्ग सुणीजै।
ज भ य व प फ न ण ग घ थियह अं मित्र अखीजै।
त ट ध ठ द ड च छ सुक्वते गत जुगम गिणीजै।
अकाराद जुग जुग अक्खर अन्वराट अखीजै।
अधिक अनै सम न्यून ए ग्रह भेद तवीजै ॥ ४०

उदाहरण

आद अखिर सी अंतमें गुल अधिक मणीजै।
अधिक गुन सद ये अधिक सम निको सहीजे।
ज भ य याद १ सम २ न्यून अे अन्दराट कहीजै ॥ ४१

३९ [illegible]

४० [illegible]

४१ [illegible]

ग्रथ ग्रकारादि वकारांत ग्रधिक मित्र ग्रखरोट उदाहरण

दूहो

ग्रवधि नगररै ईसरा, एहा हाथ उदार ।
यण सरणागत वासतै, दीध लंक सुदतार ॥ ४२

सम ग्रखरोट उदाहरण कवित्त

जस कज करै झळूस वाज गजराज वडाळा ।
पहु दे पीठ ग्रफेर गहर रघुनाथ सिघाळा ॥
नूपत रूप मघवांण,

ग्रथ न्यून ग्रखरोट ।

तसां वरसण द्रव ग्रट्टळ ।
घमचा कां ढींचाळ ढौळ खग झाट लसा दळ ॥
चौरंग उरस चाचर छिवै हर ग्रज पूरण हूंसरौ ।
महाराज रांम सम महपती दांन खाग कुण दूसरौ ॥ ४३

ग्ररथ

पैला दूहामे सौ वैण सगाई । ग्राद मध्य तुकांत तीन कही ज्यांनै हीज ग्रधिक सम न्यून जांणजौ ।१। दूजा दूहामें उतम मध्यमादिक च्यार प्रकार कही ।२। फेर तीसांपीमें ग्रावरणी ग्रख्यरांरी ग्रखरोट कही सौ पैला दूहामें तौ ग्रकारादि वकारांत कही सौ ग्रधिक । पछै कवितरी पांच तुकांमें जकारादि गकारांत सम ग्रखरोट कही फेर छप्पैरी च्यार तुकमें तकारादि छकारांत न्यून वरण मित्र तथा वैण सगाई तथा ग्रखरोट कही सौ समझ लीज्यौ । दस प्रकार छै—ग्राद १ मध्य २ ग्रंत ३ उतिम ४ मध्यम ५ ग्रधम ६ ग्रधमाधम ७ ग्रधिक ८ सम ९ न्यून १० ।

इति दस वैण सगाई वरणण ।

---

४२ झळूस—वलसा । वाज—घोड़ा । गजराज—हाथी । वडाळा—बड़ा । पहु (प्रभु)—राजा । गहर—गंभीर । सिघाळा—श्रेष्ठ । मघवांण—इन्द्र । तसां—हाथों । वरसण—वर्षा करने वाला दान देने वाला । ग्रट्टळ—निरंतर । ढींचाळ—हाथी । चौरंग—युद्ध । उरस—ग्रासमान । चाचर—सिर । हर—महादेव । ग्रज—ब्रह्मा । हूंस—ग्रभिलाषा । छिवै—छिवतो । हीज—ही ।

अथ गीतांका नांम निरूपण

दूहौ

पढ वसंतरमणी १ प्रथम, सुण जयवंत २ सुणाळ ३ ।
आवगीत त्रय अक्खिया, स्थापत अगै फुणाळ ॥ ४४

पुनरपि सात सांणोरका नांम कथन

छप्य

सुध १ वडौ सांणोर २ समझ दूसरौ प्रहासह ३ ।
वळ तीजौ वलियौ खुड़द चौथौ सर रासह ५ ॥
सुज पंचम सं हूणौ छठौ जांगड़ौ सुझ्झज्जत ६ ।
सोरठियौ सातमौ ७ विहद मुस्क्रत वज्जत ॥
त्रय दुहे मांझ छपय सपत आद गीत अह अखीया ।
अन मिळै गीत यांसुं अवस भांत नवी वध भखीया ॥ ४५

अन्य प्रकार गीत नांम कथन

दूहौ

सांणोरांस गीतके, अन छंदां होय ।
वेलंदां मिळ गीतके, वरणुं नांम सकोय ॥ ४६

अथ पुनरपि गीत नांम कथन

छंद बेअख्यरी

स्री गणराज सारदा सुखकर ।
अगसौ सुमत रांम सीतावर ॥

---

४४ निरूपण–निर्णय विचार । अथ–अब । अक्खिया–कहे । स्थापत–करके । फुणाळ–पोषनाग ।

४५ पढ–फिर । सुध–फिर । प्रहासौ–सोहणो नामक गीत दब । सुझ्झजत–शोभा देता है । अह–शेषनाग । अखीया–कहे । अन–अन्य । यांसु–इनसे । अवस–अवश्य । वध (उपरांत)–अधिक । भखीया–कहे ।

४६ सकोय–सब ।

४७ गणराज–श्री गणेश । सारदा–सरस्वती । अगसौ–प्रदान करो दो । सुमत (सुमति)–श्रेष्ठ मति सुबुद्धि ।

पिंगळ नाग क्रपा जौ पाऊ ।
गीत नांम दीठा जं॒ गाऊ ॥
गीत अपार अगम जग गावै ।
दीठा जेण जिता दरसावै ॥ ४७

अथ फर गीतांका नांम कथन

छंद दे अस्परी

विधांनीक १ पालगती २ त्रेवड ३ ।
वंकौ ४ त्रवंकड़ौ ५ सुकवी घड़ ॥
चौटी-बंध ६ मुगट ७ वौढौ ८ चव ।
सावझड़ौ ६ हंसावळ १० सुत्रव ११ ॥
गजगत १२ त्रिकुटबंध १३ सुड़ियल १४ गण ।
तिरभंगौ १५ एक अखर १६ भांण १७ तण ॥
मण अड़ीयल १८ झमाळ १६ सुजंगी २० ।
चौसर २१ त्रिसर २२ रेणखर २३ रंगी २४ ॥
अठ्ठ २५ दुअट्ठ २६ बंधअहि २७ अक्खव ।
सुपंखरौ २८ सेलार २६ प्रौढ ३० सव ॥
विडकंठ ३१ सीहलोर ३२ सालूरह ३३ ।
भमर-गुंज ३४ पालवणी ३५ मूरह ३६ ॥
घणकंठ ३७ सीह ३८ वगा उमंगह ३६ ।
दूणौगोख ४० गोख ४१ परसंगह ॥
प्रगट दुमेळ ४२ गाहणी ४३ दीपक ४४ ।
सांणोरह ४५ संगीत ४६ कहै सक ४७ ॥
सीहचलौ ४८ अर अहरनखेड़ी ४६ ।
भणिया नाग गरुड़ सांमेड़ी ॥

४७ पिंगळ नाग–शेषनाग । दीठा–देखे । जं॒–जैसे । गाऊं–वर्णन करू ।

ढोलचाळौ ५० घड़उथल ५१ रसखर ५२ ।
चितविलास ५३ कैवार ५४ सहुचर ॥
छिरणभंप ५५ घोड़ा दुम ५६ मुड़ियल ५७ ।
पढ लह्चाळ ५८ माखड़ी ५६ अणपल ॥
वळै छेकरिण ६० धमळ ६१ वखांणां ।
पढ काछौ ६२ गजगत ६३ परमांणां ॥
भाख ६४ गीत फिर अरधभाख ६५ भण ।
मांगण जाळीबंध ६६ रूपक मुण ॥
कहै सवायौ ६७ सालूरह ६८ किव ।
श्रीबंकौ ६६ धमाळ ७० फेर तव ॥
सातखणौ ७१ ऊमंग ७२ इकअखर ७३ ।
यक अमेळ ७४ ये गंजस ७५ भमर ७६ ॥
कवि चौटियौ ७७ मंदार ७८ लुपतभड़ ७६ ।
श्रीपंखौ ८० त्रध ८१ लघु ८२ सावभड़ ८३ ॥
दुतिय भड़मुकट ८४ दुतिय सेलारह ८५ ।
आटकौ ८६ मनमोह ८७ यिचारह ॥
ललितमुकट ८८ मुक्ताग्रह ८६ लेखौ ।
पंखाळौ ६० अै गीत परेखौ ॥
धसंतरमण ६१ आद कम वतावै ।
गीत निनांण नांम गिणावै ॥
सुणिया दीठा जिके सखीजै ।
तिण दीठा किण भांत चखीजै ॥
राम सुजस भणतां रघुराई ।
देसी अमुवां सुघ दिखाई ॥ ४८

अथ गीत वरण्या सत्रादि वसंतरमणी नांमा गीत लछण

दूहौ

आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखांण ।
अंत मगण जिण गीतनं, वसंतरमणि वखांण ॥ ४६

अथ गीत वसंतरमणी नांम सावझड़ौ उदाहरण

गीत

कर कर आदमें हिक नगण सुभंकर ।
धुर उगणीस मत्त नहचै धर ॥
ये लघु होय तुकंत बराबर ।
सुसबद रांम कहै मझ सुंदर ॥
गीत वसंत रमण किव गावत ।
सोळह पद प्रत मात सुभावत ॥
पात जकौ जग सोभा पावत ।
रघ सावझड़ौ रांम रिझावत ॥
मांझ रदा भासै कौसत-मण ।
भुज आजांन आसुरां भांजण ॥
कण भ्रगु लात उधर विसतीरण ।
तण दासरथ धनौ जन तारण ॥
सामै पय बंदगी सुरेसर ।
जस प्रमणै अह सिम दुजेसर ॥

१ हिक–एक । सुभंकर–मंगल । धुर–प्रथम आरम्भमें । मत्त–मात्रा कला । नहचै–निश्चय । सुसबद–सुयश कीर्ति । मझ–मध्य में । किव–कवि । गावत–वर्णन करता है । पद-प्रत–प्रतिपद चरण । सुभावत–सुन्दर लगती है । जकौ–वह जो । सोभा–कीर्ति । पावत–प्राप्त करता है । रिझावत–प्रसन्न करता है । कौसत-मण (कौस्तुभमणि)–पुराणानुसार एक रत्न जो समुद्र-मंथनके समय मिला था और जिसको विष्णु अपने वक्ष स्थल पर धारण करते हैं । आसुर–असुर राक्षस । भांजण–नाश करनेको नाश करने वाला । तण (तनय)–पुत्र । धनौ–धन्य-धन्य । जन–भक्त । तारण–उद्धार करने वाला । सामै–करते हैं । पय–चरण । बंदगी–सेवा टहल । सुरेसर–इन्द्र । प्रमणै–वर्णन करते हैं । अह–शेषनाग । सिम–संभु, महादेव । दुजेसर–द्विजेश्वर, महर्षि ।

'किसन' कहै कर जोड़ क्वेसर।
नमौ रांम रघुवंस नरेसर ॥ ५०

अथ मुणाळ नांम गीत सावझड़ौ लछण

दूहौ

आद चरण अट्ठार मत, सोळह अखर सचाळ।
जोण सगण तुक अंत जिण, सुण सौ गीत मुणाळ ॥ ५१

अथ मुणाळ नांम गीत उदाहरण

घैघींगर कवम आवळा घरतौ।
झड़ बरसात जेम मद झरतौ ॥
सुज आयौ जळ पीवण सरतौ।
करणी जूथ बीच सुख करतौ ॥
मैंगळ कुटंब सहत उनमतरै।
आव हिलोळ चोळ की अतरै ॥
धूम सुणै चख आग धकतरै।
जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै ॥
चख मिळ विहूं हुवौ चख-चढ़यौ।
जोम अथाग जाग उर जुड़यौ ॥

---

१ क्वेसर—कवीश्वर।

५१ आद—आदि प्रथम। अट्ठार—अठारह। मत—मात्रा। अखर—अक्षर, वर्ण। जिण—जिस। सुण—कह।

५२ घघींगर—हाथी। आवळा—विकट। घरतौ—धारण रखता हुआ। झड़—छोटी-छोटी बूंदकी निरंतर होने वाली वर्षा। जेम—जैसे। झरतौ—टपकता हुआ चपता हुआ। सुज—वह। सरतौ (सरिता)—नदी। करणी—हथनी। जूथ—यूथ झुण्ड। करतौ—करता हुआ। मैंगळ—हाथी। सहत—सहित। उनमत—उन्मत्त मस्त। आव—जल। हिलोळ—विलोड़ित कर। चोळ—क्रीड़ा। अतरै—इतनेमें। धूम—कोलाहल। चख (चक्षु)—नेत्र। आग—अग्नि। धकतरै—प्रज्वलित होते हैं। जाजुळ—भयंकर। जतरै—जितनेमें। विहूं—दोनों। चख-चढ़यौ—कोपसे लाल नेत्र। जोम—जोश आवेश। अथाग—अपार। जुड़यौ—भिड़ना टक्कर लेना।

बिहुं वां नह सुघौ थाहुड़यौ ।
भारथ हुवौ ग्राह गज भड़यौ ॥
कर अब सहंस वरस भारथकौ ।
जोर टूट बीछड़वौ जुथकौ ॥
भुज बळ बघ जळ ग्राह समथकौ ।
थळचारी जिण हुं गज वियकौ ॥
चौवळ ग्राह तंत गज चरणां ।
जकड़ डबोयण खंच जबरणां ॥
बे आंगुळ जळ सूंड उबरणा ।
करी करी हरिहूंता करणा ॥
दीन पुकार स्रवण सुण हसती ।
तज कमळा पाळा करत सती ॥
आतुर चक्र ग्राह हण असती ।
हरि ग्रह हाथ तारियौ हसती ॥
असरण दीन दुखित ऊपररौ ।
घू धारण झेलौ गिरधररौ ॥
कीजंतां ऊपर निज कररौ ।
बिरद हुवौ जुग जुग रघुबररौ ॥ ५२

५२ बिहुवां—दोनों। सुघौ—सीधा। थाहुड़यौ—वापिस मुड़ना वापिस आना या होना। भारथ—युद्ध। भड़यौ—टक्कर, टक्कर लेना। अब—वर्ष। बीछड़वौ—दूर होना। भुज (भुज)—मुख्य। समथ—समर्थ। थळचारी—स्थलचारी। जिण—जिस। हुं—से। वियकौ—व्यथा-पूर्ण पीड़ित दुखी। चौवळ—चारों ओर। तंत—तंतु। जकड़—बांध कर। डबोयण—डुबानेको। खंच—खींच कर। जबरणा—जबरदस्तीसे बलात्। बे (ह)—दो। आंगुळ—उंगली। उबरणा—बची। करी—हाथी। करी—की। हरिहूंता—ईश्वरसे। करणा (करुणा)—आर्त पुकार। दीन—आर्त करुणापूर्ण। स्रवण—कान। हसती—हाथीकी। कमळा—लक्ष्मी। पाळा—पैदल। आतुर—तेज। हण—मार कर। असती—ग्राह। धू-धारण—निश्चय। झेलौ—सहारा मदद।

दूहो

धुर टगणीगह कलहधर, अन तुक मोळह ठाह ।
गण जिण अंतह करण गण, मीं जयवंत सराह ॥ ५३

अथ गीत जयवत सावभड़ी उदाहरण

गीत

तीकम पाळगर जन दवतरो सी ।
रात दिनों मुख नांम रटो सी ॥
ममण धाम कीनाम सरो मी ।
भारी राघवतणो भरोसी ॥
जोय ग्रंघ कपि कागजि सारै ।
द ठग सखरी गोहद मारै ॥
धं विसवास राख मन धारै ।
सोमळियो जन नीज उमारै ॥
गाढो प्रमन रहै जस गायां ।
याधारै इजन विरदायां ॥
उणी नहीं अरक दिन आयां ।
गीतारा भूनें मरणायां ॥
पग प्रहलादतणो प्रनपाळी ।
वड घू आनी रिया दनमाळी ॥

तीकम करै तीसरी ताळी ।
वाहर नाथ अनाथां वाळी ॥ ५४

अथ वडा सांणोर आद सप्त गीत निरूपण

अथ गीत वडा सांणोर लछण

चौपई

घुर तुक कळ तेवीसह घार, विखम वीस सम सतर विचार ।
लघु गुरु मोहर क दु गुरु मिळाय, सौ प्रहास सांणोर सुभाय ॥ ५५
वीस विखम तुक सम दस आठ, पात गुरु लघु मोहरै पाठ ।
समभ्र सुघ सांणोर सकोय, जिण मोहरै गुरु लघु कवि जोय ॥ ५६
सुज मिळ सुध प्रहास सुजांण, वडौ जिकौ सांणोर वखांण ॥ ५७

वारता

कठै'क लघु तुकंत दवाळी कठै'क गुरु तुकंत दवाळी आवै । सुद्ध नै प्रहास सांणोररा दवाळा भेळा आवै सौ वडौ सांणोर कहावै ।

अथ गीत वडौ सांणोर उदाहरण

गीत

करी चूर कुळ सुभावहूंत सादूळ कहू,
विधु नखित्र सोम भरपूर सरसै ।
कमळ-भवहूंत कहजै दूजां नर कुळ,
सूर कुळ दासरथहूंत सरसै ॥

---

५४ तीकम (त्रिविक्रम)—श्रीकृष्ण विष्णु । वाहर—रक्षा ।

५५ विरूपण—विवेचन निर्णय विचार । घुर—प्रथम पहिले । तुक—पदका चरण । कळ—मात्रा । तेवीसह—२३ । घार—रख । विखम—विषम । सतर—सतरह ।

५६ मोहरै—पदके द्वितीय और चतुर्थ चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल ।

५७ सकोय—सब । कठै'क—कहीं ।

५ करी—हाथी । चूर—ध्वंस नाश । सादूळ (सार्दूल)—सिंह । विधु—चंद्रमा । नखित्र—नक्षत्र । सोम—कांति दीप्ति । कमळ-भवहूंत—ब्रह्मासे । दूजां (द्विजां)—ब्राह्मणों । सूर कुळ—सूर्यवंश और पुरुषोंका वंश । दासरथहूंत—श्रीरामचंद्रसे । सरसै—शोभा पाता है ।

सिघां-सुत गंग अगाभंग साहसीयां ,
सुज अजन सिघा यर नसियां साथ ।
हर दियै श्राय यट सिघां श्राहंसियां ,
निपट रवि-वंसियां श्राय रघुनाथ ॥
सह तरां रूप कळविरछ अखै सकळ ,
थरू दुत मेर सिखरां अथावौ ।
नगां श्राकरतणौ रूपहर मणी निज ,
रूप कुळ दिवाकरतणौ राबौ ॥
सुरा-सुर नाग नर अडग राखण सरण ,
घरण घानंख दुरब्रहरण सुख-घांम ।
सूर कु हेळक दुत करण अचरज किर्त ,
राज त्रिभुवण प्रभा करण रघु-रांम ॥ ५८

अथ सुद्ध सांणोर गीत लछण

दूहा

तेवीसह मत पहल तुक, बी श्रठार ती बीस ।
चौथी तुक श्रठार चव, लघु गुरु अंत लहीस ॥ ५९
बीस श्रठारह क्रम अवर, दूहां मांझळ दाख ।
गीत सुध सांणौर गण, सौ श्रह पिंगळ साख ॥ ६०

वारता

सुध सांणोररै पैली तुक मात्रा २३ तुक दूजी मात्रा १९ तुक तीजी मात्रा बीस तुक चौथी मात्रा १८ पछै दूजा सारा ई दूहांरी पैली तुक मात्रा बीस दूजी तुक मात्रा १८ होवै ।

---

५८ निपट—बहुत पवित्र । स्राब—कांति दीप्ति । सह—सब । तरां—तरुओं वृक्षों । कळविरछ—कल्पवृक्ष । अखै—कहते हैं । सकळ—सब । मेर—सुमेरु पर्वत । अथावौ—यह जिसकी सीमा का थाह न हो बहुत बहुत ऊंचा । दिवाकरतणौ—सूर्यका वाकुरा । राबौ—श्रीरामचन्द्र भगवान । अचरज—आश्चर्य । प्रभा—कांति दीप्ति ।

५९ मत—मात्रा । पहल—प्रथम । बी (द्वि)—दूसरी । ती—तीसरी । चव—चार ।

६० दूहां—गीत इसके चार चरणों का समूह । मांझळ—मध्य में । दाख—कह । श्रह-पिंगळ—पिंगनाग । साख—साखी ।

गीत सुध सांणोर उदाहरण (गीत आठ सतसर)

गीत

अडग तेज अणथघ सरद ध्यांन स्रु ति आसती ,
नीम वर कार कळ जोग जप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय चंद सुध नीत घट ,
मेर रवि समंद चंद भव ब्रहम रांम ॥
भूमंडळ पाज नभ सिखर पुर उवर भव ,
गुरत दुत गहर मुद कोप छवि गाथ ।
रिख रिखी रिख उदध त्रिहम कंज दासरथ ,
नाग खग दघ हरी हर विरंचनाथ ॥
देव चक हंस वध सिष दुज जन अनंद ,
खग ग्रह कंम गण विप्र अवनीस ।
सद्रढ आतप अथग हेम सिघ मेघ सत ,
अद्र हरि सिंघ निसय सिव दुहित ईस ॥
विबुध कंज मीन तर भूप जग सेवगा ,
अमै मुद मुख अनंद वर अखय आथ ।
हेम गिर भांण सुध चंद खय ब्रहम ,
हं निज जनां पाळगर अधिक रघुनाथ ॥ ९१

अथ अरथ

सुध सांणोर गीतरै आदरी तुक मात्रा २३ तेवीस होवै । तुक दूजी मात्रा १८ अठारै होवै । तुक तीजी मात्रा २० वीस होवै । तुक चौथी मात्रा १८ अठारै होवै । गीतकै अतमे लघु होवै और दूहा मात्रा पसी तुककी मात्रा २० तुक दूजी मात्रा १८ तुक तीजी मात्रा २० तुक चोथी मात्रा १८ ई प्रकार होवै सो सुध सांणोर गीत कहीजै । यो गीतकी संबो पत्र गीतकी सतसर बात छै जीसू अरथ लगा छां ।

९१ सतसर—बडौ सांणोर प्रहास सांणोर आदि गीतोरी मना विसेष । हं—मै ।

पहला बूहाको प्ररथ

सुमेर १। सूरध २। समुद्र ३। चंद्रमा ४। सिव ५। ब्रहमा ६। हुर सातमा। श्रीरांमचंद्र १। सुमरको अडगपणो १। सूरधको तेजपणो २। समुद्रको अथागपणो ३। चंद्रमाको सीतळपणो ४। सिवको ध्यांनपणो ५। ब्रहमाको वेद धारणपणो ६। श्रीरांमचंद्रको आस्तीकपणो ७। १ सुमरकी नीम ब्रढ। सुरजको वर ब्रढ। समन्दकी कार द्रढ। चंद्रमाकी कळा द्रढ। सिवको जोग द्रढ। ब्रहमाको तप द्रढ। रांमचंद्रको नांम नहचळ २। सुमेर २। सुमर थिरपणाने धारण करै। सूरध प्रमाने धारै। समुद्र जळनै धारै। चंद्रमा अम्रत धारै। सिव चंद्रमा धारै। ब्रहमा बुध धारै। श्रीरांमचंद्र नीत धारै। ३

दूजा बूहाको प्ररथ

सुमेर जमी पर रहै। सूरध मंडळमें रहै। समद पाजमें। चंद्रमा आसमांनमें रहै। सिव सिखर कैळास रहै। ब्रहमा ब्रहमलोकमें रहै। श्री रांमचंद्र सिवका हृदामें रहै।१। सुमरकी गुरता। सूरजकी दुती। समंदको गहरापणो। चंद्रमाको आणन्दपणो। सिवको कोप। ब्रहमाकी खिमा। रांमचंद्रजीको जस गाथा। सुमरको पिता कस्यप रिखी। सूरधको पिता कस्यप। समदको पिता कस्यप। चंद्रमाको पिता समद। सिवको पिता ब्रहमा। ब्रहमाको पिता कमळ। रांमचंद्रजीको पिता राजा दसरथ। ३

तीजा बूहाको प्ररथ

सुमर दवसाने सुखदाई। सूरध चकवाने। समद हंसाने। चंद्रमा कुमोदनीनै। सिव सिधांने। ब्रहमा ब्राहमणांनै। स्री रांमचंद्र सतांने सुखदाई।१। सुमर परवतांको राजा। सूरध ग्रहांको राजा। समुद्र जळको। चंद्रमा रिखमक्हुवां तारागण छत्रांको। सिव गणांको। ब्रहमा द्विजांको। स्री रांमचंद्र राजांको राजा।२। सुमरको मुढडपणो। सूरधको तप। समुद्रको अथागपणो। चंद्रमाको सीतळपणो। सिवको सिद्धपणो। ब्रहमाको मधाबुधपणो। स्री रांमचंद्रको सतपणो। ३

---

१ ब्रहमा—ब्रह्मा। हुर—वीर। अडगपणो—स्थिरत्व या अग्मत्व। तेजपणो—तेजत्व। अथागपणो—असीम गहराई। सीतळपणो—शीतलता धैर्य। आस्तीकपणो—आस्तिकता। कार—मर्यादा। ब्रहमाको—ब्रह्माका। नहचळ—निश्चल अटल थिरपणा—स्थिरत्व। नीत—नीति।

२ पाज—मर्यादा सीमा। हृदा—हृदय। गहरापणो—गहराई। आणंदपणो—आनंद। खिमा—क्षमा।

३ सुखदाई—सुख देने वाला। ब्राहमणांनै—ब्राह्मणोंको।

चौथा दूहाको श्ररथ

सुमेर विबुध देवतानै श्रर्भै दै। सूरय कमळानै मोद दै। समुद्र मीनानै सुख दै। चन्द्रमा कळा भठार भार बनास्पतीका वळानै आणंद दै। सिव रावानै बर दै। ब्रहमा जगतनै मळै वर दै। स्री रामचन्द्र सतांन स्राप दै। दोई तुकांको श्ररथ मेळौ।२। सुमेर १। सूरय २। समद ३। चन्द्रमा ४। सिव ५। ब्रहमा ६। यां छह्रौ देवतां बचै स्री रांमचंद्रमें सतांसू दीनदमाळपणौ सरणाई साधारपणौ श्रधिक। इति श्ररथ। ४

श्रथ गीत दूजा प्रहास सांणोररौ लछण

दूहौ

धुर तुक मत वेवीस धर, सतर बीस सतरास्य।
बीस सतर गुरु श्रंत बे, सौ जांणजे प्रहास ॥ ६२

श्ररथ

पैली तुक मात्रा २३। दूजी तुक मात्रा १७। तीजी तुक मात्रा २ । चौथी तुक मात्रा १७। तुकांत दोय गुरु श्रखिर श्रावै पछै सारा दूहा मात्रा पैली तुक २ । दूजी तुक मात्रा १७। तीजी तुक मात्रा २०। चौथी तुक मात्रा १७ होवै जिण गीतरौ नांम प्रहास सांणौर कहै छै।

श्रथ गीत प्रहास सांणौर उदाहरण

धांणकथ बेसियौ जिणमें भाद श्रभारौ बरण छै।

गीत

सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिघ,
मौज कव्ि वखांणै चंदनांमा।
बुध गिरा राम हयवाह रिम वखांणै,
वखांणै काछवदपणौ बांमा ॥

---

४ विबुध—देवता। ग्रभै—ग्रभय निर्भयता। दै—देता है। मोद—ग्रानंद। मीनां—मछियों। भ्रलै—प्रलय। भ्राव—बल पौरुष। सेतौ—साथ यां—इन। बचै ग्रपेक्षा। सरणाई साधारपणौ—शरणमें ग्राए हुएकी रक्षा करनेका कर्तव्य।

६१ मौज—दान। कवि—कवि। चंदनांमा—यश कीर्ति। बुध—पंडित। गिरा—वाणी। हयवाह—ग्रस्त्र-प्रहार। रिम—शत्रु। वखांणै—प्रशंसा करते हैं। काछवदपणौ—जितेन्द्रियता संयमशीलता। बांमा—स्त्री।

कोपिया वाळ सुगरीव छंडे कळह,
घरोघर भटकियौ विपत धायौ।
पांण ग्रह रांम कहि मित्र अपणावर्तां,
पय सरण आवर्तां गज पायौ॥
धन पिता हुकम जुत सिया चव्रदह बरस,
एक आसण सयन जोग जगीयौ।
धण मिनां चलै मन रांम सह त्रिया धन,
द्रढ मदन ताप मन निकं डिगीयौ॥
अजसै कनक भूखण पहर नूप अवर,
कनकमें विधाता त्रकुट कीधी।
लहर हिक सरण हित भभीखण रंक लख,
दांन गढ लंक अणसंक दीधी॥
स्रुत समृत छंद खट पंच नव संपूरण,
भेदगर ध्यार दस बोध भाळी।
अरथ जुत सोलवौ हेळ बीजा 'अजा',
वेळ अम्रततणा उदधवाळी॥
दासरथ सुजस नव खंड जाहर दुभ्रल,
करां भुजदंड वाखांण केहा।

११ वाळ–बालि बंदर। कळह–युद्ध। घरोघर–प्रत्येक घर। भटकियौ–भ्रमण किया। धायौ–पीड़ित हुआ। पांण–हाथ। अपणावर्तां–अपना बनाने पर। पय (पाद)–चरण। पायौ–प्राप्त किया। जुत–युक्त। सिया–सीता। सयन–सोना। धण–अर्द्धांगिनी। सह–साथ। त्रिया–स्त्री। मदन–कामदेव। निकं–नहीं। अजसै–धर्म करते हैं। कनक–स्वर्ण सोना। भूखण–आभूषण। अवर–अन्य। विधाता–ब्रह्मा। त्रिकुट–लंका स्थित एक पर्वत अथवा लंका का एक नाम। कीधी–की किया। भभीखण–विभीषण। रंक–गरीब। लख–देख कर। अणसंक–निर्भय। दीधी–दी। स्रुत (स्रुति)–वेद। समृत–स्मृति। भेदगर–भेद जानने वाला अथवा पता लगाने वाला। बोध–विद्या। भाळी–देखी। वेळ–लहर। उदध (उदधि)–सागर। दासरथ–दाशरथि भगवान। जाहर–जाहिर। दुभ्रल–वीर। केहा–कैसा।

जुधां टंकारिया धनख राघव ज तैं ।
जारिया दुसह दहकंध जेहा ॥
पाय वय जोर बुध रूप नृपता प्रसिध ,
नयण लग्न छटा नाता अनाता ।
जांनुकी विना तरणी अवर जिकांन ,
मुणी वेटी वहन काय माता ॥
दखनो छहे निष 'सगर' 'हरचंद' दुवा ,
सौगुणौ अधिक अहनिस सुभावै ।
गंम असरण सरण भूप गुण राजरां ,
पार सीतारमण कमण पावै ॥ ६३

अथ छोटा सांणोर लछण

दूहा

कहजे गुरु माहरा कठै, वण कठैक लघुवंत ।
सुज छोटा सांणोर सौ, कवि मत ग्रंथ कहंत ॥ ६४
भेद च्यार जिणरा भणौ, आद वनियौ अक्ख ।
कवी साहणौ २ सुद्दद ३ कह, वळ जांगड़ो ४ त्रिमक्ख ॥ ६५

अथ गीत मिस्र वेलिया लछण

दूहो

समिळ वनियौ साहणौ, सफ फिर सुद्दद समेळ ।
मिस्र वनियो कवि मुणै, भळ जांगड़ो न मेळ ॥ ६६

६३ [illegible]

६४ [illegible]

६५ [illegible]

६६ [illegible]

अरथ

वेलियो १ । सोहणो २ । खुडद ३ । तीन ही गीत मेळा बणै जिण गीतरौ नांम मिस्र वेलियो कहीजै । यां मेळी आंगडारी ग्रहौ बणै नहीं नै बणै तौ बात विरोध दोस कहीजै । यूं सारी समझ लेणी ।

अथ गीत मिस्र वलियो उदाहरण

गीत

वूडतौ सरवर पील उबारे ,
गुणतै वेद उचारै गाथ ।
घना नांम दे सदना उबारे ,
नेक जनां तारे रघुनाथ ॥
गणका अजामेळ सबरीगण ,
दुख अघ ओघ मिटाय दिया ।
किता अनाथ सुनाथ कृपा कर ,
कोसळराज-कुंवार किया ॥
सीता हरण भभीखण रविसुत ,
लख जटाय कोसिक मिथळेस ।
हेर हेर लज रखी हुलासा ,
पणियप कर दासा अनघेम ॥
रख जन अभै ग्रास जम हरणा ,
सुज ऊधरणा जगत सहै ।

१७ बूडतौ–डूबता हुआ । सरवर–सरोवर तालाब । पील (सं पील)–हाथी । उबारे–बचाया । घना–एक हरि भक्तका नाम । नांमदे–एक भक्तका नाम । सदन–घर । सधना–एक कसाई जो ईश्वरका परम भक्त था । अजामेळ–अजामिल नामक एक कन्नौज निवासी ब्राह्मण जिसने आजीवन न तो कोई पुण्य कार्य किया और न ईश्वराधन । इसके पुत्रका नाम नारायण था । कहते हैं कि मृत्यु समय इसने अपने पुत्रको नाम लेकर बुलाया था कि भगवानके नामका पर्याय था और इसीसे इसकी सद्गति हो गई । सबरी–शबरी भिल्लनी जो राम भक्त थी । अघ–पाप । ओघ–समूह । किता–कितने । भभीखण–विभीषण । रविसुत (रविसुत)–सुग्रीव । जटाय–जटायु नामक गिद्ध । कोसिक–विश्वामित्र । मिथळेस–राजा जनक । पणियप–[illegible] हुआ अहरवासी । त्रास–भय ।

सं पी सरम चरण तौ सरणा ,
करुणानिध कवि 'किसन' कहै ॥ ६७

गीत वेलिया सांणोर लछण

दूहा

मुण धुर तुक अठार मत, बीजी पनरह भेस ।
तीजी सोळह चतुरथी, पनरह मता पेस ॥ ६८
सोळह पनरह अन दुहां, गुरु लघु अंत मखांण ।
कहै ऐम सुकवी सकळ, जिकौ वेलियौ जांण ॥ ६६

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा १८ होय दूजी तुक मात्रा १५ होय तीजी तुक मात्रा १६ होय चौथी तुक मात्रा १५ होय । दूजा सारां दूहां मात्रा १६।१५।१६।१५। तुकके अंत आवे गुरु अंत लघु आवे जिण गीतरौ नांम वेलियौ सांणोर कहीजै ।

अथ गीत वेलिया सांणोररौ उदाहरण

गीत

ओयण जे रांम स्रीया नित अरचै ,
सुज चरणौं सिव ब्रहम सकाज ।
जग अघ हरण सुरसुरी जांमी ,
राज तणा चरणां रघुराज ॥
धाय मुनेस सेस सिर धारै ,
निज सिर जिकां सुरेस नमाय ।

६७ करुणानिध–करुणानिधि । कवि–कवि ।

६८ मुण–कह । धुर–प्रथम । अठार–अठारह । मत–मात्रा । बीजी–दूसरी । भेस–वेश । तीजी–तीसरी । चतुरथी–चौथी । मता–मात्रा । पेस–वेश ।

६६ अन–अन्य । मखांण–कह ।

७ ओयण–चरण । स्रीया (स्री)–लक्ष्मी सीता । अरचै–पूजा करती है । हरण–मिटाने वाला । सुरसुरी–गंगा नदी । जांमी–पिता । मुनेस (मुनीश)–महर्षि । सुरेस–इन्द्र ।

जोतसरूपतणा आगर जस ,
पोत रूप भव सागर पाय ॥
गायस अरच चींतव सुख गेहां ,
मत छोडै नेहा मतमंद ।
जग दुख हरण सरण जग जेहा ,
ऐहा रांम चरण अरव्यंद ॥
नाथ अनाथ दासरथ नंदण ,
स्री रघुनाथ 'किसन' साधार ।
कदम पखी अपखी अर्थां काळा ,
अबखी पुळसाळा आधार ॥ ७०

अथ चौथा सूहणा सांणौरको लछण

दूहौ

धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद लघु गुरु मोहर, जांण सोहणौ जेण ॥ ७१

अरथ

धुर कहतां पहली तुक मात्रा १८ अठारै होय। दूजी तुक मात्रा १४ चवदै होवै। तीजी तुक मात्रा १६ सोळै होवै। चौथी तुक मात्रा १४ चवदै होवै। पछै दूजा दूहा मात्रा १६ सोळै १४ चवदै इ क्रम होवै जीके मांय लघु अंत गुरु तुकांत होय जी गीतनै नांम सोहणो सांणोर कहै छै।

---

७० जोतसरूपतणा ज्योतिस्वरूपका। आगर-घर। पोत-जहाज नाव। भव-संसार। अरच-पूजा कर। चींतव-स्मरण कर। नेहा-स्नेह। मतमंद (मतिमंद)-मूर्ख। हरण-हरण वाला। जेहा-जैसा। ऐहा-ऐसा। अरव्यंद (अरविंद)-कमल। दासरथ-दशरथ। नंदण-पुत्र। साधार-रक्षक सहायक। पखी-वह जिसका कोई पक्ष करने वाला हो। अपखी-वह जिसका कोई पक्ष करने वाला न हो। अबखी-विषम कठिन। पुळ-समय।

७१ धुर-प्रथम। तुक-छंदका चरण। मह-में। अठार-अठारह। मत-मात्रा। चवद-चौदह। चवदेण-चौदहमें। मोहर-छंद विशेष और अन्तमें वर्णोंका परस्पर मेल। जेण-जिसमें। दूजी-दूसरी। तीजी-तीसरी। कहै-कहता। दूजा-दूसरा। इं-इस। जीके-जिसके। जी-जिस।

अथ सोहणा गीत उदाहरण

गीत

पंचाळी बेर बधायौ पल्लव करतां टेर सिहाय करी ।
समरथ भीखम पैज साहियौ हाथ चरण रथतणौ हरी ॥
तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ पाया बिलकुल मरे पुसी ।
बिदुरतणी भगती हित बाधा खाधा केळा छोत खुसी ॥
गोपी चित राचियौ गोव्यंद ब्रंदावन नाचिया बळी ।
धरियौ पद चौरस गिरधारी गौरस कारण गळी गळी ॥
समरथ बिरुद लोक ग्रहै सांमी पुणां भांमी समथ्थपणौ ।
जन सादवियौ अंतरजांमी घणनांमी आसनौ घणौ ॥ ७२

अथ पांचमा गीत पूणिया सांणौर न जांगडा सांणौर लक्षण

दूहौ

दै मत्ता धुर आठ दस, बार सोळ मत बार ।
गिण तुकंत जिण दोय गुरु, औ जांगड़ौ उचार ॥ ७३

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा अठार होय । तुक दूजी मात्रा बारै होय । तुक तीजी मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा बारै होय । पछै दूजा दूहा मात्रा तुक पैहली सोळह । तुक दूजी मात्रा बारै । तुक तीजी मात्रा सोळै । तुक चौथी मात्रा बारै । सोळै बारै ई क्रमसूं होय । तुकांतमें दोय गुरु आविर आवै जीं गीतको नाम पूणियौ सांणौर कहीजै मै यण पूणियानै जांगड़ौ पण कहै छै ।

७२ पंचाळी–द्रोपदी । बेर–समय । बधायौ–बढ़ाया । पल्लव–चीर अंचल । टेर–पुकार । सिहाय–सहायता । भीखम–भीष्मपितामह । पैज–प्रण । साहियौ–धारण किया । सदांमा–सुदामा । तंदुळ–चावल । पाया–भोजन किये खाये । पुसी–पसर । छित–निपै । खाधा–खाय । छोत–छिलका । राचियौ–रंग गया लीन हुआ । गोव्यंद–गोविंद । बळी–फिर । गौरस–दूध दही । कारण–लिए । गळी–वीथि । पुणां–कहता हूं । भांमी–न्योछावर बलैया । समथ्थपणौ–समर्थत्व । सादवियौ–पुकारा सुनकर आर लिया । घणनांमी–जिनके अनेक नाम हों । आसनौ–आश्रय सहारा । घणौ–बहुत अधिक ।
७३ दै–देते हैं । मत्ता–मात्रा । धुर–प्रथम प्रारंभम । बार–बारह । सोळ–सोलह । मत–मात्रा । बार–बारह ।

अथ गीत पूमियौ तथा सांगड़ौ सांणौर उदाहरण

गीत

कैटभ मधु कुंभ कबंध कचरिया, संख संभ सारीसै ।
खळ अवगाढ अनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै ॥
रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गंजे कंण गिणावै ।
खांत लगे केता खळ खाधा, वळै दांत वहजावै ॥
हरणाकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा के फिर खासी ।
तोपण भूख न गी तिण ताबौ, मावौ खाय उम्रासी ॥
प्रसण मार रख संत सहीपण, राघव जीपण राड़ा ।
निज हेकल घापियौ न दीसै, जे खळ पीसै जाड़ा ॥ ७४

अथ छठौ गीत सोरठियौ सांणौर जींको लछण

दूहौ

मत अठार धुर तुक अवर, दस सोळह दस देह ।
सोळह दस अन अंत लघु, जप सोरठियौ जेह ॥ ७५

---

७४ कैटभ-मधु नामक दैत्यका छोटा भाई जिसका विष्णुने संहार किया। मधु-कैटभ नामक दैत्यका अग्रज जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था। कुंभ-रावणका भाई कुंभकर्ण। कबंध-एक असुरका नाम जिसका संहार रामचन्द्रजीने किया था। कचरिया-ध्वंस किए। संख-एक असुरका नाम। संभ-एक असुरका नाम। सारीसै-समान। अवगाढ-[illegible]। खाया-संहार किये ध्वंस किये। दाढ पीसतौ-क्रोधमें दांतोंको कटकटाता हुआ दांत पीसता हुआ। रांमण-रावण। इंद्रजीत-रावणका पुत्र मेघनाद। खर-एक राक्षसका नाम जो रावण तथा सूर्पणखाका भाई कहा जाता है। दूखर-एक राक्षसका नाम। गंजे-नाश किये पराजित किये। कंण-कौन। गिणावै-गिना करता है। खांत-ध्यान। केता-कितने। खाधा-नाश किये ध्वंस किये। वळै-फिर। दांत वहजावै-दांतोंको क्रोधमें कटकटाने हुए ध्वनि करता है क्रोध प्रकट करता है। हरणाकस्यप-हिरण्यकशिपु एक दैत्यराज जो प्रह्लादका पिता था। हैमुख-हयग्रीव भागवतके अनुसार एक विष्णुके अवतारका नाम इसका वध विष्णुने मत्स्यावतार धारण किया और वेदोंका उद्धार किया। हरणायख-हिरण्याक्ष नामक असुर जो हिरण्यकशिपुका भाई था। के-कई। खासी-ध्वंस करेगा नाश करेगा। तोपण-तो भी। ताबौ-ईश्वर। उम्रासी-अघाई। प्रसण-शत्रु दूर। रख-ऋषि। संत-साधु। सही-पूराम। जीपण-जीतने वाला। राड़ा-युद्ध। हेकल-रण घोषणा। घापियौ-दबाया। पीसै जाड़ा-क्रोधमें दांत कटकटाता है।

७५ मत-मात्रा। अठार-अठारह। धुर-प्रथम। देह-दे दीजिए। अन-अन्य। जेह-जिसको

अरथ

जिणरै आवरी तुक मात्रा अठारै होय तुक दूजी मात्रा दस होय। तुक तीजी मात्रा सोळह होय। तुक चौथी मात्रा दस होय। दुजा सारांई दूहांमें पैसी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा दस। इण क्रम होवै। तुकंत लघु आखिर होवै जीं गीतको नांम सोरठियौ सांणोर कहीजै।

अथ गीत सोरठिया सांणोरको उदाहरण

गीत सोरठियौ

आलम हाथरौ रखुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक।
दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक॥
अभीखण सरण आय भूधर, महर कर मनमोट।
धुरधमळ बवियौ धनख-धारण, कनकवाळौ कोट॥
भयभीत कंपत सीसदस भय, दीन देख निदांन।
अबखेस दाटक दियौ आचां, दुरंग हाटक दांन॥
निरवहण 'किसना' सरम नहचै, असुर वहण असेस।
सारवा दासां कांम समरथ, निमौ रांम नरेस॥ ७६

अथ सातमो गीत वडव छोटौ सांणोर लखण

दूहौ

धुर मत्ता अठार धर, अवस सोळ अवसेण।
दु लघु अंत सांणोर लघु, जप खुड्‌द किव जेण॥ ७७

---

७४ आवरी–प्रारम्भरी। दूजी–दूसरी। तीजी–तीसरी। दुजा–दूसरे। सारांई–सब ही दूहां–इनको गीत छंदके चार चरणके समूहों। इण इस। आखिर–अक्षर। जी–जिस

७६ आलम–उदार ईश्वर। अचरिज–आश्चर्य। गहर–गंभीर। दीधी–दे दी। हेकण–एक। अभीखण–विभीषण। भूधर–ईश्वर। महर–कृपा। मन-मोट–उदार। धुर धमळ–अग्रगामी। बवियौ–दान दिया। धनख-धारण–धनुषधारी श्रीरामचन्द्र भगवान। कनक–सोना। सीसदस–रावण। दाटक–महान। आचां–हाथों। हाटक–स्वर्ण सोना। सारवा–सफल करनेको सिद्ध करनेको। दासां–भक्तों।

७७ मता–मात्रा। अवस–तेरह। सोळ–सोलह। अवसेण–तेरह। किव–कवि। जण–जिस

अथ अन्य प्रकार गीत पाठ वरणण

वारता

विधानीक गीत बड़ौ सांणौर होवै । विधान कह्यौ भावै सर कह्यौ सौ ६ सर सत्त सर री लघु सांणौर होवै नहीं । बड़ौ सांणौर होवै सो ई प्रथमें प्रथम सतसर तथा सप्त विधानीक गीत कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

इति विधानीक विधि सपूरण ।

अथ पाड़गत पाड़गती वरणण लछण

दूहा

धुर तुक अखिर अठार धर, चवद सोळ चवदेस ।
सोळ चवद अन अंत लघु, सौ सुपंखरौ सुदेस ॥ ७६

गुणी सुपंखरा गीतमें, वरणण नृत्य वखांण ।
कहियौ धुर पिंगळ सुकव, जिकौ पाड़ गति जांण ॥ ८०

अथ पाड़गती सुपंखरा उदाहरण

गीत

दड़ी पड़ंतां द्रहामें चढे झांकियौ कदंब डाळ ,
नीर थाघे अथाघ चढंतां याद नार ।
खेल्ह ग्वाळ दरै करंतां लगाड़ियौ खेटौ ,
काळी नाग जगाड़ियौ नंदरै कंवार ॥

---

७८. थाय—थाहे । ई—इस ।

७६ पाड़गत पाड़गती—सुपंखरा डिंगल भाषि गीतोंकी संज्ञा विशेष । धुर—प्रथम । तुक—चरणका चरण । अखिर—अक्षर । अठार—अठारह । चवद—चौदह । सोळ—सोलह । चवदेस—चौदह । अन—अन्य । सौ—वह । सुपंखरौ—गीत संज्ञा नाम कहीं-कहीं सुपंखरी भी लिखा मिलता है ।

८० गुणी—कवि पंडित ।

१ दड़ी—गेंद । द्रहामें नदीमें अधिक जल का गहराईके स्थानमें । झांकियौ—छलांग भरी कूदा उद्गम पर ऊपरके पदार्थको पकड़ । कदम—वृक्ष । थाघे—थाह लिया । अथाघ—अथाह अपार । खेल्ह—खेल । ग्वाळ दरै—ग्वाल-समूहके । खेटौ छलांग । कंवार—कुमार ।

फैल कोध चसमां कराळां आग भाळा फुणां ,
ताळा दे भुजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन ।
विरदाळा सिघाळा भड़ाळा जोध चाळावंध ,
जूटा बिहूं काळा नै मिचाळा जोरवांन ॥
कदंमां करगां घाव दाव व्हे अभूतकारा ,
उठै फूतकारा विखां फुणांरा अमाव ।
जेथ हरी बंध काळीसं घणा जोड़िया जकै ,
संध संध विछोड़िया नंदरै भुजाव ॥
मह्रा भुजंगेसनाथ समाथ खंडियौ मांण ,
खंभ ठौर भराथ तंडियौ जैत-खंभ ।
दंडियौ अदंड नीर उचाळां मिटाय दहे ,
रंजे मित्र फुणाटां मंडियौ नाटारंभ ॥
घू घू कटां धू कटां धू कटां घू घू कटां घार ,
ता धिना ता धिना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ ।
तायेई तायेई थेई थेई थेई ताता ,
गतां लै अहेस माथा नंदरौ गवाळ ॥

---

१ चसमां (चस्मां)—नेत्र। कराळां—भयंकर भयावह। आग-झाळा—अग्निकी लपट। ताळा—ताली करतानी। त्यूं—वैसे। गुपाळा—ग्वाले। तीरवान—तट पर खड़े। विरदाळा—विरुदधारी यशस्वी। सिघाळा—श्रेष्ठ। भड़ाळा—लड़ने वाला। चाळावंध—लड़ने वाला उत्पाती। जूटा—भिड़े। बिहूं—दोनों। जोरवान—शक्तिशाली। कदंमां—चरणों पैरों। करगां—हाथों। घाव—प्रहार। दाव—पैंतरा। अभूतकारा—अभूतपूर्व अनोखा। फूतकारा—सर्पके मुखकी आवाज। विखां—विषों। अमाव—अपार। संध—संधि। विछोड़िया—दूर किया। भुजाव—युद्ध। भुजंगेसनाथ—कालीनाग। समाथ—समर्थ। खंडियौ—खंडित किया मिटाया। मांण—गर्व मान। खंभ—भुजा बाहुमूलके ऊपरका भाग कंधा। ठौर—ठाक कर। भराथ—युद्ध। तंडियौ—जोशपूर्ण आवाजकी। जैत-खंभ—विजयी विजयस्तंभ। अदंड—जिसे कोई दंड न दे सकता हो। उचाळां—चिंता भय। रंजे—प्रसन्न कर। फुणाटां—सर्पके फनों। मंडियौ—रचना किया। नाटारंभ—नृत्य नाच। गतां—बाजोंके बजानेकी प्रणाली विशेष या नृत्यके नृत्यकी गति विशेष। अहेस—अहीश नागराज।

रंमां-झमां रंमां झमां रंमां झमां झमां रंमां,
ठमंकां रमंकां झमंका रमंकां ठमंक ।
पाड़गती गीत राधा रंजणा पयंपै प्रथी,
नाग घू संजणा निमो संगीत निसंक ॥ ८१

अथ त्रिवड़ तथा हेलो नांम गीत लछण

दूहा

आठ तीस मत पूरबअध, उतरारध अठतीस ।
तुक विहुं वै अध तेवड़ी, तेवड़ गीत तवीस ॥ ८२
पहली दूजी तुक मिळै, तीजी छठी मिळ त ।
मिळ चौथीसूं पंचमी, जस रघुनाथ जपंत ॥ ८३

अरथ

जी गीतके अठतीस मात्रा पूरवारध होय अर अठतीस ही मात्रा उतरारध होय । समान दो ही अरध होय। तीन तुक पूरवारध होय तीन तुक उतरारध होय । तेवड़ी तुकां होय । सारा दूहामें तुक छ होय । पैली तुककी तुकांत दूजी तुकसूं मिळै । तीजी तुक छठी तुकसूं मिळै । चौथी तुक पांचमी तुकसूं मिळै । तेवड़ी तुकां हर तेवड़ीई तुकांतको मिळाप जीसूं गीतको नांम त्रिवड़ अथ कहीजै । कोई कवि इण गीतनै हेलो पिण कहै छै ।

अथ त्रिवड़ तथा हेलो नांम गीत उदाहरण

गीत

रांम असरण सरण राजै ।
भेटियां दुखदुंद भाजै ॥

---

८१ रंमां-झमां-चलने या नृत्यके समय आभूषणोंकी होने वाली ध्वनि । ठमंकां-चलते समय या नृत्यके समय पैर रखनेका ढंग विशेष । रंजणा-प्रसन्न करने वाला । पयंपै-कहता है कहता है । घू-सिर, मस्तक । संजणा-करने वाला ।

८२ आठतीस-अड़तीस । पूरबअध-पूर्वार्द्ध । विहुंवै-दोनोंमें । तेवड़ी-तिगुनी तीन लहरा । तवीस-कहा जायेगा कहा जाता है ।

८३ दूजी-दूसरी । मिळै-मिलती है । जपंत-जपता है जपा जाता है । जीं-जिस । अर-और । मिळाप-मिलना । जीसूं-जिससे । पिण-भी ।

८४ राजै-शोभा देता है । भेटियां-मिलने पर । दुखदुंद-दुख-द्वन्द्व । भाजै-मिट जाते है ।

देव दीन दयाळ।
निरवहै व्रत हेक नारी, धींगपांण धनंखधारी।
प्रगट संतां पाळ॥
चुरस मारग नीत चालै, घाव मागां निकं घालै।
समरसं रस धीर॥
वीरवर दासरथ-वाळौ, कळह आसुर अंत काळौ।
बिरद धारण बीर॥
छत्रपत धनी मांण छंडै, खत्र रस्स हर चाप खंडे।
जांनकीवर जेण॥
राय हर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै।
मुणै जस प्रथमेण॥
तोयधी गिरराज तारे, प्रगट कर कपि सेन पारे।
रची लंका राड़॥
दसाणण घणराव दाहे, गहर कुंभ अरोड़ गाहे।
धींग राघव धाड़॥ ८४

८४ निरवहै–निभाता है। धींगपांण–समर्थ शक्तिशाली। धनंखधारी–धनुषको धारण करने वाला। पाळ–पालक रक्षक। चुरस–श्रेष्ठ। नीत–नीति। घाव–प्रहार वार। निकं–नहीं। समरसूं–युद्धसे। दासरथ-वाळौ–दशरथका। छत्रपत–छत्रपति राजा। धनी–धन्य। मांण–गर्व मान। छंडै–छोड़ देते हैं। चाप–धनुष। खंडे–खंडित किया। पण–प्रण। सूर–सूर्य। ससि–चन्द्रमा। रिख–ऋषि। साखै–साखी देते हैं। मुणै–कहते हैं वर्णन करते हैं। प्रथमेण–पृथ्वी भर। तोयधी (तोयधि)–समुद्र सागर। गिरराज–पर्वतराज। कपि–बंदर। सेन–सेना फौज। राड़–युद्ध। दसाणण–दशानन रावण। घणराव–मेघनाद इन्द्रजीत। दाहे–संहार किया। गहर–महान गंभीर। कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण। अरोड़–जबरदस्त शक्तिशाली। गाहे–नाश किया। धींग–समर्थ। धाड़–धन्य।

अथ बंकगीत वरण छंद लछण

दूहौ

च्यार जगणकी एक तुक, वरण छंद निरधार ।
चौ तुक मोती दांम मिळ, बंक गीत सु विचार ॥ ८४

अरथ

वीं गीतरी एक तुकमें च्यार जगण होय च्यार ही तुकमें बारै बारै अखिर होय। तुक प्रत च्यार जगण होय। अंत लघु होय। मोतीदांम छंदकी च्यार तुकरो एक दूहौ होय जींनै बंकमांमा गीत कहीजै।

अथ बंक गीत उदाहरण

गीत

न रूप न रेख न रंग न राग,
अपार न पार निधार अवार ।
अजेख अदेख अतेख अमेख,
अतारस तार सुसार असार ॥
अरेस असेस वहेस अभंग,
धरेस सुरेस नरेस सधीर ।
अरोड़ अमोड़ अबीह अलार,
निग्राह अग्राह चढै कुळ नीर ॥
सनीत सकीत सजीत सराह,
समाथ तिराय गिरंद समंद ।

---

८४ बारै–बारह। अखिर–अक्षर। प्रत–प्रति।

८५ निधार–आधारहीन। धरेस–पीपनाथ पवन। सुरेस–इन्द्र। नरेस–राजा। अरोड़–अतिदानी। अमोड़–नहीं मुड़ने वाला। अबीह–निडर निर्भय। समाथ–समर्थ। गिरंद पर्वत। समंद–समुद्र।

दयाळ नृपाळ सिधाळ ब्रदाळ ,
अरेह अनाट अछेह अमंद ॥
रमीस प्रमीस हुवै अवरीस ,
तवै जस आलम जेण तमांम ।
महा बळवांन अभंग महीप ,
रटो जन लाज रखै रघुरांम ॥ ८६

अथ त्रबंकड़ा गीतको लछण

दूहौ

धुर मत्ता अठार धर, सोळह तुक सरबेण ।
गिण तिण दोय तुकंत गुर, जप त्रंबकड़ौ जेण ॥ ८७

अरथ

जीं गीतकै पहली तुकमें मात्रा अठारा अर सारी ही तुकां मात्रा सोळा सोळा होय । तुकांत दोय गुरु अखिर होय जीं गीतनै त्रबकड़ौ कहीजै । पैली तुक अठारै होय अर बारली पनरैई तुकां मात्रा सोळै सोळै होय ।

अथ त्रंबकड़ा गीत उदाहरण

गीत

मुरझंता भाख 'किसन' महमाहण ,
प्रभु नित भीड़ साच पखा रे ।
ग्राह जिसा अधमां धींन्ही गत ,
तोनूं राघव कांय न तारै ॥

---

१ सिधाळ-श्रेष्ठ । ब्रदाळ-विरदधारी । तवै-स्तुति करते हैं वर्णन करते हैं । आलम-संसार । जेण-जिस ।

८७ धुर-प्रथम । मत्ता-मात्रा । अठार-अठारह । सरबेण-सब समस्त । बारली-पीछेकी । पनरैई-पन्द्रहही ।

८८ मुरझंता-मुझसे । भाख-कह । महमाहण-ईश्वर । भीड़-सहायता मदद । पखा-पक्ष । जिसा-जैसा । धींन्ही-दी । गत-मोक्ष । तोनूं-तुमको । कांय न-क्यों नहीं ।

रात दिवस भज रांम नरेसर,
पात राख नह्चौ मन पूरौ।
घूघारण कारण लख घूरौ,
उघारणरौ किसौ भ्रणूंरौ ॥
पे जम नांम तणौ तन सज कर,
भै जमह् डग डर मत भाजै।
किया सुनाथ ह्राथ भ्रह केतां,
श्रीठळनाथ भ्रनाथां वाजै ॥
जम दळ वटपाड़ौ वह जासी,
धासी नहीं विगाड़ौ थारै।
जगपत निस दिन नांम जपंतां,
संता सारा काज सुधारै ॥ ८८

अथ गीत चौटियाळ लछण

दूहौ

सुज प्रहास सांणोररै, दस मत भ्ररध सिवाय।
मेल दोय पूरब उतर, चौटियाळ गुण चाय ॥ ८९

भ्ररथ

चौटियाळ गीत प्रहास सांणोर होवै जींकै माथा गीतकै आधा दूहा सिवाय दस मात्राकी एक तुक पूरबारधमें सिवाय होवै। एक तुक उतरारधमें दस मात्राकी सिवाय होवै। पूरबारध अर उतरारधमें दोय मळ तुकांत होवै। पैली तुकांतकै अंत दो गरु होवै। दूजा तुकांतकै अंत रगण होवै। पैली तुक मात्रा २३ तुक दूजी मात्रा १७ तुक तीजी मात्रा [illegible] तुक चौथी मात्रा २ तुक पांचमी मात्रा १७ तुक छठी

---

८ नरेसर–नरेश्वर। नह्चौ–धैर्य। पूरौ–पूर्ण पूरा। किसौ–कौनसा। भ्रणूंरौ–प्रभाव कमी। भ्रह–ग्राह घर। केतां–कितनोंकी। श्रीठळनाथ–स्वामी ईश्वर। वाजै–पुकारा जाता है

९ मत मात्रा। भ्ररध–आधा। सिवाय–अतिरिक्त विशेष। तुक–चरण पद्य। चाय–चाह। जींकै–जिसके।

मात्रा १ पछै दूजा सारा दूहां मात्रा बीस सबै दस बोस, सबै दस ई सरै तुकां होवै जीं गीतको नांम चौटियाळ गीत कहीजै।

अथ चौटियाळ गीत उदाहरण

गीत

महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमण,
राड़ रिम जूथ अवनाड़ रोहै,
गढां गह गंजणा।
वार निरधार आधार आधार आलम वणै,
सरण साधार जिण विरद सोहै,
भिड़े दळ भंजणा॥
जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत
चुरस धमचक रचण वीरचाळा,
वसे खेत वीरती।
तासखड़ा जोध आरोड़ दसरथतणा,
कीजिये किसौ नृप जोड़ काळा,
कहै जग कीरती॥
सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज,
वयण मुख दाखिया अंक वेहा,
दया जन दक्खणा।

१ सबै—सतरह। ई—इस। सरै—तरह प्रकार। जीं—जिस।

२ आजांन भुज—आजानुबाहु। रघुवंसमण—रघुवंसमणि। राड़—युद्ध। रिम—शत्रु। जूथ—यूथ समूह। अवनाड़—जबरदस्त नहीं झुकने वाला। रोहै—ध्वंस करता है संहार करता है। गह—गढ। गंजण—नाश करने वाला मिटाने वाला नाश करने वाला। वार—समय। आलम—संसार ईश्वर। सरण-साधार—शरणागत आये हुयेकी रक्षा करने वाला। भिड़े—भिड़ कर युद्ध कर। भंजणा—पराजित करने वाला। समराथ—समर्थ। चुरस—महान। धमचक—युद्ध। वीरचाळा—वीरोका कार्य वी।रता चरित्र। वीरती—शौर्य वीरता। तासखड़ा—तेज। जोध—योद्धा। किसौ—कौनसा। जोड़—बराबर। काळा—महावीर, पागल। कीरती—यश। सूरकुळ—सूर्यवंश। अणघट—अपार। अनट—नहीं नटने वाला। जीह—जीभ जिह्वा। वयण—वचन। दाखिया—कहे। वेहा—विधाता ब्रह्मा।

सामरथ भभीखण रंक राखै सरणा,
तसां आपण सुवत लंक तेहा,
रजवट्ट रक्खणा ॥
अवधरा धणी रिण सीह भंजण असह,
लीह संतांतणी निकं लोपै,
भणै किव भेदमें ।
तई सामाथ प्रभ बंधु दीनांतणा,
अनाथां नाथ मुज बिरद ओपै,
कथौ कथ वेदमें ॥ १०

अथ गीत लैहचाळ अथवा सहचाळ लछण

चौपई

कळ दस छुर फिर आठ सकांम ।
मभ्फ तुक विस्रम दोय विसरांम ॥
सम अठ अंत रगण जीकार ।
चतुर गीत लैहचाळ उचार ॥ ११

अरथ

पैली तुक मात्रा १८ होय । दोय विसरांम पैलो मात्रा १० दूजो मात्रा आठ पर अंहीं तुक तीजी विस्रम मात्रा विसरांम मोहरा होय । गुरु लघुको नेम नहीं । तुकांत तुक सम दूजी चौथी जीकै मात्रा पनरह आठ मात्रा पछै रगण पछै जीकार सबद होय । यूं दूजी चौथी तुक होय । इण प्रकार सरब दवाळा होय जिण गीतरौ नाम सहचाळ कहीजै ।

---

१० सामरथ–समर्थ । भभीखण–विभीषण । तसां–ह्वांको । आपण–देने वाला । तेहा–जैसा वैसा । रजवट्ट–क्षत्रियत्व शौर्य । रक्खणा–रखने वाला । रिण–रण युद्ध । भंजण–नाश करने वाला मिटाने वाला । असह–शत्रु । लीह–रेखा मर्यादा । संतांतणी–संतोंकी । सामाथ–समर्थ । बिरद–विरद । ओपै–शोभा देता है । कथ–कथा वृत्तांत ।

११ कळ–मात्रा । विस्रम–विश्राम । विसरांम विश्राम । अठ–आठ । अंहीं–ऐसे ही । मोहरा–तुकबंदी । नम–नियम । यूं–ऐसे ही । इण–इस ।

अथ गीत लैहूचाळ उदाहरण

गीत

निरधार निवाजण भै अघ भांजण,
सेवग तार सधीर सौ जी।
दुख देवां दहण दैंत दपट्टण,
भीर निकौ रघुबीर सौ जी॥
म्रगनैणि सिया मन रूप सुरंजन,
कौटिक कांम सकांम सौ जी।
दुनियां वरदायक सेव सिहायक,
रैण किसौ नृप राम सौ जी॥
निज कोसळ नंदण देवत वंदण,
धारण पांण धनंखरौ जी।
सभ्भ कुंभ सकारण रांवण मारण,
लेण भुजां बळ लंकरौ जी॥
जन सोच विभंजण प्राचत पंजण,
दांन अभैवर देणरौ जी।
'किसना' निसचै कर राच सियाबर,
जांण भरोसौ जेणरौ जी॥ ६२

---

६२ निरधार–जिसका कोई सहारा या आश्रय न हो। निवाजण–प्रसन्न होने वाला। भै–भय। अघ–पाप। भांजण–नष्ट करने वाला। सधीर–धैर्यवान। दहण–नाश करने वाला। दैंत–दैत्य। दपट्टण–ध्वंस करने वाला। सेव–सेवा सेवक। सिहायक–सहायक। रैण–भूमि। किसौ–कौनसा। नंदण–पुत्र। वंदण–वंदनीय। पांण (पाणि)–हाथ। कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण। विभंजण–मिटाने वाला। प्राचत–पाप। पंजण–नष्ट करने वाला मिटाने वाला। निसचै–निश्चय। राच–लीन हो जा। सियाबर–श्री राम चन्द्र। भरोसौ–विश्वास। जेण–जिसका।

अथ गीत गोख लछण

दूहौ

धुर तुक मत तेवीस घर, अवर वीस लघु अंत ।
चौथी तुक वे वीपसा, कवि ते गोख कहंत ॥ ९३

अरथ

चौथी तुकमें दो वीपसा होय । मात्रा प्रमांण कहां छां । आद पैंसरी तुक मात्रा तेवीस होय । पाछली पनरैई तुकां मात्रा वीस वीस होय । तुकांत लघु अखिर आवै अथवा नगण आवै जी गीतनै गोख कहीजै । एक सबदनै दोय वार कहै सो वीपसा कहावै ।

अथ गीत गोख जात सावझड़ाको उदाहरण

गीत

तनै कहूं समझाय मतमंद जग फंद तज ।
अरप नन मन सुध न वेग सुगुसी अरज ॥
उभै साचा अखर कहै रिख सिंभ अज ।
हरी भज हरी भज हरी भज हरी भज ॥
लधीरा चहन घण वीज आळी लपट ।
क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट ॥
झोड मत कर अवर काळ जेसी झपट ।
रांम रट रांम रट रांम रट रांम रट ॥
काटसी घणा अघ ओघवाळा करम ।
येघ नह सके जम पहर इसड़ी धरम ॥

९३ धुर-प्रथम । मत-मात्रा । वीपसा (वीप्सा)-एक शब्दालंकार जिसके अर्थ या भाव पर बल या शक्ति समान में होने वाली शब्दावृत्ति । कहत-कहते हैं । पाछली-पीछे की वार की । जी-जिस ।

९४ तनै-तुमको । मतमंद (मतिमंद)-मूर्ख । फंद-त्रास । रिख-ऋषि । सिंभ-महादेव । अज-ब्रह्मा । लधीरा-वाल्मीकि । चहन-चिन्ह । घण-बादल । वीज-बिजली । लपट-चमक । काळ-यमराज । घणा-बहुत । अघ-पाप । ओघ-समूह । नह-नहीं । जम-यमराज । इसड़ो-ऐसा । धरम-धर्म ।

सही अगुलता उर सूप जिणनै सरम।
पढ परम पढ परम पढ परम पढ परम ॥
उदर दीधौ जिकौ पूरसी जळ असन।
वणै छिब घणै पटपीत पहरण वसन ॥
करे चित ख्यांत निस दिवस रट रे 'किसन'।
सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन ॥ ९४

पण झड़ मुगटनै रुगनाथ रूपग मध्य गोख नांम मरयौ छै। कोईक जथ खोढौ पिण कहै छै।

अथ गीत चितईलोळ लछण

दूहौ

किय सोरठिया गीतके, अधिक दोय तुक आंण।
चवद चवद मत दोढसौ, चितईलोळ पहचाण ॥ ९५

अरथ

सोरठिया गीतरै पहली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा अठारै। तीजी तुक मात्रा सोळ। चौथी तुक मात्रा दस होवै। पछै सारा दूहां मात्रा सोळ दस होवै। यौं सोरठियाकै सिरै जातां चवदै चवदै मात्राकी दोय तुकां सवाय होवै यौं गीतको नाम दोढौ क छै तथा कोई कवि चितईलोळ कै छै। तुकांत लघु होवै। छ तुकां होवै। चौथी तुकरा तुकांतरो आखर उलट पहलासूं पांचमी तुक होय। मयूर छठीमे पण आभास चौथी तुकको होय सो दोढौ।

अथ गीत चितईलोळको उदाहरण

गीत

दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ,
सकज सूर समाथ।

९४ परम-ईश्वर। उदर-पेट। दीधौ-दिया। जिकौ-वह। असन-भोजन। छिब-शोभा। पटपीत-पीताम्बर। वसन-वस्त्र। ख्यांत-विचार। रे-भी।

नोट-मूल प्रतिमें लिखा मिला है कि 'पण झड़ मुगटनै रघुनाथरूपगमें गोख नांम लिख्यौ छै कोईक जथगोखौ पिण कहै छै' परन्तु यह लिखावट बिलकुल अशुद्ध है। गोख छंदके लक्षण रघुवरजसप्रकास और रघुनाथरूपकमें समान ही है।

९५ किय-करि चवद-चौदह। मत-मात्रा। आवत-आवृत्ति। सपूत-पुत्र। वन-भी।
९६ दीनां-दीनों। पाळगर-पालनकर्ता। धन-धन्य। सुतन-पुत्र। सूर-वीर। समाथ-समर्थ।

रिणखेत भंजण सकुळ रांवण,
नेत-बंध रघुनाथ।
तौ रघुनाथ रे रघुनाथ,
रविकुळ आभरण रघुनाथ॥
तन स्यांम सघण सरूप ओपत,
सुपट बीज सकाज।
रिम कोट हण जन ओट रक्खण,
मोट मन महराज।
तौ महराज रे महराज,
माहव मोट मन महराज॥
हक वगां लाखां असुर हरणौ,
जुधां करणौ जैत।
चाढणौ कुळ जळ दळद चौजां,
वाढणौ विरदैत।
ता विरदैत रे विरदैत,
विरदां धारणौ विरदैत॥
थळ थकां अमखी थक्क बेली,
तवै जगन तमांम।

१६ भंजण–नाश करनेवाला। नेत-बंध–अपना स्वयं का झंडा रखने वाला। आभरण आभूषण। सरूप–स्वरूप। ओपत–शोभा देता है। सुपट–सुन्दर। बीज–बिजली। रिम–राम। कोट–गढ़ अथवा शरीर। ओट–शरण। मोट मन–उदार चित्त। माहव–माधव विष्णु श्रीरामचंद्र। हक-वगां–युद्ध होने पर। हरणौ–मिटाने वाला ध्वंस करने वाला। करणौ–करने वाला। जैत–विजय जीत। चाढणौ–चढ़ाने वाला। कुळ–कांति दीप्ति। दळद–दारिद्र्य दरिद्रता। चौजां–उदारता। वाढणौ–काटने वाला। विरदैत–विरदधारी बलशाली। धारणौ–धारण करने वाला। थळ–धरती। थकां–रहने पर। अमखी–अजित दुष्ट। बेली–सहायक मित्र। तवै–स्तुति करता है वर्णन करता है। तमांम–सम्पूर्ण।

नित 'किसन' कित्र रट नांम निरभै ,
रसन स्त्री रघुरांम ।
तौ रघुरांम रे रघुरांम ,
रजवट धारियां रघुरांम ॥ ६६

अथ गीत पालवणी तथा दुमळ सावझड़ा लक्षण

दूहो

ग ल अनियम उगणीस धुर, अन तुक सोळह आंण ।
पालवणी चव तुक मिळै, दुमिल दुमेळ वखांण ॥ ६७

अरथ

पैहली तुक मात्रा उगणीस बाकीरी पनरैई तुकां मात्रा सोळ सोळ होय । तुकांत गुरु लघुरी नेम नहीं । तुक च्याररा मो'रा मिळै सो पालवणो कहीजै नै दो दो तुकरा मोहरा मिळै सो दुमळ सावझड़ो कहीजै इके मध्य धतमेळ किया-थकां यो ही सावझड़ो कहीजै ।

अथ पालवणी उदाहरण

गीत

सिया वाहर समर दसाणण साझा ,
व्रवी उछाहर दीन निवाजा ।
दीठां याहर कनक दराजा ,
रीझ खीज जाहर रघुराजा ॥
माझण जुधा वीसभुज आसुर ,
दीन निवाजण अनुज सहोदर ।

६६ रसन-जिह्वा । रजवट-क्षत्रियत्व धर्म ।
६७ ग-गुरु । ल-लघु । उगणीस-उन्नीस । धुर-प्रथम । अन-अन्य । आंण-ला करके । चव-चार । दुमिल-जहां दो चरण मिलते हों । मो'रा-तुकबंदी । मोहरा-तुकबंदी । इके-इसके । किया-थकां-करने पर । यो-यह ।
६८ वाहर-रक्षा । समर-युद्ध दसाणण-रावण । साझा-संहार किया मारा । व्रवी-दे दी दान दी । उछाहर-उमंग । निवाजा-प्रसन्न होकर । दीठां-देखने पर । याहर-गढ़ दिया । कनक-स्वर्ण सोना । दराजा-महान बड़ा । रीझ-प्रसन्नता । खीज-कोप । जाहर-जाहिर प्रसिद्ध । साझण-मारनेको, संहार करनेको । वीसभुज-रावण । आसुर-असुर, राक्षस । दीन-गरीब । निवाजण-प्रसन्न होकर । अनुज-छोटा भाई । सहोदर-भाई ।

बोलै साख त्रिकुट लिछमीवर ,
उमंग रीसवाळौ अवधेस्वर ॥
मथ रिण उदघ मांण दसमथका ,
आपण सरण भभीखण अथका ।
सोव्रन गढ जस ओप समथका ,
कपा कोप आखै दसरथका ॥ ९८

अथ गीत दुमळ सावझड़ो उदाहरण
गीत

जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै ।
थरू आय घर नवनिघ थावै ॥
नांम लियां जम किंकर नासै ।
सौ राघव संकर उर वासै ॥
बीर जगत अखिया रघुबीरा ।
साचै दिल भखिया सबरीरा ॥
दुल्लभ देव रिखां थिरवाळौ ।
वल्लभ जनां दासरथवाळौ ॥
तिण रघुनाथ वहत मग तारी ।
निज पग रजहूंता रिख नारी ॥

---

९८ साख—साखी। त्रिकुट—लंका। लिछमीवर—विष्णु, श्रीरामचंद्र। अवधेस्वर—रामचंद्र। मथ—मथन कर। रिण—युद्ध। उदघ (उदधि)—सागर, समुद्र। मांण—मान गर्व। दसमथका—रावणका। आपण—देने वाला। भभीखण—विभीषण। अथका—धन-दौलतका। सोव्रन—सुवर्ण सोना। समथका—समर्थका। आखै—कहते हैं।

९९ प्राचत—पाप दुष्कर्म। थरू—अटल स्थिर। आय (अर्थ)—धन-दौलत। थावै—होते हैं। जम-किंकर—यमराजका दूत। नासै—भग जाते हैं। वासै—निवास करता है बसता है। भखिया—खाए भक्षण किये। सबरीरा—शबरीके भिलनीके। दुल्लभ—दुर्लभ। रिखां—ऋषियों। थिरवाळौ—[illegible]। वल्लभ—प्यारा। जनां—भक्तों। दासरथवाळौ—दशरथका पुत्र श्रीरामचंद्र भगवान। तिण—उस। वहत—चलते हुए। मग—मार्ग। तारी—उद्धार किया। रजहूंता—धूलिसे। रिख—ऋषि।

मारथ खळ जाड़ा मार्नखी ।
धाड़ा एक थीग धार्नखी ॥
लंका मार दसाणण लेणौ ।
दांन भभीखण सेवग देणौ ॥
तोटौ केम रहै घर त्यांरै ।
रांम धणी मोटौ सिर ज्यांरै ॥ ९९

अथ गीत सावझड़ो अडियल लछण

दूहौ

सोळह मत्ता चरण दस, पद पद झमक गुरंत ।
'किसन' सुजस पढ स्री किसन, अड़ियल गीत भखंत ॥ १००

अरथ

जींकि मातकी तथा सारी ही तुकां प्रत मात्रा सोळै होय तुक प्रत अक्खर दस दस होय तुकांत दोय गुरु होय अतमें झमक होय सो अडियल गीत कहीजै। तुक प्रत अक्खर दस छै जिता ही चरण ह्वै छै। कोइक प्रण गीतमै सावझ झड़ल पिण कहै छै। च्यार दूहा होय सो तौ अडियलने एक दूहौ होय सो चौसर माही तथा माया कहावै।

अथ अड़ियल गीत उदाहरण

गीत

निज संतां तारै घणनांमी, नहच्यौ ज्यां नैड़ौ घणनांमी ।
निरपखां पखौ घणनांमी, नाथ अनाथांचौ घणनांमी ॥

---

९९ मारथ–युद्ध। खळ–असुर। जाड़ा–अकड़ा। मार्नखी–तोड़ने वाला। धाड़ा–धार्तक रोध धन्य-धन्य। धार्नखी–धनुषधारी। दसाणण–रावण। लेणौ–लेने वाला। भभीखण–विभीषण। सेवग–सेवक। देणौ–देने वाला। तोटौ–कमी अभाव। त्यांर–उनके। ज्यांरै–जिनके।

१ मत्ता–मात्रा। चरण–पदसर। झमक–झमगाव। गुरंत–जिसके अंतम गुरु (वर्ण) हो। भखंत–कहते हैं। जींकि–जिसमें। तुकां प्रत–प्रति तुक या प्रति चरण। अक्खर–अक्षर। कोइक–कोई। प्रण–पण। पिण–भी।

१०१ घणनांमी–ईश्वर। नहच्यौ–मैंने निरिखना। ज्यां–जिन। नैड़ौ–निकट। निरपखां–जिनका कोई पक्ष न हो। पखौ–पक्ष मदद सहायता।

रीझ सवांमासूं गिरधारी, भ्रवी आय यायां गिरधारी ।
धारे चक्र भुजां गिरधारी, धायौ गज बाहर गिरधारी ॥
भीघ ग्राह तारण गोव्यंदौ, गणका गत देणौ गोव्यंदौ ।
ग्रहीयां जम भीड़ गोव्यंदौ, गुण गावण जेहौ गोव्यंदौ ॥
सिधां तीन लोकां सांवळियौ, सूर कुळां सोभौ सांवळियौ ।
साहै चाप रांम सांवळियौ, सीतावर सांमी सांवळियौ ॥ ११

अथ गीत घड़उथल लक्षण

दूहौ

सोळै मत्ता सरव तुक, अंत एक गुरु होय ।
उलटै पाळी अरधहूं, कह्व घड़ उथल सकोय ॥ १०२

अरथ

सोळ ही तुकांमें मात्रा सोळै होय । एक तुकांत गुरु होय । मात्रासूं तुकां पाळी उलटै तथा पूरबारधसूं उतरारध बणै । लाटानुप्रास अलंकार होय सो घड़उथल गीत कहीजै । कोइक इणनै कवि ईसोळ पण कहै छै । गीत घड़उथलमें यूं कथा छै सो देख लीज्यौ ।

अथ गीत घड़उथल उदाहरण

गीत

जम लगै कंठै मैं सीस जियां, तन दासरथी नित वास तियां ।
तन दासरथी नह वास तियां, जम लगसी माथै जोर जियां ॥

---

१ १ रीझ–प्रसन्न होकर । भ्रवी–चाव की । प्राय (अर्थ)–धन-दौलत । धारे–दोनों भुजाओंको आपसमें फँसा कर मिलानेसे बनने वाला बीचका स्थान या इस स्थानमें समा सके उतना पदार्थ बाहुपाश । धायौ–दौड़ा । बाहर–रक्षा । गोव्यंदौ–गोविंद । गणका–गणिका । गत–गति मोक्ष । देणौ–देने वाला । ग्रहीयां–पकड़ने पर । जम–यमराज । भीड़–सहायक । गुण–यश । जेहौ–जैसा । सिधां–श्रेष्ठ । सांवळियौ–श्रीकृष्ण । सोभौ–मनहर । साहै–धारण करता है । सीतावर–सीतापति । सांमी–स्वामी ।

१ २ मत्ता–मात्रा । पाळी–अन्तिम । पण–भी ।

१ ३ कंठै–गले । मैं–मय । सीस–सिर ऊपर । जियां–जिनके । दासरथी–श्रीरामचंद्र भगवान । तियां–उनके । नह–नहीं ।

समरै न जिके नर सांमळियौ, कत-अंत जिकां सिर काहुळियौ।
कत-अंत करै की काहुळियौ, समरंत जिके नर सांमळियौ॥
गज-तार न वाक जिकां गुणियौ, सुत भांण दियै दुख त्यां सुणियौ।
सुत भांण तिकां दुख नां सुणियौ, गज-तार तिका मुखहूं गुणियौ॥
रसना पतसीत नकूं ररियौ, भव डंड जिकां जमरै भरियौ।
रसना पतसीततणौ ररियौ, भव डंड जिकां जम नां भरियौ॥२०३

अथ गीत सीहचलो लखण

दूहो

अंत रगण अठार धुर, दूजी तेरह जांण।
सोळह तेरह तुक सरब, सीह चलौ वाखांण॥ २०४

अरथ

जीके पैली तुक मात्रा उगणीस होय। दूजी तुक मात्रा तेरै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा तेरै होय। तुकांत रगण होय जीं गीतरौ नांम सीहचलो कहीजै।

अथ गीत सीहचलौ उदाहरण

गीत

सीता सुंदरी अरधंग ससोभत, सेवग मारुत सारखा।
वाळ जिमा बळवंड विहंडण, पांण भुजाडंड पारखा॥

---

१ ३ समरै—स्मरण करते हैं। जिके—जो। सांमळियौ—ईश्वर, श्रीकृष्ण। कत अंत—कृतान्त यमराज। जिकां—जिनके। काहुळियौ—कोप किया। की—क्या। समरंत—स्मरण करते हैं। जिके—जो वे। गज-तार—गजका उद्धार करने वाला। वाक—वाणी। जिकां—जिन्होंने। गुणियौ—वर्णन किया। सुत-भांण—यमराज। त्यां—उनको। तिकां—उनको। नां—नहीं। मुखहूं—मुखसे। रसना—जिव्हा जीभ। पतसीत—सीतापति श्रीरामचंद्र। नकूं—नहीं। ररियौ—रटा। भव-डंड—संसारका दण्ड या सजा। पतसीततणौ—सीतापतिका।

१ २ अरधंग—अर्धांगिनी। मारुत—हनुमान। सारखा—समान सदृश। वाळ—वालिवंदर। बळवंड—शक्तिशाली जबरदस्त। विहंडण—ध्वंस करने को या ध्वंस करने वाला। पांण—शक्ति। भुजाडंड—बली शक्तिशाली।

कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी ।
पाय रजी रघुराय परस्सत, भ्रा प्रीय गौतम उधरी ॥
प्राम्रौ राख जनकतणौ पण, मौड़ खळां दळ मांनकी ।
धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण वरी प्रिय जांनकी ॥
साल निवार सुरीस कियौ सुख, बीसभुजा हण संकरौ ।
वेस दियौ रघुराज भुजां बळ, राज भभीखण लंकरौ ॥ १०५

अथ गीत अध चितविलास लछण

दूहा

सभ रूट कळ कर वीपसा, विच संबोधन वेस ।
तिण पर चवदह मत तुक, मोहर गुरु मिळेस ॥ १०६
गाय अरटिया गीतरौ, यण पर दूहौ अेक ।
प्रथम चरण अध अंत पढ़, सुचितविलास विसेक ॥ १०७

अथ गीत अधचितविलास उदाहरण

गीत

गह गंजै रे गह गंजै, भिड़ जंग महा खळ भंजै ।
ग्रीधां सांमळ दीध पळां गळ, मैंगळ खागति मंजै ॥

---

१०५. कोसिक—विश्वामित्र । ज्याग—यज्ञ । सिहायक—सहायक । दांणव राक्षस । घायक—संहार करने वाला नाश करने वाला । पाय—चरण । रजी—धूलि । परस्सत—स्पर्श करते ही ।

१०५ प्राम्रौ—प्राप्त कर । जनकतणौ—जनकका । पण—प्रण । धींग—जबरदस्त । जेण—जिस । साल—शल्य दुख । सुरीस—सुरेश इन्द्र । बीसभुजा—रावण । वेस—वेश ।

१०६ सभ—सब । रट (रट)—रट । कळ—भाषा । वीपसा (वीप्सा)—एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर जोर देनेके लिये शब्दावृत्ति होती है दुबारा शब्दोंकी क्रिया या भाव । तिण—उस । चवदह—चौदह । मत—मात्रा । मोहरा—तुकान्त । मिळेस—मिलते हैं ।

१०७ अध—इस । दूहौ—गीत सरके चार चरणोंका समूह ।

१०८ गह—गई । गंजै—नाश करते हैं । भिड़—युद्ध कर । खळ—दुष्ट राक्षस । भंजै—ध्वंस करते हैं । सांमळ—एक मांसाहारी जानवरी जातिका पक्षी विशेष । पळां—मांसोंका । गळ—गिर निगलना । मैंगळ—हाथी । खागति—तलवारसे । मंजै—ध्वंस करते हैं मारते हैं ।

सूरजवंसतणौ नृप सूरज, पाघर आसुर पंजै ।
रे गह गंजै ॥
जिण जीता रे जिण जीता, भड़ रांवण कुंभ अमीता ।
आस्रय राख भभीखण आतुर, लाख मुखां जस लीता ॥
मार अहे घणनाद जिसा भट, चौपट मार अचीता ।
रे जिण जीता ॥
जग जांणे रे जग जांणे, जिण लंक दवी जग जांणे ।
स्री-मुख दाख सुकंठ सहोदर, राख प्रभाव धरांणे ॥
कारुणस्यंध किकंध पते कर, वाळ हतें रिण वांणे ।
रे जग जांणे ॥
जस जापै रे जस जापै, ते संत हरे त्रिण तापै ।
संघट तोड़ अघां घण स्रीरंग, कोड़ जमांभय कांपै ॥
आसा राघव पूर अनेकां, थांनक दासां थापै ।
रे जस जापै ॥ १०८

अथ अधु चितविलास लछण

दूहौ

चवद चवद मत च्यार तुक, अठ मत पंचम आंण ।
धि गुरु अंत आवरत तुक, चित विलास पहचांण ॥ १०९

---

१०८ सूरजवंसतणौ—सूर्य वंश का। पाघर—खुला मैदान। आसुर—राक्षस। पंजै—ध्वंस करते हैं। जिण—जिस। भड़—योद्धा। कुंभ—कुंभकर्ण। अमीता—जो डरे नहीं निर्भय। आस्रय—शरण। भभीखण—विभीषण। आतुर—दुखी। लीता—लिया। घणनाद—मेघनाद इन्द्रजीत। भट—योद्धा। चौपट—नाश ध्वंस। अचीता—बिना चिंता। लंक—लंका। दवी—दान दे दी। स्री-मुख—स्वयं मुख। दाख—कह। सुकंठ—सुग्रीव। सहोदर—भाई। धरांणे—वंश का समझें। कारुणस्यंध—करुणासिन्धु कृपासागर। किकंध—किष्किंधा। पते—पति स्वामी। वाळ—बालि नामक बंदर। हतें—संहार कर। जापै—वर्णन करते हैं जपते हैं। तै—उस। त्रिण—तीन। तापै—ताप कष्ट। संघट—दुःख। तोड़—मिटा कर नाश कर। अघां—पापों। घण—बहुत अधिक। स्रीरंग—विष्णु श्रीरामचंद्र। जमां—यमराजों। थांनक—स्थान। दासां—भक्त। थापै—स्थापन करता है।

१०९ चवद—चौदह। मत—मात्रा। च्यार—चार। धि (त्रि)—ती। आवरत—आवर्त्त आवृत्ति।

अरथ

जैसी तरह च्यार ही तुकांमें मात्रा आठ होवै दोय गुरु अखिर तुकांत होवै। जैसी तुकरी आध सो पांचमी तुक होवै। आखरस पद होवै। आखरस फेर पहलो कहीजै जी गीत तको नांम लघु चितविलास कहीजै। जैसी तुकरी आ मात्रा करने दीपता करणी जिणमें जीकार सम्बोधन धरणौ।

अथ गीत लघु चितविलास उदाहरण

गीत

घणनांमी जी घणनांमी, निज जोर परां घणनांमी।
भुज लोक त्रिहूपत भांमी, भिरदैत अहै धुर बांमी।
जी घणनांमी ॥

भिरदाळौ जी भिरदाळौ, दुज गाय पखी भिरदाळौ।
सीताधौ सांम सिघाळौ, पौह सेवगरां प्रतपाळौ।
जी भिरदाळौ ॥

रघुराजा जी रघुराजा, रणधीर अडौ रघुराजा।
भुज तारण संत समाजा, लह बहियां राखण लाजा।
जी रघुराजा ॥

हद हाथां जी हद हाथां, है लंक अवी हद हाथां।
सत्र भंज जुधां समरायां, गुण राखण त्रिभुणा गायां।
जी हद हाथां ॥ ११०

१०. जैसी-प्रथम। धरणौ-रखना।

११ घणनांमी-ईश्वर। भांमी-न्यौछावर करना। भिरदैत-विरदधारी योद्धा वीर। धुर-तरफ। बांमी-बायीं। भिरदाळौ-विरदधारी यशस्वी। दुज (द्विज)-ब्राह्मण। पखी-पक्षी। सीताधौ-सीतापति। सांम-स्वामी पति। सिघाळौ-श्रेष्ठ। पौह-प्रभु राजा। सेवगरां-सेवकों। प्रतपाळौ-रक्षक। तारण-उद्धार करने वाला। हद-बड़ा दातार। लंक-लंका। अवी-दे दी प्रदान की। सत्र-शत्रु। भंज-तोड़ कर। समरायां-समरों। गुण-यश। त्रिभुणा-पृथ्वी। गायां-गाथाओं।

अथ गीत घोड़ादमौ लछ्रण

दूहौ

अठ्ठारह मत पहल अख, सोळ मत्त तुक आंन ।
दाख गीत घोड़ादमौ, दु गुरु अंत तुक दांन ॥ १११

अरथ

जिण गीतके पैं'ली तुक मात्रा अठ्ठारा होय । दूजी सारी ही तुकां मात्रा सोळै होय । तुकांत दोय गुरु अखिर आवै जिण गीतरो नांम घोड़ादमौ कहीजै । घोड़ादमा मैं अवंकड़ी एक छै । पण गीतमैं सुध जथा छै ।

अथ गीत घोड़ादमौ उदाहरण

गीत

राघव गह पला कीर कह पै रज ,
सिला उडी जांणै जग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौ तौं नाव पधारौ ॥
पदमणा रिख असमांन पहूंती ,
पखां विनां जिहांन पढीजै ।
केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर ,
चरण पखाळ जिहाज चढीजै ॥
हिक छिन मांझ सुरगळ अहल्या ,
पूगी है फळ रूप रज पै सी ।

१११ अठ्ठारह—अठारह । मत—मात्रा । पहल—प्रथम । अख—कह । सोळ—सोलह । मत्त—मात्रा । आंन—अन्य । दाख—कह ।

११२ गह—पकड़ कर । पला—अंचल । कीर—मल्लाह । पै—चरण पांव । दिस—घीर तरफ । पदमण—पदिमनी । रिख—ऋषि । पहूंती—पहुंची । केवट—मल्लाह । प्रतपाळ—रक्षा पालन-पोषण । पखाळ—धो कर । जिहाज—जहाज नाव नौका । हिक—एक । छिन क्षण । मांझल—मध्य म ।

मोहित काळ कहै कमळमुख,
मोहित त्रिमळ श्रौण कर बैसौ ॥
मुळक जानकी रांम लिछमण,
भणियौ दुचै स करम न भाई ।
राघव चरण धुवाय क्रपा कर,
तरण कीर सकुटंब तिराई ॥ ११२

अथ गीत अरटिया लछण

दूहौ

धुर अठार फिर बार घर, सोळ बार गुरु दोय ।
सोळ बार मत तुक सरब, सखै अरटियौ सोय ॥ ११३

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पछै दूजा दूहा पैं'ली मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै । सोळ बारै ई क्रमसू होय । दोय गुरु तुकांत होय जीं गीतनै अरटियौ कहीजै ।

अथ अरटिया गीत उदाहरण

गीत

धारवां आठरै खट भाख चवदह, पाठ विधांन पिछांणै ।
जिकै अकाथ ग्यान बिन जूठा, जे रघुनाथ न जांणै ॥
दीनदयाळ बिना गुण दूजा, आळ-जंजाळ अलप्पै ।
'किसनौ' कहै पात जे केहा, जेहा रांम न जंपै ॥

---

११२ मोहित–नाव मोहित । त्रिमळ–त्रिमल निर्मल । श्रौण–चरण । बैसौ–बैठिए । मुळक–हँस कर । लिछमण–लक्ष्मण । तरण–नाव नौका । तिराई–तैरा दी पार कर दी ।

११३ धुर–प्रथम । बार–बारह । सखै–कहते हैं । सौ–जिस ।

११४ भाख–भाषा । चवदह–चौदह । जिकै–जो वे । अकाथ–व्यर्थ । धुण–काव्य रचना । दूजा–दूसरा । आळजंजाळ–व्यर्थका प्रलाप । अलप्पै–प्रलाप करता । जे–जो । केहा–कैसा । जेहा–जैसा जंपै–कहते हैं वर्णन करते हैं ।

गिरा प्रसाद भेद ध्रुव गायां, यातां भूठ घणावे ।
चारण जनम पाय ध्रुव चूका, गिर तारणनह गावे ॥
बूडा जे कर कर जस बूंबां, सं धूमां ऊमर सारौ ।
ध्रुव सारू गायौ सीतावर, जीता जिकै जमारौ ॥११४

दूहो

सोळ प्रथम बीजी चवद, मगण यगण पछ दाख ।
सोळ चवद मत क्रम सुकव, भल सेलार सु भाख ॥ ११५

अरथ

पैली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा सोळ । चौथी तुक मात्रा चवदै । पैली तीजी तुकरै मोहरै मगण होय । दूजी चौथी तुकरै मोहरै यगण होय । तुकांत मगण यगण होय । इ गीतरै सारा दूहां पैली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै ई क्रम च्यार ही दूहां मात्रा होय सो गीत नांम सेलार कहावै । मरुपत पिंगळ मध्ये छंद सेलार छै, जिणरै तुक प्रथम प्रतमात्रा तेरै छै । यणरै पैली तुकमें मात्रा तीन वधी । दूजी तुकमें मात्रा एक वधी जींसूं गीत सेलार छै । पैली तीजी तुकरै मत मगण होय । दूजी चौथी तुकरै मत यगण अथवा दुगुरु होय ।

अथ सेलार गीत उदाहरण

गीत

मह ईजत आव अमंपै रे, चढ सीस जिकां कुण चंपै ।
कीनास भये नह कंपै रे, जे राघव राघव जंपै ॥
दिन सोहै आथत दवारे रे, अद ईजल आव अपारै ।
जे नर धन धन जमवारे रे, सीताची सांम संभारै ॥

---

११४ गिरा-सरस्वती । प्रसाद-कृपा । बुध-पंडित । ध्रुव-ध्यान । गिरतारण-रामचन्द्र भगवान । बूडा-डूब मरे । बूंबां-जारकी आवाज । धूमां-कुरगों । ऊमर-उम्र । सारौ-सब । जमारौ-जीवन ।

११५ मह-महान । आव-आयु उम्र । कंपै-भयभीत करे । कीनास-यमराज । चंपै-कहे । जंपै-स्मरण करे । सोहै-शोभा देता है । आथ-धन-दौलत । दवार-द्वार पर । धन-धन-धन्य धन्य । जमवारे-जीवनभर । सीताची-सीतापति । सांम-स्वामी प्रभु । संभारै-स्मरण करते है ।

एकौतर वंस उधारै रे, निज लोक उमै निसतारै ।
साराह जिकौ जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै ॥
करुणानिध जनहितकारी रे, धांमै अंग सीतविहारी ।
सारी ज्यां यात सुधारी रे, धरियौ उर धानंखधारी ॥ ११६

अथ गीत झमाळ लछण

दूहा

दूहौ पहलौ दाखजै, चंद्रायणौ सुपष्ष ।
दूहा उलटै चवथ तुक, सोय झमाळ सुलष्ष ॥ ११७
दूहौ अर चन्द्रायणौ, विहुंवै मत्ता छंद ।
यां लछण कहिया अगै, पिंगळ मांझ कव्यंद ॥ ११८

अरथ

पै'ली तो दूहौ होय । पछै चन्द्रायणौ होय । दूहा री चौथी तुक दोय चवद पछै आय सो झमाळ नांमा गीत कहीजै । दूहौ चन्द्रायणौ दोई मात्रा छंद छै सो यण पिंगळमें लक्षण दोमारा कहा छै, सो कांम पड़ै तो देख लीज्यो । दूहो पै'ली तुक मात्रा तेरै । तुक दूजी मात्रा इग्यारै । तुक तीजी मात्रा तेरै । तुक चौथी मात्रा इग्यारै । चन्द्रायणौ तुक प्रतमात्रा इकीस । अंत रगण सो चन्द्रायणौ । आद दूहौ पछै चन्द्रायणौ सो झमाळ नांमा गीत कहावै ।

अथ झमाळ गीत उदाहरण

गीत

धाड़ा राघव धुर-अमळ, अधनाड़ा अणबीह ।
ऊभेड़ण जाड़ा असह, सुज धोसाड़ा-सीह ॥

११६ निसतारै—उद्धार करता है । हितकारी—हित करने वाला । धामै—धारण करता है । धानंखधारी—धनुषको धारण करने वाला ।

११७ पहलो—प्रथम पहिले । दाखजै—कहिए । चंद्रायणौ—चंद्रायण नामक मात्रिक छंद । सुपष्ष—स्पष्ट । चवथ—चतुर्थ ।

११८ अर—और । विहुंवै—दोनों । मत्ता—मात्रिक । यां—इस प्रकार इनका । लछण—लक्षण । अगै—पहिले पूर्व । मांझ—मध्य ।

११९ धाड़ा—धन्य धन्य । धुर-अमळ—अग्रगामी । अधनाड़ा—वीर, योद्धा । अणबीह—निडर निर्भय । ऊभेड़ण—उखेड़ना । जाड़ा—जबरा । असह—शत्रु । धोसाड़ा-सीह—सेनाओं पीछे हटाने वाला पराक्रमी ।

भुज घांसाड़ासीह अबीह अचल्लणा ।
झूसर खाग तियाग भुजाडंड झल्लणा ॥
रह्चण दससिर जिसा असह मझ राड़ रे ।
बेढक अंकी वार धनंकी धाड़ रे ॥
रखवाळण जिग रायहर, रजवट पाळण राह ।
विया लखण रघुनाथ दहु, नृप रिख साथ निबाह ॥
नृप रिख साथ निबाह नेंद रख नाहरां ।
पंथ ताड़का निपात जिका कथ जाहरां ॥
परसुराह हत सर मारीच अताळियौ ।
जिग कोसिक रिखराज राज रखवाळियौ ॥
रख्ये जिग कोसिक अद्दुरपुरो, मियळेस पधार ।
पंथ अहल्या पाय रज, राघव कियौ उधार ॥
राघव कियौ उधार निपट रिख नाररौ ।
बळ धानंख लख घटे नृपां जिण वाररौ ॥
दासरथी वर सीत पराक्रम दक्खियौ ।
राघव भंजे धनंख जनक पण रक्खियौ ॥
आवंतां मारग अवध, डरवध हरख अमाप ।
आय फरस धर आफळ्ण, चाप धेर हर चाप ॥

१११ अबीह–निडर निर्भय। तियाग–त्याग। भुजाडंड–समर्थ शक्तिशाली। झल्लणा–धारण करने वाला। रह्चण–ध्वंस करनेवाले संहार करनेवाले। दससिर–रावण। मझ–मध्य। राड़–युद्ध। बेढक–जबरदस्त। अंकी–अंकित की। वार–समय। धनंकी–धनुर्धारी। धाड़–धन्य-धन्य। जिग–यज्ञ। निपात–संहार कर मार कर। जाहरां–प्रसिद्ध। परसुराह–परशुराम। सर–तीर बाण। अताळियौ–उछाला दूर फेंका। कोसिक–विश्वामित्र। रिखराज–ऋषिराज। राज–श्रीमान आप। रखवाळियौ–रक्षा की। मियळेस–राजा जनक। पाय–चरण। रिख–ऋषि। दासरथी–श्री राम चन्द्र। वर–पाणिग्रहण कर। सीत–सीता। दक्खियौ–प्रकट किया बतलाया। पण–प्रण। रक्खियौ–रखा। अवध–अयोध्या। हरख–हर्ष। पधार–पधारे।

चाप वैर हर चाप जाप चक्ख जपिया ।
उभै रांम जुध कारण ताम अड़पिया ॥
लछवर धनख साथ तेज निज हर लिया ।
रद कर मद दुजराम अवधपुर आविया ॥ ११६

अथ मुड़ेस अठताळी गीत लखण

दूहा

चवद प्रथम बी ती चवद, चौथी दस मत जांण ।
पंच छठी सप्तम चवद, अष्टम दस मत आंण ॥ १२
पहल दुती तीजी मिळै, दु गुरु अंत जिण दाख ।
मिळ तुक चौथी आठमी, अंत लघु जिण आख ॥ १२१
पंचम अठमी सातमी, मिळै अंत गुरु दोय ।
मुड़ियल अठताळो मुणै, किव जिण नांम सकोय ॥ १२२

अरथ

जिणरै पहली तुक मात्रा चवदै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा चवदै होवै । चौथी तुक मात्रा दस होवै । पांचमी चवदै छठ्ठै चवदै सातमी चवदै मात्रा चवदै चवदै होवै । तुक आठमी मात्रा दस होवै । पै ली दूजी तीजी तुकां मिळै । तुकांत दोय गुरु होय । चौथी तुक आठमी तुकसूं मिळै । तुकांत लघु होय । पांचमी छठी सातमी तुक मिळै । तुकांत दोय गुरु होय जिण गीतनै मुड़ैसअठताळी कहीजै । अठताळी ग्रंथांतरसूं जिण लखण जुदा छै । हमीररपिंगळमें मुड़ैसअठताळो कहै छै नै रामायणरूपकमें अठताळो हीज कहै छै ।

अथ मुड़ैसअठताळो गीत उदाहरण

गीत

सुख दियण दुख गमण स्वांमी, नाथ त्रिभुवन आपनांमी ,
भंज दससिर भुजां भांमी, रांम भूप अरेह ।

---

११६ मद–गर्व । दुजरांम द्विज राम परशुराम ।
१२ बी (द्वि)–दूसरी । ती (तृतीय)–तीसरी । चवद–चौदह । मत–मात्रा ।
१२१ दुती (द्वितीय)–दूसरी । दु–दो । दाख–कह । आख–कह ।
१२२ मुणै–कहते हैं । किव–कवि । सकोय–सब ।
१२३ दियण–देने वाला । गमण–नमाने या मिटाने वाला । आपनांमी–अपने नामसे प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला । भांमी–बलैया । अरेह–निरलंक ।

चुरस चित व्रत नीतचारी, निरवहे व्रत हेक नारी ,
धींग पांण घनंखधारी, निपट संतां नेह ॥
असीचौ-लख जीव एता, जपै तौ प्रभ जीह जेता ,
भजै जटधर निगम मेता, नंद दसरथ नाम ।
गरुड़ध्वज रिममांणगाळा, वैर वाहर सीत वाळा ,
कहां झोक अनूप काळा, रूप भूपां रांम ॥
विसू रक्खण सुजस वातां, इंद्र कौसळ आखियातां ,
देव वंछित दांन दाता, दुम्फल दीन दयाळ ।
गाव दससिर थांण गंजे, प्रगट खळ जन भूप भंजे ,
जनक पण रख चाप भंजे, भले अवध भुवाळ ॥
गरज आसुर समर गाहे, सधर भुज खित्रवाट साहे ,
रट जग जग सीस रहे, गहर कीरत गाय ।
तेण सर गिरराज तारे, महा खळ दहकंध मारे ,
अडर उग्री भर उतारे, नमो स्री रघुनाथ ॥१२३

अथ गीत हिरणझंप सप्रम

दूहो

धुर मोळ्ह दूजी चवद, ती चौवीस तवंन ।
चौथी पंचम मत चवद, छठ पंचीस छजंत ॥ १२४

---

१ चुरस-श्रेष्ठ । नीतचारी-नीति पर चलने वाला । निरवहे-निभाया । हेक-एक । धींग-जबरदस्त । घनंखधारी-धनुषधारी । निपट-बहुत । असीचौ-लख-चौरासी लाख । एता-इतने । तौ-तुम्हारो । प्रभ-प्रभु । जीह-जीभ । जपै-जपते । जटधर-शिव । निगम-वेद मेता-मार्ग । नंद-पुत्र । गरुड़ध्वज-विष्णु श्रीरामचन्द्र । रिम-मांण-गाळा-शत्रु [illegible] वाला । वाहर-रक्षा । सीत-सीता । झोक-धन्य-धन्य । अनूप-अनुपम । काळा-श्री । विसू (वसु)-पृथ्वी । आखियातां-[illegible] । दुम्फल-[illegible] । वाल-[illegible] । [illegible] । भुवाळ राजा । आसुर-राक्षस समर-युद्ध । गाहे-नष्ट किया । खित्रवाट-क्षत्रियत्व । साहे-धारण किया । गाय-गाथा [illegible] । [illegible] । भर-समूह गिरराज-पर्वत । सट-समूह [illegible] । दहकंध-रावण । उग्री भूमि । भर-भार ।

२ धुर-प्रथम । दूजी-दूसरी । चवद-चौदह । ती-तीसरी । तवंन-कहते हैं । छजंत-शोभा देता है शोभा देती है

पहली दूजी मेळ पढ, तीजी छठी मिळाप ।
मेळ चवथी पंचमी, जपै वडा कित्र जाप ॥ १२५

धुर बी 'चौथी पंचमी, भगण नगण यां अंत ।
तीजी छठी अंत तुक, जगण अहेस जपंत ॥ १२६

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा सोळ तुक दूजी मात्रा चवदै तुक तीजी मात्रा चवदै तुक चौथी मात्रा चवदै तुक पांचमी मात्रा चवदै तुक छठी मात्रा चौबीस होवै। पैं'ली दूजी रै पछै मगण। चौथी पांचमी तुकरै अंत मगण तथा अंत लघु होवै। तीजी छठी तुकरै अंत जगण होवै। दूजा दूहा—पैं'ली दूजी चौथी पांचमी तुकां मात्रा चवदै होवै। तीजी छठी तुक मात्रा चौबीस होवै, जीं गीतरौ नांम हिरणझंप कहीजै।

अथ गीत हिरणझंप उदाहरण

गीत

निज आठ जोग अभ्यास अहनिस ,
सधै सुर घर जुगम रवि सस ,
करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम ।
असी ध्यार सुधार आसण ,
धौत बसती नीत धारण ,
करौ अेता कठिण विधक्रम, न सम राघव नांम ।

---

१२५ चवथी—चतुर्थ।

१२६ बी (द्वि)—दूसरी। यां—अन। अहेस (अहीश)—शेष-नाग।

१२७ आठ-जोग—अष्टांग योग। अहनिस—रात-दिन। सुर (स्वर)—नाकसे निकलने वाली वायु। जुगम (युग्म)—दो। रवि—सूर्य। सस (शशि)—चन्द्रमा। रेचक—प्राणायामकी एक क्रिया विशेष जिससे खींचे हुए सांसको विधिपूर्वक बाहर निकाला जाता है। पूरक—प्राणायामकी प्रथम क्रिया या विधि जिसमें सांसको भीतरकी ओर बलपूर्वक खींचते हैं। कुंभक—प्राणायामकी एक विधि जिसमें सांसकी वायुको भीतर ही रोक रखते हैं। दम—सांस। धौत—शरीर-शुद्धिकी योगकी एक क्रिया धौति। बसती (बस्ति)—योगकी एक क्रिया विशेष। नीत—कपड़ेकी एक पतली धज्जीको नाकसे पेटमें डाल कर आंतोंको शुद्ध करनेकी हठयोगकी एक क्रिया—(सम—बराबर, समान)

वंकनाळ समीर वासय ,
चकाक्ट तत पंच मिद् चय ,
सुचित मधुकर वसै संतत, जळज म्रकुटी मभ्कार ।
भूम खेचर चाचरी भण ,
मुनीउन भ्रा गोचरी मुण ,
निवड़ मुद्रा तपण नाहि, मीढ रेफ मकार ।
अधोमुख उघ पाय आसण ,
धूम्रपान सदीव धारण ,
मह्रा अै विघ्र कठिण मानव, करौ लाख करोड़ ।
तप क्रिया व्रत होम तीरथ ,
अवर परनी दांन हिम अथ ,
निपट अै विघ कवे नावै, जाप राघव जोड़ ।
तरुण गणिका नांम जै तर ,
पेख मवरी जात पांमर ,
धार अथखी देख धारण, पेख कीध पुकार ।
अजामेळ सरीख आधम ,
वाल्मीक पुलिंद येखम ,
'किसन' हेकण छिनक कीधो, यतां नांम उधार ॥ १२७

१२७ वंकनाळ—योगियोंकी बोलचालमें सुषुम्ना नामक नाड़ीका एक नाम । समीर—हवा । चकाक्ट (षट-चक्र)—योगके षट्चक्र । तत—तत्त्व । पंच—पांच । मधुकर—भौंरा । संतत—सदैव निरन्तर । जळज—कमल । मभ्कार—मध्य । खेचर—खेचरी-मुद्रा । चाचरी (चर्चरी)—योगकी एक मुद्रा । मुनीउन (उनमुनी)—हठ योगकी एक मुद्रा । मुण—कह । मीढ—समान बराबर । रेफ— र अक्षर । मकार—म अक्षर । अधोमुख—औंधा मुख । उघ—ऊपर । पाय—चरण । सदीव—नित्य । हिम—स्वर्ण सोना । अवै—अभी । जाप—जप । जोड़—समान बराबर । पांमर—नीच । धार—ऐसा समय । अथखी—हस्ति । धारण—हाथी । कीध—की । सरीख—समान । आधम—नीच । पुलिंद—एक प्राचीन असभ्य जाति । हेकण—एक । छिनक—क्षण मात्र । कीधो—किया । यतां—इतने ।

अथ गीत कैवार लछण

दूहौ

घुर अठार बी नव घरौ, ती सोळह नव वेद ।
लु गुरु अंत चौथी दुती, भण कैवार सुभेद ॥ १२८

अरथ

पैली तुक मात्रा अठारै होय । तुक दूजी मात्रा नव होवै । तुक तीजी मात्रा सोळै होवै । तुक चौथी मात्रा नव होवै । पछै सोळ नै नव ई क्रम होवै । दूजी चौथी तुकरै अंत दोय गुरु होवै तीं गीतरो नाम कैवार कहीजै ।

अथ कैवार उदाहरण

गीत

कीजै वारणै छिब कांम कौटिक, दीन दुख दाधौ ।
सामाथ सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राघौ ॥
घानंख्खधारी विरद धारण, तोय गिरतारी ।
राजवाळौ नंद दसरथ, भरोसौ भारी ॥
भव चाप भंज जनंक भूपत, राज पण रक्खै ।
सुज पूर सिम्रवट वरी सीता, सूर सिस सक्खै ॥
रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ बोहौ नांमी ।
दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ॥ १२९

---

१२८ बि (द्वि)–बी दूसरी । ती–तीसरी । लौ–लघु ।

१२९ वारणै न्यौछावर । छिब–शोभा । कौटिक–करोड़ । दाधौ–दग्ध जला हुआ । सामाथ–समर्थ । सरण-सधार–सरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । स्रीवर (श्रीवर)–विष्णु । राजरौ–श्रीरामका । राघौ–राघव रामचन्द्र भगवान । तोय–पानी । गिरतारी–पर्वतोंको तैराने वाला । राजवाळौ–श्रीरामका बापका । नंद–पुत्र । भव–महादेव शिव । चाप–धनुष । पूर–पूर्ण । सिम्रवट–अभिमत्त । सूर–सूर्य । सिस (शशि)–चन्द्रमा । सक्खै–साक्षी है । समाथ–समर्थ । बोहौ–बहुनामी । दसमाथ–रावण । भंज–नाश कर । दाटक–जबरदस्त शक्तिशाली । भुजाडंड–जबरदस्त । भांमी–बलैया न्यौछावर ।

अथ गीत दोढा लछण

दूहा

धुर बी ती चवदह धरौ, चौथी बार चवंत।
पंच छठी सप्तम चवद, अठमी बार अखंत॥ १३०
पहली बीजी तीसरी, मेळ रगण पछ होय।
मिळ चौथीसूं आठमी, 'जैं तुकांत लघु जोय॥ १३१
पंचम छठी सातमी, मेळ रगण पय छेह।
भाख रांम गुण 'किसन' भल, आखत दोढौ ऐह॥ १३२

वारता

दोढा गीतरै पैं'ली दूजी तीजी तुक मात्रा चवदै होय। चौथी आठमी तुक मात्रा बारै होय। पांचमी छठी सातमी तुक मात्रा चवदै होय। पैं'ली दूजी तीजी तुकां मिळै अंत रगण होय। चौथी आठमी तुक मिळै अंत लघु होय। पांचमी छठी सातमी तुक मिळ अंत रगण होय जीं गीतको नांम दोढो कहीजै।

अथ गीत दोढा उदाहरण

गीत

मड़ असुर आहव भंजिया, गह कुंभ सरखा गंजिया।
रघुराज संतां रंजिया, घडवार कीरत व्यंद॥
आजांनभुज बळ आगरौ, जैतार दससिर जंगरौ।
अस रूप कौट अनंगरौ, त्रिभुवेस नीत पय वंद॥

---

१३० धुर-प्रथम। बी-दूसरी। ती-तीसरी। चवदह-चौदह। बार-बारह। चवंत-कहते हैं। चवद-चौदह। अखंत-कहते हैं।

१३१ पछ-बादमें पश्चात।

१३२ पय-चरण। छेह-अंत। भल-ठीक। आखत-कहते हैं। ऐह-यह। चवदै-चौदह। बारै-बारह। जीं-जिस।

१३३ मड़-योद्धा। असुर-राक्षस। आहव-युद्ध। भंजिया-ध्वंस किये। गह-गंभीर महान। कुंभ-रावणका भाई कुंभकर्ण। सरखा-समान। गंजिया-नाश किये। रंजिया-प्रसन्न किये अथवा प्रसन्न हुए। वार-समय। कीरत-कीर्ति। व्यंद-वरन। आजांनभुज-आजानबाहु। जैतार-जीतने वाला जीत कर उद्धार करने वाला। दससिर-रावण। अस-यह। कौट-करोड़। अनंगरौ-कामदेवका। त्रिभुवेस-इन्द्र। पय-चरण। वंद-वंदन करता है।

अथ गीत कैवार सप्तम

दूहौ

धुर अठार धी नव धरौ, ती सोळह नव वेद ।
दु गुरु अंत चौथी दुती, भण कैवार सुमेद ॥ १२८

अरथ

ऐसी तुक मात्रा अठारै होय । तुक दूजी मात्रा नव होवै । तुक तीजी मात्रा सोळै होवै । तुक चौथी मात्रा नव होवै । पछै सोळै नै नव ई क्रम होवै । दूजी चौथी तुकरै अंत दोय गुरु होवै तौ गीतरौ नाम कैवार कहीजै ।

अथ कैवार उदाहरण

गीत

कीजै धारणौ लिय कांम कौटिक, दीन दुख दाघौ ।
साभाव सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राघौ ॥
धानंखधारी विरद धारण, तोय गिरतारी ।
राजवाळौ नंद दसरथ, भरोसौ भारी ॥
भव चाप भंज जनक भूपत, राज पण रक्खै ।
सुज पूर सिभ्रवट वरी सीता, सूर सिस सक्खै ॥
रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ बोहौ नांमी ।
दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ॥ १२९

---

१२८ दि (द्वि)—दो दूसरी । ती—तीसरी । तौ—उस ।

१२९ धारणौ—न्योछावर । लिय—लेना । कौटिक—करोड़ । दाघौ—दग्ध जला हुआ । साभाव—स्वभाव । सरण-सधार—शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । स्रीवर (श्रीवर)—विष्णु । राजरौ—श्रीमानका । राघौ—राघव रामचन्द्र भगवान । तोय—पानी । गिरतारी—पर्वतोंका तैराने वाला । राजवाळौ—श्रीमानका आपका । नंद—पुत्र । भव—महादेव शिव । चाप—धनुष । पूर—पूर्ण । सिभ्रवट—अभिमान । सूर—सूर्य । सिस (शशि)—चन्द्रमा । सक्खै—साक्षी है । समाथ—समर्थ । बोहौ—बहुनामी । दसमाथ—रावण । भंज—नाश कर । दाटक—जबरदस्त शक्तिशाली । भुजाडंड—जबरदस्त । भांमी—बलैया न्योछावर ।

तुक प्रत ये ये कंठ तव, रा रा सवद सरास ।
कहै नांम जिण गीतकौं, हंसावळी सहास ॥ १३५

अरथ

बेलिया सांणोर गीतरै तुकप्रत ये ब अनुप्रास एक सरीसा होवै । सोळै तुकांमें बतीस कंठ होवै सो गीत हंसावळी सांणोर कहावै ।

अथ गीत हंसावळारी उदाहरण

गीत

सतरा हरचंद सुमतरा सागर, चितरा विलंद सुदतरा चात्र ।
यतरा अत्रण अमतरा वाधण, नतरा तार मुकतरा नाथ ॥
वनरा वांस सुमनरा काज वस, पुनरा निध तनरा आपांण ।
भय मेटण जनरा मन भनरा, महदनरा मनरा महरांण ॥
रिखरा निज मखरा रखवाळण, दुखरा तन लखरा जन दाह ।
घखरा खळ मुखरादस घड़चण, नरपखरा पखरा निरवाह ॥
सुखकरा थिररा वासी सुज, संकररा उररा सामाय ।
वररा सीत तार गिरवररा, हररा अघ रघुनररा हाथ ॥१३६

---

१३५ कंठ–अनुप्रास । सरास–रसपूर्ण । सहास–आनंदपूर्वक हर्षपूर्वक ।

१३६ सतरा–सत्यका । हरचंद–राजा हरिश्चंद्र । सुमतरा–सुमतिका । चितरा–चित्तके । विलंद–महान बड़ा । सुदतरा–श्रेष्ठ दानका । चात्र–उमंग । यतरा–यत्नका । अत्रण–देने वाला । अमतरा–अथाह कीर्तिका । वाधण–बढ़ाने वाला । नतरा–नहीं तैर सकने वाला पानी पर्वतादि । तार–तैराने या उद्धार करने वाला । सुकतरा–श्रेष्ठ कार्यका । सुमनरा–देवताओंका । काज–काम । पुनरा–पुण्यका । निध (निधि)–खजाना । तनरा–शरीरका । आपांण–शक्ति, बल । महरांण (महार्णव)–समुद्र । रिखरा–ऋषिका । मखरा–यज्ञका । रखवाळण–रक्षा करने वाला । लखरा–लाखोंका । दुखरा–दुखका । घखरा–दुष्टका । खळ–राक्षस । मुखरादस–रावण । घड़चण–मारने वाला काटने वाला । नरपखरा–जिसका कोई पक्ष या सहायक न हो । पखरा–पक्षका । निरवाह–निभाने वाला । वररा–पृथ्वीका । सामाय–समर्थ । तार–तैराने वाला । गिरवररा–पर्वतोंका । अघ–पाप ।

कौटेक अघदळ काटणौ, असुरेस मूळ उपाटणौ ।
थिर संत थांनक थाटणौ, अभनिमौ सगर अरोड़ ॥
भुज तेज कौटक सूररौ, रज कौट इंद्र जहूररौ ।
निज समुख रजवट नूररौ, महराज रवि कुळ मोड़ ॥
थांनैत भूपत वंकड़ा, घण भंज रिण असुरां थड़ा ।
भुज दास टाळण संकड़ां, लहरेक आपण लंक ॥
भूपाळ सिघ घन भूपती, रिझवार कीरत वड रती ।
अंग लियां पौरस आसती, अवधेस जुध अणसंक ॥
सुज भ्रात जेठी सेसरा, दइवांण वंस दनेसरा ।
हृद कंज मधुप महेसरा, मन महण रूप समाथ ॥
हृद भाळ सुसमद भळहळा, निज कर्दम समहर नहचला ।
साधार सेवग सांवळा, नूपराज दसरथ नंद ॥ १३३

अथ गीत हंसावळी सांणोर लक्षण

दूहौ

धुर अठार फिर पनर धर, सोळ पनर सरवेण ।
लक्षण औ है अंत लघु, जपै वेलियौ जेण ॥ १३४

---

१३३ अघ-पाप । दळ-समूह । काटणौ-काटने वाला । असुरेस-रावण । मूळ-जड़ मूल । उपाटणौ-मिटाने वाला । थिर-स्थिर । थांनक-स्थान । थाटणौ-शोभा बढ़ाने वाला वैभव बढ़ाने वाला । अभनिमौ-वंशज । सगर-एक सूर्यवंशी राजाका नाम । अरोड़-जबरदस्त । भुज-बाहु । कौटक-करोड़ । सूररौ-सूर्यका । रज-वैभव । जहूर (जुहूर)-प्रकाशमान प्रकट । रजवट-क्षत्रियत्व वीर्य । नूर-कांति दीप्ति सुन्दरता । रवि-सूर्य । [illegible] भार । भूपत-भूपति राजा । वंकड़ा-बांकुरा । घण-बहुत अधिक । रिण-युद्ध असुरां-राक्षसों । थड़ा (थट्ट)-सेना । दास-भक्त । टाळण-मिटानेको दूर करने को । संकड़ा-संकुचित संकट । आपण-देने वाला । लंक-लंका । सिघ-श्रेष्ठ । घन-धन्य । रिझवार-प्रसन्न होने वाला । वड-महान बड़ी । रती-कांति दीप्ति । आसती-महान प्रबल । अणसंक-निडर निर्भय । भ्रात-भाई । जेठी (जेठ)-बड़ा । सेसरा-लक्ष्मणका । दइवांण-महान जबरदस्त । दनेसरा (दिनेशका)-सूर्यका । हृद-हृदय । कंज-कमल । मधुप-भौंरा । महेसरा-महादेवका । महण (महार्णव)-समुद्र । समाथ-समर्थ । सुसमद-कीर्ति मद । कर्दम (कदम)-चरण । समहर-युद्ध । साधार-रक्षक सहायक । सेवग-भक्त । सांवळा-श्रीकृष्ण श्रीराम । नंद-पुत्र ।

१३४ धुर-प्रथम । अठार-अठारह । पनर-पनरह । सोळ-सोलह । सरवेण-सवर्ण ।

कंज सरभर समुख कोमळ, कांन झगमग हुरि कुंडळ ।
नयण परसत पत्र निरमळ, वूठ रांम दुबाह ॥
भुजा सळ खळ भंज भारथ, अथघ अपहड़ व्रवण किव अथ ।
सरब सातां वर्णे समरथ, घाग धाण घनेख ॥
कहै मुख मुख जगत जस कथ, असुर समहूर नाथ ऊनथ ।
दुभल राघव सुतण दसरथ, लियण भुजब्बळ लंक ॥
घड़ण नोखा घाट अणघट, वर्णे लंगर पाय रिणवट ।
घणूं व्यापक ईस घट घट, संत कारज सार ॥
मेल दळ घण रीछ मरकट, पाज बंध समंद जळ पट ।
खळां सबळां भंज खळ खट, विजै कर रणवार ॥
विहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर ।
थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज ॥
नेतबंध रघुनंद नाहर, छत्री सरण हित उछाहर ।
भमीखण कर लंक स्रीवर, मौज की महराज ॥१४०

अथ गीत झमाळो लछण

दूहा

एक दवाळौ आंकणी, औ पैं'ला कर अेम ।
ग्यार मत्त धुर नव दुती, निज ग्यारह नव नेम ॥ १४१
अवर दवाळा वीस खट, तुक प्रत मत्त तवंत ।
मिळै ग्यार तुक अंत लघु, किय भाखड़ी कहंत ॥ १४२

---

१४० कंज–कमल । सरभर–समान । झगमग–चमक चमक । हीर–हीरा । वूठ–अवतरण्‍त । दुबाह–वीर । भंज–नाश कर । भारथ–युद्ध । अथघ–अपार । अपहड़–दानवीर, दातार । व्रवण–दान देने वाला । किव–कवि । घण (घणे)–धन-दौलत । सार–साधना करने करना । ऊनथ–वह जो बन्धनमें न हो उदण्ड । दुभल–वीर । सुतण–पुत्र । लियण–लेने वाला ।

१४१ दवाळौ–गीत छन्दके चार चरणका समूह । ग्यार–ग्यारह । मत्त–मात्रा ।

अथ गीत रसखरा लक्षण

दूहा

धुर सोळह बी ती चवद, चौथी दस मत चाह ।
पंच छठी सप्तम चवद, दस आठमी सराह ॥ १३७

धुर बी ती पंचम छठी, सप्तम खट तुक मेळ ।
मिळ चौथीसूं आठमी, मल तुकंत लघु भेळ ॥ १३८

नगणक भगण तुकंत खट, तगण जगण यव आठ ।
सुकव रसखरौ गीत सौ, पढ जस राघव पाठ ॥ १३९

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा सोळै होवै। दूजी तुक मात्रा चवदै होव। तीजी तुक मात्रा चवदै होवै। चौथी तुक मात्रा दस होवै। पांचमी तुक मात्रा चवदै होवै। छठी तुक मात्रा चवदै होव। सातमी तुक मात्रा चवदै होवै। आठमी तुक मात्रा दस होवै। पैं'ली दूजी तीजी पांचमी छठी सातमी यै तुकां मिळ। यां छ ही तुकांरै अंतमें नगण तथा भगण तुकांतमें आवै अर चौथी तुक आठमी तुकसूं मिळै। यां दोयांरै तुकांत नगण तथा जगण होवै जीं गीतरौ नाम रसखरौ कहीजै। गुरुंत छै। हिरणझम्प रसखरारौ अेक लक्षण छै।

अथ गीत रसखरारौ उदाहरण

गीत

सुज रूप भूप अनूप स्यांमळ, जेम बरसण घटा छिब जळ ।
धरौ अंबर पीत बीजळ, सुकव कीरत सराह ॥

---

१३७ धुर-प्रथम। बी-दूसरी। ती तीसरी। चवद-चौदह। मत-मात्रा।

१३८ खट-छः।

१३९ नगणक-नगण। पढ-कह। सुकव-श्रेष्ठ कवि। यां-इन। ज्यां-जिन। दोयांरै-दोनोंके। जीं-जिस। गुरुंत-वह जिसके अन्तमें गुरु हो।

नोट—मूल प्रतिमें गुरुन्त शब्द लिखा मिला। यहां पर लघ्वांत होता तो ठीक रहता क्योंकि रसखरा गीतमें सर्वत्र अन्त लघु वर्ण ही होता है।

१४ स्यांमळ-श्याम कृष्ण। बरसण-वर्षा। छिब-कांति। अंबर-वस्त्र आकाश। पीत-पीला। बीजळ-बिजली विद्युत। सराह-प्रशंसा।

खग दत ग्रद खटांजी, गखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
पह्व वीरहाक धनाक धणचां, बाज डाक भ्रबाक।
भ्रसनाक पर ग्रीधाक भ्रावध, कग्ग बाज कजाक॥
चट्ठा करत खप्पराक चंडी, राग भ्रज भ्रयराक।
रिणछाक चढ़ रिव ताक राघव, लखण सहित लड़ाक॥
खग दत ग्रद खटांजी राखण रजवटा।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
पाराथ सेवग भ्राय भ्रापण करण सिध मन काय।
वसवूण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ॥
जुड़हाथ माथ नमाय जपै, गुणां 'किसनौ' गाथ।
सरणाय लंक समाथ समपण, निमौ स्री रघुनाथ॥
खग दत ग्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥ १४३

अथ छन्द विधि गीत भाखड़ो लछण

दूहौ

धुर नव मत जीकार फिर, चवद गुरू लघु भ्रंत।
एम च्यार तुक भ्रांकणी, किय भाखड़ी कहंत॥ १४४

---

१४३ वीरहाक—वीर-ध्वनि। धनाक—धनुष। धणचां—प्रत्यंचाओं। डाक—डंका। भ्रबाक—धमाका। चट्ठा—द्रव पदार्थको जीभसे खींच कर पीनेसे होने वाली ध्वनि। भ्रयराक—तेज भयंकर। रिणछाक—युद्धोन्मत्तता। रिव (रवि)—सूर्य। लखण—लक्ष्मण। लड़ाक—योद्धा। पाराथ—प्रार्थना। सेवग—भक्त। भाव—मन-चीतत। भ्रापण—देनेको। काय—कया। वसवूण—बीस। समाथ—समर्थ। दाटक—जबरदस्त महान। खळ—राक्षस। दसमाथ—रावण। जुड़हाथ—कर-बद्ध होकर। माथ—मस्तक। नमाय—नमा कर, झुका कर। जपै—कहता है। गुणां—गुण कीर्ति। गाथ—कथा गाथा। सरणाय—शरणमें भ्राया हुआ। समाथ—समर्थ। समपण—समर्पण करनेको समर्पण करने वाला।

१४४ धुर—प्रथम। मत—मात्रा। चवद—चौदह। कहंत—कहते हैं।

अरथ

माळझीनामा गीतकै पैंसी तौ मांकणीकी एक दवाळौ होय सो दवाळौ माळझीका सारा दवाळांकै मागी पड्यौ जाय जौ मांकणीका दवाळाको पहली तुक मात्रा इग्यारै, चौथी तुक मात्रा नव होय और गुरु अंत होय और माळझीका दवाळाकी सारी तुकां प्रत मात्रा छाईस होय। अंत लघु होय जो गीतको नांम माळझो कहीजै। मात्रा उपछन्द छै।

अथ गीत माळझी उदाहरण

गीत

खग दत ग्रद खटांजी, राखण रजवटां।
पूरण खळ पटांजी, राघव रिणवटां॥
रिणवटां राघव खळां रहचण भुजबळां भ्रणभंग।
सुज पळां ग्रधळां दियण ममळां, गळां ग्रीध सुचंग॥
चळवळां जोगण खपर चळवै, सिंभ कमळां स्रग।
जग गीत चिहूंवै-थळां जाहर, सुजस हुवै सुढंग॥
खग दत ग्रद खटांजी, राखण रजवटां।
पूरण खळ पटांजी, राघव रिणवटां॥
भड़भड़े के लड़थड़े भारथ, भड़े के भ्रणभड़ैत।
वड़वड़े के तड़हड़े वाजळ, जड़े के जरदैत॥
झड़वड़े के धड़हड़े आतस, जुड़ै के कज जैत।
विच समर हेकण घड़ै राघव, वहै रंग विरदैत॥

१४१ खग-तलवार। दत-दान। खटां-प्राप्त करे। रजवटां-क्षत्रियत्व। पूरण-नाश करना नाश करना संहार करना। खळ-शत्रु। पटां-दल। रिणवटां-युद्धमें। रहचण-संहार करनेको। भ्रणभंग-नहीं भगने वाला वीर। पळां-मांस। ग्रधळां-गृध्र। ममळां-मांसाहारी पक्षी विशेष। गळां-मांस-पिंडों। चळवळां-रक्त, खून। जोगण-योगिनी [illegible]। सिंभ-शंभु महादेव। कमळां-मस्तकों। स्रग (तुक)-माला। चिहूंवैथळां-चारों ओर। सुढंग-अच्छा। भड़-योद्धा। भड़े-भिड़ते हैं युद्ध करते हैं। लड़थड़े-लड़खड़ाते हैं। भारथ (भारत)-युद्ध। भड़े-परस्पर भिड़ते हैं। के-कई। भ्रणभड़ैत-योद्धा। वड़वड़े-भिड़ते हैं। तड़हड़े-हंसते हैं। वाजळ-तलवार। जड़े-प्रहार करते हैं। जरदैत-कवचधारी योद्धा। झड़वड़े-हड़बड़ मचाते हैं। धड़हड़े-तोपोंकी ध्वनि होती है। जुड़ै-भिड़ते हैं। कज-लिये। जैत-विजय। विच-बीचमें। समर-युद्ध। हेकण-एक। घड़ै-तरफ, ओर दलमें। विरदैत-विरदधारी वीर।

खग दत मद खटांजी, राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥
पह वीरहाक पनाक पणचां, वाज डाक त्रवाक ।
असनाक पर प्रीधाक आवध, कग्ग वाज कजाक ॥
चहठा करत खप्पराक चंडी, राग भ्रज भयराक ।
रिणछाक चढ़ रिव ताक राघव, लखण सहित लड़ाक ॥
खग दत मद खटांजी राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥
पाराथ सेवग आथ आपण करण सिध मन काथ ।
दसदूण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ ॥
जुड़हाथ माथ नमाय जंपै, गुणां 'किसनौ' गाथ ।
सरणाय लंक समाथ समपण, निमो स्त्री रघुनाथ ॥
खग दत मद खटांजी, राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥ १४३

अथ छन्द त्रिधि गीत मारवड़ो मथण

दूहौ

धुर नव मत जीकार फिर, चवद गुरू लघु अंत ।
एम च्यार तुक आकणी, कित्र मारवड़ी कहंत ॥ १४४

---

१४३ वीरहाक—वीर ध्वनि। पनाक—धनुष। पणचां—प्रत्यञ्चाओं। डाक—डंका त्रवाक—नगाड़ा। चहठा—अब पदार्थको बीचसे खींच कर बीचसे होने वाली ध्वनि। भयराक—तेज भयकर। रिणछाक—युद्धोन्मत्तता। रिव (रवि)—सूर्य। लखण—लक्ष्मण। लड़ाक—योद्धा। पाराथ—प्रार्थना। सिध—भक्त। आथ—धन-दौलत। आपण—देनेको। काथ—कथा। दसदूण—बीस। समाथ—समर्थ। दाटक—जबरदस्त महान। खळ—राक्षस। दसमाथ—रावण। जुड़हाथ—कर-बद्ध होकर। माथ—मस्तक। नमाय—नमा कर, झुका कर। जंपै—कहता है। गुणां—यश कीर्ति। गाथ—कथा गाथा। सरणाय—शरणमें आया हुआ। समाथ—समर्थ। समपण—समर्पण करनको समर्पण करने वाला।

१४४ धुर—प्रथम। मत—मात्रा। चवद—चौदह। कहंत—कहते हैं।

अथ गीत त्रुतीय भाखड़ी उदाहरण
गीत

सीवर सारणौ जी, केतां निवळ संतां कांम ।
महपत मारणौ जी, मह जुध फरसधरसां मांम ॥
धजबंध धारणौ जी, बंका बरद सुज वरियांम ।
सरण-सधारणौ जी, रिवकुळ आभरण रघुरांम ॥
रघुरांम भूपत आभरण, रिववंस अडर अरेह ।
सुज धरण बंका बिरद अणभग, तीख खित्रवट तेह ॥
दिल गहर ओपत सुतण दसरथ, बोल मुख लख बेह ।
सुत पूर आसां सरब समरथ, निपट वारां नेह ॥ १४५

अथ गीत अरधभाखड़ी तृतीय लक्षण
दूहौ

अरध दवाळौ आंकणी, बीजौ अरध वखांण ।
अरधभाखड़ी कवि अखै, जुगत त्रिहूं विध जांण ॥ १४६

अथ गीत अरधभाखड़ी उदाहरण
गीत

आरख अंगरा जी दुती झळळाट रवि दरसेण ।
रूप अनंगरा जी जोयां हुवै रद छवि जेण ॥

---

१४५ सीवर (श्रीवर)—विष्णु श्री रामचन्द्र। सारणौ—सिद्ध करने वाला सफल करने वाला। केतां—कितने। निवळ—निर्बल। महपत (महिपति)—राजा। मारणौ—मारने वाला। फरसधरसां—परशुरामजीसे। मांम—गर्व प्रतिष्ठा। धजबंध—वीर। धारणौ—धारण करने वाला। बंका—बांकुरे। बरद—विरद। वरियांम—श्रेष्ठ। सरण-सधारणौ—शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला। आभरण—आभूषण। रिववंस (रविवंश)—सूर्यवंश। तीख—विशेषता। खित्रवट—क्षत्रियत्व वीरता। गहर—गंभीर। ओपत—शोभा देता है। सुतण—पुत्र। बोल—वचन शब्द। निपट—बहुत। वारां—बच्चों। नेह—स्नेह।

१४६ दवाळी—गीत छंदके चार चरणका समूह। बीजौ—दूसरा। अखै—कहते हैं। जुगत—युक्ति। त्रिहूं—तीनों। विध—विधि प्रकार, तरह। जांण—समझ।

१४७ आरख—चिह्न लक्षण। दुति (द्युति)—कांति दीप्ति। झळळाट—चमक दमक। रवि—सूर्य। दरसेण—दर्शनसे। अनंगरा—कामदेवका। जोयां—देखने पर। रद—सदा निकम्मा रद्द। छवि—शोभा। जेण—जिसस।

जिण जोय रद छबि हुवै जाहर कौट कांम कांम ।
सुत भूप दसरथ नूप सोभा रूप रविकुळ रांम ॥ १४७

अरथ

मण तरै च्यार दवाळा तथा यथक दवाळाई होय तिणनूं अरथमात्रकी कहीजै । तुक दो म्रांकणीरी हुवै ।

अथ गोखौ गीत लछण

दूहौ

बारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसा अंत ।
छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत ॥ १४८

अरथ

अथ गोखा गीतरै तुक आठ होवै । तुक अेक प्रत मात्रा बारै होवै नै आठमी तुकमै वीपसा होवै जिको गोखौ सावभ्रड़ौ गीत कहीजै ।

अथ गीत गोखा उदाहरण

गीत

साम्हीके यखत सांम, येल संत वारियांम ।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप आप नांम ॥
धार चाप तेज धांम, वांम अंग रमा वांम ।
किता सार संत कांम, सिया रांम सिया रांम ॥ १४६

अथ तृतीय गोखौ गीत लछण

दूहौ

मझ खट तुक बारह मता, येद अठम नव जाण ।
कळ नेऊ लघु अंत कह, इक गोखौ इम आंण ॥ १५०

---

१४७ जोय-देख कर । कौड़-करोड़ । भूप (अनूप)-अद्भुत । छब-छब । तरै-तरह प्रकार । यथक-अधिक । तिणनूं-उसको । हुव-होती है ।

१४८ मत-मात्रा । प्रत-प्रति । आख-कह । वीपसा (वीप्सा)-एक शब्दालंकार जिसमें शब्द या भाव पर बल देनेके लिए पुनरावृत्ति होती है । दवाळ-तीन पदके चार चरणोंका समूह । यूं-ऐसे । आखंत-कहते हैं ।

१४९ वेल-मदद । वारियांम-श्रेष्ठ । तमांम-सब । धार-धारण कर चाप-धनुष । वांम-बायां । रमा-लक्ष्मी सीता । किता-कितने । सार-पालन कर ।

१५ मझ-मध्य । खट-छः । मता-मात्रा । येद-चतुर्थ चौथी । अठम-आठवीं । नव-नौ । कळ-मात्रा । मझ-मध्ये । इक-एक । इम-ऐसे । आंण-ला रख ।

अरथ

दूजा गोखारै तुक तीन पैं'सी दूजी तीजी मात्रा बारै होय। तुक चौथी मात्रा नव होय। तुक पांचमी छठी, सातमी मात्रा बारै-बारै होय। तुक आठमी मात्रा नव होय। कुल मात्रा एक दवाळामें असे होय। गुरु लघु तुकंत पैं'सी दूजी तीजी मिळै। चौथी आठमी मिळै। पांचमी छठी सातमी मिळै। कोई कवि यूं पिण गोखो कहै छै तोई सावझड़ी छै।

अथ तृतीय गोखा गीत उदाहरण

गीत

साम्हीके यसत्त सांम, मेल संत धारीयांम।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप नांम ॥
धार चाप तेज धांम, धांम अंग रमा धांम।
किता तार संत कांम, रांम रांम रांम ॥
समझै मंदगी सुरीस, देव तौ जपै दनीस।
लाख लछीस, नांमणौ नरीस ॥
काढ जंग भुजावीस, रीझियां लँका वरीस।
कियौ जे सखा कपीस, ईस ईस ईस ॥
भेत गुणां गाथ भेव, आमडै न अहंमेव।
ईंदसा सुरा अजेव, साम्ह तास सेव ॥
कीरति वांणी कहेव, दिलां धरै संमदेव।
वाह जेण चेत वेव, देव देव देव ॥

---

११ यूं–ऐसे। पिण–भी। तोई–तब भी।

१२१ आर्मे–करता है। मंदगी–बहुत सेवा। सुरीस (सुरेश)–इन्द्र। तौ–तुम्हें। दनीस (दिनेश)–सूर्य। लछीस (लक्ष्मी+ईश)–विष्णु श्री रामचन्द्र। नांमणौ–नमाने वाला झुकाने वाला। नरीस (नरेश)–राजा। काढ–काट कर। जंग–युद्ध। भुजावीस–रावण। रीझियां–प्रसन्न होने पर। लंका-वरीस–लंकाका दान देने वाला। सखा–मित्र। कपीस–सुग्रीव। भेव–भेद। आमडै–स्पर्श करता है। अहंमेव–अभिमान गर्व। ईंदसा–इन्द्रके समान। सुरा–देवता। साम्ह–करते हैं। तास–उस। सेव–सेवा। वांणी–सरस्वती। कहेव–कहती है। संम (संभु)–शिव।

नरेस अनाथ नाथ, अनाथियां धरे आथ ।
करै तूं सुधारे काय, रटां सांमराथ ॥
भंज के खळां भराथ, गुणां वेद ब्रह्म गाथ ।
गुणै तौ नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ॥ १५१

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ-सावझड़ौ लक्षण

दूहौ

धुर बी ती तुक सोळ मत, चौथी मत्त अढार ।
सावझड़ौ तुक अंत लघु, ढोलहरौ निरधार ॥ १५२

अरथ

जिण गीतरै पैं'ली दूजी तीजी तुक मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा अढारै होय । पण अंत लघु कर पढ़णा चाहै तौ सोळ ही-मत्त जाय सावझड़ौ होय । क्दा'क पैं'ली दूजी तीजी तुकांमें मात्रा सोळै सूं अधिक होय तौ अटकाव नहीं । पण सोळै सूं घटती तौ नहीं संभवै । यूंनी गीत देख कीवौ छै ।

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

पेख भणै जिण चाह परघ्घर, धींग भुजां निज चाप सरघ्घर ।
जेण भजै रिखी ब्रह्म जट धर, गावबे गावबे गाव गिरधर ॥
तौ चित चाह उधार सुतंनह, सेवत तौ दसरथ सुतंनह ।
रात दिनां कर खांत रसंनह, बोलबे बोलबे बोल बिसंनह ॥

---

१५१ अनाथियां—गरीबों । आथ—धन-दौलत । काय—कार्य काम । सांमराथ—समर्थ । भराथ—युद्ध । गुणै—कहते हैं । तौ—तुमको । नमाय—नमा कर । माथ—मस्तक ।

१५२ धुर—प्रथम । बी—दूसरी । ती—तीसरी । सोळ—सोलह । मत—मात्रा । मत्त—मात्रा । अढार—अठारह । निरधार—निश्चय । पण—परन्तु । क्दा'क—कदाचित् । अटकाव—अड़चन । कीवौ—किया ।

१५३ पेख—देख कर । भणै—भणता है । धींग—जबरदस्त । चाप—धनुष । सरघ्घर—बाण धारण करता है । जेण—जिसको । रिख—ऋषि । ब्रह्म—ब्रह्मा । जटधर—शिव । गिरधर—गिरधारी । तौ—तेरे । चाह—इच्छा । सुतंनह—पुत्र । खांत—विचार । रसंनह—जीभ । बिसंनह—विष्णु ।

खेढपखौ थम ऊ थर सौ चित, आळ-जंजाळ विसार अलछ्छत ।
सांन विमास विसास धरेसत, पढवे धढवे पद्द रघ्घुपत ॥
कारुणचौ निध जांनुकीकंतह, स्यांम सुनाय करै घण संतह ।
तूं 'किसना' चित रक्ख नच्यंतह, अखवे अक्खवे अक्खन अनंतह ॥१५३

अथ गीत अकुटबंध लछण

दूहा

घुर चवदह चवदह दुती, तीजी मत छाईस ।
चवदह चौथी पंचमी, इम तुक पंच कहीस ॥ १५४
आठ तुकां फिर कंठकी, पै'ली सोळह मत्त ।
चवद चवद कळ आठ तुक, नवमी दसह निरत्त ॥ १५५
पै'ली दूजीसूं मिळै, तिणरै गुरु तुकंत ।
तीजी दूहा अंतरी, उभै मिळै लघु अंत ॥ १५६
मिळै चवथी पंचमी, जिकां अंत गुरु जांण ।
अनुप्रासकी आठ तुक, मिळै अंत लघुमांण ॥ १५७
अकुटबंध तिण गीतनै, कहै सरब कवियांण ।
राघव जस जिण मझ्झ रटै, वळै सतारथ वांण ॥ १५८

---

१५३ खेद-लड़ाई । खस्यौ-कष्ट दुःख । अंबर (उम्र)-आयु । आळजंजाळ-संसारका प्रपंच । विसार-भूल जा । सांन-बुद्धि । विमास-विचार कर । विसास-विश्वास । कारुणचौ निध-करुणाका खजाना । जांनुकीकंतह-जानकीका पति श्री रामचंद्र । स्यांम-स्वामी । घण-बहुत । नच्यंतह-निश्चित । अखवे-कह रे । अक्खन-कह । अनंतह-विष्णु, श्री रामचंद्र ।

१५४ चवदह-चौदह । दुती-दूसरी । मत-मात्रा । छाईस-छब्बीस । कहीस-कह, कही जाती है ।

१५५ कंठ-अनुप्रास । चवद-चौदह ।

१५७ चवथी-चौथी । लघुमांण-लघु ।

१५८ कवियांण-कविगण । राघव-श्री रामचन्द्र भगवान । मझ्झ-मध्य । वळै-फिर । सतारथ (सत्यार्थ)-सत्य । वांण-वाणी वचन ।

अरथ

अकुटबंध गीतरै पै'ली तुक मात्रा चवदै। दूजी तुक मात्रा चवदै। तीजी तुक मात्रा छाईस। पै'ली दूजीसूं मिळ तुकंत गुरु। तीजी सारा ही दूहांरी अंतरी तुकसूं मिळ। तीजीरै नै अंतरीरै अंत लघु। बिचली अनुप्रासांरी तुक आठ ज्यांमें पै'लीरी तुक तौ मात्रा सोळै और सात ही तुकां अंत मात्रा चवदै चवदै होय। अनुप्रासांरी आठ ही तुकांरा मोहरा मिळै नै तुकंत लघु होय। यण प्रकारसूं गीत अकुटबंध कहीजै। अनुप्रासांरी तुक आठ ज्यांमेसूं च्यार घटती कहै जीनै मुगट बंध कहीजै। अतरौ अकुटबंध मुकटबंधरै भेद छै। दूजूं दोनूंई एक छै, कांई तफावत नहीं।

अथ गीत अकुटबंध उदाहरण

गीत

अवघेस लंका ऊपरै, धर कुरख घंखा जुध धरै।
अठार पदम कपेस अणघट, मेळ दळ महराज ॥
गत विसर त्रंबक गड़गड़ै।
भारथ कपी आसुर भड़ै।
भड़ अनड़ थडथड अमुड़ जुध मड़।
दुजड़ पड़ झड़ भड़क खित झड़।
दड़ड़ रत पड़ अगुट दड़दड़।
चड़ड़ ऊघड़ प्रगड घख अड।
खड़ड़ नगहड खपर खड़खड़।

---

१२८ चवद-चौदह। बिचली-बीचमें मध्यकी। ज्यांमें-जिनमें। यण-इन। तफावत
तफावत-फर्क अन्तर।

१२९ कुरख-कोप। लंका-इच्छा। पदम-गणितमें सोलहवें स्थानकी संख्या। कपेस-वानर। अणघट-अपार। गत-प्रकार तरह। विसर-भयंकर, भयावह। त्रंबक-नगाड़ा। गड़गड़ै-बजते हैं। भारथ-युद्ध। कपी-वानर। आसुर-राक्षस। भिड़ै-युद्ध करते हैं। भड़-योद्धा। अनड़-स्वाभ। थडथड-थर-थर। अमुड़-नहीं मुड़न वाला। दुजड़-तलवार। झड़-प्रहार। भड़क-ध्वनि विशेष। खित-पृथ्वी। झड़-टूट कर। दड़ड़-द्रव पदार्थका वेग प्रवाह या ध्वनि। रत-रक्त खून। अगुट-गिर दड़दड़ ध्वनि विशेष। खड़ड़-ध्वनि विशेष। खड़खड़-ध्वनि विशेष।

हड़ड़ नारद वीर हड़हड़ ।
घड़ड़ आतस सिखर घड़हड़ ।
गहड़ बिखम त्रयंक गड़गड़, गडड घर नभ गाज ॥
पड मार तरवर पाथरां, रिण बिकट कपी रघुनाथरा ।
दससीस दळ भुजबळां, द्रहवट कीध अडर सकोप ॥
नभ संचरथ अवनाड़रा ।
खिलक्कत कौतूक राड़रा ।
थळ प्रबळ चौवळ कळळ दमंगळ ।
भळळ बीजळ सेल मळहळ ।
अहप सिर लळ अचळ चळ यळ ।
वाज हूंकळ कळळ वळवळ ।
खळळ घळबळ सरित खळहळ ।
समळ पळगळ लीध सांमिळ ।
मिळ कमळ सगनेत मंगळ ।
जुध अयल कुळ नूमळ घट जळ, अचळ राघव ओप ॥
भख हणू भुजअव घारखा, सुग्रीव अंगद सारखा ।
नळ नील दध-मुख पणस नाहर, विहद जंमूवांन ॥

१५१ हड़ड़—हंसनेकी ध्वनि । हड़हड़—हंसनेकी ध्वनि । घड़ड़—तोपोंकी ध्वनि । बिखम—विषम । गड़गड़—नगारेकी ध्वनि नगारा बजना । गड़ड़—ध्वनि विशेष । नभ—आकाश । तरवर—वृक्ष । पाथरां—पत्थरों । रिण—युद्ध । बिकट—भयंकर । दससीस—रावण । दळ—सेना । भुजबळां—भुजाबलसे । द्रहवट—भाग गया । अवनाड़रा—सूर्यका । राड़रा—युद्धका । चौवळ—चारों ओर । कळळ कोलाहल । दमंगळ—युद्ध । भळळ—चमक चमक । बीजळ—तलवार । सेल—भाला । मळहळ—चमक दमक । अहप—शेषनाग । चळ—चूक जाते हैं चूक गये । अचळ—पर्वत । चळ—चलायमान । यळ (थला)—पृथ्वी । वाज—घोड़ा । हूंकळ—घोड़ोंकी हिनहिनाहटकी ध्वनि । कळळ—कोलाहल । वळवळ—चारों ओर । खळळ—द्रव पदार्थके बहनेकी ध्वनि । घळबळ—रक्त खून । सरित—नदी । खळहळ—बहने लगी । समळ—मांसाहारी पक्षी विशेष । पळ—मांस । गळ—पिंड कौर । कमळ—सूर्य । नूमळ—निर्मल । जळ—कांति दीप्ति । अचळ—अटल । ओप—कांति । हणू—हनुमान । सारखा—समान । जंमूवांन—जामवन्त ।

जग मय मर्यंद गवाखसा ।
लड हेक भंजण लाखसा ।
इर अंतर लसकर समर ओर ।
सघर घण सुर कंवर दससिर ।
सुकर धर सर बजर ससतर ।
गहर हर वह पथर तर गिर ।
वहर सिर कर देह वाखर ।
पहर चौसर सुवर अपछर ।
सघर रघुबर दुझर वह सर ।
असुर दससिर दुसर छिद उर, मछर भंज अमांन ॥

कोवाळ लिछमण कांमरौ, रिण लड़ै बंधव रांमरौ ।
तिण मेघनाद विभाड तारवै, पाड असहां पूज ॥

कूंभेण दससिर कांमती ।
पह भंज हेकल रघुपती ।
रिण कुंभ सुरधण मार रांवण ।
कठण खळ जण कीध कणकण ।
भिभीखण जग चरण वासण ।
सरणहित तिण लंक समपण ।
उछव घण सिय तरण आंणण ।
प्रसण हण मन महण द्रढ पण ।

---

२२१ चौसर-पुष्पहार । अपछर-अप्सरा । बघर-वीर । मछर-गर्व । कोवाळ-क्रुद्ध । लिछमण-लक्ष्मण । बंधव-भाई । विभाड़-प्रहार कर मार कर । तार्वे-वीर । असहां-शत्रुओं । पूज-समूह । पह (प्रभु)-योद्धा राजा । कणकण-तितर-बितर । उछव-उत्सव । घण-बहुत । सिय-सीता । आंणण (आनन)-मुख । प्रसण-शत्रु । महण (महार्णव)-समुद्र ।

सयण हुलसण दुयण सकुचण ।
ग्रहण मोखण धरण सुरगण ।
जपण कविजण सुजस जणजण, जैत रांम अंगज ॥ १५९

अथ गीत त्रुतीय त्रकुटबंध
चौपई

जाण उभय तुक भंवर गुंजार, सोळह प्रथम चवद धी सार ।
ती चवदह दस गुरु लघुवंत, यण मुहमेळ चवदमी अंत ॥१६०
चवद मत तुक होय चवंत, रटजै मूहमेळ रगणंत ।
अनुप्रासरी तुक रच आठ, पढ धुर सोळह चमद अन पाठ ॥१६१
प्रत तुक कंठ ध्यार प्रमांण, उभै कंठ घट तुक यां आंण ।
तुक आठू ही होय लघुंत, नवमी दस मत गुरु लघु अंत ॥१६२
दूहा अेक प्रत यम तुक होय, सारवै मियौ त्रकुटबंध सोय ॥१६३

अथ त्रुतीय गीत त्रकुटबंध उदाहरण
गीत

जांनकी नायक जगत जाहर, वीर संतां करण वाहर ।
महत कथ सुज वेद दुजवर, धनौ करुणाधांम ॥

१५९ सयण–सज्जन । हुलसण–हर्ष प्रसन्नता । दुयण (दुर्जन)– शत्रु, दुष्ट । मोखण–छोड़ना । सुरगण–देवता । जपण–जपने को । कविजण–कविजन । जणजण–प्रत्येक व्यक्ति । जैत–विजय । अंगज–जो जीता न जा सके ।

१६० उभय–दोनों । चवद–चौदह । धी–दूसरी । ती–तीसरी । लघुवंत–जिसके अन्तमें लघु हो । दस–दस । मुहमेळ मूहमेळ–तुकबंदी । चवदमी–चौदहवीं ।

१६१ चवंत–कहते हैं । रगणंत–जिसके अंतमें रगण हो । अन–अन्य ।

१६२ कंठ–अनुप्रास । लघुंत–जिसके अंतमें लघु हो ।

१६३ प्रत–प्रति । यम–इस प्रकार । सारवै–कहते हैं साखी देते हैं । मियौ–दूसरा । सोय–वह ।

१६४ वाहर–रक्षा । महत–महत्ता है । कथ–गाता । दुजवर–ब्राह्मण । धनौ–धन्य–धन्य । करुणाधांम–करुणासागर ।

यभ दास तारण वासतै ।
पोह छंड कमाळा पासतै ।
सुर असुर गिर कर स्रवण स्रीवर ।
तळप परहर असुर चढ तुर ।
चकरधर मग सघर संचर ।
सियळ पर घर जांण ईसर ।
छांड नगघर धरण दूछर ।
मकर थर सर चकर मोख'र ।
फंद हर पग सथर कर फिर ।
थळ सुकर गह सुकर रघुबर, तार सिंधुर तांम ॥ १६४

अरथ

ई प्रकारसूं च्यार ही दूहां दूसरी मकुटबंध जांणज्यौ ।

अथ गीत सुपंखरौ वरण छंद लछण

दूहौ

धुर तुक अख्खर अठार धर, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद क्रम अंत लघु, जपै सुपंखरौ जेण ॥ १६५

अरथ

सुपंखरौ गीत वरण छंद जिणरै मात्रा गिणती नहीं । अख्खिर गिणती होय । जींरै पहली तुकरा आख्खर अठारै होय । दूजी तुक आख्खर चवदै होय । तीजी तुक आख्खर सोळै होय । चौथी तुक आख्खर चवद होय । पाछला दूहांरी पैंली तुक हर तीजी तुक आख्खर सोळ होय । दूजी चौथी तुक आख्खर चवदै होय । तुकांत लघु होय । जीं गीतनै सुपंखरौ कहीजै ।

---

१६४ यभ (इभ)—हाथी । दास—भक्त । वासतै—लिए । पोह—प्रभु । छंड—छोड़ कर । कमळा—लक्ष्मी । पासतै—पास से । तळप (तल्प)—शय्या पलंग । परहर—छोड़ कर । चकरधर—विष्णु । मग—मार्ग । सघर—गर्वित । संचर—गमन । सियळ—शीत । जांण—समझ कर जान कर । छांड—छोड़ कर । नगधर—पहाड़ । दूछर—वीर । मकर—ग्राह । थर—थल । चकर—चक्र । मोख'र—छोड़ कर । फंद—बंधन जाल । हर—मिटा कर । सथर—स्थिर, अटल । फिर—फिर । सुकर—हाथ । गह—पकड़ कर । सिंधुर—हाथी गज ।

अथ गीत सुपखरो उदाहरण

गीत

पैंडां नीतरा चलाक घू छक-प्यार अंज पलीतरा ।
सूर धीर चीतरा अछेह अोप संस ॥
धीतरा कीतरा रिखी सुकंठ मीतरा घनौ ।
वाहरू सीतरा रांम अवीतरा वंस ॥
वंदनीक पायरा गायरा दुर्जां विसावीस ।
आसुरां भंजणा आढे घायरा अमाव ॥
अडोळ पायरा सीहु सुमायरा आसतीक ।
सिहायरा जनां औघरायरा सुजाव ॥
खेस जंद द्वंद रांम दंघरा सिंघार खरा ।
वहै घाळरा स्रीनंदरा मांण दात ॥
दासरथी सिंघरा अबंधरा बंधरा देण ।
पंच दूण कंघरा कबंधरा निपात ॥
हणू जिसा किंकरा पचोर के बंकरा हस्तां ।
जूधां जीत अनंकरा रोड़णा जोधार ॥

---

१११ पैडां–कदमों। नीतरा–नीतिके। चलाक–चलने वाला। घू–धिर। छक-प्यार–रस। पलीतरा–प्रभुके। अछेह–अपार। रिखी–ऋषि। सुकंठ–सुग्रीव। मीतरा–मित्रके। घनौ–बहुत। वाहरू–रक्षक। सीतरा–सीताके। अवीतरा–मुक्तिके। वंदनीक–वंदनीय। पायरा–चरणोंके। दुर्जां–शत्रुओं। विसावीस–पूर्ण। आसुरां–राक्षसों। भंजण–संहार करने वाला। आढे–विरुद्ध। घायरा–प्रहारका। अमाव–अपार। अडोळ–दृढ़ अटल। पायरा–चरणका। सीहु–सिंह। सुमायरा–स्वमायका। आसतीक–समर्थ शक्तिशाली आस्तिक। सिहायरा–सहायताके। जनां–भक्तों। औघरायरा–राजा दशरथके। सुजाव–पुत्र। खेस–असुर। जंद–असुर। द्वंद–युद्ध। सिंघार–विध्वंस। दासरथी–श्री रामचन्द्र। सिंघरा–समुद्र। अबंध–बंधनरहित। बंधरा–बंधनका। देण–देने वाला। हणू–हनुमान। जिसा–जैसा। किंकरा–सेवक। पचोर–सीधा करने वाला। बंक–वक्र। अनंकरा–नगाड़ाके। रोड़णा–बजाने वाला। जोधार–योद्धा वीर।

रोळै लेण लंकरा निसंकरा विभाड़ राम ।
हार्यां भ्रोक रंकरा लंकरा देणहार ॥ १६६

अथ गीत हेकलवयण तथा मात्रारहित हंसगमण लछण
दूहा

धुर अठार उगणीस मत, अदस सोळ अदसेण ।
दु लघु अंत सांणौर लघु, जपै सुकइ कवि जेण ॥ १६७
जिण छोटा सांणोरमें, गुरु अखिर नह होय ।
सरब लघु सोळह तुकां, हेकल वयण स कोय ॥ १६८

अरथ

सुद्ध लघु सांणोर तथा वेलिया सांणोर गीतरी सोळै ही तुकांमें गुरु अखिर श्रेक ही न होय । सोळै ही तुकांमें सरब लघु अखिर होय जी गीतरी नांम हेकल वयण कहीजै तथा मात्रारहित कहीजै । कठ'क दवाळा एकरा तुकांत अंत गुरु श्रेक होय । इणनै पणकठ सांणोर पिण कहीजै ।

अथ गीत हेकलवयण उदाहरण
गीत

जग जनक धनक हर हरण करण जय ।
चत नरमळ नहचळ चरण ॥
अकरण करण समरण अघ अणघट ।
सक रघुवर असरण सरण ॥
लछवर सघर अमर नर रख लज ।
महपत समरस हरत मळ ॥

---

१६६ रोळै-युद्धमें । विभाड़-वीर । भ्रोक-धन्य । रंकरा-गरीबका । देणहार-देने वाला ।
१६७ उगणीस-उन्नीस । मत मात्रा । अदस-तेरह ।
१६८ सोळ-सोलह । अदसेण-तेरहमें । दु-दो । जप-(कहते) । अखिर-अक्षर । नहोय-नहीं हो । तह न-नहीं पर । पिण-भी ।
१६९ जनक-पिता । धनक-धनुष । हर-महादेव । हरण-तोड़ने वाला । जय विजय । नरमळ-निर्मल । नहचळ निश्चल चरण । अघ-पाप । अणघट-कम नहीं किये जाने वाला । सक र (सार्ङ्गधर)-विष्णु श्री रामचन्द्र । अमर-देव । नर-मनुष्य । महपत (महीपति)-राजा । समरस-समरस करता है । मळ-पाप मैल ।

छजत अयण पय सरस मयण छब ।
कमळ नयण रव तरण कळ ॥
सकर घनख सरस रस सदन सज ।
नरख वदन जग भय नसत ॥
तन मन धय सम स जन सहज तुय ।
लछण भरथ अरिघण लसत ॥
तन घण वरण घरण दसरथ तण ।
सदय समन गरक्त सहज ॥
तज तज अवर 'कसन' कथ नत-अत ।
धर मन नहचळ गरड़-धज ॥ १६६

अथ गीत मुजंगी लखण

दूहौ

बारा अखिर तुक अेक प्रत, यगण चार गुरु अंत ।
गीत मुजंगी तास गण, वरण छंद बुधवंत ॥ १७०

अरथ

आ गीतरै तुक अेक प्रत च्यार यगण होय । अंत गुरु होय बरण छंद छै । मात्रा गिणती नहीं । जिण गीतनै मुजंगी कहै छै ।

अथ गीत मुजंगी उदाहरण

गीत

महाराज औधेस आधार संतां, धार खारी रखै लाज येखौ ।
हरी काज पै आसरा दीह हेके, लछीनाथ दी सेवगां लंक लेखै ॥

१६९. छजत-शोभा देता है । वयण-वचन । मयण-कामदेव । छब-कांति दीप्ति । रव-सूर्य । तरण-तरुण । धनख-धनुष । सदन-घर । नरख-देख कर । वदन-मुख । नसत-नाश होता है । लछण-लक्ष्मण । अरिघण-शत्रुघ्न । लसत-शोभा देते हैं । घण-बादल । वरण-वारण करने वाला । तण (तनय)-पुत्र । नत-अत-अहर्निश । नहचळ-निश्चल । गरड़-धज-गरुड़ध्वज विष्णु ।

१७० बारा-बारह । तास-उस । गण-समझ । बुधवंत बुद्धिमान । गिणती-गिनती संख्या ।

१७१ औधेस (अवधेश)-दशरथ श्री रामचन्द्र । खारी-भयंकर । अखी-कैसी । लछीनाथ (लक्ष्मीनाथ)-विष्णु ।

अथ गीत अहरण(म)खेड़ो उदाहरण

गीत

करां धाड़ लागै रघीराज दत कीजतां ।
सरसतां रीझतां संत सुख साज ॥
लीजतां नखत्र-डर सरण हेकण लहर ।
रीझता दियौ लंका जिसौ राज ॥
सर धनंख धरण कर दहण दैतां सघर ।
दुख नरक त्रास हण जनां जगदीस ॥
हरख रिण इंद्रतण नास कीधौ हठी ।
अरकतण कियौ केकंध गढ ईस ॥
तिकां सिर दया रुख होय हरि तौ तणी ।
किणी दिन न लागै जिकां आतंक ॥
घणाघण छटा तन कंत धरियां घणी ।
सह जनां संकट हरण धणी निरसंक ॥
चरण असरण सरण कहै आंणणचतुर ।
अहोनिस संत जण करण आणंद ॥
दूणवसहाथ हण गाय राखण दूनी ।
नाथ 'किसनेस' कौसळतणा नंद ॥ १७४

---

१७४ करां–हाथों । धाड़–धन्य । रघीराज–श्री रामचन्द्र । दत–दान । नखत्र-डर–(नखत्र–भौ+डर–भीखण–भभीखण)–विभीषण । जिसौ–जैसा । लहर–नाव । सघर–दृढ़ । त्रास–भय आतंक । जनां–भक्तों । हरख–हर्ष । रिण–युद्ध । इंद्रतण (इन्द्रतनय)–बालि वानर । कीधी–किया । हठी–हठ करने वाला जिद्दी । अरकतण (अर्कतनय)–सुग्रीव । कियौ–किया । केकंध–किष्किन्धा । ईस–राजा । तिकां–उन जिन । रुख–इच्छा । तौ तणी–तेरी । किणी–किसी । आतंक–डर भय । घणाघण–बादल । छटा–कांति दीप्ति बिजली । कंत–कांति दीप्ति । धरियां–धारण किये हुए । घणी–बहुत । धणी–स्वामी । निरसंक–निःशंक निर्भय । आणणचतुर (चतुरानन)–ब्रह्मा । दूणवसहाथ–रावण । हण–मार कर । गाथ–कीर्ति यश । दूनी–दुनिया संसार । नंद–पुत्र ।

अथ गीत विडकंठ तथा मीरकंठ लछण

दूहा

धुर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी अकवीस ।
ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस ॥ १७५

दस यम मता चव दूहां, अंत लघू तुक अेक ।
सोळ चवद अखिर सुक्रम, कह विडकंठ विमेक ॥ १७६

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा चोवीस होय । दूजी तुक मात्रा अकवीस होय । तीजी तुक मात्रा चौवीस होय । चौथी तुक मात्रा अकवीस होय । यण क्रमसूं च्यार ही दूहां मात्रा होय । अंत तुकरै अेक लघु होय । इण लखे तो विडकंठ गीत मात्रा छंद छै नै पैं'ली तुक आखर सोळै । दूजी तुक आखर चवदै । तीजी तुक आखर सोळै अर चौथी तुक आखर चवदै होय । यो क्रम च्यार ही दवाळां होय । आखर गिणतीके लेखे विडकंठ वरणछंद छै । इण प्रकार विडकंठ गीत कहीजै । यथायोग क्रम गीतकी तुकांसूं देख लीज्यो । लछणका दूहा यणा होय जिणसूं न कह्या छै । कोई इण गीतरी नाम मीरकंठ पिण कहै छै ।

अथ गीत विडकंठ तथा मीरकंठ उदाहरण

गीत

जै नरेस राघवेस आसुरेस जुधां जेस ।
के कवेस दस देस कीरती कहंत ॥
स्रीधराज राख लाज कीध काज संत साज ।
हेल मिंध रूप इंद विरदां वहंत ॥

१७५ धुर-फिर । अकवीस-इक्कीस । ती-तीसरी । चतुरथी (चतुर्थी)-चौथी । कळ-मात्रा । कवीस-महाकवि कवि ।

१७६ दस-दह । यम-ऐसे । चव-चार । सोळ-सोलह । चवद-चौदह । अखिर-अक्षर । विमेक-विवेक । कह-कह ।

१७७ जै-जय । नरेस-राजा । राघवेस-श्री रामचन्द्र भगवान । आसुरेस-राक्षस रावण । के-कई । कवेस (कवीश)-महाकवि । कीरती (कीर्ति)-यश । कहंत-कहते हैं । स्रीधराज-श्री विष्णु श्री रामचन्द्र । कीध-किया । हेल-लहर । मिंध-समुद्र । इंद-इन्द्र । विरदां-विरुद । वहंत-धारण करते हैं ।

माज पांण चाप बांण खळां खांण घमंसांण ।
सुरांरांण मुर्जापांण जै कियौ असंक ॥
ताप खाय दितांराय बंद आय पाय तास ।
लखै रंक ही अवंक भेट दीध लंक ॥
ओप अंग स्यांम रंगते सुचंग जै अनं ।
पीतरंग नी सारंग भंग कोड़ पाप ॥
सूरवीर जनां भीर गज्जगीर पै सधीर ।
जळै पाप अणमाप जेण नांम जाप ॥
दुनी पाळ इंद्र ढाल बिरदाळ जै दयाळ ।
गुणी साथ सामराथ रटै कीत गाथ ॥
नांम जेस करे सेस पढै सेस किसनेस' ।
निराधार ज्यां अधार निमौ औधनाथ ॥ १७७

अथ गीत अट्ठौ लछण

दूहौ

छंद अरध नाराजरी, चौ तुक दूहां सचीत ।
लघु गुरु कम तुक चरण अठ, गिण तिण अट्ठौ गीत ॥ १७८

अरथ

अरध छंद कै अठौ गीत । जिणमें अरधनाराच छंदरी तुक च्यारसूं अेक दूहौ होय । पै भी लघु पछै गुरु, इण क्रमसूं तुक अेक प्रत आखर आठ होय । जिणरै च्यार ही तुकांरी तुकांत अेक होय । सावझड़ौ होय जिणनै अट्ठौ गीत कहीजै ।

---

१७७ साज-धारण कर सज कर । पांण-हाथ । चाप-धनुष । खळां-राक्षसों । खांण-नाश कर नाश करनेको नाश करने वाला । घमंसांण-युद्ध । सुरांरांण-इन्द्र । मुर्जापांण-भुजाके प्रभावसे । जै-जिस । असंक-निर्भय । ताप-भय आतंक । दितांराय-दैत्यराज । पाय-चरण । तास-उसके । दीध-दी दिया । पीतरंग-पीला रंग । जनां-भक्तों । भीर-मदद सहायता । गज्जगीर-युद्ध । पै-चरण । सधीर-धैर्ययुक्त, प्रदत्त । अणमाप-अपार असीम । जेण-जिस । दुनी-संसार । पाळ-पालक । ढाल-रक्षक । बिरदाळ-विरदधारी । गुणी-कवि । साथ-समूह । सामराथ-समर्थ । औधनाथ-श्रीरामचन्द्र भगवान ।

१७८ चौ-चार ।

अथ गीत अट्ठौ वरण छंद उदाहरण

गीत

वखै 'किसन्नदास' रे, तवूं विरूद तास रे।
सदा वसा हुलास रे, अभंग रांम आस रे॥
सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध सिंघ पाज रे।
जनां निवाह लाज रे, रहूं अवार राज रे॥
पटैत रूप पांणरा, खळां भराथ खांणरा।
सुखी रहूं सुजांणरा, भरोस वंस भांणरा॥
प्रसन्न दास प्रीतरा, वियार अत्यचीतरा।
जुधां वयंत जीतरा, सरंम नाथसीतरा॥ १७९

अथ गीत दूणौ अट्ठौ वरण छंद लछण

दूहौ

छंद त्रधनाराचरी, चौ तुक हेक दवाळ।
वरण छंद सौ गीत वद, दूणौ अठौ विसाळ॥ १८०

अरथ

त्रधनाराचरी च्यार तुकांरो अेक दवाळौ होय सौ सावझड़ौ गीत दूणौ अट्ठौ कहावै। लघु गुरु ई क्रमसूं तुक अेक प्रत अखिर सोळह होय। इण प्रकार सोळं ही तुकां होय सौ दूणौ अट्ठौ गीत तुकत गुरु वरण छंद छ।

अथ गीत दूणौ अट्ठौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

विभाड़ पंचदूणनाथ आथ देण वेस रे।
मझार ध्यांन कंज सौ वसै रदा महेसरे॥

---

१७९ वखै—कहता है। तवूं—स्तुति करता हूं वर्णन करता हूं। तास—उसे। हुलास—आनन्द हर्ष। अभंग—नहीं भागने वाला वीर। आसरे—आश्रय में। सिंघ—समुद्र। पाज—सेतु, पुल। निवाह—निभाने वाला। राजरे—श्रीमानके आपके। पटैत—वीर योद्धा। पांणरा—प्रतिज्ञा। भराथ—युद्ध। खांणरा—ध्वंस करने वाला नाश करने वाला। भरोस—विश्वास भरोसा। भांण—सूर्य। वयंत—बैन वाला अथवा वंश। नाथसीतरा—सीतानाथके।

१८० दवाळ—गीत छंदके चार चरणोंका समूह। विसाळ—विशाल है विशाल।

१८१ विभाड़—नाश कर संहार कर। पंचदूणनाथ—रावण। आथ—धन द्रव्य। मझार—मध्य। कंज—कमल। रदा—हृदय। महेसरे—महादेवके।

सदा नमंत औधराय पाय घू सुरेस रे ।
वडां नरेस आंन कुण जोड़ राघवेस रे ॥
निबाह सीतनाथ वाह संतचा नेहड़ा ।
अमोघ बांण चाप पांण वांण जे अछेहड़ा ॥
जुधां निपात सांमराथ लंकनाथ जेहडा ।
कहां नरिंद दासरथ्थनंद जोट केहड़ा ॥
अपार तेज अंगधार धार तेज आकती ।
कपै अमाप पाप ताप नाम जाप कांमती ॥
जुधां जयंत सेवमें रहै अनंत साजती ।
भणा किसौ समांन आंन कौसळेस भूपती ॥
महामदंध आसुरां सुरंद चाव मारणा ।
त्रिलोकनाथ गोह आह ओघ आव तारणा ॥
'किसन' पात व्है दयाळ पाळ सिघ कारणा ।
धनौ नरेस राघवेस चीत नीत धारणा ॥ १८१

अथ सांण गीत माथा वरण प्रमांण सक्षण

दूहा

धुर बीजी मत धार धर, वद तीजी धावीस ।
बारह चौथी पंचमी, वळ छठी बावीस ॥ १८२

---

१८१ औधराय—श्री रामचन्द्र भगवान । पाय—चरण । घू—सिर झुका । सुरेस—इन्द्र । वडां—बड़े । नरेस—राजा । आंन—अन्य । कुण—कौन । जोड़—बराबर समान । राघवेस—श्री रामचन्द्र भगवान । नेहड़ा—स्नेह । अमोघ—नहीं चूकने वाला । अछेहड़ा—अचूक । निपात—गिराना । सांमराथ—समर्थ । लंकनाथ—रावण । जेहड़ा—जैसा । नरिंद—राजा । दासरथ्थ—राजा दसरथ । नंद—पुत्र । जोट—जोड़ी । केहड़ा—कैसा । कपै—कटते हैं । अमाप—अपार । पाप—पातक अघ । कांमती—चाहना । सेवमें—सेवामें । अनंत—लक्ष्मण । जती—जितेन्द्रिय यती । किसौ—कौनसा । आंन—अन्य । आसुरां—राक्षसों । सुरंद—इन्द्र । चाव—पुकार । मारणा—मारने वाला । गोह—गुह नामक निषादराज । आह—ग्राह । तारणा—तारने वाला । पात—कवि । पाळ—रक्षा । सिघ—सिंधुर गज । कारणा—कारण करने वाला । धनौ—धन्य । चीत—चित्त । नीत—नीति । धारणा—धारण करने वाला ।

१८२ धुर—प्रथम । बीजी—दूसरी । मत—मात्रा । धार—धारह । वद—कह । वळ—फिर ।

पहली दूजीसूं मिळै, तीजो छठी समेळ ।
मिळै चवथ्थी पंचमी, भल तुकंत लघु मेळ ॥ १८३

आठ वरण धुर दूसरी, तीजी पनर-तुकंत ।
पुण अठ चौथी पंचमी, छठी पनर छजंत ॥ १८४

विध इण मत्ता वरणरी, परगट जांण प्रमांण ।
भांण-गीत जिण नांम भल, भण जस रघुकुळ भांण ॥ १८५

अरथ

पैली तुक मात्रा बारे। दूजी तुक मात्रा बारे। तीजी तुक मात्रा बावीस। चौथी तुक मात्रा बारे। पांचमी तुक मात्रा बारे। छठी तुक मात्रा बावीस होय। तुकांत लघु होय। पैली दूजी तुक मिळै। तीजी छठी तुक मिळै। चौथी पांचमी तुक मिळै अथवा च्यार तुक कीजै तौ पैली तुक मात्रा चौवीस। तुक दूजी मात्रा बावीस। तुक तीजी मात्रा चौवीस। तुक चौथी मात्रा बावीस। यूं तौ भांण गीत मात्रा छंद होय। अखर गिणती कीजै तौ तुक पैली दूजीरा आखर आठ होय। तीजी छठीरा आखर पनरै पनरै होय। चौथी पांचमीरा आखर आठ होय तथा च्यार तुकां कीजै तौ पैली तीजी तुकरा आखर सोळै होय। दूजी चौथी तुकरा आखर पनर पनरै होय। तुकांत लघु। ई तरै भांण गीत वरण छंद होय।

अथ भांण गीत उदाहरण

गीत

नरेस रांम न्रमळां, उरां सभाव ऊजळा ।
अरेस भंज आदवां, करेस देव काज ॥
सपांणचाप सायकं, घड़ा अरेस घायकं ।
चवंत सिद्ध चारणां, प्रसिद्ध सिंध पाज ॥

---

१८३ चवथ्थी-चतुर्थ चौथी। भल-ठीक।

१८४ पुण-फिर। अठ-आठ। पनर-पन्द्रह। छजंत-शोभा देता है।

१८५ विध-प्रकार तरह। मत्ता-मात्रिक। भल-श्रेष्ठ। वरण-वर्णिक। यूं-ऐसे। अखर-अक्षर। ई-इस। तरै-तरह।

१८६ न्रमळां-निर्मल। उरां-उर हृदय। ऊजळा-उज्ज्वल। अरेस-शत्रु। सपांणचाप-बाण धनुष सहित। सायक-तीर। घड़ा-सेना। घायकं-संहार करने वाला। चवंत-कहते हैं। सिंध-समुद्र।

गरब सत्रां गंजणा, रमा सुचित रंजणा ।
सुजां सजोर भंजणा, चढाय सिभ चाप ॥
गळे दुजेस गावरा, सधीर जे सभावरा ।
अभंग हेम अद्रसा, अडोळ नंग आप ॥
अनेक संत आसरे, वसै सहीव वासरे ।
प्रथीप रांम पोखणा, अमी सुदीठ अंग ॥
सधीर भ्रात सेससा, मनां रटै महेससा ।
खळां अनेक खेसणा, जपां अपीठ जंग ॥
दितेस सेन दाहणा, रघूस कीत राहणा ।
करी ऊधार कारणा, हरी क्लिंद हाय ॥
नमे सुरेससा नगां, सधार दीन सेवगां ।
'किसन' पातसूं कहै, नमो अनाथ नाथ ॥ १८६

अथ गीत दुमेळ लछण

दूहो

तुक धुर तीजी सोळ मत, दोय मेळ वारंत ।
दूजी चौथी मत दस, अस दुमेळ लघु अंत ॥ १८७

अरथ

धुर कहतां पैंसी तुक मात्रा सोळै होय । पैंसी दूजी तुकमें दोय मेळ आवै जीसूं गीतरो नांम दुमळ कहावै । दूजी तुक मात्रा दस होय । चौथी तुक मात्रा दस होय । दूजी चौथी तुकरै तुकांत लघु होय । जिण गीतको नांम दुमळ कहावै ।

१८६ गरब–गर्व अभिमान । गंजणा–मिटाने वाला । रमा–लक्ष्मी । रंजणा–प्रसन्न करने वाला । सजोर–शक्तिशाली । भंजणा–नाश करने वाला । सिभ–शंभु शिव । दुजेस–द्विजेश महर्षि परशुराम । सभावरा–स्वभावका । अभंग–दृढ़ अटल । हेम अद्रसा–हिमालय पर्वतके समान । नंग–पैर चरण । प्रथीप–राजा । पोखणा–पोषण करने वाला । अमी–अमृत । सुदीठ–सुदृष्टि । खेसणा–नाश करने वाला । अपीठ जंग–वह जो युद्धमें अपनी पीठ शत्रुको न दिखाता हो । दितेस–असुरेश रावणादि । दाहणा–नष्ट करने वाला । रघूस–रघुवंश । कीत–कीर्ति । राहणा–रखने वाला । नगां–पैर । सधार–रक्षक ।

अथ गीत घुमळ उदाहरण

गीत

भूपाळां भांमी नेक नांमी, सेव पाय सुरेस ।
सुज दया सिंधू दीनबंधू, अखै कीत अहेस ॥
घटपंच वास सम्रनासे, राज कज सुरराज ।
खर खेत खंडे थूर थंडे, सूर कुळ सिरताज ॥
मुजवीस भंजे गाव गंजे, स्रोण भुंजे सार ।
सरणा सधारे सिरदधारे, तोय पाथर तार ॥
निरमळ नेकां कीध फेकां, साहि हाथ सुनाथ ।
गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ ॥ १८८

अथ गीत उमग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सगण सोळ मत प्रथम तुक, दो गुर अंत दिपंत ।
आंन च दद् अख, उभै वीपसा अंत ॥ १८९

अरथ

पैं'ली तुकरै आद तौ सगण नै सोळै मात्रा होय । और साराई गीतरी पनरै ही तुकां मात्रा चवदै होय । तुकांत दोय गुरु अखिर होय जिण सावझड़ा गीतनै उमग कहीजै तथा कोई कवि उमग पण कहै छै । चौथी तुकमें दोय वीपसा आवै छै ।

१८८ भांमी-न्योछावर बलैया । सेव-सेवा करता है । पाय-चरण । सुरेस-इन्द्र । सिंधू-समुद्र । अखै-कहता है वर्णन करता है । अहेस-शेषनाग । घटपंच-पंचवटी । सम्रनास-समन । नासे-नाश किये । कज-लिये । सुरराज-इन्द्र । मुजवीस-रावण । भंजे-नाश किया । गाव-गर्व । गंजे-मिटाया नाश किया । स्रोण (श्रोणित)-खून रक्त । भुंजे-भक्षण किया । सार-तलवार । सरणा-शरणागत । सधारे-रक्षा की तोय-पानी । पाथर-पत्थर । कीध-किया किये । फेकां-कई । सुनाथ-परम कीर्ति । प्रसिध-कीर्ति प्रसिद्धि । आथ-धन दौलत ।

अथ गीत उमय सावझड़ौ उदाहरण

गीत

जगनाथ अंतरतणौ जांमी, गाहणौ खळ गुरड़ गांमी।
साच वायक सिया सांमी, भुजां भांमी भुजां भांमी॥
थूरण रिण वैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका।
रांम रिण दसमाथ रोका, करां झोका करां झोका॥
देण सेवग लंक दाता, घल्ल ब्याध कवंध घाता।
मिसू रखण कीत वार्ता, हद्द हातां हद्द हातां॥
मीढ ना अज इस माधौ, थाह दिल नावै अथाघौ।
देव दीनां कसट वाधौ, रंग राघौ रंग राघौ॥ ११

अथ गीत अरधगोखौ सावझड़ौ वरण छंद लछण

दूहौ

रगण जगण गुरु लघु हुवै, जिणरै तीन तुकंत।
होय वीपसा चवथ तुक, अरध गोख आखंत॥ १६१

अरथ

जिण गीतरै पैली दूजी तीजी तीनां तुकां री पैली रगण गण। पछै जगण गण। पछै गुरु लघु। ई क्रमसूं आठ अखर तीन तुकां होय। चौथी तुक पैली रगण। पछै जगण स अखिर होय। ई क्रमसूं च्यार तुकां होय सौ अरधगोख वरण छंद सावझड़ौ कहीजै नै जीके ई क्रमसूं आठ तुकां होय जिणनै प्रथगोख कहीजै सो प्रथगोख री आगै कही ईज छै सो देख लीज्यौ।

---

११ अंतरतणौ—भीतर का अन्दर का। जांमी—पिता। गाहणौ—नष्ट करने वाला। खळ—राक्षस। वायक—वाक्य वचन। सिया—सीता। सांमी—स्वामी स्वीकार। थूरण—नाश करना ध्वंस करना। वैतां—वैरियों। थोका—समूह। दसमाथ—रावण। झोका—धन्य धन्य। वार्ता—बात। मिसु—पृथ्वी संसार। कीत—कीर्ति। मीढ—समान सदृश। अज—ब्रह्मा। ईस—शिव। माधौ—माधव। थाह—गहराई गंभीरता। अथाघौ—अपार, असीम। वाधौ—बढ़ाने वाला। रंग—धन्य-धन्य। राघौ—श्री रामचन्द्र।

अथ गीत भरयणोमो साबझड़ी उदाहरण

गीत

वंद पाय राघवेस, जोध मेघनाद जेस ।
बंध वांमणी विसेस, सेस सेस सेस ॥
पाड़िया जुधां विपच्छ, रांम पाय सेव रच्छ ।
ओर मेर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ ॥
सूर धीर तास संत, मांण पाण तेज मंत ।
वाहणों जुधां दयंत, नंत नंत नंत ॥
चीत प्रीत कीत चाह, दैत राज सेस दाह ।
लेण रांम सेव लाह, वाह वाह वाह ॥ १६२

अथ गीत धमळ तथा रिणधमळ सम तथा असम चरण लछण

दूहा

धुर तुक मत द्वाईस धर, छै बीजी द्वाईस ।
तीस मत तुक तीसरी, चौथी मात्र चौवीस ॥ १६३
अवर दवाळा अवर विध, नहीं मत्त निरवाह ।
ईसर वारठ अक्खियौ, असम चरण यणगाह ॥ १६४

अथ धमळ गीत अन्य विध लछण

दूहा

वदिया लछण अवर विध, रुट तुक होय विसरख ।
चवद प्रथम दूजी चवद, अठाइस त्रिय अक्ख ॥ १६५

१६२ वंद–नमस्कार कर । पाय–चरण । राघवेस–श्री रामचन्द्र । जोध–योद्धा । [illegible] । जेस–जैसा । पाड़िया–मारे । विपच्छ–विरोधी पक्ष । वाहणों–[illegible] । [illegible] । दयंत–दैत्य । नंत–नमन । लाह–लाभ । वाह-वाह–धन्य धन्य ।

१६३ धुर–प्रथम । तुक–[illegible] । मत–मात्रा । द्वाईस–बाईस । छै–है । बीजी–दूसरी । मात्र–मात्रा । [illegible] ।

१६४ अवर–अन्य । निरवाह निर्वाह । अक्खियौ–कहा । यणगाह–[illegible] ।

१६५ [illegible]

चववह चौथी पांचमी, छट्ठी वीस विचार ।
असम चरण तौपण अवस, वद यम घमळ विचार ॥ १६६
अकुटबंधरी आद तुक, पांच देख परमांण ।
उभै तुका मिळ अंतरी, जुगत घमळ यम जांण ॥ १६७

अरथ

घमळ गीतके मात्रा चरण प्रमांण नहीं जिणसूं असम चरण छै। पैलो तुक मात्रा बाईस होय । दूजो तुक मात्रा बाईस होय । तीजो तुक मात्रा तीस होय । चौथो तुक मात्रा चौबीस होय । बाकीरा और दूहां ई प्रकार तथा और ही तरै मात्रा होय पण सम मात्राको निरवाह नहीं । आगै वारठजी श्री ईसरदासजी कृत गीत घमळ श्री परमसरमें छै सो पण इण तरै छै जींनै देख नै मैं कह्यो छै तथा और लछण करनै मात्राको निरूपण करां तो पण असम चरण छै । और जिण मात्रा प्रमांण करां छां । छ तुक करनै सो कवेसर देख विचार लीज्यो ।

गीत रणघमळके छ तुकां हुवै छै । पैली तुक मात्रा चवदै । दूजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा अठावीस । चौथी तुक मात्रा चवद । पांचमी तुक मात्रा चवदै । छठी तुक मात्रा चौबीस । अंत लघु हो जिण रणघमळ असम चरण छंद छै और सुगम लछण कह्यो छां । गीत अकुटबंधरी पांच तुकां तो आदरी मैं दोय तुकां दूहारै अंतरी अेक कठरी नै अक दूजी यां दोयांरी अेक तुक करणी । यां छ हो तुकांनै मळी कर पढणै सोही घमळ जांणणो । सोई ग्रंथमें पण अकुटबंध कह्यो छै सो देख लीज्यो । इति रणघमळ गीत लछण निरूपण समापत । इण गीतरो नाम घमळ कह्यो छै ।

अथ गीत घमळ उदाहरण

गीत

सांमाथ तूं सुरनाथ तूं, रिमघात तूं रघुनाथ ।
रघुनाथ तूं दसमाथ रांमण, भाजवा भाराथ ॥

---

१६६ तौपण—तो भी । अवस—अवश्य । वद—रट् । यम—इस प्रकार । आद (आदि)—प्रथम । उभै—दोनों । जुगत—युक्ति । पण—परन्तु । यण—भी । विचारण—विचार निर्णय । कवेसर—कवीश्वर ।

१६७ अठावीस—अट्ठाईस । आदरी—आदि की । अक—अनुप्रास । यां—इन । दोयांरी—दोनों की । मळी—मिल ।

१६८ सांमाथ—समर्थ । सुरनाथ—देवताओंका स्वामी । रिमघात—शत्रुओंका विध्वंसक या संहारक । दसमाथ—दस सिर । भाजवा—नाश करनेका । भाराथ—युद्ध ।

अरथ

त्रिभंगी गीतरै पैलो तुक मात्रा अठारै। दूजो तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै होय। पछै सारा ही दूहां पैलो तुक मात्रा सोळै। दूजो तुक मात्रा बारै। इण प्रमांण होय सो गीत त्रिभंगी कहावै नै सोई पूणियो सांणोर कहावै। नाम दोय छै। लछण दोय नहीं जीसूं पूणियो सांणोर पावै पहला कह दीधो छै जीसूं नहीं कह्यौ छै। कांम पड़ै तो सात सांणोरां माय देख लीज्यो।

अथ गीत सीहलोर लछण

दूहो

सीहलोर विण पूणियो, सुध लछणां सुभाय।
अठ दस बारह सोळ अख, बार वि गुरु पछ पाय ॥ २००

अरथ

सीहलोर विण पूणियो सांणोर छै। इणमें कांई भेद नहीं। पैलो तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै। तुकांत दोय गुरु। पहला दूहा पैलो तुक मात्रा सोळै। दूजो तुक मात्रा बारै। ई क्रम होय। त्रिभंगी सीहलोर में दोय पूणिया गीत छै। नांमरो भेद लछण भेद नहीं जीसूं पावै पूणियो कह दीधो छै तो फेर नहीं कह्यौ। इति सीहलोर लछण निरूपण।

अथ गीत सारसगीत लछण

दूहो

गीत अठा सांणोर गण, सर्को सार संगीत।
तेवीसर अट्ठार मत, धीम भत्रार प्रवीन ॥ २०१

अरथ

[illegible]
[illegible]

गुरु मात्रा अठारै अंत लघु । सो अठो सांणोर सोई सारसंगीत कहावै । सो भाखमें सुध सांणोर ससखर कह्यो छै सो देख लीज्यो । इति गीत सारसंगीत निरूपण ।

अथ गीत सोहणग सांणोर लछण

दूहो

धुर अठार चवदह धरौ, सोळ चवद गुरु अंत ।
वेलह सोई सीहवगौ, किव सांणोर कहंत ॥ २०२

अरथ

जिण गीतरै पै'लो तुक मात्रा अठारै होवै । दूजो तुक मात्रा चवद होवै । तीजा तुक मात्रा सोळै होवै । चौथी तुक मात्रा चवदै आवै सो मोहणो सांणोर सोई सोहणग कहीजै । नाम भेद छै, लछण भेद नहीं । पै'लो सांणोर कह्यो छै सो देख लीज्यो । इति सीहवग गीत निरूपण ।

अथ गीत अहिगन सांणोर लछण

दूहो

धुर अठार मत्त सुधर, पनर सोळ पनरेण ।
अंत लघु सौ अहिगन, जपै वेलियौ जेण ॥ २०३

अरथ

गीत अहिगन नै वेलियो सांणोर एक छै । नाममें भेद छै, लछणमें भेद नहीं । पै'ली तुक मात्रा उगणीस तथा अठार होय । दूजी तुक मात्रा पनरै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा पनरै होय । तुकांत लघु होय । पछै मात्रा सोळै पनरै होय । ई क्रमसूं होय सो वेलियो सांणोर, सोई अहिगन सांणोर पै'लो भाग सांणोरांमें कह्यो छै सो देख लीज्यो । इति अहिगन गीत निरूपण ।

अथ गीत रणखरी लछण

दूहो

रटां गीत रेणखरी, मां जांणजे अहाम ।
तिल भर मेदन तेणमें, सुध लच्छण सर रास ॥ २०४

---

२ २ सोळ–सोलह । चवद–चौदह । वेलह–वेल । कहंत–कहते हैं । सोई–वही ।

३ पनर–पन्द्रह । सोळ–सोलह । जप–जिसका । सोळै–सोलह । पछ–पश्चात कारण सोई–वही

४ तेणमें–उसमें । अहाम–[illegible] । रटां–[illegible] । हर पर चौर । सोई–वह वही ।

अरथ

त्रिभंगी गीतरै पै'ली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै होय। पछै सारा ही दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै। दूजी तुक मात्रा बारै। इण प्रमांण होय सो गीत त्रिभंगी कहावै नै सोई पूणियौ सांणोर कहावै। नांम दोय छै। लछण दाय नहीं जींसूं पूणियौ सांणोर आगै पहली कह दीधौ छै जींसूं नहीं कह्यौ छै। कांम पड़ै तौ सात सांणोरां मांय देख लीज्यौ।

अथ गीत सीहलोर लछण

दूहौ

सीहलोर पिण पूणियौ, सुध लछणां सुभाय।
अठ दस बारह सोळ अख, चार चि गुरु पछ पाय ॥ २००

अरथ

सीहलोर पिण पूणियौ सांणोर छै। इणमे कोई भव नहीं। पै'ली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै। तुकांत दोय गुरु। पछला दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै। दूजी तुक मात्रा बारै। ईं क्रम होय। त्रिभंगी सीहलोर अ दोई पूणिया गीत छै। नांमको भव लछण भेद नहीं जींसूं आगै पूणियौ कह दीधौ छै सो फेर नहीं कह्यौ। इति सीहलोर लछण निरूपण।

अथ बीस सारसगीत लछण

दूहौ

गीत बडा सांणोर गण, सकौ सार संगीत।
तेवीसह अट्ठार मत, बीस अठार प्रवीत ॥ २०१

अरथ

सार संगीत गीतनै बडौ सांणोर गीत एक छै। नांम दोय छै। लछण एक। पै'ली तुक मात्रा तेवीस। दूजी तुक मात्रा अठारै। तीजी तुक मात्रा बीस। चौथी

---

१९९. अठारै–अठारह। बारै–बारह। ईं–इस। दीधौ–दिया। जींसूं–जिससे। कह्यौ–कहा।
२०० पिण–भी परन्तु। अख–कह। बार–बारह। चि–दो दूसरी। पछ–पश्चात बाद। पाछला–पश्चातका बादका। दीधौ–दिया।
२०१ सकौ–सही कह अट्ठार–अठारह। मत–मात्रा।

तुक मात्रा अठारै अंत लघु । सौ बडौ सांणोर सोई सारसगीत कहावै । सौ भावमें सुध सांणोर सतसर कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ । इति गीत सारसगीत निरूपण ।

अथ गीत सीहचग सांणोर लछण

दूहौ

धुर अठार चववह घरौ, सोळ चवद गुरु अंत ।
वेखह सोई सीहचगौ, किव सांणोर कहंत ॥ २०२

अरथ

जिण गीतरै पैं'ली तुक मात्रा अठारै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा सोळै होवै । चौथी तुक मात्रा चवदै मावै सौ सीहचगी सांणोर सोई सीहचग कहीजै । नांम भेद छै, लछण भेद नहीं । पैं'ली सांणोर कह्यौ छै सो देख लीज्यौ । इति सीहचग गीत निरूपण ।

अथ गीत अहिगम सांणोर लछण

दूहौ

धुर अठार मत्त सुघर, पनर सोळ पनरेण ।
अंत लघु सौ अहिगन, जपै वेलियौ जेण ॥ २०३

अरथ

गीत अहिगन नै वेलियौ सांणोर अेक छै । नांममें भेद छै, लछणमें भेद नहीं । पैं'ली तुक मात्रा उगणीस तथा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा पनरै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा पनरै होय । तुकांत लघु होय । पछै मात्रा सोळै पनरै होय । ई क्रमसूं होय सौ वेलियौ सांणोर, सोई अहिगन सांणोर पैं'ली भाग सांणोरांमें कह्यौ छै सो देख लीज्यौ । इति अहिगन गीत निरूपण ।

अथ गीत रेणखरौ लछण

दूहौ

रटां गीत रेणखरौ, सौ जांणजै प्रहास ।
तिल भर भेदन तेणमें, सुघ लछण सर रास ॥ २०४

---

२०२ सोळ—सोलह । चवद—चौदह । वेखह—देख । कहंत—कहते हैं । सोई—वही ।

२०३ पनर पनरह । पनरेण—पनरहका । जप—जिसरा । सोळ—सोलह । पछै—पश्चात बारम सोई—वही ।

२०४ तेणमें—उसमें । प्रथाई—पहिले । ज्यां—जिन । हर—घर पौर । सोई—वह, वही ।

अरथ

रेणखरो गीत नै प्रहाससांणोर दोन्यूं गीत श्रेक छै। नांम दोय छै। लखण एक छै। पैली तुक मात्रा तेवीस। दूजी तुक मात्रा सतरै। तीजी तुक मात्रा वीस। चौथी तुक मात्रा सतरै होय। श्रत दोय गुरु पछै वीस सतरै इण क्रमसू मात्रा होवै छै। श्रागै सांणोरम प्रहास कह्यौ छै सो देख लीज्यौ। इति रेणखरा गीत निरूपण।

अथ गीत मुड़ियल सावभड़ौ लछण

दूहौ

मुड़ियल सावभड़ौ हुवै, पालवणीस दुमेळ ।
सावभड़ौ जयवंत सौ, सुघ लछणां समेळ ॥ २०५

अरथ

मुड़ियल गीत सावभड़ौ दुमळ तथा पालवणी तथा जयवत नांम सावभड़ौ। श्रगाडी पैली प्रथम तीन सावभड़ा कह्या ज्यां मध्य जयवत सावभड़ौ मिळन दुमळ कर पढणौ। सोई पालवणी हर सोई मुड़ियल कहाव। मात्रा प्रमांण। पैली तुक मात्रा उगणीस तथा मात्रा श्रठार होय श्रौर पनर ही तुकां मात्रा सोळै सोळै री होय। तुकांत दोय गुरु श्रखिर श्रावै सो मुड़ल (मुड़ियल) सावभड़ौ तथा पालवणी दुमळ जयवत श्रेक छै। श्रागै जयवत पालवणी कह्या छै सो काम पड़ै तो देख लीज्यौ। इति मुड़ियल गीत निरूपण।

अथ गीत प्रौढ साणोर निरूपण लछण

दूहौ

सोरठिया हर प्रोढ मभ्क, भेद रती नह भाळ ।
सारठियौ यण ग्रंथ मभ्क, दीधौ प्रथम दिखाळ ॥ २०६

अरथ

प्रौढ सांणोर हर सोरठियौ सांणोर श्रेक छै। यांरा लछण श्रेक छै। रती भेद नही। नाम दोय छै। मात्रा प्रमांण पैली तुक मात्रा उगणीस तथा सोळै। दूजी तुक मात्रा दस। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा दस होय। तुकांत लघु होय। पछै मात्रा इग्यारै दस सोळै दस इ क्रमसू होय। श्रागै श्रथ प्रथम कह्यौ छै सो देख लीज्यौ। इति गीत प्रौढ निरूपण।

---

२०६ हर-श्रर श्रौर। मभ्क-मध्य। भेद-फरक। नह-नही। भाळ-देख। यण-इस। दीधौ-दिया। दिखाळ-दिखलाई। यांरा-इनके। पछै-बादम। इ-म।

अथ गीत दीपक वेलियौ सांणोर लछण

दूहा

दीपक सोही वेलियौ, भेद अधिक तुक ह्केक।
तीजी तुक व्है येवड़ी, वद तुक पंच विवेक ॥ २०७

धुर उगणीस अठार धर, पनरह दुती पढंत।
त्रती चवथी सोळ मत, पंच पनर पुणंत ॥ २०८

अरथ

गीत दीपक नै गीत वेलियौ सांणोर अेक होय छै। यणांमें इतरो भेद छै। वेलियासांणोररै तुक च्यार होवै छै। पैला तुक मात्रा अठारै तथा उगणीस होवै। दूजी तुक मात्रा पनरै होवै। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा सोळै होवै। पांचमी तुक मात्रा पनरै होवै। इण भांत दीपकरै पांच तुकां दूहा एक प्रत होवै। दूजा दूहां मात्रा सोळै पनर सोळै सोळै पनरै ई प्रमांण होय। तुकांत लघु होय सो गीत दीपक। वेलियारै च्यार तुक यौंई फरक। इति दीपक लछण।

अथ गीत दीपक उदाहरण

गीत

सुंदर तन स्यांम स्यांम वारद सम, कौटक भा रद कांम सकांम।
नायक सिया दासरथ नंदण, विमळ पाय सुरराजा वंदण।
रीझवजै महराजा रांम ॥
कमर निखंग पांण धनु सायक, सुखदायक संतां साधार।
कीधां कहर माथदस कापे, अेकण लहर लंक गढ आपे।
आठ पहर जिण नांम उचार ॥

२०७ सोही—वही। येवड़ी—दोहरी। वद—कह। पंच—पांच।

२०८ दुती—दूसरी। पढंत—पढ़ते हैं। त्रती—तीसरी। चवथी—चौथी। पुणंत—कहते हैं। पण—परन्तु। इण भांत—इस प्रकार। यौंई—यही।

२१ वारद—बादल। सम—समान। कौटक—करोड़। भा—हुए। दासरथ—दशरथ। नंदण—पुत्र। विमळ—पवित्र। पाय—चरण। सुरराजा—इन्द्र। रीझवजै—प्रसन्न कीजिए। निखंग—तरकस। पांण—हाथ। धनु—धनुष। सायक—तीर, बाण। सुखदायक—सुख देने वाला। साधार—रक्षक। कीधां—करने पर। कहर—कोप। माथदस—रावण। कापे—काट दिए मस्तक। आपे—दे दिया।

ते रज पाय तरी रिख तरणी, मम्फ वेदां वरणी अहमेण।
डहिया धिरव वडा भुजडंडे, तीख करे मिथळापुर तंडे।
जटधर चाप विहंडे जेण॥
जनक सुता मनरजण जगपत, भंजण खळ रावण भाराथ।
सरणागधार काज जन सारण, 'किसन' अहोनिस गाव सकारण।
नृप रघुनाथ अनाथां नाथ॥२०९

अथ गीत अहिबंध वरण छंद लछण

दूहा

रगण सगण अंतह गुरू, तुक खट यण विध कीन।
यगण रगण अंतह लघु, चौथी आठम चीन॥२१०
अठाईस पूरब अरध, उत्तर अठाईस।
अेम गीत अहिबंध अख, वरण छंद वरणीस॥२११

अरथ

अहिबंध गीत वरण छंद छै मात्रा रव नहीं। तिणरै गण तथा तुक प्रत अखिरांरी गिणती छै। दूहा अेक प्रत तुक आठ आठ होवै। तुक अेक प्रत अखर सात सात होवै। दूहा एक प्रत आखर छपन होवै। सारा गीतरा दूहा च्यार आखर दोयसौ चौवीस होवै। पै'ली तुक दूजी तीजी तुक रगण सगण अेक गुरु सवाय होवै। यूंही तुक पांचमी छठी सातमी तुक रगण सगण अेक गुरु होवै। तुक चौथी और आठमी यगण रगण अेक लघु सवाय होवै। आठ ही तुकां प्रत आखर सात सात होवै। तुक पै'ली दूजी तीजीरा तुकांत मिळै। तुक चौथी तुक आठमीसूं मिळै। यण प्रकार गीत अहिबंध कहीजै। जूं अथ हुवो थको साथ

---

२०९ ते-उस। रज-धूलि। रिख-ऋषि। तरणी (तरुणी)-स्त्री। अहमेण-अहल्या। डहिया-आरम्भ किये। तीख-विशेषता। तंडे-आपूर्ण आवाज की। जटधर-महादेव। विहंडे-नाश किया। मनरंजण-मनको प्रसन्न करने वाला। जगपत (जगतपति)-ईश्वर श्री रामचन्द्र। भंजण-नाश करने वाला। खळ-राक्षस। भाराथ-युद्ध। सरणागधार-शरणागत आए हुओंकी रक्षा करने वाला। काज-कार्य। जन-भक्त। सारण-सफल करने वाला। अहोनिस-रात-दिन। गाव-स्मरण कर गुणगान कर।
२१० यण-इस। विध-प्रकार। कीन-की रची।
२११ अख-कह। पूहो-तेम हो

सफकरो पालै पू सुका ठयती सफकरो चास, जीं तावे गीतरो नाम प्रहिवष छै। गीत मड़वड़ाटसू पड़पी जावे जीं ताव नांमरो यो लछण स्यो छ।

प्रथ गीत प्रहिवप उदाहरण

गीत

रांम नांम रसा रे, जाप संभ जसा रे।
थोल तू म निसा रे, पहारै कौड़ पाप ॥
सेस भ्रात सही रे, कंज जात कही रे।
दैत थाट दही रे, चहारै थांग चाप ॥
तेण संत तराया, गाथ नेदस गाया।
लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट ॥
तार थांम रखीते, सु चंदर सखीते।
पाळ दीन पखाते, कळेसां सत्र काट ॥
कासकेस कंजारां, लोध वेस लजारां।
हांग दैत हजारां, घजारां प्रद धार ॥
म्राह गोह गयंदां, दख ध्याध मदंधां।
पग्ग ग्रीध पुलिंदां, पयाव नघ पार ॥
आच साह अनकां, कीध वार यमेकां।
मांग राम्ब वमेकां, करे के संत कांम ॥
हळ पाप हताज, जमवार जीताज।
माह ऊ न मताज, ॥२१२

११ [illegible]

२१२ [illegible]

अथ गीत भरट मात्रा छंद लछण

दूहौ

धुर अठार ग्यारह दुती, सोळ त्रती चव ग्यार ।
सोळै ग्यार क्रम अंत लघु, भरट गीत उचार ॥ २१३

अरथ

भरट गीत सांणोर गीत छै पण सात सांणोर गीतांसूं भिन्न छै। दुजी चौथी तुक इग्यारै मात्रा यौ भव छै जींसूं जुवौ कही दिखायौ छै। पै'ली तुक मात्रा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा इग्यारै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा इग्यारै होय। पछै सोळै इग्यारै ई क्रमसूं पाछली तीन ही दूहां मात्रा होय। दूजी चौथी तुकरै तुकांत लघु होय जीं गीतनै भरट नांम सांणोर कहीजै। कोई ईनै त्रमक नांम गीत पिण कहै छै। नाटकौ पण योही कहीजै जीसूं नाटकौ पण जुवौ नहीं कह्यौ छै।

अथ गीत भरट सांणोर उदाहरण

गीत

धन राघव हाथ अभंग धुरंधर, आयवरीस असंक ।
कीध भभीखण आस्रय देख कर, लीध बिना वत लंक ॥
वाळ महाबळ घायक भूखळ, सारंग सायक संठ ।
आत कहेस किंकंधपुरी भल, कीध नरेस सुकंठ ॥
संत अनाथ वस सायक, ध्रू पह्लाद उधार ।
कांम उधारण आय सकारण, धारण तारण धार ॥

२१३ ग्यार—ग्यारह। दुती—दूसरी। सोळ—सोलह। त्रती (तृतीय)—तीसरी। चव—चौथी चतुर्थ। पण—परन्तु। यौ—यह। जुवौ—पृथक अलग। पछै—पश्चात। पाछली—पीछेकी। पिण—भी। पण—भी। योही—यही।

नोट—रघुनाथरूपकमें जो नाटका गीत है वह गीत इस गीतसे भिन्न है

२१४ आयवरीस—शत्रुओंका दान देने वाला। कीध—किया। भभीखण—विभीषण। लीध—लिया भी। वत—वात। वाळ—बालि वानर। घायक—संहारक। सारंग—धनुष। सायक—तीर बाण। संठ—मजबूत दृढ़ जबरदस्त। किंकंधपुरी—किष्किंधापुरी। भल—ठीक। कीध—किया। नरेस राजा। सुकंठ—सुग्रीव। ध्रू भक्त ध्रुव। पह्लाद—भक्त प्रह्लाद। तारण—भज।

कोट गयंद सतौल निघे कर, तोलण हेक तराज ।
पात 'किसन' अडोल रघुपत, बोल गरीननवाज ॥ २१४

अथ गीत अठताळो सघण

दूहो

जो धुरसूं तुक सोळ लग, चवद चवद मत चीत ।
अंत गुरु जस नांम अख, गण अठताळो गीत ॥ २१५

अरथ

जिण गीतरै पैलो तुकसूं लगाय नै च्यार ही दूहांरी सोळै ही तुकामें चवदै चवद अत तुक मात्रा होय । अंत गुरु होय । सावझड़ी होय जिण गीतनै अठताळो कहीजै ।

अथ गीत अठताळो सावझड़ो उदाहरण

गीत

अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा ।
विसतार जस चहूंवळा, साधार सेवग सांवळा ॥
सिर-जोर रुग दत संजणा, पहू रोर आंमय पंजणा ।
भड़ दुज्र असंतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा ॥
विपळ सत सघण नवीनरा, अत गाय दुज आधीनरा ।
भुज दहण खळ जस मोनरा, दिल महण यंघव दीनरा ॥
मह सीत वर महराज रे, लख जना राखण लाज रे ।
किव 'किसन' वस मकान रे, रघु चरण सरणे राज रे ॥ २१६

२१४ तराज–समान तुल्य ।

२१५ सोळ–सोलह । लग–तक । चवद–चौदह । मत–मात्रा । चीत–विचार कर । अख–कह ।

१६ आरख–विरह सधार । चहूंवळा–चारों ओर । साधार–रक्षक । रोर–निर्धनता । आंमय–रोग । संजणा–मिटाने वाला । भंजणा–नाश करने वाला । रंजणा–प्रसन्न करने वाला । दुज (द्विज)–ब्राह्मण । महण (महार्णव)–सागर । मोन–माला । मन–देना ।

अथ गीत काछो मात्रा समचरण छंद लछण

दूहा

धुर अठार चवदह दुती, बारह तीजी वेस ।
तीन कंठ धुरतुकतणा, मत चौमाळ सुणेस ॥ २१७

सुण बी तुक छाबीस मत, तीन कंठ तिण माह ।
पूरब अरघ तुकंतरै, अंत लघु आ राह ॥ २१८

तुक तीजी अठवीस मत, वेद छवीस विचार ।
अण त्रण कंठ तुकंत लघु, चौथीतणै उचार ॥ २१९

अन दूहां धुर तुकतणै, मत चाळीस मंडांण ।
छावी बीजी चतुरथी, ती अठवीस प्रमांण ॥ २२०

अनुप्रास गुरु अंत अख, भण तुकंत लघु भाय ।
जपियां आछो रांम जस, काछो गीत कहाय ॥ २२१

अरथ

काछा गीतरै तुकां च्यार दूहा प्रत जिणरै मात्रा प्रमांण । पैं'ली तुक मात्रा चौमाळीस । कंठ तीन पैं'ली तुकमें होय । पहली कंठरी मात्रा अठारै ऊपर होवै । दूजो अनुप्रास मात्रा चवदै पर होवै । तीजो अनुप्रास मात्रा बारै पर होवै । पैं'ली तुक तीन अनुप्रास गुरुअंत होवै । मात्रा चौमाळीस होवै । तुक दूजी मात्रा छाईस होवै । अनुप्रास तीन । पैं'ली कंठ मात्रा नव पर । दूजी कंठ मात्रा सात पर । तीजी कंठ मात्रा दस पर । तीसरी पूरबारध नै उतरारध दोनोंही लघु अंत होय । तुक तीजी मात्रा अठावीस (अठाईस) तीन कंठ होय । चौथो तुक मात्रा छाईस

---

२१७ दुती—दूसरी । कंठ—अनुप्रास । धुरतुकतणा—प्रथम चरणके । मत—मात्रा । चौमाळ—चवालीस । सुणस—कह ।

२१८ सुण—कह । बी—दूसरी । छाबीस—छब्बीस । तिण—उस । माह—में ।

२१९ अठवीस—अठाईस । वेद—चार, चतुर्थ । छवीस छब्बीस । त्रण—तीन । चौथीतणै—चौथीके ।

२२० अन—अन्य । दूहां—गीत छंदके चार चरणोंके समूहका नाम । धुरतुकतणै—प्रथम चरणके । मंडांण—रच । छावी—छब्बीस । बीजी—दूसरी । ती—तीसरी । अठवीस—अठाईस ।

२२१ अख—कह । भ—ऐसे । गुरुअंत—जिसके अन्तमें गुरु वर्ण हो । छाईस—छब्बीस ।

पित भ्राय सचित प्रकासे, वीर वट-पंच वासे ,
असुर नासे आहवां ।
मय मेट दासे विरद भासे, सळां ग्रासे खूर ॥
पड़ लंक पासे जंग जासे, अत प्रकासे आवधा ।
ग्रीधां ठीगासे मांस ग्रासे, सुज हुलासे सूर ॥
करण भूपत देव काजा, माण रख गौ दुज समाजा ,
कीत पाजा वध कहै ।
ते सुकव ताजा प्रवण भाजा, गजां राजा गांम ॥
छज ऊंच छाजा दिलदराजा जेत वाजा जगियं ।
लख राख लाजा संत साजा, महाराजा रांम ॥ २२२

अथ गीत सवैयौ वरण छंद लछण

दूहौ

दोय सगण पद च्यार दख, पंचम थव सगणांण ।
सावझड़ौ कह चरण प्रती, जिकौ सवायौ जांण ॥ २२३

अरथ

सवायी गी त वरण छंद होय जिणरै तुक पांच दूहा अक प्रत होय । तुक अेक प्रत सगण दोय आवै । अखिर छ आवै । इसी तुक च्यार होय । पांचमी तुकमें च्यार सगण गण पड़ै । अखिर बारा होय । पांच ही तुकांरा मोहरा मिळै जिणसूं सावझड़ो सवायो गीत जांणजै ।

अथ गीत सवैयौ उदाहरण

गीत

थिर भूप थटौ कलहीण कटौ, दुख ओघ दटौ मह पाप मटौ ।
रिववंसतणौ रवि रांम रटौ ॥

२२२ वट-पंच-पंचवटी । वासे-निवास किया । नासे-नाश किया । आहवां-युद्धों । सळां-राक्षसों । खूर-समूह । ठीगासे-ढेर समूह । ग्रासे-भक्षण किया । हुलासे-प्रसन्न हुए । सूर-सूर्य । दुज-ब्राह्मण । कीत-कीर्ति । पाजा-पुल । वध-समुद्र सागर । प्रवण-देने को । भाजा-घोड़े । छज-शोभा । ऊंच-ऊंची । छाजा-शोभा देता है । दिलदराजा-उदार दिल दातार ।
२२३ दख-कह । थव-रह । सगणांण-सगण गण । अखिर-अक्षर ।
२२४ थिर-स्थिर थटत भूप-वृद्धि । थटौ-धारण करो । कलहीण-पाप । कटौ-नाश हाला । ओघ-समूह । दटौ-नाश कर दो । मह-महान । मटौ-मिटा दो । रिववंसतणौ-सूर्यवंश । रवि-सूर्य ।

तन खेत तजौ मत सुद्ध मजौ, सुभ रीत सजौ वड संत वजौ ।
भव तारण कौसळनंद भजौ ॥
हिय लोभ हरौ धख पुन्य धरौ, क्रत ऊच करौ सुरराज सरौ ।
रघुनायक दायक मोख रगै ॥
मन भाव मढौ दुज सेव वढौ, गुरु वेण गढौ चित रंग चढौ ।
पतसीत सप्रवीत सप्रवीत पढौ ॥ २२४

अथ गीत सालूर लछण

दूहौ

धुर अठार वारह दुती, सोळै ग्रति चव ग्रार ।
आद वेद मिळ थी ग्रती, यू सालूर उचार ॥ २२५

अरथ

पैं’ली तुक मात्रा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा बारै होय । तीजी तुक मात्रा सोळ होय । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पैं’ली तुक नै चौथी तुक मिळै दु गुरु तुकत होय । दोजी तुक नै तीजी तुक मिळै । अपु तुकत होय सो सालूर गीत कहीजै ।

अथ गीत सालूर लछण

गीत

सुज वीजै नर पर्का मनह सीधौ ।
जनक तांम मुख जापत, आ जौ महमा काळ अमापत ।
क्रत पण खंडत कीधौ ॥

२२४ मत-मन । तजौ-छोड़ दो । मजौ-नहे मारो प्रसिद्ध हो । भव-जन्म मरण ।
कौसळनंद-श्री रामचन्द्र भगवान । धख-इच्छा । क्रत ऊच-उत्तम कार्य । सुरराज-इन्द्र ।
दुज-ब्राह्मण । दवौ-दृढ़ करो । पतसीत-श्री रामचन्द्र । सप्रवीत-पवित्र ।

२२५ दुती-दूसरी । ग्रति-तीसरी । चव-चार । वार-बारह । वेद-चौथी । थी-दूसरी ।
ग्रती-तीसरी । यू-ऐसे ।

२२६ महमा-महिमा । अमापत-अपार । खडत-खंडित । कीधौ-किया ।

तायक लखण पयंपै तेथी ।
वायक रोस विरुता, हैं नर बीर जनक मुखहूता ।
जंप न राघव जेथी ॥
मुनि मित्त आयस राघव मंगे ।
छक घण रोम उछाजै, ब्रूठै खित्रवट नूर विराजै ।
उठै सूर उमंगे ॥
चाप उठाय नमाय चहोड़ै ।
तोड़ै खळां अतंका, वरी सिया दासरथी वंका ।
राघव डंका रोड़ै ॥ २२६

अथ गीत त्रिबंकौ लछण

दूहौ

सोळ कळा धुर सोळ बी, ती बतीस गुरअंत ।
त्रि थरक्त उलटै तुक व्रती, कवित्त त्रिबंक कहंत ॥ २२७

अरथ

पैंली तुक मात्रा सोळै होय । दूजी तुक मात्रा सोळै होय । तीजी तुक मात्रा बतीस होय । जिण तीजी तुकरै दोय मात्रा तो आद मै पछै दोय चौकळ गण ज्यांनै तीन जगत पलणा उलट-पलट करसी जठा पछै सब मात्रा फेर हुवै, तुक तीनका मोहरा मिळै । एक दोय गुरुको तो नेम ही नहीं पिण तुकरा गुरु होवै सो त्रबंकौ गीत कहीजै ।

अथ गीत त्रबंक उदाहरण

गीत

रे राखै ऊजळ भाव रदा, गहिया कज नीरज चक्र गदा ।
सुज रे मन राघव रे मन राघव, रे मन राघव जाप सदा ॥

२२६ लखण—लक्ष्मण । पयंपै—कहता है । तेथी—वहां । विरुता—पूर्ण । मुखहूंता—मुखसे । जंप—कह । राघव—रामचन्द्र भगवान । जेथी—जहां । छक—जोश । चहोड़ै—चढाते हैं । अतंका—आतंक ।

२२७ सोळ—सोलह । कळा—मात्रा । बी—दूसरी । ती—तीसरी । व्रती—तीसरी । कहंत—कहते हैं । जठा पछै—जिसके बाद ।

२२८ भाव—विचार । रदा—हृदय । कज—कमल । नीरज—शंख । जाप—जप स्मरण कर ।

गजग्राह जाहर ग्राहांणी, जिण ग्राहर कीधी जग जाणी ।
मह माधव केसव केसव माधव, माधव केसव पढ प्रांणी ॥
लंका हण रांवण जुध लीजै, दत दीन भभीखणनूं दीजै ।
रे कौसळनंदण नंदण कौसळ, कौसळनंदण समरीजै ॥
पै रज रिखघरणी गति पाई, वळ तरणी भीवर तिरवाई ।
भण सीता रघुवर रघुवर सीता, सीता रघुवर भण भाई ॥२२८

अथ गीत घमाळ लछण

दूहो

पूरजारध मत भाख पढ, ऊपर नव मत भक्ख ।
ई तुक्त लघु गुरु हरख, सौ घमाळ विसक्ख ॥ २२९

अरथ

भाख गीत सावझड़ा गीतरो तुक मात्रा अट्ठारै होवै सो भाख गीतरी तुक मवाय मात्रा नव होव । लघु गुरु तुक्त होवै । च्यार ही मोहरा मिळै सो घमाळ गीत कहाव ।

अथ गीत घमाळ उदाहरण

गीत

कवसळ सुता राजकंवार, कत जन काजरा ।
दग्सै चखां दत खग दोय लंगर लाजरा ॥

---

२२ जिण–जिस । ग्राहर–रक्षा । कीधी–की । माधव–विष्णु । दत–दान दीन–गरीब । भभीखणनूं–विभीषणको । नंदण–पुत्र । समरीजै–स्मरण कीजिए । पै–चरण । रज–धूलि । रिख–ऋषि । घरणी–गृहिणी । गति–मोक्ष । वळ–फिर । तरणी–नौका । भीवर–मल्लाह । भण–कह ।

नोट—जिर्वद गीतके लक्षण रघुनाथरूपकमें अधिक स्पष्ट हैं । यहां पर उसकी नकल दी जाती है । जिर्वद गीतमें प्रत्येक पदमें सोलह मात्राएं होती हैं । प्रथम द्वितीय और चतुर्थ पदका तुकान्त मिलाया जाता है । तीसरे पदमें आदिम दो मात्राएं अथवा दो चौकल और अन्तमें एक पञ्चकल रखना चाहिए । तीसरे पदमें जो चौकल आवे वह पलट कर चौथे पदमें भी आनी चाहिए । उदाहरण देखनेसे स्पष्ट हो जायेगा ।

२२९ मत–मात्रा । भाख गढ गीत धमाल नाम । भक्ख–कह । विसक्ख–विशेष ।

२१ कत–काम । चखां (चख)–नेत्र नयन । दत–दांत । खग–तलवार । लंगर–पैरोंको बांधनेका बन्धन विशेष पैरका एक आभूषण ।

जपां कमण नूप ता जोड़ अघपत आजरा ।
वंदां मघादिक सुर व्रंद रघुबर राजरा ॥
छत्रवट तूझ दसरथ नंद ओप अच्छेहड़ा ।
थाटै खगां रिण दसमाथ कर घड़ मेहड़ा ॥
वळमुखछूंत निकसै वैण आखर वेहड़ा ।
जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा ॥
वेढक फरसवर विकराळ वंक अबंकसा ।
भुज जिण कीधा रांम नरेस सूधसराकसा ॥
लहरे हेक दीधी लछीस पांनक लंकसा ।
भुज पय नमै अविरळ सीस सुरप असंकसा ॥
दखूं किसूं हे महाराज दासां दास रे ।
वरणां जीभहूं बुध जोग नित जसवास रे ॥
हिरदै वसौ ध्यांन हमेस रूप हुलास रे ।
जपै 'किसन' रस रघुराज, औ पण आस रे ॥ २१

अथ गीत रसावळ लछण

दूहौ

प्रथम तीन तुक चवद मत, मोहरे रगण मिळाय ।
चवथ ग्यार मत सगण मुख, रसावळौ खगराय ॥ २२१

२१ कमण–कौन । ता–उस । जोड़–समान बराबर । अघपत–श्रीरामचंद्र भगवान । मघादिक–इंद्र आदि । सुर–देवता । व्रंद–समूह । छत्रवट–क्षत्रियत्व । तूझ–तेरा । नंद–पुत्र । अच्छेहड़ा–अपार । थाट–ठाट बाट । रिण–युद्ध । दसमाथ–रावण । घड़–शरीर । मेहड़ा–एक के ऊपर एक रखनेकी क्रिया या ढंग तह । वळ–वचन । वेहड़ा–विधातक । जुग–दो । पद–चरण । सुरपत–इन्द्र । जेहड़ा–जैसा । वेढक–वीर । फरसधर–परसुराम । कीधा–किया । सूधसराकसा–बिलकुल सीधा । लहरे–तरंगमें उमंगमें । दीध–दे दी । लछीस–लक्ष्मीपति । पांनक–गढ़ । लंकसा लंकाके समान । पय–चरण । अविरळ–निरंतर । सुरप–इन्द्र । दखूं–कहूं । दासांदास–सेवकोंका दास । बुध–बुद्धि । जोग–योग्य । जसवास–यश प्रीति । हिरदै–हृदयमें ।

२२१ मोहरे–शुरूमें । चवथ–चौथे । खगराय–गरुड़ । [illegible] । खगराज–गरुड़ ।

अरथ

जिण गीतरै प्रथमरी तीन ही तुकां मात्रा चवदै चवदै होय । मोहरै रगण गण होय । तुक पै'ली मात्रा चवदै तुकांत रगण होय । तुक दूजी मात्रा चवदै तुकांत रगण होय । तुक तीजी मात्रा चवदै तुकांत रगण होय । तुक चौथी मात्रा अग्यारै तुकांत मोहरै सगण होय सो गीत नाग कहै छै । हे खगराज गरुड़ सो गीत रसावळी कहावै छै ।

अथ गीत रसावळी उदाहरण

गीत

सम्रू मुजां निज धानंख सरा, मभ्र झड़ै भूहां मौसरा ।
रिण रांम नृप दससाथरा, खित वेध लगा खरा ॥
उण दसा राखस आहुड़ै, भड़ भाल कपि यण दस भड़ै ।
जूथबथ अहू धणसुर लड़ै, गज धरा नभ गड़ड़ै ॥
कोमंड कीधां कुंडळां, वरसाळ सर दुत वीजळां ।
खळ कुंभ राघव खंडळा, झड़ नयण आग झळा ॥
भड़ रांम दससिर भंजिया, दत लंक सरणागत दिया ।
विभ अवध सिय ले आविया, कळ चंदनांम किया ॥२३२

अथ गीत सतखणा लछण

दूहा

लघु सांणोर क पूणियौ, धुर अठार धी धार ।
सोळ चार क्रम मत सरब, दु गुरु तुकंत विचार ॥ २३३

---

२३२ धानंख-धनुष । सरां-बाण तीर । मभ्र-मध्य । मौसरा-अमसु भूर्ख । दससाथरा-रावणका । खित-पृथ्वी । वेध-युद्ध । दसा-मार, तरफ । राखस-राक्षस । आहुड़ै-भिड़ । भड़-योद्धा । भाल-रीछ । कपि-बंदर । यण-इस । दस-तरफ, मार । जूथबथ-परस्पर भिड़नेकी क्रिया द्वन्द्वयुद्ध । अहू-अधमरा । धणसुर-मेघनाद । गड़ड़ै-भूवायमान हुए । कोमंड-धनुष । वरसाळ-वर्षा । सर-तीर, वाण । दुत-चमक । वीजळां-बिजली चमकार । दससिर-रावण । दत-दान । विभ-वैभव । अवध-अयोध्या । सिय-सीता । कळ-युद्ध । चंदनामा-यश ।

२३३ धी-पुत्री । धार-धारह । सोळ-सोलह । मत-मात्रा । दु-दो ।

मोळ मत तुक पंचमी, संबोधन धुर मघ ।
तुक छठी मझ नव कळा, सौ सतखणौ प्रसिध ॥ २३४

अरथ

गीत छोटी सांणोर तथा प्रहास सांणोर पै सौ तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै होय नै बीच सबोधन रेकार सब्द पांचमी तुकरै आद मध्य आय नै तुक छठी मात्रा नव होय जिणनै गीत सतखणौ कहीजै ।

अथ गीत सतखणौ उदाहरण
गीत

प्रांणी सौ झूट कपट चित परहर, गुण हर काय न गावै ।
जमदळ आय फिरेलौ जाडौ, आडौ कोय न आवै ।
रे दिन जावै रे दिन जावै, लाहौ लीजिये ॥
देखै मात पिता त्रिय बंधव, कुळ धन धंधव काचौ ।
चौरंग मझ जमडूंत बचायण, साहिब राघव साचौ ।
रे जग काचौ रे जग काचौ, लाहौ लीजिये ॥
अंत दिनां आडौ खम आसी, साचौ जनां सबंधौ ।
डिग चित अवरां दिसी म डोलै बोलै लिछमण बंधौ ।
रे जग धंधौ रे जग धंधौ, लाहौ लीजिये ॥
धू पहळाद भभीखण सिंधुर, अपणाया सुख आपै ।
पीतंबर काटै दुख पासां, थिरके दासां थापै ।
रे हरि जापै रे हरि जापै, लाहौ लीजिये ॥२३५

---

२१४ मघ—मध्य । मझ—मध्यम । कळा—मात्रा ।

२१५ परहर—छोड़ दे । गुण—यश । काय न—क्यों नहीं । जाडौ—बहुत घना । कोय न—कोई नहीं । लाहौ—लाभ । देखै—देखने हैं । त्रिय—स्त्री । बंधव—भाई धंधव धंधा काम । चौरंग—चारागमन । बंधन मुक्त । मझ—मध्यमें । जमडूंत—यमराज । साहिब—स्वामी । जनां—भक्त । सबंधौ—संबंध । अवरां—अन्यों । दिसी—ओर, तरफ । म—मत । लिछमण—लक्ष्मण । बंधौ—भाई बंधु । धू—ध्रुव भक्त । पहळाद—प्रह्लाद । सिंधुर—गज । पीतंबर—पीताम्बर वस्त्र धारण करने वाला विष्णु । जापै—जप स्मरण कर ।

अथ गीत उमग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सोळह मत तुक प्रत सरब, मोहरा ध्यारू मेळ ।
सावझड़ौ सगणांत सख, सोय उमंग सचेळ ॥ २३६

अरथ

जिण उथमरै पग तुक प्रत मात्रा सोळ होय । अंत गुरु होय नै दूजी उमगरै तुक प्रत सोळै मात्रा नै अंत गुरु होय पिण अखरो भेद छै सो पहलउथल तौ मात्रासुं उलटै न उमंग सावझड़ौ ध्यारू तुकां मिळ न उलट नहीं यौ भव छै ।

अथ गीत उमग सावझड़ौ उदाहरण

गीत

नर नाग सुरा सुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी ।
मुर कीटमधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी ॥
के नाथ अनाथ सुनाथ किया, सुज जेण वेरी दळ चाप सिया ।
दळ रांवण कुंभ जिसा वहिया, है काम भलौ भज राम हिया ॥
मह पाळ सिधां कुळ मित्तारौ, पहु पाळक संतां पीसारौ ।
जग जाय जमारौ जीतारौ, सुज संभर सायब सीतारौ ॥
वाराधिप सेतां बंधणारौ, कुळ राखस जूथ निकंदणारौ ।
दिल तूं 'किसना' जग वंदणारौ, नहचौ रख कौसळ नंदणारौ ॥२३७

---

२३६ सगणांत—जिसके अन्तमें सगण हो । सख—कह ।

२३७ जोड़—बराबर समान । नथी—नहीं । कथ—कथा । दुजांण (द्विज)—महर्षि मुनि । कथी—नहीं । मुर—एक असुरका नाम । कीटमधु—मधुकैटभ । सिंध—समुद्र । दळ—तोड़ कर । चाप—धनुष । सिया—सीता । वहिया—चले गये । भलौ—उत्तम ठीक । महपाळ—(महिपाल) राजा । सिधां—श्रेष्ठ । कुळ मीतारौ—सूर्य का वंश । संभर—स्मरण कर । सायब—(साहिब) स्वामी । वाराधिप—समुद्र । जूथ—समूह । निकंदणारौ—नाश करने वाले का । नहचौ—विश्वास धैर्य । नंदणारौ—पुत्रका ।

अथ गीत यकखरो (इकखरो) लखण

सरलोको

मात्रा चवदै तुक हेकरा मांहै ।
आंणै सोळै तुक यरा विध उछाहै ॥
कायब सावझड़ौ रगणांत कीजै ।
मोहरा सोळै हीरै रे मेलीजै ॥
गोत यकखरौ यरा विध कवि गावै ।
राघव राजानै जसकर रीझावै ॥
चवजै बीसू मत पद हेकरा चोखौ ।
लीजौ वरतारौ समझे सरलोकौ ॥ २३८

अरथ

यकखरा गीतरै सोळै ही तुकां प्रत चवदै मात्रा आवै । तुकंत रगण आवै । सारी ही तुकां प्रतरै यसौ सबोधनरौ एक अखर आवै । मोहरै सो यकखरो गीत कहावै । यणरा लखणांरो छंद सरलोको छै । वांणिया जती तथा मोतक मोहोत पढै छै ।

अथ गीत यकखरो उदाहरण

गीत

कौसिक रिख जग काज रे, जाचिया स्री रघुराज रे ।
सुज विदा दसरथ साज रे, मेल्हिया स्री महराज रे ॥
गत पंथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे ।
हरण खंड कीध सुबाहु रे, मारीच नख दघ माह रे ॥

---

२१ हेकरा–एक । मांहै–में । आंणै–रूप में माय । यरा–इस । विध–प्रकार तरह । उछाहै–उमंग आयण । कायब–काव्य कविता । रगणांत–वह छंद जिसके अंत में रगण हो । कीजै–करिये । मेलीजै–रखिए । रीझावै–प्रसन्न करे । चवजै–कहिए । बीसू–बीस । मत–मात्रा । पद–चरण तुक । चोखौ–उत्तम । वरतारौ–वह छंद या पद परिमाण नियम एवं विषयक रचना के नियम व मात्रा वर्ण आदि दिए हुए हों । सरलोकौ–राजस्थानी का एक मात्रिक छंद विशेष । यसौ–ऐसा । अखर–अक्षर । यण इस । मोहरा–[illegible] । बहोत–बहुत ।

२१८ कौसिक–विश्वामित्र । रिख–ऋषि । जिग–यज्ञ । काज–लिए । जाचिया–याचना की । गाह–[illegible] कीध–किया नख–डाल दिया । दघ–समुद्र । मांहु–में ।

जिग जनक आरंभ रांम रे, कर रिखी गवरा सकांम रे ।
भव्र सिना गौतम भांम रे, रज पाय तारी रांम रे ॥
दस कमळ वळ सुत दैत रे, नूप अवर माण नमैत रे ।
जिग धनख हरा की जैत रे, वर स्रीया जद आनैत रे ॥२३९

अथ गात अमेळ लछण

दूहो

सरस वेलिया सूहणा, सामिळ तुकां सम्फाय ।
मोहरा अंत मिळै नहीं, सौ अमेळ सुभाय ॥ २४०

अरथ

वेलिया गीतरी नै मोहणा तथा सुरवरी तुकां सामिळ होय । पण मोहरा मिळै नहीं जिणनूं अमेळ सांणोर कहीजै । यमहीज तरै सुपखरौ पिण अमेळ बणै छै ।

अथ गीत अमळ सांणोर उदाहरण

गीत

दसरथरा नंद मुकतरा दाता, असुर जुधां घाता असेस ।
निज कुळ मुकट जांनकीनायक, सुखदायक सेवगां सही ॥
उर भ्रगु लात सुहात अनूपम, जग जाहर विक्रम राजेस ।
किती यार महराज त्रविक्रम, राजहूंत तन लाज रही ॥
चाढ सुनाह जिगन रखवाळे, महण नीच डाले मारीच ।
ताई विमद करे नूप तासा, त्रिरदाई जांनकी वरी ॥

---

२३९ रिखी–ऋषि । गवण–गमन । भांम–भामिनी स्त्री । पाय–चरण । दसकमळ–रावण । अवर–अन्य । मांण–गर्व । हण–नाश कर । आनैत–वीर ।

२४० सूहणा–मोहणा नाम गीत छंद । सामिळ–साथ शामिल । सम्फाय–सज कर रच कर । जिणनूं–जिसको । पिण–भी ।

२४१ नंद–पुत्र । मुकतरा–मुक्तिके । दाता–देने वाला । घाता–संहारक । असेस–अपार । अनूपम–अद्भुत । लात–पद प्रहार सुहात शोभा देता है । विक्रम वीरता । किती–कितनी । त्रविक्रम–त्रिविक्रम । राजहूंत–श्रीमानसे । चाढ–नाश कर, मार कर । त्रिमव–यज्ञ । महण–समुद्र । ताई–मन । विमद–गर्वरहित । तासा–चोर । त्रिरदाई–बिरदधारी ।

फसण अरस कर आडौ फिरियौ, हुवौ फरसधर तेजविहूण ।
जग मझ रांम न कौ तौ जेहौ, केहौ भूपत मीढ करां ॥२४१

अथ गीत भवरगुंजार लछण

दूहा

सोळ प्रथम चवदह दुती, ज्यांरै लघू तुकंत ।
ती चवदह नव चतुरथी, अख वी गुरु जिण अंत ॥ २४२
यण हीज विध उत्तर अरध, चतुर सुकवि विचार ।
भण जस रस रघुवर भंवर, गीत भंवर गुंजार ॥ २४३

अरथ

भवरगुंजार गीतरै तुक आठ मात्रा प्रमांण कह्या छै । तुक पैली मात्रा सोळ । तुक बीजी मात्रा चवदै । तुक तीजी मात्रा चवदै । तुक चोथी मात्रा नव । तुक पांचमी मात्रा सोळै । तुक छठी मात्रा सोळै । तुक सातमी मात्रा चवदै । तुक आठमी मात्रा नव होय । पैली बीजी तुकरा मोहरा मिळै । तुकंत लघु होय । तीजी चौथीसूं मळी पढी जाय । आठमी तुकरा मोहरा मिळनै तुकांत दोय गुरु होय । पांचमी छठी तुकरा मोहरा मिळनै तुकांत लघु होय । सातमी आठमी तुक भेळी पढी जाय । यण प्रकार च्यार ही दूहां प्रत मात्रा होय जिण गीतरौ नांम भवरगुंजार कहीजै ।

अथ गीत भवरगुंजार उदाहरण

गीत

रे अधम नर समर रघुवर,
सिया नायक दया सागर ।
कहे दध जिण सुजस कहजे भिड़ै स्रळ भंजे ॥
जपै सिव रवि सेस जाहर,
वेस की प्रहळाद वाहर ।
रूप नाहर धार राघौ गाव रिम गंजे ॥

२४१ फसण–मढ़नेको । अरस–कोप । फरसधर–परसुराम । तेजविहूण–कांतिहीन । मझ–मध्य । कौ–कोई कोन । तौ–तेरे । जेहौ–जैसा । केहौ–कौनसा । मीढ–समान तुल्य ।
२४२ दुती–दूसरी । ज्यांरै–उनके । ती तीसरी । चतुरथी–चौथी । अख–कह । वी–दो ।
२४३ यण–इस ।
२४४ कहे–तट पर । दध–समुद्र । स्रळ धनुर । रवि (रवि)–सूर्य । सेस–शेष । वाहर–रक्षा । नाहर–नृसिंहावतार । राघौ–श्रीरामचन्द्र । रिम–शत्रु । गंजे–नाश किये

वळ थियौ वित हरणाख्य अप्रवळ ,
तेज मीहर घर रसातळ ताम ।
ब्रह्म पुकार रघुपत करण मुख कहै ॥
गरुड़धुज विप धांम गिड़ ,
प्रळय जळ मग गंध मुघ पड़ ।
आण घर घर देत अणघट, विकट अर वहै ॥
तन मछ जोजन लग लख तण ,
रेण जन सत वरत रखण ।
समंद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वांणी ॥
वळ चवद रतन उघार हित धप ,
कठण पिठ धारी मंद्र कछप ।
उदध कर मंथांण अणघट, प्रगट कंज पांणी ॥
यळ छळण तन धरि हास वावन ,
पुरंदर ग्रढ कर सपावन ।
फरसधर विप धार हरि फिर, खत्र खळ खंड ॥
रच रांम तन यर रहच रांमण ,
हुवा हळधर वुध दित हण ।
वळै की संकी होण राघव, मही सच मंड ॥ २४४

अथ गीत दूजौ मंवरगुंजार लछण

दूहौ

चवद प्रथम वूजी चवद, सोळ अ्रती नव ध्यार ।
पूब उतर सम अंत गुरु, जुगम मंत्र गुंजार ॥ २४५

---

२४४ वळ–फिर । थियौ–हुआ । वित–दैत्य । हरणाख्य–हिरण्याक्ष । अप्रवळ–अत्यन्त वलधारी । मीहर–सूर्य । अणघट–अपार । मछ–मत्स्य जोजन–योजन । पिठ–पीठ । मंद्र–मंदराचल पर्वत । उदध–समुद्र । कंज–कमल । पांणी–हाथ । वळ–राजा बलि । पुरंदर–इन्द्र । सपावन–पवित्र । फरसधर–परशुराम । खत्र–क्षत्रियगण । रहच–मार कर

२४५ अ्रती–तीसरी । जुगम (जुग्म)–दो दूसरा । मंत्री–माव ।

अरथ

बीजा भमरगुंजाररै पैं'ली तुक मात्रा चवदै । बीजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा नव । यूंही उत्तरारधरी च्यार तुकां होय । पैं'ली दूजीरा मोहरा मिळै । अंत गुरु होय । तीजी चौथी अळी पड़ी जाय । चौथी आठमीरा मोहरा मिळै । अंत गुरु होय । पांचमी छठीरा मोहरा मिळै । गुरु अंत होय । पूरवारध उत्तरारध समान मात्रा होय । यूं च्यार ही दूहा होय सौ बीजौ भमरगुंजार गीत कहावै ।

अथ गीत बीजौ भमरगुंजार उदाहरण

गीत

सुभ देह नीरद सुंदरं, साधार सेवग स्रीवरं ।
रघुनाथ नाथ अनाथ रहे, हेल अघ हरणं ॥
धर सुकर सायक धानुखं, लड़ समर रह्चण लखं।
दुजराज गरब विभंज दस्सत, सरब जग सरणं ॥ २४६

अथ गीत चौटियौ लखण

दूहौ

प्रगट जांगड़ा गीत पर, अधिक मत्त उगणीस ।
अंत दु गुरु तुक आगळै, कवि चौटियौ कहीस ॥ २४७

अरथ

बेलियौ सुहणौ खुड़द जांगड़ौ या च्यार ही गीतां छोटा साणोरा मेहुसौ । जांगड़ौ गीत पैं'ली तुक मात्रा अठारै । बीजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळ । चौथी तुक मात्रा बारै होय । दो गुरु तुकंत होय पछै सोळै बारै इ क्रम होय जीं जांगड़ा गीतरा दूहारै पांचमी तुक एक मात्रा उगणीसरी अधिक होय । दो गुरु तुकंत होय । इण प्रकारसूं च्यार ही दूहा होय जिणनै चौटियौ गीत कहीजै ।

---

२४६ नीरद–बादल । साधार–सहायक रक्षक । सुकर–श्रेष्ठ हाथ । सायक–तीर । धानुखं–धनुष ।

२४७ मत्त–मात्रा । उगणीस–उन्नीस । कहीस–कहेगा । बीजी–द्वितीय दूसरी । बारै–बारह । ई–इस ।

अथ गीत चोटियो उदाहरण

गीत

जामी अघ भांन सुरसरी जेथी, ध्यान मुनीसां धायो ।
वरणै वेद यसा नग राघव, आं सरणे हूं आयो ।
केसव गवळौ निज दास कहायौ ॥
त्रिभुवण मांझ नहीं त्यां तोलै, ओळै सुतअरव्यंदो ।
म्हे किव 'किसन' हुलासे चितमें, आमे लियौ अमंदो ।
यर-सी राजरै चोटीकट वंदो ॥
रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूस मघवांणी ।
कत दत कोट किया हूं यघकों, हरि नग ओट रहांणी ।
कुळमें धन्य हूं किंकर कहांणी ॥
भण चौरासी घेर उदध भव, नरपत फेर नह नाचूं ।
कौसळनंद अडग 'किसनो' कह, जुग जुग याही जाचूं ।
राघव गवळा चरणां नित राचूं ॥२४८

अथ गीत मदार लछण

दूहा

तुक धुर थी सोळह मता, मोहरा मेळ गुरंत ।
ती अठार चौथी त्रिदस, तेरै कह गणंत ॥ २४६

---

२४८ जामी-पिता। अघ-पाप। सुरसरी-गंगा नदी। जेथी-जहां। धायो-स्मरण किया ध्यान किया। यसा-यश। सरण-शरण। आं-उस। हूं-मैं। गवळो-ग्वालाओं का पालक। त्रिभुवण-तीन लोक। मांझ-में मध्य। तोले-समान। सुत अरव्यंदो-ब्रह्मा। [illegible] भगवान। राजर-आपके [illegible]। वंदो-सेवक [illegible]। रज-धूलि। परसण-स्पर्श। उदमाद [illegible]। रिख-ऋषि। हूस-[illegible] मघवांणी-इंद्र। कत-[illegible]। दत-दान। यघको-[illegible]। ओट-आड़ [illegible]। रहांणी-रह गया है। हूं-मैं। किंकर-दास [illegible]। कहांणी-कहा [illegible]। राचूं-[illegible]।

२४६ धुर-प्रथम। थी-[illegible]। मता-मात्रा। [illegible]। गुरंत-[illegible] [illegible]।

अथ पूरब जिम उतर अध, समझौ कवि सुविचार ।
कीत जेण मिच राम कह्, दाख गीत मंदार ॥ २५०

अरथ

पै'लो तुक मात्रा सोळं । बीजो तुक मात्रा सोळ । तीजी तुक मात्रा अठारै । चौथी तुक मात्रा तेरै होय । प'ली बीजी तुक मिळं ज्यांरै गुरत होय । पूरबारध उतरारध समान होय । पांचमी तुक मात्रा सोळं । छठी तुक मात्रा सोळं । सातमी तुक मात्रा अठारै और आठमी तुक मात्रा तेरै होय । आठमीके रगणांत होय सो मदार नांम गीत कहीजै ।

अथ गीत मदार उदाहरण

गीत

पण-राखण दास गदापाणी, मझ सौ कथ जाहर भूमांणी ।
अपखी प्रह्ळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथसूं ॥
जे जुध हरणकुसन् जरियौ, घड़ नाहर मांनवचौ धरियौ ।
जिण कारण देव वितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनायसूं ॥
पित मात वसा तजया लंकन्ं, थित जे चित हूं ध्रू बाळकन्ं ।
वन जाय करे तप हेत विसंभर, अेक पया वळ ऊपरी ॥
धण साधै जोग सधीर धर्यौ, सुर राजा कांपै यात सुणै ।
निरधार अधार पधार नरायण, भूप कियौ द्रढ भूपरी ॥
दुरवासा उारण स्राप दियौ, लखजे अंबरीख उधार लियौ ।
मिच पट परीछत मीच धचाय'र, थेट हरी जन थापिया ॥

---

२५१ गदापाणी–विष्णु । भूमांणी–समार भूमण्डल । अपखी–वह जिसका कोई पक्ष न करता हो । संग्रहिया–पकड़ा या रखा थी । ज–जिसने । हरणकुसन् हिरण्यकशिपुको । जरियौ–संहार किया । घड़–शरीर । नाहर–सिंह । मांनवचौ–मनुष्यका । धरियौ–धारण किया । वितेस–दै व दै वेव । दुजेसर–द्विजवर महर्षि । विसंभर–ईश्वर । पया–पैर । दुरवासा–एक ऋषिका नाम । उारण–[illegible] । थाप–माप । परीछत–प ।क्षित । मीच–मृत्यु ।

वळमीक पुळिंद रिखी वागौ, कीधौ गुरु सुकनाधिप कागौ ।
भख ग्रेंठित थोर करां कर भीलण, ग्रेम घणां पद ग्रप्पिया ॥
निरवारां ग्रोठम घणनांमी, भुज दीन सीहाय ग्रव भांमी ।
नह विसार संभार ग्रहोनिस, जैनूं ग्राठूं जाममें ॥
दिल ऊजळ ठाकर दासरथी, कथजे गुण ग्राकर वेद कथी ।
कर तूं ग्रभिलाख रदा 'किसना' कवि, राख सदा चित रांममें ॥२५१

अथ गीत झड़लुपत सावझड़ौ लछण

दूहौ

सावझड़ौ रमणी वसंत, तुक धुर बी मिळ येद ।
मोहरौ तुक तीजी ग्रमिळ, सौ झड़लुपत सुभेद ॥ २५२

ग्ररथ

गीतांरा प्रकरणमें ग्रै'सी तीन सावझड़ा कहया । ग्रेक वसंतरमणी बीजौ ग्रथबत नै तीजौ मुणाळ ज्यांमें ग्रै'सौ वसंतरमणी नांम सावझड़ौ जिणरै ग्रै'सौ तुक मात्रा ग्रठारै होय नै ग्रौर सारा ही गीतरी सारी ही तुकांमें सोळै सोळै मात्रा होय । तुकंत भगण होय सौ तो वसंतरमणी सावझड़ौ जिणरी च्यार ही तुकां मिळै नै झड़लुपतरी ग्रै'सी तुक दूजी तुक चौथी तुक मोहरा मिळै नै तीजी तुक मोहरै मिळै नहीं जिणनूं झड़लुपत कहीजै तथा कोई कवि ग्रपने त्रिमेळ पालवणी पण कहै छै सो पण सत्य छै ।

ग्रथ गीत त्रिमळ पालवणी तथा झड़लुपत सावझड़ौ उदाहरण

गीत

दत किरमर जोड़ नकौ विरदायक ।
घण दळ रोड़ कौड़ खळ घायक ॥

---

२५१ वळमीक–वाल्मीकि ऋषि । पुळिंद–एक प्राचीन कालकी पिछड़ी जाति । रिखी–ऋषि । कीधौ–किया । सुकनाधिप–गरुड़ । कागौ–काकभुशुंडि । ग्रेंठित–उच्छिष्ट । ग्रोठम–परम सहारा । घणनांमी–ईश्वर । ग्रव–विरद । भांमी–बलैया । जैनूं–जिसको । ग्राठूं जाममें–ग्रष्ट याम । दासरथी–श्रीरामचन्द्र भगवान ।

२५२ धुर–प्रथम । बी–द्वितीय । येद–चतुर्थ चौथी । मोहरौ–तुकबंदी । ग्रमिळ–नहीं मिलने वाली । ज्यांमें–जिनमें । ग्रथ–इस । पण–भी ।

२५३ दत–दान । किरमर–तलवार । जोड़–समान । नकौ–कोई नहीं । विरदायक–विरद धारी यशस्वी । घण–बहुत । दळ–सेना फौज । रोड़–रोक कर । खळ–शत्रु । घायक–संहार करने वाला ।

अघ तम दळद तोड़ दुत आसत ।
निज कुळ मोड़ जांनकी नायक ॥
जुध आचार भार भुज जापत ।
रिमहर मार धजा जय रोपत ॥
थदै तमांम वेद मुनीवर ।
ओ रवि वंस राम रवि ओपत ॥
नृप खग दांन लियां मुख नूर ज ।
प्रसर्यां भांन खिव्रीवट पूरज ॥
मळमळ प्रथी सुजस सद योलत ।
सूरज तड़ दासरथी सूरज ॥
सदन सुकंठ भभीखण सांमंत ।
निरख कंठदस भांज अनांमत ॥
रे कुळभांण भांण नृप राघव ।
कोड़'क भांण लियां मुख कामत ॥ २५३

अथ गीत त्रिपखो लक्षण

दूहो

धुर बी तुक मत सोळ धर, ती तुक बीस मताय ।
गळ अनियम मिळ्यो, अेक त्रिपखौ गाय ॥ २५४

---

२५३ अघ—पाप । तम—अंधेरा । दळद—दारिद्र्य कंगाली । दुत—द्युति । आसत—शक्ति । आचार—चाल । जोपत—शोभित होता है । रिमहर—शत्रु । रोपत—रोपता है । तमांम—सब । रविवंस—सूर्य वंश । रवि—सूर्य । ओपत—शोभा देता है । नृप—राजा । नूर—कांति दीप्ति । ज—ही । प्रसर्यां—फैलाओ । भांन—नाश कर । खिव्रीवट—क्षत्रियत्व । पूरज—पूर्ण । मळमळ—सारी ओर । सद—यश । योलत—बोलता है । तड़—बल । दासरथी—श्री रामचन्द्र । सदन—भवन । सुकंठ—सुग्रीव । भभीखण—विभीषण । सांमंत—योद्धा । निरख—देख देख कर । कंठदस—रावण । भांज—नाश कर । अनांमत—जो नहीं झुकता या नमता था । कुळभांण—सूर्य वंश । भांण—सूर्य । कोड़'क—करोड़ों । कामत—कांति दीप्ति ।

२५४ बी—दूसरी । मत—मात्रा । ती—तीसरी । मताय—मात्रा । गळ—अनुप्रास तुकबंदी ।

वारता

गीत पालवणी १ गीत झड़लुपत २ गीत दुमेळ ३, गीत मवकड़ी ४ न सावक झड़ल ए पांच छोटे सांणोररी विखम तुक पैं'ली तुक तीजी न विखम तुक त्यांरा वणै ने यतरा गीतांरै तुक प्रत सोळै मात्रा हुवै न मोहरामें तफावत होय। कठैं'क गुरु तुकांत कठैं'क लघु तुकांत होय नै यतरा गीत बडा सांणोररी विखम तुकांत वणै सावझड़ो अरध सावझड़ो थाव। तुक प्रत मात्रा वीस होय। पैं'ली तुक मात्रा तवीस होय।

अथ गीत बडा सावझड़ा तथा अरध सावझड़ा लछण

दूहो

सुण धुर तुक तेवीस मत, अवर वीस रगणंत ।
मिळ चव तुक वड सावझड़ौ, दुमिळ अरध वाखंत ॥ २५१

अरथ

गीत बडौ सावझड़ौ नै अरध सावझड़ौ दोन्यूंई बडा सांणोररी विखम तुक पैं'ली तीजीरा हुवै। पै'ली तुक मात्रा तेवीस। बीजी तुक मात्रा बीस और बाकी ही तुकां मात्रा बीस होय। तुकांत रगण आवै नै च्यारूं तुकांरा मोहरा मिळै सो बडौ सावझड़ौ नै अरध सावझड़ारै दोय तुकांत मिळै नै कठैं'क रगण तुकांत आवै कठैं'क गुरु करणगण तुकांत आवै औ भेद सो अरध सावझड़ौ कहावै।

अथ गीत बडौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

लछण कसीसै सुजां धांनंख वध लाजरा ।
गोम नभ धड़ड़ आनंक जय गाजरा ॥
सझण पारंभ किय उछव सांमाजरा ।
रे असुर देख आरंभ रघुराजरा ॥

---

२५१ सुण-कह। अवर-अन्य। रगणंत-जिस पदके चरणके अंतमें रगण हो। चव-चार। वाखंत-कहते हैं। नै-और। दोन्यूंई-दो ही दोनों ही। बीजी-दूसरी। कठैं'क-कहीं पर। करणगण-दो दीर्घ मात्रा का नाम।

२५२ लछण-लक्ष्मण। कसीसै-धनुषकी प्रत्यंचा चढ़ाता है। धांनंख-धनुष। वध-(उदधि) सागर। गोम-पृथ्वी। धड़ड़-ध्वनि हो कर गर्ज कर। आनंक-नगाड़ा। पारंभ-तैयारी। आरंभ-तैयारी।

सारियां सुभट तूटै वमंग रीसरा।
त्रिलोचण जिसा खूटै नयण तीसरा॥
सिर कसै ऊकसै लसै भुजगीसरा।
जोय दससीस थट कीस जगदीसरा॥
दहल पुर नयर पूगी महळ दोयणां।
भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां॥
उमंग जुध करग चंचळ अचळ औयणां।
लेख लंकेस अवधेस दळ लोयणां॥
मांन पीव वच संप ससमाथनै।
हर चरण जाह जुड़ दूणवसहाथनै॥
कुळ अनेक करै निज सुधारै काथनै।
नांम तौ माथ दसमाथ रघुनाथनै॥ २५७

अथ गीत भरम सावझड़ौ उदाहरण

[ऊपरला सावझड़ा गीतनै दुमेळ कर पढणौ तथा दरसावौ छै]

गीत

कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां।
सुकर खग वांन जेहांन ऊंचासरा॥

---

२५७ सारियां-नेत्रों। वमंग-अग्निकण। त्रिलोचण-शिव। खूटै-खुलते हैं। भुजगीसरा-शेषनागके। जोय-देख कर। दससीस-रावण। थट-समूह दल। कीस-वानर। दहल-कांप रोब नयर-नगर। पूगी-पहुंच गई। दोयणां-शत्रुओं। सुर-देवता। नर-भोयणां-नर लोक संसार। करग-हाथ। औयणां-चरणों पैरों। लेख-देख कर समझ कर। लंकेस-रावण। अवधेस-श्रीरामचन्द्र भगवान। दळ-सेना। लोयणां-नेत्रों लोचनों। पीव-पति। वच-वचन। ससमाथ-समर्थ शिव। दूणवसहाथ-रावण। काथनै-शंकरको। नांम-झुका दे। तौ-तेरा। माथ-मस्तक। दसमाथ-रावण। ऊपरला-उपर्युक्त, ऊपरका। दुमेळ-वह छंद या पद्य जिसके प्रथम दो चरणोंकी तुकबंदी हो।

२५८ तूण-तर्कश। सारंग-धनुष। गहियां-पकड़े हुए। करां-हाथों। जहांन-संसार। ऊंचासरा-श्रेष्ठ।

सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा ।
वाह रघुनाथ लंका लियण वांकड़ा ॥ २५८

अथ तृतीय गीत झड़मुकट लछण

दूहौ

सुड़दतणै तुक अगग पछ, देह झमक दरसाय ।
जिणनूं दूजौ झड़ मुकट, रटै वडा कविराय ॥ २५९

अरथ

सुड़द गीत छोटो सांणोर होय। पैली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा तेरै। तीजी तुक मात्रा सोळै नै चौथी तुक मात्रा तेरै होय। तुकांत दोय लघु होय सो सुड़द गीत कहावै। जीं सुड़द गीतरी सोळै ई प्रत तुकरै आद अंत जमक होय सो गीत बीजो झड़मुकट कहावै। अक आगै कह्यो छै सौ वेस लीज्यो। सावझड़ो छै।

अथ गीत झड़मकट उदाहरण

गीत

रैणायर मथण मथण रैणा यर, भर धर टाळण समर भर ।
कर जन साना जगत अभै कर, वरदाता जांनकीवर ॥
सारंग पांण बांण तन सारंग, धरणसुता धव खग धरण ।
वारण जम मै तारण वारण, करण प्रसुण अघ सुख करण ॥
धर भ्रम चाळण धरम धुरंधर, कमळ पांण मुख चख कमळ ।
नायक अकह जांनुकी नायक, अचळ तार वध जुध अचळ ॥

---

२५८ धंका—इच्छा। सांकड़ा—सांकुरा।

२५९. जीं—जिस। झमक—यमकानुप्रास। बीजौ—दूसरा।

२६ रैणायर—समुद्र। मथण—मंथन। रैणा—पृथ्वी। यर—वन। भर—बोझ। धर—पृथ्वी। टाळण—दूर करने वाला। समर—युद्ध। सना—कुसम। वरदाता—वरदान देने वाला। जानकीवर—सीतापति श्रीरामचन्द्र भगवान। सारंग—धनुष। बांण—तीर। सारंग—बादल मेघ। धरणसुता—सीता। धव—पति। खग—तलवार। वारण—मिटाने वाला। जम—यमराज। भै—भय। तारण—तारने वाला। वारण—हाथी। पांण—हाथ। चख चक्षु, नेत्र। अचळ—पर्वत। वध—अवधि समुद्र। अचळ—दृढ़ अटल।

घन भ्रन विलस जनम मांनव घन, म कर ईरखा तन मकर ।
सर पर कियौ चहै व्है जग सिर, धर निज मन रघुवर सघर ॥२६०

अथ गीत तृतीय संणार लछण

दूहो

धुर अठार सोळह सरव, सावझड़ौ अघ सोय ।
अलंकार विध चतुर तुक, सख सेलारह सोय ॥ २६१

अरथ

अेक सेणार गीत रौ पैंमी कह्यौ अर दूजारौ यौ लछण छै। पैंली तुक मात्रा अठारै अौर सारी तुकां मात्रा सोळ सोळै होय। गुरु लघु तुकंतरौ नेम नहीं पण गुरु तुकंत बोहोत होय। चोथी तुकमें कह्यौ सब्दारथ फेर कहणौ विध अलंकार होय औं गीतने तृतीय संणार गीत कहीजै।

अथ गीत संणार उदाहरण

गीत

चित करणी म्रखा विसी नह चाहै, आप विरदचा पखा उमाहै ।
पतित खीण कुळहीण अपारै, तारै रे सीतावर तारै ॥
कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग अघ आगर वाढै ।
नातौ दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळै ॥
अजामेळ सा घोर अघम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी ।
असरण दीन अनाथ अथाहै, साहै रे माधौ कर साहै ॥

२१ भ्रन-अन्य। म-नहीं। ईरखा-ईर्ष्या।

२६१ अघ-आधा भग। सोय-वह उस। सख-कह। सारी-सब। बोहोत-बहुत। औं-इस। तृतीय-तृतीय।

२६२ म्रखा (मृषा)-असत्य व्यर्थ। खीण-क्षीण। अपारै-अपार। सीतावर-श्रीरामचंद्र। कळिया-डूबा हुआ मग्न। जन-भक्त। काढै-निकालते हैं। अघ-पाप। आगर-समूह। वाढै-काटते हैं। नातौ-संबंध रिश्ता। निहाळै-देखते हैं। पाळै-पालन-पोषण करते हैं। अघम्मी-अधर्मी। निकम्मी-बेकार नीच। साहै-उद्धार करते हैं। माधौ-माधव विष्णु।

गाफिल आळ जंजाळ न गावै, मुज सांमळियौ सरम मळावै।
'किसन' कहै जमहूंत न कंपै, जंपै रे मन राघव जंपै॥ २६२

अथ गीत म्राटकौ लछण

दूहा

धुर म्रठार सोळह दुती, ती सोळह मिळतेह।
बेद म्रग्यार तुकंत म्रळ, म्रख गुरु लघु म्रब्बेह॥ २६३
मिळै तीन तुक म्रादरी, त्रिण तुक म्रंत मिळंत।
मिळै चवथी आठमी, किय म्राटकौ कहंत॥ २६४

म्ररथ

म्राटकरै पै'ली तुक मात्रा म्रठारै। दूजी तुक मात्रा सोळै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा म्रग्यारै। गुरु लघु तुकंत होय। पांचमी तुक मात्रा सोळै। छठी तुक मात्रा सोळै। सातमी तुक मात्रा सोळै होय। म्राठमी तुक मात्रा म्रग्यारै होय। गुरु लघु तुकंत होय। पछै सारा दूहा पै'ली तुक सोळ। दूजी तुक मात्रा सोळै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा म्रग्यारै। पांचमी तुक मात्रा सोळै। छठी तुक मात्रा सोळ। सातमी तुक मात्रा सोळै। म्राठमी तुक मात्रा म्रग्यारै। पै'ली दूजी तीजी रा मोहरा मिळै। पांचमी छठी सातमी रा मोहरा मिळै। यण रीत होय सो गीत म्राटकौ कहावै।

अथ गीत म्राटकौ उदाहरण

गीत

भज रे मन रांम सियावर भूपत म्रंग घणाघण सोभ म्रनूप।
नीरज जात सुगाय निरूपित, कौटिक कांम सकांम॥

२६२ सांमळियौ—श्रीकृष्ण श्रीराम। मळावै—सौंप देना है। जमहूंत—यमराजसे। कंपै—डरना।

२६३ दुती—दूसरी। ती तीसरी। बेद—चौथी चतुर्थ। म्रग्यार—ग्यारह। म्रळ—फिर। म्रख—कह। म्रब्बेह—प्रथम।

२६४ त्रिण—तीन। चवथी—चौथी। किय—कवि। कहंत—कहते हैं। पछै—बादमें पश्चात। मोहरा—तुकबंदी।

२६५ सियावर—सीतापति श्रीरामचंद्र। घणाघण—बादल। सोभ—कांति दीप्ति। म्रनूप—म्रनूठा। नीरज—कमल। सुगाय—सुन्दर शरीर। कौटिक—करोड़।

पीत दूकूळ कटी लपटाणौ, वीर अभंग निखंग वंधाणौ ।
अंस अजेव धनू ठरमांणौ, रूप यसै नृप राम ॥
सोहत वांम दिसा निज सीता, बादळ बीज प्रभाव वनीता ।
पाय खळांहळ गंग पुनीता, की तालै अघ कोड़े ॥
लोभत कंज सरम्र लोयण, भाळ ससी नहचै नर-भोयण ।
आहव खंभ विजै जिम औयण, मांणस दोयण मोड़े ॥
जै रघुराज जपै जगजाहर, है उर मांझ निवास सदा हर ।
सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईस्वण जे अभिलाख ॥
माथ पगां सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै ।
पार गुणां करतार न पावै, सौ स्रु ति संम्रत साख ॥
मारुति जेण कियौ अजरामर, केकंध भूप सुकंठ दियौ कर ।
रीझ भभीखण लंक नरेसुर, की जन सारै काज ॥
ऊ करसी चित सोच असंभह, सास उसास संभार रसंभह ।
कीरत स्रीवर भाख 'किसनह', राख रिदे रघुराज ॥२६५

अथ गीत मनमोह लछण

दूहौ

कह दूहौ पहला सुकव, कड़खा ता पर कथ्थ ।
पंथ प्रगट कड़खौ दुहौ, सौ मनमोह समथ्थ ॥ २६६

---

२६५ पीत-पीला । दूकूळ-वस्त्र । लपटांणौ-आवेष्टित । निखंग-तर्कश । धनू-धनुष । सोहत-शोभा देती है । वांम-बायां । दिसा-तरफ, ओर । बीज-बिजली । वनीता-स्त्री । पाय-चरण । खळांहळ-जलप्रवाहकी ध्वनि । गंग-गंगा नदी । पुनीता-पवित्र । लोभत-लालायमान होते हैं । कंज-कमल । लोयण-लोचन नेत्र । भाळ-देख नहचै-निश्चय । नर भोयण-नर लाक । आहव-युद्ध । औयण-बरस । मांणस-मनुष्य । दोयण शत्रु । मांझ-मध्य । हर-महादेव । धनेस-कुबेर । दिनेस-सूर्य । सुर-देवता । ईस्वण-इच्छा करती । अभिलाख-अभिलाषा इच्छा । माथ मस्तक । पगां-चरणों । सुरनाथ-इन्द्र । गौरव-यश । सारद-सरस्वती । मारुति हनुमान । जेण जिस । अजरामर-वह जो न तो वृद्ध हो और न मरे, अमर । केकंध-किष्किंधा । सुकंठ-सुग्रीव । रीझ-दान । भभीखण-विभीषण । ऊ-वह । असंभह-भाजन । रसंभह-शोभ । भाख कह । रिदे-हृदय ।

२६६ ता-उस । कथ्थ-कह ।

अरथ

ऐंसो तौ अेक दूहो कहीजै। पछै दूहा ऊपर कड़खा सतरी च्यार तुकां कहीजे। यण तरै भक अेक दूहो वणै। असा च्यार दूहा होवै जिण गीतरौ नांम मनमोह कहीजै। दूहारी तुक प्रत मात्रा तेरै। ग्यारै तेरै ग्यारै कड़खारी तुक प्रत मात्रा सेंतीस होय। दूहा कड़खारो लछण यण ग्रंथमें प्रसिध छै सौ देख लीज्यौ।

अथ गीत मनमोह उदाहरण

गीत

तारै दासां त्रिकमाह, भय वारै जम भूप।
हूं बळिहारी स्रीहरी, रै थांने निज रूप॥
रूप थारौ हरि हरि भूप त्रयलोकरा।
मांझ अनूप त्रैभू न मावै॥
नाग नर देव भूपाय आछुट नथो।
गणी चळदाच तळ वेद गावै॥
दास तन भजन विन तौ सभी दासरथ।
धिरू मस कौड़ थाते न धावै॥
देवपत रूप वैराट थारौ दुगम।
अणु मन सेवगां सुगम आवै॥
आवै तूं उतावळौ, पावै दास पुकार।
वारण गिर ज्यूं धांमियौ, वारण तारण वार॥
धार वारण तिरण करण कारण विसन।
धरण सज तरण व्रद चीत घालै॥

२६७ त्रिकमाह (त्रिविक्रम)–विष्णुका एक नाम। वार–दूर करता है। मांझ–मध्य में। त्रैभू–तीन भवन त्रिभुवन। देवपत–विष्णु। वैराट–महान बड़ा। दुगम–दुर्गम। सुगम–सरलता से। उतावळौ–शीघ्रतासे। पावै–प्राप्त करता है। वारण–हाथी। वार–अवसर, समय। विसन–विष्णु। धरण–पृथ्वी रूपी।

मद लख वाह्‌ सुपरण तजे मागमें ।
चरण ऊभांहणै धरण चाले ॥
हरण नकण वहै सुदरसण हरोली ।
पाय तंता गरण छिद अपाळै ॥
खंड जळचार गिरधार आरत खटक ।
झटक करतार करतार झाले ॥
झाले भुजदंड झूसरी, मार झुंड यर मांण ।
भांज राम कोडंड भव, प्रचंड खित्रीवट पांण ॥
पाण खित्रीवट अघट मित्र जग पाळियौ ।
रिख त्रिया तिरी रिखदेव रंजे ॥
जांनकी ब्याह उछाह पण धनुख जिग ।
सुज नूपत अनग आरंभ मंजे ॥
लसै बळ भूप अन जनक मन दुमन लख ।
भुजां बळ दासरथ चाप भंजे ॥
बाण दसमाथ भ्रगुनाथ दे आद वोह ।
गाव रघुनाथ खळ साथ गंजे ॥
गंजे रिम केतां गरब, धार सरथ अव घेठ ।
दे कोड़ां दुजनग दरब, जीत परब जग-जेठ ॥

---

२१७ वाहृ–पति नाम वाहन । सुपरण–गरुड़ । मागमें–मार्गमें । ऊभांहणै–बिना वाहन या बिना पैरोंमें जूती पहने हुए । धरण–भूमि । हरण–मिटाने को । नकण–मगर घड़ियाल । सुदरसण–सुदर्शन चक्र । हरोली–अग्र भागी । झटक–शीघ्र । भांज–तोड़ कर । कोडंड–धनुष । भव–महादेव । खित्रीवट–क्षत्रियत्व । पांण–बाहु भुजा हाथ । अघट–अपार । मित्र–विश्वामित्र । जग–यज्ञ । पाळियौ–रक्षा की । रिख–ऋषि । त्रिया–स्त्री । रंजे–प्रसन्न हुए । ब्याह–विवाह । पण–भी परन्तु । धनुख–धनुष । जिग–यज्ञ मंजे–शोभा देते हैं । अनग–अन्य । दुमन–खिन्न उदासीन । लख–देख कर । दासरथ–श्रीरामचन्द्र भगवान । चाप–धनुष । बाण–बाणासुर राक्षस । दसमाथ–रावण । भ्रगुनाथ–परशुराम । धार–धारि । वोह–बहुत । खळ–असुर । साथ–समूह । गंजे–नाश किया मिटाया । रिम–शत्रु । केतां–कितनाक । गरब–गर्व । अव–फिर । घेठ–जबरदस्त । कोड़ां–करोड़ों । दुजनग–ब्राह्मण । दरब–धन द्रव्य । परब–उत्सव पर्व । जग-जेठ–ईश्वर श्रीरामचन्द्र भगवान ।

जेठरा भांण सम असह् परफांण जम ।
मांण दुजरांण असह्रांण मारे ॥
किता जुध जीत जग जीत नह्चळ कदम ।
सेवगां प्रीत कर काज सारे ॥
रोपियां वास यर जास कीधा सरव ।
धींग रविवंस भुज बिरद धारे ॥
रटै कवि 'किसन' मह्राज तन लाज रख ।
तेण रघुराज के संत तारे ॥ २६७

दूजा दूहारौ अरथ

बांणी धारी भारतरी जिम झटक क्रोध पर अळधर ग्राहनें झड़पी नें करतार कर ज्यास हाथ पकड़ने कर हाथीनें तारयो झटक सतावीसूं—इति अरथ ।

अथ गीत ललितमुकट लछण

दूहो

प्रथम दूहौ कर तास पर, वाख त्रिभंगी छंद ।
ललित मुकट जिम सीह्लख, कह् जस रांम कव्यंद ॥ २६८

अरथ

पैंली दूहो कहीजै । जठाउपरांत दूहा पर त्रिभंगी छंदरी तुक च्यार कहीजै । यथ तरै च्यार ही दूहा होय । सिंघावलोकण सरै तुक होय जिण गीतरो नाम ललितमुकट कहीजै । दूहारो नै त्रिभंगी छंदरो लछण पण प्रथमै प्रसिद्ध छै जिणसूं अठै दूहारो नै त्रिभंगीरो लछण न कह्यो छै ।

---

२६७ जेठरा—ज्येठ मासरा । भांण—सूर्य । सम—बराबर समान । असह्—उग्र । परफांण—फई जिम । जम—यमवत । मांण—गर्व । दुजरांण—परसुराम । असह्रांण—शत्रु, शत्रु राजा । जयजीत—विजयी । नह्चळ—निश्चल चरण । कदम—चरण । सेवगां—भक्तों । प्रीत—प्रीति प्रेम । काज—कार्य । सारे—सफल किये । यर—यश । कीधा—किये । सरव—पराजित । धींग—जबरदस्त समर्थ । तेण—उस । के—कई । तारे—उद्धार किये । बांणी—पुकार । भारतरी—दुर्पदी । झटक—क्रोध । झड़पी—मारा । सतावी—शीघ्र ।

२६८ तास—उस । वाख—कह । सीह्लख—सिंहावलोकन । कव्यंद (कवीन्द्र)—महाकवि । जठाउपरांत—तत्पश्चात । यथ इस । तरै—तरह प्रकार ।

अथ गीत मनिख मुकट उदाहरण

गीत

वडा भाग ज्यांरी विसू, लछवर चरणां लाग ।
पाव रांम गुण प्रीतसूं, आठ पहर अनुराग ॥
राघव अनुरागी भव वडभागी मति सुभ लागी पंथमही ।
हरि संत कहांही जम भय नांही स्यंध तिरांही सुभ वसही ॥
कहि सिव सनकादं ध्रू प्रहल्लांद अहपत आद जेण जपै ।
सुक नारद व्यासं जल कहि जासं थिर कर तासं वास थपै ॥
थपे दाम कर सथर, रघुवर किता अरोड़ ।
बिरद पीत 'सागर' बिये, मीततरणकुळ मौड़ ॥
मौड़ कुळमीता जुध अरि जीता, लख जस लीता अवन अखै ।
अत दास उधारे सरण-सधारे रांमण मारे सुमन सखै ॥
सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा भूपत निवाजा भ्रात भणै ।
सुरजास भभीखण कत दत कंचण सास्त्र पुरांणण वेद सुणै ॥
सुणे छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज ।
घन राघव मोटा धणी, भव जन तोटा भंज ॥

---

२९१ ज्यांरी–जिनकी । विसू–भूमि । लछवर–लक्ष्मीपति । पुध–पथ । अनुराग–प्रेम । अनुरागी–प्रेमी । भव–संसार, जन्म । वडभागी–बड़ा भाग्यशाली । मति–बुद्धि । जम–यमराज । स्यंध (सिंध)–समुद्र । ध्रू–भक्त ध्रुव । अहपत–शेषनाग । आद–आदि । जेण–जिसको । जास–जिसका । थिर–स्थिर, दृढ़ । तासं–उसको । वास–भक्त । थपै–स्थापित करता है । थपे–स्थापित किए । सथर (स्थिर)–अटल । किता–कितने । अरोड़–जबरदस्त । सागर–सूर्यवंशी एक राजाका नाम । बिये–दूसरा । मीततरणकुळ–सूर्यके वंशका । मौड़–श्रेष्ठ । कुळमीता–सूर्यवंश । अवन–पृथ्वी संसार । अखै–कहता है । अत–बहुत । सरण-सधारे–शरणमें आए हुएकी रक्षा की । सुमन–देवता । सखै–साक्षी देते हैं । कत–किया । दत–दान । कंचण–सुवर्ण शोभा । छकोटा–समूह पुंज । रिम–शत्रु । दोटा–नाश सुर–देवता । रंज–प्रसन्न कर । भव–संसार, जन्म । तोटा–कमी अभाव हानि । भंज–नाश ।

तूं भजण तोटा अनम अंगोटा जुध थर जोटा जै वाणै।
रिख गोतम नारी उपळ उधारी देह सुधारी देवांणै॥
पय मिथुला पथ्थं साम्फ समथ्थं हण धनु हथ्थं पह पांणै।
सिय परण सिधाये दुजपत आये गरव गमाये जग जांणै॥
जग जांणै मळ जगतपत, कुळ हांणै दसकंध।
सुख गिरवांण समपिया, आंणै सिया उकंध॥
आंणै सिय उकंध जीपण जंग रूप अभंग दासरथी।
आकाय अनंतं तारण संतं कीत सुमंतं वेद कथी॥
न भजै रघुनंदं दयासमंदं जे मतमंदं जांण जडा।
गुण राघव गाणै 'किसन' कहांणै विच प्रथमांणै भाग वडा॥२६९

अथ गीत मुक्ताग्रह लछण

दूहौ

कह प्रहास सांणोर किय, अंत विखम सम आव।
तुक सिंघाविलोकण तिम, मुक्ताग्रह मुरजाद॥ २७०

अरथ

प्रहास सांणोर कही तथा गरभित सांणोर कहौ जिण प्रहास सांणोररी

---

२६९ भजण—नाश करने वाला। अनम—नहीं नमने या झुकनेका भाव। अंगोटा—पंपुष्ठ। थर—समूह। जोटा—समूह। उपळ—पत्थर। उधारी—उद्धार किया। देवांणै—देवता। पय—चरण। पथ्थं—मार्ग। समथ्थं—समर्थ। हण—नाश कर। धनु—धनुष। हथ्थं—हाथ। पह—प्रभु। पांणै शक्तिसे अपने। परण—विवाह कर। सिधाये—प्रस्थान किया। दुजपत—परशुराम। गरव—गर्व। गमाये—नाश किया। जग—संसार। मळ—शक्ति। जगतपत—ईश्वर श्रीरामचन्द्र भगवान। हांणै—नाश किया। दसकंध—रावण। गिरवांण—देवताओंको। समपिया—दिया। उकंध—उठरस्कंध। जीपण—जीतनेको। जंग—युद्ध। दासरथी—श्रीरामचन्द्र भगवान। आकाय—शक्ति, बल। अनंत—अपार ईश्वर श्रीरामचंद्र। कीत—कीर्ति। रघुनंद—श्रीरामचन्द्र। दयासमंद—दयासागर। जे—जो। मतमंद—मतिमंद मूर्ख। विच—बीच। प्रथमांणै—पृथ्वीमें संसारमें।

२७ किय—कवि। मुरजाद—मर्यादा।

संत जण तरण चख क्रपा रुख साहरै ।
साह रे विरद भुजडंड सिघाळा ॥
वीस भुज भांजणा समर हयवाह रे ।
वाह रे रांम अवधेस वाळा ॥ २७१

अथ गीत पखाळौ लछण

दूहौ

छोटा वडा सांणोर रौ, नेम नहीं नहचेण ।
निरमंघे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळौ तेण ॥ २७२

अथ गीत पखाळौ उदाहरण

गीत

दसरथ नृप नंदण हर दुख वाळव, मिटण फंद जांमण मरण ।
कर आणंद वंद नित 'किसना', चंद रांम वाळा चरण ॥
दीनानाथ अभै पद दानख, मांनख अंतक समर भर ।
मांनख जनम सफळ कर मांगण, धांनखधर पद सीसधर ॥
सुरसर सुजळ नूमळ संजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दंद ।
साम्है कमळ पद रांम असोगी, मन अलियळ भोगी मकरंद ॥२७३

अथ द्वतीय चरण उपसत गीत सालूर लछण

दूहा

धुर ये गुरु चौवीस लघु, अंत सगण तुक अेक ।
सावझड़ी यम च्यार तुक, विध सालूर विवेक ॥ २७४

---

२७१ जण-भक्त । चख-नेत्र । साहरै-आपके । साह-धारण करता है । सिघाळा-वीर । वीस-भुज-रावण । भांजणा-संहार करने वाला । समर-युद्ध । हयवाह-प्रहार । वाह रे-धन्य है ।

२७२ नेम-नियम । नहचेण-निश्चय । निरमंघे-रचे बनावे । त्रिण-तीन । तवै-कहते हैं ।

२७३ नंदण-पुत्र । हर-मिटा । वाळव-भगाती । फंद-बंधन जाल । जांमण-जन्म । मरण-मृत्यु । मांनख-मनुष्य । मांगण-याचक । धांनखधर-धनुषधारी । सुरसर-गंगा नदी । नूमळ-निर्मल । अघ-पाप । ओघी-समूह । अलियळ-भौंरा । भोगी-भोग करने वाला रसास्वादन करने वाला । मकरंद-फूलोंका रस ।

२७४ यम-ऐसे । विध-प्रकार, तरह ।

यक तुक गुणतीसह अखिर, जांण वरण उपछंद ।
धरण ग्रतरा अंत विच, कहियौं अगर कविंद ॥ २७५

अरथ

मासूर गीत वरण उपछंद छै । तुक अेक प्रत गुणतीस अखिर होव । पैं'सो दोय गुरु होव । पछै चौवीस लघु होवै । पछै अेक सगण होव । यो ई गीतको सची छै । ऽऽ ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।ऽ अेक चरण छ दुजबर अेक मगण यो अेक तुक प्रमाण यू पनरै तकां होव । अेक दूहा प्रत तुक च्यारका मोहरा मिळै साधभड़ा छै । यो गीत बरण प्रतम बरण छंदामें सामूर छ" कह्यौ छ सो दस लीज्यो ।

अथ गीत मासूर उदाहरण

गीत

माया मत भिद सम हरण भव दुसतर ।
तरण मनव सुण सर समझौ ॥
सीतापत समर सुज अहनिस ।
सुतन लहण फळ सुमन सझौ ॥
लाखां छळ कपट झपट अणघट ।
लख ललच मुचत लत करण लजौ ॥
भूपाळ घनखधर म घर अडर जग ।
अवर करत तज सु हर भजौ ॥ २७६

ई प्रकार दुतीय मासूररा च्यार तो दूहा जांणणा

अथ गीत भाख माता छ" सद्दा

दूहो

ल धुरह तुक माळ नग, चवदह मत्त सत्राय ।
सावझड़ा तुक अंत लघु, भाख गीत यण भाय ॥ २७७

---

२७५ [illegible] । [illegible] । कविंद–कवि । [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible] ।

२७६ [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

२७७ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अरथ

पैंसी तुकसूं लगायने सोळै हो तुकां तांई तुक श्रेक प्रत मात्रा चवदै होय। श्रंत लघु होय। च्यार तुकांरा मोहरा मिळै सावभड़ो जिण गीतरो नांम भाख कहीजै। इति भाख नांम गीत निरूपण। भाख गीतरी दोय तुकांरा मोहरा मिळै सो अरधभाख कहीजै—यणने गजल पिण कहै छै।

अथ गीत भाख उदाहरण

गीत

सुंदर सोभत धणस्यांम, तड़िता पट-पीत छिब तांम।
वामे अंग सीता वांम, रूप अनंग कौटिग रांम॥
निज कटि सुघट तट तूनीर, सर धनु सुकर धार सधीर।
भंजण कौड़ संतां भार, रे मन गाव स्री रघुबीर॥
बिघ त्रिपुरार रिख पाय वंद, सरणसधार करुणसमंद।
कह गुण गाय 'किसन' कविंद, नाथ अनाथ दसरथनंद॥
कवसळ सुता राजकुमार, अवसी वखत सुजन अधार।
सुखबद कियौ तिण मत विसार, जीता जिके नर जमवार॥२७८

अथ गीत अरधभाख लछण

दूहौ

भाख गीत तुक कवि मयौ, मोहरा दोय मिळ त।
अरध भाख जिणनं असै, कोइक गजल कहंत॥ २७९

२७७ तांई—तक पर्यन्त। तुक प्रत प्रत्येक। मोहरा—तुकबंदी। निरूपण—निर्णय। पिण—भी।
२७८ तड़िता—बिजली। पट-पीत—पीताम्बर। छिब—शोभा कांति। वामे—बायीं। वाम—स्त्री। अनंग—कामदेव। कौटिग—करोड़। कटि—कमर। सुघट—सुन्दर। तूनीर—तर्कस। सर—बाण तीर। धनु—धनुष। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। भंजण—मिटाने वाला। धीर—धमंड कर। बिध (विधि)—ब्रह्मा। त्रिपुरार—त्रिपुरारि, शिव। रिख—ऋषि। पाय—चरण। वंद—वंदन करते हैं। सरणसधार—शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला। करुणसमंद—करुणासागर। गाय—कथा वर्णन। कविंद—कवींद्र कवि। कवसळ—कौशल्या। अवसी—? सुजन (स्वजन)—भक्त। अधार—सहारा आश्रय। सुखबद—यश। तिण—उस जिस। मत—बुद्धि। जमवार—जीवन जिसपर यमराजका प्रहार या वार।

अथ गीत अरथभास उदाहरण

गीत

पर हर अखर धंध अपार, भज नित जांनुकी भरतार ।
करमत कलपना मन कोय, हरि जिण जिये मुक्त न होय ॥२८०

अरथ

अखरपरपिंगळ मध्ये छंद उधोर जैरी च्यार तुकांरो अेक दूहो सोही गीत भाख । इति अरथ ।

अथ गीत जाळीबंध वेलियो सांणोर लछण

दूहा

आद अठारै पनर फिर, सोळ पनर क्रम जेण ।
अंत लघु सांणोर कहि, तवै वेलियौ तेण ॥ २८१
नव कोठा मझ अेक तुक, लखजै चित्त लगाय ।
उरध अधचिचली आखर, वौवड़ वंच दिखाय ॥ २८२
लखियां दीसै नव अखिर, ऊचरियां अगीयार ।
जाळीबंध जिण गीतरौ, नांम सुकव निरधार ॥ २८३

अरथ

जाळीबंध गीत वेलियो सांणोर होवै । जिणरै पैं'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळ । चौथी तुक वही पक्षा पाछली तुक मात्रा पनरै होय । पाछला तीन ही दूजा पैं'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळै अर चौथी तुक मात्रा पनरै होय । इण क्रमसूं होवै । अंत लघु होवै सो वेलियो सांणोर जाणो जाळीबंध कहै । जाळीबंधरै

२८० अक्षर(अच्छर)–वर्ण । धंध–धंधा कार्य । कलपना–विचार । जिण–जिसने । मुक्त–मुक्ति, मोक्ष ।

२८१ अठारै–अठारह । पनर–पन्द्रह । सोळ–सोलह । क्रम–फिर । तवै–कहते हैं । तेण–उसको ।

२८२ कोठा–कोष्ठक । मझ–मध्य । उरध ऊपर । अधचिचली–मध्यम । आखर । वौवड़–दूसरा दाएं । वंच–पढ़कर दिखा ।

२८३ ऊचरियां–उच्चारण करने पर । अगीयार–ग्यारह । निरधार–निश्चय । ई ... सुन ...

सुक एक प्रत कोठा मन होवै । मिळता आखर कोठामें न दोवै । सूधी ओळ्‌यां आखर लखेतौ इग्यारै होवै । नव कोठारी मांहे ऊपरलो नै हेठलो विचाळा दोय कोठाय दोई आखर पाय वेळां लखै सौ गीत आळीबंध सांणोर चित्रकाव्य कहीजै ।

अथ आळीबंध गीत वेलियो सांणोर उदाहरण

गीत

साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकांम ।
साच तकौ कज साधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम ॥
दासरथी सुखदाइ सुंदर, नमै पगां सुर नर आनूप ।
नरकां मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप ॥
पती-सीत भूतप परकासी, वासी सिव उर वास विसेस ।
आपी तसां लंक आसत अत, नरा सत्र हण नमौ नरेस ॥
कळ नावै नेड़ौ कह 'किसन, आव थरु सुख आसत आय ।
दख नकि जैरै वन अदना, नाथ थयां समना रघुनाथ ॥२८४

२८३ सूधी–सीधी । ओळ्‌यां–पंक्तियाँ । लेखैं–नियमसे हिसाबसे । इग्यारै–ग्यारह । ऊपरलो–उपर्युक्त ऊपरका । हेठलो–नीचेका । विचाळा–मध्यका । वेळै–पड़े बाद ।

२८४ साखी–साक्षी । भाण–सूर्य । नसापत–चंद्रमा । कीध–किया । तकौ–वह । कज–काम । सारत–सफल करता है । राच–लीन हो । महीप–राजा । दासरथी–श्रीरामचंद्र भगवान । सुखदाई–सुख देने वाला । सुर–देवता । नकौ–कोई नहीं । भाख–कह । पयोध–समुद्र । प्रभाकर–सूर्य चन्द्रमा । पत-सीत (सीतापति) श्रीरामचन्द्र भगवान । वासी–निवास करने वाला । सिव (शिव)–महादेव । आपी–दी प्रदानकी । तसां–उसको । लंक–लंका । आसत–शक्ति, बल । अत–अति । सत्र–शत्रु । हण–नाश करने वाला । कळ–पाप कलयुग । नेड़ौ–निकट । आव–आयु-जीवन । दख–दुख । जैरै–नाश करे । वन–बिन । अदना–बुरा खराब । थयां–होने पर । समना–अनुकूल प्रसन्न ।

अरथ

वेलिया सांणोर गीतरा दूहा दूहा प्रत च्यार च्यार गाथा होय। च्यार ही गीतरा दूहांरै च्यार च्यार गाथा होय। च्यूक गाथारी चौथी तुकरा अखिरांरो आभास पोतरी पै'ली तुकमें होय। गाथो ने गीत सांमिळ छै जिणसूं गीतरो नांम गहाणो छै। मात्रा वरणक छन्द छै। गहांणो तथा गाथारो लछण पै'ली ग्रंथमें कह्यौ छै नै वेलिया सांणोर गीतरो पण लछण कह्यो छै जिणसूं अठै लछण न कह्यो छै।

अथ गीत गहांणो उदाहरण

गीत

नर नह ले हरि नांम, जड़िया जंजीर कोड़ अघ जीहा।
नर ले राघव नाम, ज्यां सिर रांम अनुग्रह जांणै॥
सिर ज्यांरै जाण अनुग्रह स्रीवर, चरणकमळ चींतवण सचेत।
पातक दहणतणौ गह पैंडो, हरिहर कहणतणौ मन हेत॥
सह पढियौ गुण सार न, नह पढियौ हेक नांम रघुनायक।
पढ पसु नांम प्रकार, पेखौ जे मांनवी पायौ॥
पढ खट भाख संसक्रत पिंगळ, सुकवी वणौ समस्त गुण सांम।
प्रांणी रांम नांम विण पढियां, निज पढ पसु धरायौ नांम॥
सुरसरी राघव सुजस, मंजण जिण कीध सुघ चित मांनव।
तीरथ अड़सठ तेण, चोलै सू त लाभ ग्रह धासत॥
घोलै वेद लाभ ग्रह धासत, तीरथ अड़सठ सुफळ तयार।
निज मन हुलस सांपड़ै जे नर, जस रघुबर सुरसरी मझार॥
वदन सुरस ना वांणी, मिर लोयण उदर हाथ पग सहता।
जस तिलक लख पै जळ, जुइ फिर राम पवितर जेण॥

२८ जड़िया—जटित किये। अघ—पाप। जीहा—जीभ। अनुग्रह—कृपा दया। स्रीवर—(श्रीवर) विष्णु श्रीरामचन्द्र। पातक—पाप। दहणतणौ—जलाने वालेका। पैंडो—पथ। पढौ—मार्ग पीछा। कहणतणौ—कहनेका। पेखौ—देखो, दखिए। सुरसरी—गंगा नदी। मंजण—स्नान। हुलस—प्रसन्न होकर, हर्षपूर्वक। सांपड़ै—स्नान करते हैं। वे—वो मगर, मरि। मझार—मध्य। लोयण—नेत्र। सहता—सहित। पै—चरण। पवितर—पवित्र। जण—जिस।

दीध प्रदछण हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार।
करै तिलक राघव जस किता, जीता 'किसन' जिके जमवार ॥२८८

अथ गीत घणकंठ सुपखरो लछण

दूहा

पहल अठारह वी चवद, साळ चवद लघु अंत।
आद अंत गिणती अखर, गुण सुपंखरो गिणंत ॥ २८९
कंठ सुपंखग वीच कह, आठ प्रथम नी सात।
आठ सात क्रम यण अधिक, नावै कंठ निघात ॥ २९०
आद कंठ चव अक्खिरां, अंत दोय ठहराव।
यां सुबंध घट अक्खियां, विगड़ै कंठ वणाव ॥ २९१

अरथ

सुपखरो गीत वरण छंद छै जिकै तुक प्रत मात्रिक गिणती। पैली तुक वरण अठारै। दूजी तुक वरण चवदै। तीजी तुक वरण सोळै। चोथी तुक वरण चवद होवै। पाछला दूहारा वरण सोळै चवद सोळै चवद ई क्रमसूं होय जीसूं सुपखरा गीतम कंठरो हद कहै छ। पैली तुकमें कंठ आठ होय। दूजी तुकम कंठ सात होय। तीजी तुकम कंठ आठ होय। चोथी तुकम कंठ सात होय। अठा आगे कंठ न होव। ग्यार ही आगलांरो कंठ तो ठरतो होय। अठा उपरांत आगे कंठ निपळ होय। दोय अखिरसूं कंठ घटतो न होय। दोय अखिरसूं कमती हद छै सो स्रमाई छ। पछै पाछला दूहा मे कंठ घाट-बाध छै। घणा कंठांमें कारण वाग्ज मारपक पाय नहीं। थोड़ा कंठांमें कारण वाग्ज मारपक पावै। घणा कंठांसूं गुण आछी बणै नहीं। समभाव कंठसूं गुण रूप पावै।

२८८. दीध-दी। प्रदछण-प्रदक्षिणा। दरस-दर्शन। निहार-देख कर। किता-किये।
जमवार-जीवन भर जमाना या संसार।

२८९. बी-दूसरी। चवद-चौदह। गाठ-आठ। गुण-काव्य कविता छंद। निखत-
दिखत है अक्षर है।

अथ गीत धणकंठ सुपखरौ उदाहरण

गीत

कार कार खार वार धार मुरार संघार कार।
प्यार राख मार छार कार वार पार॥
डार गार लार लार प्यार हार भार डार।
बार नार तार सार धार बार बार॥
सुराळ नराळ व्याळ भाळ पाळ ढाळ सक्र।
सिधाळ भकाळ काळ टाळ वेद साख॥
भ्रंभाळ पाळ बंधमां विसार रे जंजाळ भ्राळ।
दयाळ विसाळ भाळ विरदाळ दास॥
भांम गांम धांम ठांम ठहांम नर्कं भ्रांम।
तमाम निहार सांम ले भ्ररांम तांम॥
वांम वांम विसार निकांम भौड़ ह्वै उदांम।
नरां जांम जांममें उचार रांम नांम॥
पनंगेस धरेस सुरेस तेस सभै पेस।
भूतेस विसेस चिंतवेस घ्यांन मेस॥
जीतेस भ्ररेस बंध सेस क्रीत जपौ जेस।
'किसनेस' कवेस नरेस कौसळेस॥ २९२

---

२९२ कार–सीमा मर्यादा। खार वार धार–समुद्र। मुरार–राक्षस। संघार–संहार। कार–करने वाला। मार छार कार–महादेव शिव। पार–समुद्र। लार लार–पीछे-पीछे। नार नार–गणिका। बार नार तार–वेश्याको तारने वाला ईश्वर। सुराळ–देवता। व्याळ–सर्प। सक्र–इन्द्र। सिधाळ–श्रेष्ठ। काळ–मौत। साख–साखी। भ्रंभाळ भाळ–संसारका प्रपंच। दयाळ–दया करने वाला। विरदाळ–विरदधारी। दास–दास। भांम–स्त्री। तमाम–सब। विसार–भूल जा। निकांम–व्यर्थ। भौड़–दय भ्रम। जांम जांममें–याम याममें। पनंगेस–शेषनाग। धरेस–सुमेरु पर्वत राजा। सुरेस–इन्द्र। भूतेस–महादेव शिव। चिंतवेस–चिंतन करते हैं। जीतेस–जीतने वाला। भ्ररेस धनु। सेस–सामर्थ्य। कवेस–कवीश महाकवि। नरेस–राजा। कौसळेस–श्रीरामचन्द्र भगवान।

अरथ

कठ सांकड़ा छै। गीतरा पहला दूहारा जो तावे पहला दूहारौ अरथ लिखां छां। तुक पैली अरथ स्रीरांमचंद्र किसाक छै। अरथ अन्वयसूं लागसी। वार वार कैतां—वार = समुद्र जींका पार पार कतां मरजादाकौ करणहार दरियावके पाज नहीं मरजादकी पाज कीधी इसौ स्रीरांमचंद्र फेर सुरार राक्षस ज्यांकौ सिंहारकार कैतां सिंघारकरता इसौ रांम ॥१

तुक दूजी अरथ—श्रीं रांमचंद्रजीसूं मार धार कार कैतां कांमदेवका बाळण हार सिवकी प्यार छै, हर फेर रांम नांम तथा जस महातमका सिंध समुद्र छै, इसौ रांम जींनै हे प्रांणी तू भज।

तुक तीजीरौ अरथ—हे प्रांणी तूं भार कैतां भारियां स जींकौ वार समूह मांनवौ छै जींका लार लार कतां पाछै पाछै चार कैतां चालणौ भाटी का ममतारी भार भार फिरवासूं हार कैतां हठ मती। फिरै भार वार कैतां संसारकी कांमनाकौ भार बोझ नौ वार कैनां पटक दे भळभौ भेस।

तुक चौथीरौ अरथ—हे प्रांणी तू तरबौ चाहै छै तौ वार नार तार कैतां वेस्या गणकाकौ तारणहार स्री रांमचंद्र सार छै, सत्य छै, जींनै तू हरदामें वार वार धारण कर। जीभसूं तौ रांम नांम लै हर ध्यांन कर सौ गणका भीच भातनै प्रजांमसूं सुवौ पढ़ावतां तारी इसौ स्री रांमचंद्र दयाळ छै तौ तौनै सुध मन भजतां तारै ही तारै। ईमें संदेह नहीं। यौ पैला दूहारौ अरथ छै। कठण जिणसूं लख्यौ छै। बाकीरा तीन ही दूहारौ अरथ सुगम छै जींसूं नहीं लख्यौ छै। यूं कोई कवि चणकठ गीत बणावौ सौ देख विचार लीज्यौ। म्हैंतौ म्हारी बुध माफक भैसौ बताय दीधौ छै। कोई बात सुध असुध होवै तौ बडा कवि तगसीर खिमा कीज्यौ। म्हैंतौ स्री रांम-जस कीधौ छै सौ सीतारांमजीमै अरप छै।

अथ गीत सुपंखरौ उरसा कंठा तावै तथा सांकळिया कठा तावे अरथरा कारण कारज सहेत स्री हणूंमानजीरौ किसना कृत।

---

२९२ कंठ—अनुप्रास। सांकड़ा—पास-पास संकुचित। किसाक—कैसा। कीधी—की। सुरार (सुरारि)—राक्षस। राक्षस—राक्षस। हर—और। पाछै पाछै—पीछे पीछे। सुवौ—तोता। सुमम—अरज।

गीत

महीं राखण गाथरा आखियातरा गातरा मेर।
देण सत्रां दाथरा हाथरा घाव दाव॥
साथरै माथरा भंज क्रोधवांन समाथरा।
स्रीनाथरा जोध झौका वातरा-सुजाव॥
घांनमाळी पछाड़ा हुकमां चाड़ा सीस धणी।
रोसंगी ऊपाड़ा द्रोण भुजां राड़ दूत॥
वैरियां ऊवेड़ जाड़ा धंखी माड़ बांबराड़ा।
दुबाड़ अखाड़ाजीत धाड़ा रांमदूत॥
तैही लंक सांगा सौ जोजनां गिणै तूछरेल।
मूछरेल अढ्ढांगा अयारां मेल मीच॥
डरावणो रूपरा दयंतां भांगा वूछरेल।
भांमणै रांमरा लांगा पूंछरेल भीच॥
संतां अमैदांनकी उछाह रे अरोड़ा सदा।
थिजै राड़ा आंनकी जाहरे वार वार॥

---

२११ गाथरा–शरीरका। आखियातरा–अद्भुत विचित्र अमर। गातरा–शरीरका। मेर–सुमेरु पर्वत। देण–देनेको। सत्रां–शत्रुओं। दाथरा–संहारका। माथरा–मस्तकका। भंज–नाश। समाथरा–समर्थके। स्रीनाथरा–विष्णुका। जोध (योधा)–वीर। झौका–धन्य-धन्य। वातरा-सुजाव–वायु-पुत्र हनुमान। घांनमाळी–एक असुरका नाम। पछाड़ा–मारने वाला गिराने वाला। चाड़ा–चढ़ाने वाला। सीस–सिर। धणी–मालिक। रोसंगी–क्रोध वाला रोष वाला। ऊपाड़ा–उठाने वाला। द्रोण–द्रोणाचल पर्वत। ऊवेड़–उन्मूलन कर उखाड़ कर। जाड़ा–जबड़ा। धंखी–क्रोध वाला उमंग वाला द्वेष वाला। बांबराड़ा–जबरदस्त। दुबाड़–वीर, योद्धा। अखाड़ाजीत–युद्ध विजयी। झौका–धन्य-धन्य शाबास। जोजनां–योजनों। तूछरेल–वीर। मूछरेल–मूछों वाला वीर। अढ्ढांगा–महान विकट। अयारां–शत्रुओं। मीच–मृत्यु, मौत। डरावणो–भयप्रद भयावह। दयंतां–दैत्यों। भांगा–नाश करने वाला वीर। वूछरेल–वीर, योद्धा भांमणै–न्योछावर बलैया। लांगा–हनुमान। पूंछरेल–पूछवाले। भीच–योद्धा। उछाह–उमंग जोश। अरोड़ा–जबरदस्त। थिजै–विजय। राड़ा–लड़ाने वाला झगड़ाने वाला। आंनकी–शपथकी। जाहरे–प्रसिद्ध।

मोड़ा जातधानंकी ग्रीवरा हणू ठमाहरे।
जांनकी पावराखोड़ा वाहरे जोधार ॥ २६३

ग्रथ गीत दूजो स्री हणूमांनजीरो
गीत जयवत सावझड़ो

ओपत तन तेल सिंदूरां आगा, आच गदाधर रूप अठंगा।
भारथ थोक सबळ खळ भांगा, लागै झौका महाबळ लांगा ॥
खळ दसखंध उपाड़ण खूटा, कीरत भुज जाहर चिहुं कूंटा।
लखण काज आंगण गिर लूंठा, टेक निवाह वाह किप-टूटा ॥
दायक खबर रांम सिय दौड़ा, तोयक काळ नेस सिर तोड़ा।
राड़ फतै पायक आरोड़ा खायक असुर धाड़ भड़ खोड़ा ॥
जै नांमी गढ़ लंक जयंता, सिव एका दसमा निज संता।
कीधौ अमर जांनुकी कंता, हुकमी दास जांण हणमंता ॥२६४

दूहो

किया निरूपण 'किसन' कवि, गुण हर विध विध गीत।
जहता वाधव कविजनां, जस राघव जग जीत ॥२६५

२६३ मोड़ा—मोड़ने वाला पीछे हटाने वाला। जातधानकी (यातुधान)—राक्षस। हणू—हनुमान। जांनकी—सीता। पावराखोड़ा—लंगड़ा। वाहरे—धन्य-धन्य। जोधार—योद्धा वीर।

२६४ आगा—पहनावा। आच—हाथ। गदा—एक प्रकारका शस्त्र विशेष। अठंगा—मजबूत। भारथ—युद्ध। थोक—समूह। भांगा—तोड़ने वाला नाश करने वाला। झौका—धन्यवाद। लांगा—हनुमान। खळ—राक्षस। दसखंध—रावण। उपाड़ण—उखाड़ने वाला। खूटा—थक। चिहुं कूंटा—चारों दिशाओं। आंगण—लाने वाला। गिर—द्रोणाचल पर्वत। लूंठा—जबरदस्त। टेक—प्रण मान। निवाह—निभाने वाला। वाह—शाबाश। किप-टूटा—हनुमान। दायक—देने वाला। दौड़ा—दौड़ने वाला सेवक। तोयक—दूर। नेस—नर। सिर तोड़ा—सिरको तोड़ने वाला। राड़—युद्ध। पायक—प्राप्त करने वाला। आरोड़ा—जबरदस्त। खायक—नाश करने वाला ध्वंस करने वाला। धाड़—शाबाश धन्य। भड़—योद्धा। खोड़ा—हनुमान। जयंता—जीतने वाला। कीधौ—किया। जांनुकी—सीता। कंता—पति। हुकमी—हुक्म मानने वाला। हणमंता—हनुमान।

२६५ निरूपण—वर्णन। गुण—यश। हर—हरि विष्णु श्रीरामचंद्र। विध विध—तरह तरहके। जहता—प्रमाण। वाधव—बढ़ानेको।

अथ गीत रूपग तथा दुतीय गजगत लछण

गीत

ध्यार दूहांके ध्यार ही, धुर आंकणी दवाळ।
ग्यार मत धुर नव दुती, ग्यारह नव क्रम माळ॥ २९६

अठाईस मत अंत गुरु, आंन दवाळा होय।
रूपग जस रघुनाथ रट, समझौ गज गत सोय॥ २९७

बीस छ मता अंत लघु, कजै भाखड़ी छंद।
आठ बीस मत अंत गुरु, गजगत औ प्रबंध॥ २९८

अरथ

आंकणीरो दवाळौ भाखड़ीरै तौ दवाळा सारा प्रत अेक ही होय। हर गज गतरै दवाळा दवाळा प्रत आंकणीरो दवाळौ नवीन नवीन होय। अेक तौ गज गत नै भाखड़ीरो यौ भेद होय। दूजौ भेद भाखड़ीरै दूजा भाखड़ीरा दवाळा मात्रा छाईस मत लघु होय। गजगतरै दूजा दवाळांरी तुक अेक प्रत मात्रा अठाईस नै अंत गुरु होय। अतरो भेद होय। दूजा गजगत भाखड़ी अेक तरैरा रूपग छै। आंकणीरी मात्रा नव नव होय। सवाय रैकार तथा जीकार मत होय। तुक पैंली तीजीरै प्रमांण पैंली तुक मात्रा इग्यारै, दूजी तुक मात्रा नव तीजी तुक मात्रा इग्यारै चौथी तुक मात्रा नव अंत गुरु होय। दूजा दवाळा प्रत तुक मात्रा अठावीस सारी तुकां होय। अंत गुरु होय। ई प्रकार रूपग गज गत कहीजै। आगै गजगत गीत न कह्यौ छै, मूल गया बीसूं पछै कह्यौ छै। गीत गजगतरी आंकणी तौ भाखड़ीरीज होवै। भाखड़ीरै तुक अेक प्रत मात्रा छवीस होय। अंत लघु होय। गजगतरै तुक अेक प्रत मात्रा अठावीस होय अंत गुरु होय तथा भाखड़ीरी तुकरै अंत अेक स ना य गुरु अक्षर करजै सोई गीत गजगत रूपग छै।

---

२९६ धुर-प्रथम। दवाळा-गीत छंदके चार चरणोंका समूह। दुती-दूसरी।

२९७ आन-दूसरा। सोय-वह।

२९८ औ-यह। रैकार-रे तू शब्द कह कर पुकारनेका शब्द। लघु रूपसे पुकारने का शब्द, संबोधन शब्द। जीकार-जी सम्मानपूर्वक पुकारनेका शब्द।

खळहळां खत चळवळां खापर वीसहथ भर विळकुळी ।
महू वळां चव रघुनाथ अमलां मंड सुसबद मंडळी ।
संत सधारिया रे जुध रिम जारिया भुज ब्रद भारिया रे ,
अवन उधारिया ॥
ऊचरै अवनी विरद अहनिस करण सिध सुरकाजरा ।
दस माथ दुसह सिंघार दाख्या सूर कुळ सिरताजरा ।
कर तेण गजगत किसन कवि कह लखां जन रख लाजरा ।
साधार संत अपार स्रीवर रांम सुसबद राजरा ॥२६६

---

२६६ खळहळो–रक्त, खून। खापर–खप्पर। वीसहथ–देवी दुर्गा रणचंडी। विळकुळी–मस्त हुई,प्रसन्न हुई। सुसबद–यश कीर्ति। सधारिया–रक्षा की। रिम–शत्रु। जारिया–संहार किया। अवन–पृथ्वी धरती। अहनिस–रात-दिन। रघुनाथ–राघव। दुसह–भयंकर जबरदस्त। सिंघार–संहार कर। सूर कळ–सूर्य वंश। सिरताजरा–श्रेष्ठता शिरोमणिता। राजरा–श्रीमानके धारके।

अथ निसांणी छंद वरणण
अथ निसांणी लछण

दूहो

छै नीसाणी छंदरै, मत तेवीस मुकांम ।
मांझ अेक तुक त्रदस दस, वदै दोय विसरांम ॥ १

अरथ

निसांणी छन्दरै अेक तुक प्रत मात्रा तेवीस आवै । इण मत री निसांणी मात्रा छंद छै नै अेक तुकरा विभाग तथा विस्रांम दोय छै । अेक पहलो विस्रांम तौ मात्रा तेरै ऊपर होवै । दूजो विस्रांम मात्रा दस पर होवै औ लछण छै । पैंलो मात्रा असम चरण छंद कहया जठ छंद निसणिका कह्यो सोई निसांणी छंद जांणणो । जिके च्यार प्रकाररा छ सो फेर कहां छां ।

दूहा

रे नीसांणी छंदरा, पढ़िया च्यार प्रकार ।
तिण लछण निरणै तिको, वरणै सुकव विचार ॥ २
अेकण दु लघु तुकंत अख, बीजी गुरु लघु अंत ।
अंत तीसरी लघु गुरु, चौथी यि गुरु तुकंत ॥ ३

अरथ

निसांणी छंद एक तुक प्रत मात्रा तवीस होवे । जिणरा च्यार प्रकार । अेकरै तौ तुकंत दोय लघु अख्खर होवै । दूजीरै तुकंत आद गुरु अंत लघु होवै । तीजीरै तुकंत आद लघु अंत गुरु होवै । चोथीरै तुकंत दोय गुरु करण अख होवै । औ च्यार प्रकाररो निसांणी छै ।

अथ प्रथम लघु तुकन्त गरभितनांमा निसांणी जांगड़ी उदाहरण
निसांणी

गह्ह भर राघव तारिया, दरियाव विच गैंवर ।
किया स्राघ जटायका, निज हत्थ नरेसर ॥

१ मुकांम-विश्राम । मांझ-मध्य । त्रदस-तेरह । वदै-कहते हैं । विसरांम-विश्राम । दो-पद । जठै-जहां पर ।

२ तिण उस ।

३ अख-कह । करण-गण-२। दीर्घ मात्राका नाम ऽ ।

४ गह-गर्व । तारिया-उद्धार किये । दरियाव-समुद्र सागर । विच-बीच मध्य । गैंवर-हाथी । स्राघ-श्राद्ध । जटायका-जटायुका । हत्थ-हाथ । नरेसर-नरेश्वर राजा ।

मन रुच खाया बेर फळ, जिण सबरी पांमर ।
ते कदमूं रज आभड़े, अवरत गौतम तर ॥
तोते कीन्ह सहाय हत, यत्र गणिका उद्धर ।
परचौ नांम तिराइया, पांणी सिर पाथर ॥
जेण उधारे अवधपुर, जग सारे जाहर ।
नांम ग्रह्म सिव आद ले, प्रभणै अहि सुर नर ॥
।
वे जिन्हां जीता जमार, गाया सीतावर ॥ ४

अथ निसांणी दुमिळा नाम जागड़ी (आद गुरु अंत लघु तुकंत) उदाहरण
निसांणी

विप आनूप सरूप स्यांम, घट बरसण वार ।
कसियौ कट तट कोमळा, चपळा पट चार ॥
भुज-आजांन विसाळ भाळ, कट संघ प्रकार ।
नयण भ्रहू नासिका कमळ, धनु सुक निरधार ॥
परम जोत दसरथ प्रथीप, ते अह्र अवतार ।
जंग अडाळ अचाळ नाट, दससिर खळ जार ॥
सोवस लंक भभीखणह, दी सरणसधार ।
श्री जगनायक रांमचंद, निरधार अधार ॥ ५

४ सबरी–भिल्लनी । पांमर–नीच । ते–तेरी । कदमूं–चरण । रज–धूलि । आभड़े–स्पर्श की । अवरत–मौरव । तोते–तोता मुख । कीन्ह–की । धरा–पृथ्वी । परची–चमत्कार । सिर–ऊपर । पाथर–पत्थर । अध–सवार । सारे–सब । जाहर–प्रसिद्ध । प्रभणै–वर्णन करते हैं स्मरण करते हैं । अहि–नाग । जमार–जन्म जीवन । गाया–वर्णन किया । सीतावर–श्रीरामचंद्र ।

५. विप–शरीर । आनूप–अनुपम । कट–कटि कमर । कोमळा–कोमल । चपळा–बिजली । पट चार–वस्त्र । भुज-आजांन–आजानबाहु । भाळ–ललाट । कट–कमर, कटि । संघ–सिंह । नासिका–नाक । सुक–तोता । जोत–प्रकाश । प्रथीप–राजा । ते–उसके अह्र–घर । जंग–युद्ध । अडाळ–दृढ़ । नाट–निषेधात्मक शब्द । दससिर–रावण । खळ–रावण । जार–नष्ट संहार । सोवस–सुवर्ण सोना । सरणसधार–शरण में आए हुए की रक्षा करने वाला । निरधार–जिसका कोई साधन या सहारा न हो ।

नोट–उपर्युक्त दुमिळा निसांणी छंद का लक्षण प्रथम स्पष्ट नहीं है । इस दुमिळा निसांणी छंद के प्रत्येक चरण में चौदह और तेरह पर विश्राम सहित कुल २७ मात्राएं हैं तथा अंत में गुरु लघु होते हैं ।

अथ त्रुटिया दुमिळा निसांणी छंद लछण

दूहौ

धुर चववह नव फेर घर, अंत गुरु लघु अक्खर ।
यक तुक मिळ मोहरा उभै, सौ दुमिळा कवि सक्ख ॥ ६

अथ त्रुटिय दुमिळा निसांणी उदाहरण

निसांणी

ग्रह् नग सुर कह् कवण ओड़, जै दृत खग जोड़ ।
चक्कवत कर सुधा नीचोड़, मद वंका मौड़ ॥
मखिया मख रिख ठोड़ ठोड़, काटे भय कोड़ ।
तेगां खळ दसमाथ तोड़, रघुनाथ अरोड़ ॥ ७

अथ सुद्ध निसाणी जागड़ी (तीओ तुकांत लघु गुरु) उदाहरण

निसांणी

तैं रघुनाथ विसारिया, त्रिहु ताप तपणा ।
छूटा गरभ ग्रभवासमैं, बहु वार छपांणा ॥
धग धर तन ऋसीचियार, लख जोणां धपणा ।
खिण खिण आव संसारह बुदबुद ज्यूं खपणा ॥
कर कर पर उपकार पुन, तन प्राघत कपणा ।
संसारी दा भगळखेल, जांणौ जिम सपणा ॥

---

६ धुर–प्रथम। अक्खर–कह। यक–एक। मोहरा–तुकबंदी। उभै–दो। सक्ख–मह साखी है।

७ ग्रह्–नाग। कवण–कौन। ओड़–समान। जै–जीत। खग–खाग। जोड़–समानता। चक्कवत–राजा चक्रवर्ती राजा। सुधा–सीधा। मद–गर्व। वंका–बांकुरा। मौड़–श्रेष्ठ। मख–यज्ञ। रिख–ऋषि। तेगां–तलवारों। खळ–अधम। दसमाथ–रावण। तोड़–संहार कर काट कर। अरोड़–जबरदस्त।

८ तैं–तूने। विसारिया–विस्मरण किया। त्रिहु तीन। ताप–तप तपस्या। तपणा–तप करने वाला। गरभ–गर्भ। ग्रभवासमैं–गर्भवासमें। बहु–बहुत। छपांणा–गुप्त रहा। ऋसीचियार–चौरासी। जोणां–योनियों। खिण–क्षण। बुदबुद (बुद बुद)–पानीका बुल्ला बुल्ला अथवा फफोला। खपणा–नाश होना। संसारीदा–संसारका। भगळखेल इन्द्रजाल मायाकी खेला। सपणा–स्वप्न।

भाखर दिन अवधेस बिण, नह कोई अपणा ।
जिण कज हे मन रांम रांम, जीहा नित जपणा ॥ ८

अथ सुद्ध निसांणी आगड़ी चौथी तुकांत दो गुरु उदाहरण

निसांणी

कदम सुभंदा मेरगिर, नहचळ मझ कंका ।
सुज तर बंक पघोर कीघ, क सुध-सर्यांका ॥
थड़िया थाळ मुकाळ थुळ, हींया प्रद मेंका ।
डारण सज्झे वहकमळ, वज्जे जस डंका ॥
रिम सबळ मारण सुभाव, साधारण रंका ।
घू-धारण कारण जनां, कज सारण धंका ॥
आर्चा झौक रांमचंद, सुदतार असंका ।
लिन्हां बिण जिण दिन्हियां, सरणायत लंका ॥ ६

अथ निसांणी मारू लखण

दूहौ

मत सोळह फिर बार मुण, दख मोहरे गुरु दोय ।
मारू नीसांणी मुणै, सुकव महा मत सोय ॥ १

---

८. भाखर दिन—मृत्यु-समय । कज—लिए । जीहा—जीभ ।

६. कदम—चरण । सुभंदा—शोभा देते हैं । मेरगिर—सुमेरगिरि । नहचळ—अटल निश्चल । मझ—मध्य में । कंका—युद्ध । कीध—किये किया । सुध-सर्यांका—बिलकुल सीधा । डारण—जबरदस्त । सज्झे—संहार किया मारा । वहकमळ—रावण । जस—यश जिसका । रिम—शत्रु । साधारण—उद्धार करने वाला रक्षा करने वाला । रंका—गरीब । घू-धारण—निश्चय । कज—कार्य लिए । सारण—सफल करने को । धंका—इच्छा । आर्चा—हाथों । झौक—धन्य-धन्य । असंका—निर्भय निशंक । लिन्हां-बिण—बिना लिए ही । जिण—जिस । दिन्हियां—दे दी । सरणायत—शरणागत ।

१ मत—मात्रा　बार—बारह । मुण—कह । दख—कह । मत—मति । सोय—वह ।

अथ माझ निसांणी उदाहरण

निसांणी

कांम क्रोध मद लोभ मोह कर, अवस रहे अडगांणे।
लाह नह रख न सोच अलामे, मन संतोख समांणे ॥
सत्र मित्र पर भाव अेक सम, पत्य रहेम प्रमांणे।
घरमें 'किसन' कहै ते नर धन, जे मन राघव जांणे ॥ ११

अथ निसांणी वार लछण

दूहौ

गुण तुक प्रत जिण तीस मन, मगण क र तुकंत ।
वार निसांणी 'किसन' कवि, मत उपछंद गुणंत ॥ १२

अरथ

तुक अेक प्रत मात्रा तीस होय तुकंत मगण अथवा रगण होय सो निसांणी वार नांमा मात्रा उपछंद छै।

अथ वार नांमा निसांणी उदाहरण

निसांणी

संघ ग्राह दरीयाव बीच, पढ संघट फील पुकारियां ।
ईस ऊमाहण-पाय अाय, घर हत्थूं सूब उधारियां ॥
धू भजीया हरी धूघड़ै, कर नहचळ ते सुसकारियां ।
सत-व्रत भगती सझ्झीयां, ते प्रळय पयोनिध तारियां ॥

---

११ अवस-अवश्य । अडगांणे-अटल निश्चल । लाह-लाभ । संतोख-संतोष । समांणे-समा गया समाया हुआ । सत्र-शत्रु । पत्य-मार्ग । रहेम-ईश्वर । धर-पृथ्वी । धन-धन्य ।

१२ गुण-कह । तुक प्रत-प्रति चरण । जिण-जिस । मत-मात्रा । क-या अथवा । र-रगण गण । गुणंत-कहता है ।

१३ दरीयाव-सागर । संघट (संकट)-दुख । फील-हाथी । पुकारियां-पुकार करने पर । ऊमाहण-पाय-नंगे पैर । घर-गजका कर । हत्थूं-हाथसे । उधारियां-उद्धार किया । धू-भक्त ध्रुव । धूधड़ै निशंक निर्भय । नहचळ-निश्चल । सत-व्रत (सत्यव्रत)-सातवें मनुका नाम इक्ष्वाकुवंशी हरिश्चंद्रके पिताका नाम । सझ्झीयां-साधन किया । ते-वे । पयोनिध-समुद्र सागर ।

भेख वास प्रहळाद् धारह्, विप नरहर धार उबारियां।
सत्य मळद सोह जग सखै, हरि तन सफ मंगणहारियां॥
गोह अहल्या सवरी गीध, मळ व्याध कमंध विचारियां।
भी सुग्रीव भभीखणांह, अजराज सतोल बधारियां॥
निबळ अनाथ निधार नेक हरि, सबळां कीन्ह निहारीयां।
सीतावर संत सधारियां, सीतावर संत सधारीयां॥ १३

अथ मात्रा उपछंद निसांणी हुंसगत तथा रूपमाळा लछण

दूहो

सुण तुक प्रत बत्तीस मत, अंत भगण गण आंण।
गण निसांणी हंसगत, वरणत रांम वखांण॥ १४

अरथ

तुक येक प्रत बतीस मात्रा होय। तुकके अंत भगण गण होय सो निसांणी हंसगत कहीजै तथा चमत्कारी खरी दोय तुकांसू अक तुक बणै सो हुंसगत निसांणी। हुंसगत निसांणीरै नै वेअखरी छंदरै मात्रा तफावत छै सो भ्रमां छां। वेअखरी छंदरै तो तुकरै अंत गुरु लघुरो नीयम नहीं छै। कठैक तुकन गुरु कठैक तुकन लघु होय नै हुंसगतरै तुकंत भगणहीज आवै सो लघु तुकंतरो नेम छै। यतरो भेद छै। यणन कोई रूपमाळा पिण कहै छै।

अथ हुंसगत निसांणी उदाहरण

निसांणी

स्रीरघुनाथ अनाथ नाथ सुज, येह सत्र दसमाथ विहंडण।
जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नर सूरकुळ मंडण॥

---

१३ भेख—भेष कर। विप (वपु)—शरीर। नरहर—नृसिंहावतार। उबारियां—रक्षा की। तन—शरीर। सफ—धारण कर। गोह—गुहनामक, निषादराज जो रामका परम भक्त था। अज—राजा अज। सधारीयां—रक्षा की रक्षा करने पर।

१४ सुण—कह। तुक प्रत—प्रति चरण। मत—मात्रा। वखांण—यश। चमत्कारी—रचना। तफावत—भेद फर्क। कठैक—कहीं पर। नेम—नियम। यतरो—इतना। यणन—इसको। पिण—भी।

१५ येह—युद्ध। सत्र—शत्रु। दसमाथ—रावण। विहंडण—संहार करने को। जाहर—जाहिर प्रसिद्ध। मही—पृथ्वी। जहूर—प्रकाशमान। सुजस—सुयश। महपत—राजा। नर—जाति क्षत्रिय। सूरकुळ—सूर्य वंश। मंडण—आभूषण।

अथ निसांणी सीहटप लछण

दूहो

तुक प्रत मत छवीस तव, तगण क जगण तुकंत ।
सौ निसांणी सीहटप, हणु आकणी कहंत ॥ १८

अरथ

प्रत तुक माभा छावीस होय । तुकतमें जगण मोहरा होय । कठैक तगण गण पण तुकंतमें होय । वोय तुकारे पछै हण इसा समवरी आंकणी होय सो निसांणी सीहटप पण कहीजै ।

अथ सीहटप निसांणी उदाहरण

निसांणी

यक आद-पुरुख अनादसूं दख अहम माया दोय ।
त्रय ब्रहम विसन महेस त्रै गुण हुआ जिण जग होय ॥
हणु हुवा जिण जग होय हरखित चाह वेद विचार ।
तत पंच कर खट तरक तै दरियाव सात उदार ॥
हणु सात दध दस आठ सर जे नवे ग्रह नर नाह ।
अवतार दस कर रुद्र ग्यारह बारह मेघ दुवाह ॥
हणु बारह मेघ नीर विरच्चित मास तेरह मंड ।
दस च्यार विद्या रतन दाखव पनर तिथि परचंड ॥
हणु पंच दस तिथ सोळ कळ पढ सरस नार सिंगार ।
साहंस सतरह खंड गूजर धाप ग्रांम विथार ॥
हणु धाप गांम विथार भार अठार वन कर भेद ।
उगणीस वरमे भाम ओयन विसात्रीस अग्वेद ॥

१८ तुक प्रत-प्रति चरण । मत-मात्रा । छवीस-छब्बीस । तव-कह । क-या अथवा । कहंत-कही कर ।

१९ यक-एक । आद पुरुख-आदि पुरुष । दख-कह । ब्रहम-ब्रह्मा । विसन-विष्णु । महेस-महादेव । दध (उदधि) सागर समुद्र । दाखव-कह । तिथ-तिथि तारीख । सोळ-सोलह । वन-विपिन । भाम-प्रेम । विसात्रीस-पूर्ण पुण ।

हुगू विसाबीस अविद त्रिनार युध यण कीध मंड अनक ।
सो आदपुरख उनार 'क्रिमना' अचळ राघव अेक ॥

अथ सम्पादिप निसाणी मोहणा तथा सीहचली लछण

चोपई

साळह दस मत यक पद साज, गीत अंत गुरु लघु गाय ।
सीहचली तुक उलट सकाय, ॥ २०

अथ सुमीव गाहपमा निसाणी उदाहरण

निसाणी

तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता, वसन पीत विनार ।
वामदा पीत विनार सरवर, धनुख सायक धार ॥
धानख सायक धर धरम धर, भुजा भरन्नग भार ।
जुध जार दससिर कुंभ जहा, सकळ कांम सुधार ॥
सर कांम दाम सुधार समरथ, अेक रांम उदार ॥ २१

अथ निसाणी निरमना लछण

दूहो

मध्य मळ मत चार पर, नव मत मा । गुनाय ।
तुक प्रत मत पंचाम तव गिर गुन्नी रट मास ॥ २२

यथा

अथ सिरखुली निसांणी उदाहरण

निसांणी

राघव सिफत बखांणी, सम्चे सायरां ।
आफताब दुनियांणी, दीद नगाहए ॥
जिन्हीं तज जुल्मांणी, इस्क सगाहियां ।
रुखचुगलक बजांनी, सिरवह सम्फियां ॥
परस लिया मद पांनी, दार जुनारदा ।
बम्भीक्षण बगसांणी, लंक पनाहियां ॥
खळक तमांम रबांनी, छिनमें खानी खालकां ।
जपै सुकर जबांनी, कुदरत कौनदी ॥
बंदु परवर सांनी, सीतासांइयां ॥ २३

अथ भग्घर निसांणी लछण

दूहौ

लछण संजुत आठ तुक, जोड़ त्रिभंगी छंद ।
अंत जगण बत्तीस मत, भग्घर श्रेह प्रबंध ॥ २४

अरथ

त्रिभगी छंदरो लछण सोई भग्घर निसांणीरो लछण छै । त्रिभंगी छंदरी आठ तुक सोई भग्घर निसांणी । तुक अेक प्रत मात्रा बतीस । च्यार बिस्राम । पैं'लो बिस्राम दस पर होवै । दूजौ बिस्राम मात्रा आठ पर होवै । तीजौ बिस्राम मात्रा आठ पर होवै । चौथो बिस्राम मात्रा छै पर होवै । अंत जगण होवै । सोई त्रिभगी छंद सोई भग्घर निसांणी । त्रिभगीकी तुकांत और अखिर ऊपर मिळै । भग्घर निसांणीका तुकांत अेक अखिर ऊपर मिळै सौ भेद छै ।

---

२३ सिफत-विशेषता गुण । सायरां-कवियो । आफताब-सूर्य । दुनियांणी-संसारका । दीद-देखनेकी दर्शन । नगाहए (निगाह)-दृष्टि नजर कृपा मेहरबानी । जिन्हीं-(जिना) परस्त्रीगमन । जुल्मांणी-जुल्म अत्याचार इस्क कर्तव्य । सगाहियां-उपहास कीजिए । बम्भीक्षण-विभीषण । बगसांणी-प्रदान कर दी । दे दी । पनाहियां-शरणमे आने वाले पनाह लेने वाले । खलक (खल्क) मानव जाति सब मनुष्य । खालकां-ईस्वर । जपै-प्रार्थना करते है । सुकर (शुक्र)-कृतज्ञता । परवर-पालन करने वाला । पालक ईस्वर सांनी-जोड़का समान दूसरा । सीतासांइयां-श्रीरामचंद्र भगवान ।
२४ लछण-लक्षण । संजुत-संयुक्त । मत-मात्रा । श्रेह-यह । सोई-वही ।

अथ माता उपछंद घग्घर निसांणी उदाहरण

निसांणी

पोह कत कविराजं हरख उछाजं सुजस समाजं दघ पाजं ।
रिखवर मुनिराजं सिवसिध राजं स्तुति दुजराजं नित साजं ॥
मुख सहस समाजं जपि अहिराजं रटत सकाजं सुर राजं ।
मुख जोतिस काजं कवि महराजं जांन सुभाजं खगराजं ॥
कज संख गदाजं चक्र उछाजं आयुध साजं भुज भ्राजं ।
मह गौ दुजमानं रिखि नर राजं सुचित दराजं दत साजं ।
रघुकुळ सिरताजं जन रखि लाजं जय महाराजं रघुराजं ॥२५

अथ तृतीय घग्घर निसांणी लछण

दूहौ

दस अठ मत तिसरांम दौ, चवद तियौ विसरांम ।
अंत मगण जिणनूं घग्घर, कौ कवि कहै सकांम ॥ २६

अथ तृतीय घग्घर निसांणी उदाहरण

निसांणी

हिरणायख हांणे संख सभांणे हयग्रीवा खळ हंता है ।
हरणाकुस हत्ते महणमु मथ्थे छितलै बळि छळ ता है ॥
यमराज उधारे रामण मारे ते हण कंस अमंता है ।
कह मुक्र किलंकी इम असंकी कळ पूरण सीवता है ॥ २७

---

२५ दध-समुद्र। पाजं-पुल सेतु। अहिराज-शेषनाग। सुरराजं इन्द्र। जोतिस-ज्योतिष शास्त्र। महराज-सूर्य। जांन (ज्ञान)-जानते। खगराजं-गरुड़। कज-कमल। आयुध-शस्त्र। भ्राजं शोभा देता है। जन-भक्त।

२६ चवद-चौदह। तियौ-तीसरा। विसराम-विश्राम।

२७ हिरणायख-हिरण्याक्ष नामक राक्षस। हांणे-मारा। संख-शंख नामक राक्षस। सभांणे-नष्ट किया। हयग्रीवा-एक राक्षस का नाम। हंता है-मारने वाला है। हरणाकुस-हिरण्यकशिपु। हत्ते-मारा किया। महणमु-समुद्र। मथ्थे-मंथन किया। छितलै-पृथ्वी पर। मोकला-अधिक निष्कलंक भगवान।

अथ पैड़ी निसांणी लक्षण

दूहौ

ठार सोळ सोळह चवद, तुक प्रत मत चवसाठ ।
नीसांणी मगणांत निज, पैड़ी यण विध पाठ ॥ २८

अरथ

पैड़ी निसांणीरै तुक अक प्रत मात्रा चौसठ होय । तुकांत गुरु होय तथा मगण होय । तुक अकमें बिसरांम च्यार होय । पै'लो बिसरांम मात्रा अठारै पर होय । दूजौ बिसरांम मात्रा सोळै पर होय । तीजौ बिसरांम मात्रा सोळै पर होय । चौथौ बिसरांम मात्रा चवदै पर होय । ई प्रकार च्यार बिसरांम होय । तुक अेक प्रत मात्रा चौसठ होय सौ पैड़ी नांम निसांणी कहीजै ।

अथ पैड़ी निसांणी उदाहरण

निसांणी

भारा आकांत दुवंदी भुम्मी, वरतंदी सुरवार विक्खम्मी ।
अमर् कथ ब्रहमांण अखंम्मी, थंवे उथ्यल थांनूंदा ॥
आदम अरु थंभदेव मिळियंदे, आए सच दरियाखीरंदे ।
काहल दस्तबंध कुवरंद, गिरीभरि गुजरांनूंदा ॥
अरजी सुण कर दरियाफ्त अल्ला, वरदे महरबांन के सुल्ला ।
हू दे तुम कज जंग हमल्ला, यळ अवतार असांनूंदा ॥
सभूमन नृप दसरथ्थ समथ्थी, कोसल्या सत रूपा कथ्थी ।
जाहर पूत च्यार जग जथ्थी, जांमण सेर जवांनूदा ॥

---

२ ठार-अठारह । सोळ-सोलह । चवद-चौदह । चवसाठ-चौसठ । यण-इस । बिसरांम-विश्राम ।

२९ भारा-भार, वजन । आकांत-घिरा हुआ व्याकुल । दुवंदी-हाथी । भुम्मी (भूमि)-पृथ्वी । वरतंदी-हो रही है । सुरवार-देवताओं का समय । विक्खम्मी-विषम । अमर्र-स्वर्ग । कथ-कथा । ब्रहमांण-ब्रह्मा । अखम्मी-कहो । उथ्यल-उलट । थानूंदा-स्थान । आदम-ईश्वर शिव । थंभदेव-ब्रह्मा । मिळियंदे-मिले । दरियाखीरंदे-क्षीर-सागर पर । काहल-व्याकुल । दस्तबंध-कर-बद्ध । गिरीभरि (गिरिधरि)-इन्द्र । अल्ला-ईश्वर । हू दे-मैं । कज-लिये । जग-भूमि । असानूंदा-हमारा । सभूमन स्वायंभू मनु ।

कौसिकद जिग परनरसी किध्धा, पै रज करी सिला परविध्धा ।
भंजे चाप अमाप अमित्ता, सीता ब्याह सुमांनूंदा ॥
ते तेज हरा दुजरांम अताई, पितदे हुकम रिखी ब्रत पाई ।
मारे ब्याघ कबंध अमाई, वाटीपंच अमानूंदा ॥
रांमण तव हरी जांनुकी राणी, भीली बेर भखांनूंदा ॥
मिळ कपि हणुमंत सुकंठी म्यंता, चौपट मारे बाळ अचेंता ।
थांन भभीखण लंक दीयंता, बंध पाज जळवांनूंदा ॥
}
दवी जद घोर जंगदा यग्गा, लड़ण मेघनाद रिण लग्गा ।
भिड़ तिण सेस सुजं बळ भग्गा, मिटा सोच मघवांनूंदा ॥
जोधा रिण कुंभ दसानन जुट्टे, कोपे रांम बिहूं सिर कट्टे ।
भ्राण सिया दुख दंद भछुट्टे, जंपै कीत जिहांनूंदा ॥ २६

अथ मछरपळ तथा मोहणी नाम निसांणी लछण

दूहो

तेर प्रथम सोळह दुती, मम्फ तुक बे विसरांम ।
गुणति मत अंते वे गुरु, निरमंघ मछटयळ नांम ॥ ३०

अरथ

मछरपळ नांम निसांणीरै तुक प्रत माभा गुणतीस होय । तुकरै पत दाय गुरु अखिर होय । तुक मक प्रत माभा गुणतीम होय बीगा दोय विसरांम होय ।

---

२६ कौसिकदे-विस्वामित्र । जिग-यज्ञ । परनरसी (नरनरिप)-रखा पालन-पावण । चाप-धनुष । अमित्ता-निर्भय निर्भक दुजरांम-परसुराम । पितदे-पिताका । वाटीपंच-पंचवटी । भीली-भिल्लनी । भखांनूंदा-वाले भखण किये । सुकंठी-सुग्रीव । म्यंता-मित्र । चौपट-कुसा मैदान । बाळ-बालि वानर । पाज-पुल । जळवांनूंदा-समुद्रको । दवी-अमाह । जद-जब । जंगदा-युद्धका । यग्गा-जगा । भिड़-योद्धा । सेस-लछमण । मघवांनूंदा-इन्द्रका । जुट्टे-भिड़े । बिहूं-दोनां । कट्टे-काट डाले । भछुट्टे-नाश हुए । जंपै-वर्णन करता है । जिहांनूंदा-संसारके ।
३० तेर-तेरह । दुती-दूसरी । बे-दो गुणति-उनतीस । मत-मात्रा । निरमंघ-रच दिया । गुणतीस-उनतीस ।

पै'लो विसरांम तौ मात्रा तेरै ऊपर होय। दूजौ बिसरांम मात्रा सोळै ऊपर होय, सो निसांणी मरहटघळ नांमा कहीजै। इणरो दूजो नांम सोहणो पिण छै।

अथ मरहट्टघळ तथा सोहणी निसांणी उदाहरण

निसांणी

तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुध करखे रात अपंदे।
वस करवे इंद्री अवस, तन मझी तप सील तप्पंदे॥
आप रहंदे अघ अळग, पर छिद्र निसदीह ढपंदे।
मेव समझंदे सांइयां, पै करमं कबहू न लपंदे॥
आदम लखूं दरमियांन, छित बिरले नर नांहि छिपंदे।
सत ग्रह रवे तजदे असत, धग कदमं सुभ पंथ धपंदे॥
नांम जिन्हूंदा अमर नित, खित जाये जे जीव खपंदे।
जिन्हां जीतन जीतिया, जे रघुवर नित जीह जपंदे॥ २१

अथ मात्रा प्रथम चरण कड़खा छंद लछण

दूहौ

धुर तुक मत चाळीस धर, तुक अन मत सैंतीस।
अंत गुरु तुक प्रत अक्खिर, कड़खौ छंद कहीस॥ २२

अरथ

पै'ली तुकरी मात्रा चाळीस होय। पछली तीन ही तुकां तथा सवाय करै तो पिण तुक प्रत मात्रा सैंतीस होय। तुकन्त गुरु अक्खिर तथा करणगण होय। जी

२१ मक्कर-गर्व अभिमान। फक्कर (फक्र)-दीनता गरीबी आवश्यकतासे अधिक किसी पदार्थकी कामना न करना। मझी-मध्य। तप-तपस्या। तप्पंदे-तपस्या कर। अघ-पाप। अळग-दूर। पर-दूसरोंके। छिद्र छिद्र। निसदीह-रात दिन। ढपंदे-ढकते हैं। मेव-भेद। सांइयां-ईश्वर। आदम-ईश्वर। लखूं-देखता हूं। दरमियांन-मध्य। छित-पृथ्वी। बिरले-कोई। छिपंदे-छिपते हैं। रवे-ग्रहण। असत-असत्य। जिन्हूंदा-जिनका। खित-पृथ्वी। जाये-जन्म। जे-जो वे। खपंदे-नाश होते हैं। जिन्हां-जिन्होंने। जीतन-जीवन। जीह-जीभ। जपंदे-जपते हैं।

२२ धुर-प्रथम। मत-मात्रा। कहीस-कहूंगा। पाछली-बादकी [illegible]। सवाय-विशेष। करणगण-दो दीर्घ मात्रा का नाम ऽऽ।

छदरी नाम कड़खो छंद कहीजै । जिणमें छंदरै उत्तरारधमें कड़खो छंद जांणी जोइजै कहै छै ।

अथ कड़खो छंद उदाहरण

छंद

रसणा रांम रट रांम रट रांम रट ।
रांम रट रांम रट राम रट रांम रट ॥
नेह आछेह आरेह सुख गेह निज ।
भूप आनूप पतीसीय भांम ॥
पांण धनु बाण आपांण पंचाण पह ।
ठाह गुण गाह जग ठांम ठांम ॥
सुकवि 'किसनेस' महेस भुजगेस सुज ।
जाप जम जेस प्रति जाम जांम ॥ ३३

अथ भ्रमरी छप्पै कवित्त

छप्पै

धार्यै कुण दध अथघ कमण प्रभणै गिण रज कण ।
बूंदां जळ बरसात गिणै केहौ तारक गण ॥
गुणै कमण तर पत्र ब्रहम माया कुण भक्खे ।
मह उत्तर पथ माप आप लहरां कुण अक्खे ॥
कुण सकै जोग निरणौ करै रे गोरख सिव राजरौ ।
कवि 'किसन' समथ कुण जस कहण रांमचंद्र महराजरौ ॥ ३४

---

३३ रसणा-जीभ । नेह-प्रीति । भाम-स्त्री । पाण-हाथ । आपांण-अपने पंचाण-सिंह । ठाह-स्थान ज्ञान । ठांम-स्थान । महेस-शिव । भुजगेस-शेषनाग । जस-जिसका । जाम जांम-याम याम ।

३४ धार्यै-धारण करता हुआ । कुण-कौन । दध-समुद्र । अथघ-अथाह अगाध । कमण-कौन । प्रभणै-कहे रज धूलि । केहौ-कौन गुणै-कहे । तर-वृक्ष । पत्र-पत्ता । ब्रहम-ब्रह्मा । भक्खे-कहे । मह भूमि पृथ्वी । आप-पानी । अक्खे-कहे । समथ-समर्थ

अथ कविवंस वरणण छप्य कवित्त

छप्पै

'दुरसा' घर 'किसनेस' 'किसन' घर सुकवि 'महेसुर'।
सुत 'महेस' 'खूमांण' 'खांन साहिब' सुत जिण घर॥
'साहिब' घर 'पनसाह' 'पना' सुत 'दुलह' सुकव पुण।
'दुल्ह' घरे स्रस्ट पुत्र 'दांन' 'जस' 'किसन' 'बुधौ' भण॥
'सारूप' 'चमन' मुरघर उतन, प्रगट नगर पांचेटियौ।
चारण जाती आढा विगत 'किसन' सुकव पिंगळ कियौ॥ ३५
उदियापुर आयांण रांण भीमाजळ राजत।
कवरां-मुकट 'जवांन' नीत मग जग नीवाजत॥
अट्ठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद।
बुधवार तिथ चौथ हुवौ प्रारंभ ग्रंथ हद॥
अठारै अनै अकियासिये, सुद आसोज सराहियौ।
सनि विजैदसमी रघुवर सुजस 'किसन' सुकवि सुभक्त कियौ॥ ३६

दूहा

रघुवर सुजस प्रकासरौ, अहनिस करै अभ्यास।
सकौ सुकवि वाजै सही, रांम कपा सर रास॥ ३७
प्रगट छंद अनुस्टपां, संख्या गिणियां सार।
सुज रघुवर प्रकास जस, है गुण तीन हजार॥ ३८
जिणरौ गुण भण जेणनूं, न गिणै गुर निरधार।
पड़ गैरव ले प्रगट, अवस स्वांन अवतार॥ ३९

इति स्री रघुबरजसप्रकास पिंगळ ग्रंथे आढा किसना
विरचित कवत्तां भेक भेकानम प्रकार निर्मांणो
निरूपण वरणण नांम पंचमो प्रकरण
संपूरण। समाप्त।

----

३५. उतन-वतन जन्म भूमि।

चौपई

स्वर

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१५	रामचंद्र जिसा सिव रजपूत कोई वेसापुत होवे छे	८७	२	१६५	बारता मय पं
१५१	रामचंद नृप वंद	११७	३	१३	सार
१५२	रामिस संमम सोभत बंम मनु सरद्दाण सुचाग्ग	१२६	३	१६२	मदिरा
१५३	राम मक्तीके भोड़ तजोर्ष	१२	३	२६	हंस
१५४	राम नाम पाठ नाम पाव रे पुमत पहु देह सार	१२४	३	१४५	पंक्तिका
१५५	राम नाम पाव रे, पाप कंप पाव रे	१२४	३	४३	समानिका
१५६	राम नाम सर पावर तारे	११६	३	६२	स्वागता
१५७	राम भजन बिन प्रकृत जनम रे	१४३	३	११६	चक
१५८	राम महुराज करण बन काम	४२	२	६	प्पगण
१५९	राम राखे रसा क्रम रै	१२८	३	६	मङ्गलकारिणी
१६	राम राखी रखा तीस ज्यारै रही	११७	३	६५	लक्ष्मीधर
१६१	राम सरका नरप कोप मद्य नो रजे	१४५	३	१२५	निसपाळिका
१६२	राम सीता पती घोर वी मक्ती	११७	३	१६	प्रियापंद
१६३	रिख मख माता बिन ध्रुज माता	१२२	३	१५	चकरस
१६४	रिख ताय राम मये कांम धाम	१२२	३	१७	संखनारी
१६५	रिपुकुल मुक्त समर रघुबर है	१४५	३	१२३	रमत
१६६	रिख सुमित्र राज ही सुकर मनु ताज ही	१२७	३	५५	कमळ
१६७	लग मत्ता चौबीस पंद मत्त लेखव	४१	प	३	चारमगणी
१६८	लसत चख लाच सुकर मनु साथ	१२५	३	४६	करहंची
१६९	लिखमीस राम मन भम लखो	१४	३	१ ५	पुमिताक्षिरा
१७	वडी मन वेख म बोप मुर्त	१२४	३	४१	मालती
१७१	विक्रम कलह हर रघुबर	११६	३	१ २	तपकमनण
१७२	विपालोक पाकमती मयह	१८६	३	४८	वेमसमरी
१७३	विमालोक तर फिर फिर करण बखाइजै	१७१	४	२१	चंद्रायणै
१७४	वेद चाव अेर चद तरक वर्न व्याकरस वळै चव भाव वीड़ा बरालै	५६	२	६७	हंसपा
१७५	सम तेरह पुर कर दस कीजो निमंणी	७१	२	११८	सिंह चका
१७६	सत पुवचर मोंलो ममलज मोली कहि चतामक तोतक	५१	२	४६	पता
१७७	सब लघु वद पप धरि पद पक पुव करि	५५	२	५३	कमहरण
१७८	समर में दस कंठ जिण तजे	११९	३	१ ३	सुवरी
१७९	सर पशुब कमळ कन सरए	७२	२	१२२	सिव
१८	सहरत पत दसरथ सुत	१२४	३	१६	नरनाक

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८१	सारी बातो नीकी होई रघुवर जस सहुवम मन जाई	१११	३	११	हंसी
१८२	सारंग पाण बपरांम तिलोक स्वामी	१४२	३	११५	कलसतिलका
१८३	सीतपती ओप मर्य सह	११८	३	२	मंद
१८४	सीत प्रासुध राजा राकस	११६	३	२१	समोहा
१८५	सीतारमा सोम श्रोप सर्व काम	१२४	३	३८	मंथाणी
१८६	सीता राघो माथे सोई	११६	३	२१	सोरठा
१८७	सीता सोहा रमण हरही नेक संताप संतां	१४६	३	१३६	मंदाक्रांता
१८८	सीता की रांणी वैद बखांणी सारंगपांणी सांम	५२	२	४२ ४१	मरहठा
१ ६	सीस वीवो जिन्हें नाम रघुनाथ सू	५७	२	५८	उप सुगहा
१६	हो पग बक्क मय मत्त होज्ञै	४१	२	२१	चरनाम्बुज
१६१	स्यांम बड़ा तन क्रम विराजत समझा	४६	२	३	कराबली
१६२	स्यांम मर्ण सांम सुची	१२७	३	५६	मोगाक्रीड़ा
१६३	स्री गणराज सारदा सुभ कर	१८५	४	४७	समसमरी
१६४	स्री समुकीनाथ सदा सराहो	११५	३	८६	उपजाम
१६५	स्री रघुनाथ प्रमाण सिहायक वासक सो मिथि वांछित बांम	१५७	२	१६६	चकोर
१६६	स्री रांम राजेस सेवा किजनेस	११७	३	१८	पवाज
१६७	हम कौन प्रसक मुरंई हरिपु तुम एक न नेक उतारिएसू	१६६	३	१७२	दुमिला
१६८	हरण वसन कमहर है	१३१	२	८२	मदनक
१६६	हरि हरि हरि	११६	३	६	मधु
२	हाथी कीड़ो कोड़ हेकण सो तोलै जप जांरो सारो	१५	३	१४	मजीर
२ १	हांजी एसा महाराज रांमचंद्र प्रसरण सरण	८६	२	११४	चलनाका

दूहा

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक
१	पक्कर पठारह बरण बन	१	२	२१२
२	मांजिर पुलीसह प्रवर लघु	१५२	३	१४७
३	प्रजामल नर पाविया	१२	१	७८
४	पठ गुमवर बद मत्त सुमक	५७	२	५६
५	प्रठाईस पुरब प्ररब	२०४	४	२११
६	प्रठाईस मत पंत गुर	१२२	४	२६७
७	प्रठ्ठारह मत पहल पद	२२७	४	१११
८	प्रथ पुरब जिम उत्तर प्रथ	२६४	४	२४
६	प्रधिकारी गीतां प्रवल	१६७	४	६

क्रम	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२१	मपत्त मांम संमू मुले	७	१	२१	
२११	ममण मपरण फिर ममस्त मुग्नि	१४१	१	११५	
२१२	मगण ममस फिर सगण मुग्नि	१२१	१	६२	
२११	ममण रगण भगणह नगण	१५४	१	११५	
२१४	मगण समण अमसह समण	१५१	१	१४४	
२१५	मभ वत गुरु बारह मता	२४५	४	१५	
२१६	मत पळार पुर गुरु मबर	२ १	४	७५	
२१७	मत ऊविस्त गुरुम लिख	१४	१	५१	
२१८	मत बत्ती भव माग	६२	२	८	
२११	मत घोळह फिर बार मुस	१२८	५	१	
१	मत्त पद 'विसर्ग' मुखे	५१	२	१६	
१ १	मत्त बतमें गुरुम मुस	४१	२	१	
१ २	मत्त पत हिक पह मुनि	४१	२	२	
१ १	मध्य मेळ मत बार पर	१११	५	२२	
१ ४	मम गुरु बापा बीस मत	६६	२	६५	पयोधर
१ ५	मम मुमिम प म बास मुस	४	१	१०	
१ ६	मरण कमनवी सब मिमस	६१	२	७४	
१ ७	महाराजा रघुवंस मण	७	२	११५	
१ ८	महातिकमी पद मही	१२८	१	५६	
१ १	माता बहक बरनिया	११४	२	२७२	
११	मानो बारबार में	६४	२	८७	सरभ
१११	मानविका म्यारह पुर	११४	१	८४	
११२	मालविया पाडी मली	६५	२	६१	करभ
११३	मिळे बतवी पंचमी	२४८	४	११७	
११४	मिळे तीन गुरु पावरो	१ २	४	२१४	
११५	मिळे न पुरु पुरु तम ममप	६७	२	१	मयूर
१ ६	मुद्रिपम सामस्तो हुवे	२७२	४	२ ५	
११७	मुख पमका प्रस्तार माम	२७	१	६१	
११८	मुख गुरु मत मिरल तीस मत	१९६	५	१२	
११९	मुख गुरु प्रत बत्तीस मत	११	५	१४	
१२	मुख पुर गुरु पत्तार मत	२	४	६८	
१२१	मुख पुर गुरु तेवीस मत	२६८	४	९२६	
१२२	मुख वी गुरु छावीस मत	९७	४	२१०	
१२३	मुलिया मेळा मेरमें	१	१	६६	
१२४	मूरक आवक काम मत	६५	२	६१	

क सं	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१२५	मेवा तजिया मधु महुल	६३	२	८१	सुबेरी
१२६	मच मुख पुलकीत प्रखिर	१११	४	२७५	
१२७	मन मुख तो थापै धरम	११	२	२६१	
१२८	मन री ध्यार सु धाठ बिध	१७	१	१ १	
१२९	मकर्तृ मुगमा वप सिर	२५	१	८१	
१३०	मकतु बरण बधीस लम	११५	१	५	
१३१	ममत्त छ्यम मारी उभय	१२२	१	११	
१३२	मत्त बिन पुरव पंख मुइ	१८	१	१ ८	
१३३	मत हीण बिन ऊतर धरन	२६	४	२४३	
१३४	मतरी मत मतरा बरस	११	१	१८	
१३५	रमल गगन पुर लघु हुन	२६६	४	१६१	
१३६	रमस कमल पम भव पुव	१२४	१	४२	
१३७	रमण नमस रमसु ध्यान	११६	१	६	
१३८	रमल मम्म बधु घमरण र	१	१	८	
१३९	रम्स सगण मंतह गुरु	२७४	४	२१	
१४०	रघुवर मुजस प्रकासरो	१४	५	१७	
१४१	रट नर पथिका राह	१७७	४	११	सोरठो
१४२	रयां पीत रेखवारी	२७१	४	२ ४	
१४३	रत अभ्यास सिव तेर मत	७२	२	१२४	
१४४	रत स्पंपार प हासरस	६५	२	२२	
१४५	राकस रट रट हरख कर	६८	२	१ ६	
१४६	रांम नजमधु रासा	६६	२	१११	
१४७	रे चित मत इइ प्रम रख	६१	२	२ ८	
१४८	रे माहर रघुनाथरा	६	१	२	
१४९	रे मीसासी कंवरा	१२५	५	२	
१५०	रे चित बत इइ प्रेम रख	६६	२	६७	मांगर
१५१	रोम रीझमे रम रिंमी	६५	२	६२	
१५२	लखियां बोलै मम प्रखिर	११३	४	२८३	
१५३	लघु पुच कम बरण भाड	१२६	१	५१	
१५४	लघु धीरम धीरव लघु	७	१	२१	
१५५	लघु छांत्तोर क पूप्पियो	२८५	४	२११	
१५६	लक्षण लक्षत भाठ गुरु	३१४	५	२४	
१५७	लामै चक्रां सावर्थ	१ ८	२	२६६	
१५८	ले कव हु तां मत लपै	१ ६	२	२६	
१५९	लेखत बरण पचीस लम	११५	१	१	

क्र सं	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३९५	साठ छत्तीस गुरु समरत्त	१९९	४	१२	
३९६	सात चतुष्कल धारसमैं	५२	२	४४	
३९७	सात चतुर कल अंत गुरु	७२	२	१२८	
३९८	सात भगण मदिरा कहै	१५९	३	१९१	
३९९	सात मत्त पद प्रत पढ़ै	४९	२	७	
४	सामभल्यौ रमणी वसंत	२९५	४	२५२	
४ १	सांणोरासू गीतके	१८५	४	४६	
४ २	सिर दस दस सिर ताकौ	७	१	२२	
४ ३	सीहुलोर (सिंह) पुंखिनौ	२७	४	२	
४ ४	सुध पलटायो सोरठौ	६२	२	५७	
४ ५	सुध प्रहास सांणोरै	२१२	४	८९	
४ ६	सुरि गा न सवत्ता सवइए	१९६	४	२	
४ ७	सुध बिंदु कवित्त मस्त	२७	१	८९	
४ ८	सुध पे सुध पछ थकार के	२७	१	९२	
४ ९	सुध पूर्वक्रिया थका सुध	११२	२	२६८	
४१	सुध सुध विपरीत थका	२९	१	८७ ८८	
४११	सुरपति प्रहार तामकार	९	१	३	
४१२	सूर्य कम है अंक सिर	२	१	६४	
४१३	सोरठिया हूर प्रोक्त मध्य	२७२	४	२ ६	
४१४	सोल कला धुर सोल की	२८२	४	२२७	
४१५	सोल प्रथम चवथह पुनी	२९	४	२४२	
४१६	सोल प्रथम बीजी चवद	२२९	४	११५	
४१७	सोल मत गुरु पंचमी	२८६	४	२१४	
४१८	सोलह पनरह मन पूहौ	२	४	१९	
४१९	सोलह मत गुरु मत सरव	२८७	४	२११	
४२	सोलह मत्ता वरण दस	२२१	४	१	
४२१	सोलह सोलह मत्तिर पर	११४	३	१ ४	
४२२	सोलै मत्ता सरस गुरु	२२२	४	१ २	
४२३	सौ गुरु तैंतिस गुरु	६१	२	८२	
४२४	सोलह मत्तह प्रथिर पर	१६१	३	१७६	
४२५	संख्या प्रस्तार कोठ सध	५५	१	१ १	
४२६	संख्या प्रस्तार सूचिका	१	१	५६	
४२७	संख्या मै कहिया सबी	११	१	४	
४२८	संजोगी पहुलो प्रथिर	६	१	१९	
४२९	संमत प्रकारी पातीसी	१५५	३	१८	

नीसांणी छंद

दूहा

दूहा